

मसीह के जीवन और सेवकाई पर एक अध्ययन

यीशु के

साथ

उसके

संसार में

चलना

मोज़ेक ईसाई संकाय

मसीह के जीवन और सेवकाई पर एक अध्ययन

**यीशुके**  
**साथ**  
**उसके**  
**संसार में**  
**चलना**

मोज़ेक ईसाई संकाय

© 2025 मोज़ेक क्रिश्चियन कॉलेज | सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, स्कैनिंग, या अन्य किसी माध्यम से हो, प्रतिलिपि, पुनरुत्पादन, संग्रहण प्रणाली में संग्रहीत, या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय उन संक्षिप्त उद्धरणों के जो आलोचनात्मक समीक्षाओं में उपयोग किए जाते हैं या लागू कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत हैं।

यह प्रकाशन केवल व्यक्तिगत, गैर-हस्तांतरणीय, गैर-अनन्य, और गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए लाइसेंस प्राप्त है। क्रेता को केवल मूल खरीद की शर्तों के अंतर्गत डिजिटल सामग्री तक पहुंचने और उसे देखने का सीमित अधिकार प्रदान किया जाता है। इस सामग्री का कोई भी अनधिकृत पुनरुत्पादन, वितरण, पुनर्विक्रय, तृतीय-पक्ष प्लेटफॉर्म पर अपलोड करना, या सार्वजनिक प्रदर्शन सख्त रूप से निषिद्ध है और यह संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अंतरराष्ट्रीय कॉपीराइट कानूनों का उल्लंघन माना जाएगा।

अनधिकृत उपयोग, प्रतिलिपि, या वितरण, जिसमें डिजिटल पाइरेसी भी शामिल है परंतु उसी तक सीमित नहीं है, लेखक और प्रकाशक के कानूनी अधिकारों का उल्लंघन करता है और कानून की पूर्ण सीमा तक दीवानी और/या आपराधिक दंड के अधीन होगा।

शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, न्यू इंटरनेशनल वर्शन®, NIV® से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1973, 1978, 1984, 2011 Biblica, Inc.™ द्वारा अनुमति से उपयोग किया गया। विश्वव्यापी सर्वाधिकार सुरक्षित।

निर्माता:

मोज़ेक क्रिश्चियन कॉलेज

9535 फ़ॉरेस्ट लेन, सुइट 285

डलास, टेक्सास 75243

[www.gomosaic.college](http://www.gomosaic.college)

संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्मित

# विषय सूची

## परिचय

### अध्याय 1: यीशु जिस संसार में आए

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि  
यहूदी संप्रदाय और धार्मिक जीवन  
अंतरवर्ती काल के विकास  
अवतार का धर्मशास्त्रीय महत्व

### अध्याय 2: यीशु का जन्म और प्रारंभिक वर्ष

घोषणाएँ और जन्म कथाएँ  
यीशु का बचपन और उनकी प्रारंभिक पहचान  
यीशु का बपतिस्मा और पिता की सार्वजनिक पुष्टि  
बपतिस्मा से जंगल तक: मसीह की सार्वजनिक सेवकाई की  
दहलीज़

### अध्याय 3: सेवकाई की तैयारी

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और अग्रदूत का संदेश  
यीशु का बपतिस्मा  
जंगल में परीक्षा  
यीशु की आज्ञाकारिता का धर्मशास्त्रीय अर्थ

### अध्याय 4: प्रारंभिक यहूदिया और गलील की सेवकाई

पहले चेलों की बुलाहट  
प्रारंभिक चिन्ह और चमत्कार  
प्रारंभिक शिक्षा और राज्य की घोषणा  
धार्मिक नेताओं के साथ बढ़ता हुआ तनाव

## अध्याय 5: पहाड़ी उपदेश

धन्यवचन और राज्य के मूल्य  
व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की यीशु द्वारा पूर्ति  
आंतरिक धार्मिकता और हृदय का परिवर्तन  
धार्मिकता का अभ्यास और राज्य की प्राथमिकताएँ

## अध्याय 6: यीशु के दृष्टांत

यीशु ने दृष्टांतों में क्यों सिखाया  
परमेश्वर के राज्य के बारे में प्रमुख दृष्टांत  
अनुग्रह, करुणा, और उद्धार के दृष्टांत  
चेतावनी, उत्तरदायित्व, और न्याय के दृष्टांत

## अध्याय 7: यीशु के चमत्कार

चंगाई के चमत्कार और करुणामय सेवकाई  
उद्धार के चमत्कार और अंधकार पर अधिकार  
प्रकृति के चमत्कार और दैवी सामर्थ्य  
पुनरुत्थान के चमत्कार और जीवन की शक्ति

## अध्याय 8: चेलाई और मिशन पर यीशु की शिक्षाएँ

यीशु का अनुसरण करने की बुलाहट  
चेलाई की कीमत  
राज्य के चरित्र का निर्माण  
चेलों का मिशन

## अध्याय 9: अंतिम सप्ताह

विजयी प्रवेश और मसीहाई घोषणा  
मंदिर की शुद्धि  
शिक्षा, संघर्ष, और अंतिम भोज  
अंतिम भोज और नया वाचा

## अध्याय 10: यीशु का दुःख, मृत्यु, और पुनरुत्थान

गतसमनी में पीड़ा

यीशु की गिरफ्तारी और मुकदमे

यीशु का क्रूसारोपण और मृत्यु

यीशु का दफनाया जाना और पुनरुत्थान

उपसंहार

शुद्धावली

## परिचय

यीशु मसीह मसीही विश्वास के केंद्र में स्थित हैं, फिर भी अनेक विश्वासी चुपचाप इस बात की अधूरी या अस्पष्ट समझ रखते हैं कि वह वास्तव में कौन हैं हम उनका नाम जानते हैं, उनके वचनों को उद्धृत करते हैं, और उनके उदाहरण की प्रशंसा भी करते हैं, फिर भी यह चूक सकते हैं कि वह क्यों आए और उनका अनुसरण वास्तव में क्या मांग करता है यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जब यीशु के बारे में हमारी समझ धुंधली होती है, तो हमारा विश्वास अक्सर सतही हो जाता है और संस्कृति द्वारा आसानी से आकार ले लेता है। यीशु के बारे में स्पष्टता सच्ची निष्ठा की ओर ले जाती है, और निष्ठा हमारे जीवन के हर पहलू को आकार देती है।

यीशु को सही रूप में जानना केवल पास्टर्स, विद्वानों, या धर्मशास्त्रियों के लिए आरक्षित नहीं है। यह हर उस विश्वासी के लिए आवश्यक है जो उनके नाम का दावा करता है। पवित्रशास्त्र लगातार आत्मिक वृद्धि को मसीह को सच में जानने से जोड़ता है, न कि केवल उनके बारे में तथ्यों को जानने से। जब विश्वासी यीशु के अधिकार, करुणा, और मिशन को लेकर अनिश्चित होते हैं, तो वे अक्सर उनकी आवाज़ को व्यक्तिगत पसंद, सांस्कृतिक दबाव, या परंपरा से बदल देते हैं। यीशु की एक स्पष्ट, बाइबल आधारित समझ विश्वास को स्थिर करती है, विकृति से बचाती है, और ऐसे चले तैयार करती है जो जीवन के कठिन होने पर भी विश्वासयोग्य बने रहते हैं।

आधुनिक कलीसिया पर लगातार यह दबाव रहता है कि वह यीशु को ऐसे रूप में ढाले जो अधिक सहज या अधिक प्रबंधनीय लगे कुछ लोग उनकी दयालुता को उजागर करते हैं लेकिन उनकी पवित्रता को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। अन्य उनके अधिकार पर जोर देते हैं लेकिन उनकी करुणा की उपेक्षा करते हैं। दोनों ही दृष्टिकोण हमें एक विकृत चित्र देते हैं। सुसमाचार एक ही, एकीकृत मसीह को प्रस्तुत करते हैं, जिनकी दया पवित्रता से बहती है और जिनका अधिकार पिता के प्रति आज्ञाकारिता के माध्यम से प्रकट होता है। पूरे यीशु को अपनाना हमें उस चयनात्मक विश्वास से बचाता है जो आसान बातों को स्वीकार करता है और महंगी बातों का चुपचाप विरोध करता है।

यीशु का एक स्पष्ट दृष्टिकोण विश्वासियों को दुःख, आज्ञाकारिता, और बलिदान को समझने में भी सहायता करता है। बहुत से लोग तब संघर्ष करते हैं जब विश्वास कठिन हो जाता है, क्योंकि उन्हें कभी यह नहीं सिखाया गया कि स्वयं यीशु ने अस्वीकार, टकराव, और पीड़ा से भरा मार्ग तय किया। जब कठिनाइयाँ आती हैं, तो केवल आराम पर आधारित विश्वास अक्सर डगमगा जाता है। यीशु को स्पष्ट रूप से देखना हमें याद दिलाता है कि पीड़ा इस बात का प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है, बल्कि अक्सर वही स्थान होता है जहाँ विश्वास और आज्ञाकारिता मजबूत होती है।

यीशु का जीवन इस बात को भी नया आकार देता है कि हम अधिकार को कैसे समझते हैं। एक ऐसी दुनिया में जो अधिकार को नियंत्रण, दृश्यता, या शक्ति से जोड़ती है, यीशु ऐसा अधिकार प्रकट करते हैं जो पिता के प्रति अधीनता और दूसरों की सेवा में निहित है। जब इसे गलत समझा जाता है, तो नेतृत्व मसीह-सदृश होने के बजाय कठोर या उदासीन बन

सकता है। यीशु को समझना विश्वासियों को अपने परिवारों, कलीसियाओं, और समुदायों का नेतृत्व विनम्रता, विश्वासयोग्यता, और देखभाल के साथ करने में सहायता करता है, ताकि वे व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बजाय परमेश्वर के हृदय को प्रतिबिंबित करें।

यीशु को सही रूप में समझना मिशन के लिए भी आवश्यक है। मिशन रणनीति या पसंद से शुरू नहीं होता, बल्कि इस बात से शुरू होता है कि यीशु कौन हैं। जब उन्हें केवल सहायक या उत्साहवर्धक के रूप में देखा जाता है, तो मिशन वैकल्पिक लगता है और आसानी से टल जाता है। लेकिन जब उन्हें राजा के रूप में पहचाना जाता है, तो मिशन आज्ञाकारिता और प्रेम की स्वाभाविक प्रतिक्रिया बन जाता है। जो विश्वासी यीशु की पहचान को समझते हैं, वे जानते हैं कि उनके जीवन और सत्य को साझा करना केवल कुछ लोगों के लिए नहीं है, बल्कि उनके प्रति निष्ठा से प्रवाहित होता है।

यह स्पष्टता आराधना को भी गहराई देती है। जब यीशु के साथ लापरवाही या भावुकता से व्यवहार किया जाता है, तो आराधना खोखली हो जाती है, क्योंकि श्रद्धा उनकी पवित्रता और अधिकार को पहचानने से उत्पन्न होती है। सुसमाचार दिखाते हैं कि जहाँ कहीं यीशु को सच में देखा जाता है, वहाँ आराधना उत्पन्न होती है, चाहे वह विस्मय, पश्चाताप, आज्ञाकारिता, या समर्पण के रूप में हो। जब विश्वासी यीशु को गहराई से जानते हैं, तो आराधना औपचारिकता के बजाय कृतज्ञता से आकार लेती हुई, हृदय से और अर्थपूर्ण बन जाती है।

अंततः यह पुस्तक इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यीशु का अनुसरण करने के लिए उन्हें वैसा ही जानना आवश्यक है।

जैसे वे वास्तव में हैं विलाई आत्मिक भाषा के साथ आत्म-सुधार नहीं है, बल्कि एक जीवित प्रभु के प्रति समर्पण का जीवन है जो हमारी निष्ठा की मांग करता है। क्लीसिया को यीशु का कोई अधिक सुविधाजनक या आरामदायक संस्करण नहीं चाहिए। उसे बाइबल के यीशु की आवश्यकता है जो उद्धार करते हैं, सामना करते हैं, पुनर्स्थापित करते हैं, और राज्य करते हैं। हर विश्वासी उस यीशु द्वारा आकार लिया जाता है जिस पर वह विश्वास करता है, और यह पुस्तक पाठकों को मसीह से स्पष्ट रूप से, विश्वासयोग्यता के साथ, और विनम्र आज्ञाकारिता में मिलने के लिए आमंत्रित करती है।

# अध्याय 1: वह संसार जिसमें यीशु आए

## परिचय

यीशु ने संसार में ठीक उसी समय कदम रखा जब समय पूरा हुआ, और सुसमाचार हमें सावधानी से याद दिलाते हैं कि उनका आगमन कोई निजी आध्यात्मिक विचार नहीं था, बल्कि वास्तविक इतिहास में घटित एक वास्तविक घटना थी। उनका जन्म उन लोगों के बीच हुआ जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से आकार पाए थे, विदेशी शासन से थक चुके थे, और उद्धार के लिए तरस रहे थे। यह संदर्भ महत्वपूर्ण है क्योंकि यीशु ने दूर से बोलकर बात नहीं की। उन्होंने परमेश्वर के राज्य की घोषणा रोज़मर्रा के संघर्ष, धार्मिक उलझन, और टूटे हुए जीवनों के बीचोंबीच की। सच में उनका अनुसरण करने के लिए हमें उस संसार को समझना होगा जिसने पहली बार उनकी आवाज़ सुनी और उनके अधिकार का अनुभव किया, क्योंकि वही राजा आज भी वास्तविक जीवन में लोगों से मिलता है।

यीशु एक ऐसी धार्मिक संस्कृति में भी आए जो पवित्रशास्त्र को जानती थी, परंपरा से प्रेम करती थी, और पवित्रता पर बहस करती थी, फिर भी अक्सर उस परमेश्वर को चूक जाती थी जिसे वे शास्त्र प्रकट करते थे। बहुत से लोग मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे, पर उनके भीतर उद्धार कैसा दिखना चाहिए और वह पहले किसे चुनौती दे, इस विषय में अलग अलग अपेक्षाएँ थीं। यीशु उन अपेक्षाओं के बीच आए, उन्हें शुद्ध किया, और उनके नीचे छिपी मूर्तियों को उजागर किया,

चाहे वे राजनीतिक शक्ति हों, सार्वजनिक प्रतिष्ठा हो, या स्वधार्मिक निश्चितता हो। जब हम उस संसार को देखते हैं जिसमें वह आए, तो हम बेहतर समझते हैं कि उनके वचन इतने तीखे क्यों थे और इतनी गहराई से चंगे क्यों करते थे।

## अनुभाग 1: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

यीशु रोमी शासन के अधीन इस्राएल में आए, उन दिनों में जब कैसर का अधिकार करो, यात्रा, और सार्वजनिक व्यवस्था को आकार देता था, जबकि स्थानीय शासक रोम को संतुष्ट रखने और लोगों को नियंत्रित करने की कोशिश करते थे। लूका उनके जन्म को एक साम्राज्यिक जनगणना के संदर्भ में रखता है, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर की योजना तब भी आगे बढ़ रही थी जब साम्राज्य ऐसा लगता था जैसे इतिहास लिखने वाली कलम उसी के हाथ में है (लूका 2:1-7, NIV)। यीशु के राज्य की घोषणा किसी शून्य में नहीं हुई, बल्कि ऐसे संसार में हुई जो मानता था कि असली शक्ति रोम से आती है, स्वर्ग से नहीं।

यीशु एक ऐसी संस्कृति में भी आए जहाँ परिवार, अर्थव्यवस्था, आराधना, और सम्मान गहराई से जुड़े हुए थे, और जहाँ लज्जा किसी व्यक्ति को उतनी ही प्रभावी तरह से अलग थलग कर सकती थी जितना गरीबी कर सकती थी। गाँव कृषि पर निर्भर थे, व्यापार मार्ग समाचार को तेजी से आगे ले जाते थे, और आराधनालय की सभाएँ सप्ताह दर सप्ताह समुदाय की पहचान गढ़ती थीं। ऐसे वातावरण में यीशु की करुणा कभी भावुकता नहीं थी, वह पवित्र दया थी जो लोगों को परमेश्वर और एक दूसरे के साथ फिर से जोड़ती थी।

उस सामाजिक ताने बाने को समझना हमें दिखाता है कि उनके चमत्कार, उनके भोजन, और उनके टकराव सार्वजनिक मोड़ कैसे बन गए।

## रोम की छाया और यीशु का अडिम अधिकार

यीशु ने रोम की उपस्थिति का सामना इस तरह किया कि उन्होंने कभी भी रोम को मानव जीवन पर अंतिम अधिकार नहीं माना, क्योंकि वह जानते थे कि पाप की कैद अधिक गहरी है। जब उनसे कर देने के विषय में पूछा गया, तो उन्होंने न तो कायर समझौता किया, न ही लापरवाह विद्रोह, बल्कि उन्होंने लोगों से माँगा कि वे परमेश्वर को वही दें जो परमेश्वर का है (मत्ती 22:15-22, NIV) जिस देश में सिक्कों पर कैसर की छवि छपी थी, वहाँ यीशु ने हृदयों को उस परमेश्वर की ओर मोड़ा जिसकी छवि हर व्यक्ति पर अंकित है, और उन्होंने यह स्थिर अधिकार के साथ किया।

यीशु की चेलाई आज भी उसी स्थिरता की मांग करती है, क्योंकि हर युग के अपने दबाव होते हैं जो अंतिम निष्ठा चाहते हैं। कुछ विश्वासी राजनीतिक क्रोध को पवित्र ठहराने के लिए प्रलोभित होते हैं, जबकि कुछ आराम बनाए रखने के लिए विश्वास को छिपाने के लिए प्रलोभित होते हैं, फिर भी यीशु अपने लोगों को पिता के प्रति निडर आज्ञाकारिता के लिए बुलाते हैं। उनका अधिकार हमें सिखाता है कि हम शासन संरचनाओं का सम्मान करें, पर उनकी आराधना न करें, और अन्याय का विरोध करें, पर उद्धार को मानवीय परियोजना न बना दें। वह वही राजा हैं जिन्हें साम्राज्य धमका नहीं सकते।

## हेरोदेस का भय और मसीह की उपस्थिति की कीमत

यीशु ऐसे क्षेत्र में आए जहाँ हेरोदेस का शासन संदेह और हिंसा से चिह्नित था, क्योंकि असुरक्षित नेता हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति को प्रतिस्पर्धा मानते हैं। भती लिखता है कि नवजात राजा की खबर से हेरोदेस घबरा गया, और उसका भय क्रूर कार्रवाई में बदल गया जब उसने उस खतरे को मिटाने की कोशिश की जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकता था (मत्ती 2:1-16, NIV)। शुरूआत से ही यीशु का आगमन उस अंधकार को उजागर करता था जो शक्ति से चिपका रहता है, और उनके अस्तित्व मात्र ने लोगों को अधीनता और आत्म संरक्षण के बीच चुनाव करने पर मजबूर किया।

यीशु आज भी वही विभाजन रेखा खींचते हैं, क्योंकि उनकी उपस्थिति हृदय की उस लालसा को चुनौती देती है जो हमेशा नियंत्रण में रहना चाहती है। हेरोदेस की कहानी चेतावनी देती है कि धार्मिक भाषा का उपयोग राजनीतिक गणना छिपाने के लिए किया जा सकता है, और भय सावधानी का रूप धारण कर सकता है। वास्तविक शिक्षा यह नहीं है कि हम निंदक बन जाएँ, बल्कि यह है कि हम स्पष्ट दृष्टि वाले बनें, क्योंकि मसीह का राज्य हर झूठे सिंहासन को चुनौती देगा, उस सिंहासन को भी जिसे हम अपने भीतर बनाते हैं। उनकी पवित्रता सुरक्षित नहीं है, पर वह उद्धारक है।

## **भाषा, शिक्षा, और यीशु के वचनों की पहुँच**

यीशु एक बहुभाषी संसार में आए जहाँ अरामी रोज़मर्रा की बातचीत को आकार देती थी, इब्रानी पवित्र प्रतिध्वनि लेकर चलती थी, और यूनानी व्यापार तथा व्यापक संवाद के लिए प्रयुक्त होती थी। यह भाषाई वास्तविकता महत्वपूर्ण थी क्योंकि यीशु की शिक्षा साधारण मजदूरों, शिक्षित शास्त्रियों, और व्यापार मार्गों से गुजरने वाले बाहरी लोगों ने भी सुनी,

और उनके वचन गाँव की सीमाओं के पार जल्दी फैल गए। लूका बताता है कि यीशु, बालक अवस्था में भी, मंदिर के आँगनों में शिक्षकों के साथ संवाद कर रहे थे, और प्रारंभ से ही वह बुद्धि और स्पष्टता प्रकट कर रहे थे जो बाद में भीड़ को चकित कर देती थी (लूका 2:46-52, NIV)।

यीशु का अधिकार कभी उच्च वर्गीय शिक्षा पर निर्भर नहीं था, फिर भी उसमें गहराई की कमी कभी नहीं थी, क्योंकि वह पिता को घनिष्ठ रूप से जानने वाले के रूप में बोलते थे। आज कलीसिया के लिए यह चुनौती है कि वह न तो बौद्धिक विरोधी घमंड को अपनाए, न ही अकादमिक अहंकार को, क्योंकि मसीह ऐसे चले बनाते हैं जो सत्य से प्रेम करते हैं और सरलता से बोलते हैं लक्ष्य प्रभावशाली शद्वावली नहीं है, बल्कि विश्वासयोग्य स्पष्टता है जो परमेश्वर के वचन को वास्तविक जीवनों तक पहुँचाती है। यीशु के वचन आज भी सांस्कृतिक सीमाएँ पार करते हैं, क्योंकि वे मानवीय फैशन पर नहीं, दैवी वास्तविकता पर आधारित हैं।

## **सम्मान, लज्जा, और पुनर्स्थापित करने वाली दया**

यीशु ऐसे समाज में आए जहाँ सम्मान सामाजिक मुद्रा था, और लज्जा किसी व्यक्ति को शहर के केंद्र के पास रहते हुए भी हाशिए पर धकेल सकती थी। बीमारी, गरीबी, और नैतिक विफलता पर अक्सर सार्वजनिक कलंक लगा होता था, और बहुतां का मानना था कि ऐसे बोझ परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रमाण हैं। यीशु ने उस तर्क का सीधे सामना तब किया जब उन्होंने लकवे के रोगी को क्षमा भी किया और चंगा भी किया, और भीड़ ने पहचाना कि परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा अधिकार दिया है (मत्ती 9:1-8, NIV)। उन्होंने केवल शरीर

नहीं सुधारे, बल्कि लोगों को परमेश्वर के साथ संगति में फिर से बहाल किया।

यीशु की दया आज भी पवित्र है, अर्थात् वह पाप को बहाना नहीं बनाती, पर पापियों को अलगाव और निराशा से अवश्य बचाती है। प्रास्तरीय सेवकाई को उस नमूने को सीखना होगा, क्योंकि लोग आज भी दबाने वाली लज्जा के नीचे जीते हैं, चाहे वे उसे सफलता के पीछे छिपा दें। भसीह केंद्रित देखभाल सत्य के साथ क्षमा बोलती है, क्रूरता के बिना पश्चाताप बुलाती है, और कलीसिया में अपनापन देकर गरिमा को फिर से खड़ा करती है। जब यीशु बहाल करते हैं, तो वह केवल राहत नहीं देते, वह परमेश्वर की मेज़ पर नया स्थान देते हैं।

## **दैनिक काम और चेलाई की पवित्र बुलाहट**

यीशु साधारण कामकाजी जीवन में आए, और उन्होंने शिष्यों को जाल, नाव, कर, और लंबी थकाने वाली दिनचर्या के बीच से चुना। उन्होंने सामाजिक रूप से प्रभावशाली लोगों की भर्ती करके शुरुआत नहीं की, बल्कि ऐसे लोगों को बुलाया जो थकान, जोखिम, और सीमित नियंत्रण की निराशा जानते थे। मरकुस उनकी मछुआरों को बुलाहट का वर्णन करता है, और यीशु ने चेलाई को एक रूपांतरित करने वाले मिशन के रूप में रखा, न कि आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए किसी शौक के रूप में (मरकुस 1:16-20, NIV)। उनका अधिकार उनके श्रम में उनसे मिला, और उनके बुलावे ने उनकी पहचान को नया आकार दिया।

यीशु आज भी लोगों को साधारण जीवन से असाधारण आज्ञाकारिता की ओर बुलाते हैं, फिर भी वह प्रायः उन्हें संसार

की जरूरतों और दबावों से निकालते नहीं। इसके बजाय, वह अपने अनुयायियों को ईमानदारी से काम करना, विश्वासयोग्यता से सेवा करना, और जीवन को सार्वजनिक तालियों के बजाय पिता की प्रसन्नता से मापना सिखाते हैं। चेलाई दैनिक जिम्मेदारियों को तुच्छ नहीं समझती, वह निष्ठा को पुनः व्यवस्थित करके उन्हें छुड़ाती है। जब यीशु बुलाते हैं, तो वह केवल धार्मिक गतिविधि नहीं जोड़ते, वह अपने प्रभुत्व के अधीन नया जीवन बढ़ते हैं।

## अनुभाग 2: यहूदी संप्रदाय और धार्मिक जीवन

यीशु एक अत्यंत धार्मिक परिदृश्य में आए जहाँ पवित्रशास्त्र का सम्मान था, आराधना की लयें स्थापित थीं, और पवित्रता पर बहस सार्वजनिक पहचान को आकार देती थी फिर भी आध्यात्मिक वातावरण विभाजित था, क्योंकि अलग अलग समूह विश्वासयोग्यता के प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते थे, जो अक्सर सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक रणनीति से जुड़े थे। यीशु ने उस टूटे हुए संसार को अधिकार के साथ संबोधित किया, आराधनालयों में शिक्षा दी, और बाहरी प्रदर्शन के पीछे छिपे हृदय को उजागर किया (मरकुस 1:21-28, NIV)। उनकी उपस्थिति ने दिखाया कि सच्ची पवित्रता परमेश्वर के साथ संगति से बहती है, दिखावे को संभालने से नहीं।

यीशु ऐसे लोगों के बीच भी आए जो परमेश्वर की छुड़ौती के लिए तरसते थे, पर अक्सर यह नियंत्रित करने की कोशिश करते थे कि वह छुड़ौती कैसी दिखे। कुछ कठोर परंपरा को प्राथमिकता देते थे, कुछ मंदिर के प्रभाव को, कुछ पवित्रता

समुदायों में अलग हो जाते थे, और कुछ हिंसक प्रतिरोध को अपनाते थे। यीशु ने न किसी गुट की चापलूसी की, न उनकी चिंताओं को अनदेखा किया, बल्कि उन्होंने पाप का सामना किया, पवित्रशास्त्र को पूरा किया, और परमेश्वर के राज्य को पिता की छुड़ौती के रूप में घोषित किया, न कि मानवीय उपलब्धि के रूप में। इन समूहों को समझना हमें दिखाता है कि यीशु ने तीव्र भक्ति भी खींची और तीव्र विरोध भी।

## फरीसी और धार्मिक नियंत्रण का प्रलोभन

यीशु ने फरीसियों से गंभीर शास्त्र विद्यार्थियों के रूप में संवाद किया, फिर भी उन्होंने उजागर किया कि भक्ति नियंत्रण का उपकरण बन सकती है जब हृदय नियम पालन के द्वारा सुरक्षा चाहता है। परंपरा के संघर्ष में यीशु ने परमेश्वर की आज्ञाओं से ऊपर मानवीय नियमों को उठाने पर डाँटा, और उन्होंने कहा कि सच्ची शुद्धता हृदय से शुरू होती है, सावधानी से प्रबंधित रीति रिवाजों से नहीं (मरकुस 7:6-13, NIV)। इनका अधिकार पवित्रता को अस्वीकार नहीं करता, बल्कि पाखंड से बचाकर उसे परमेश्वर की वास्तविक इच्छा की ओर मोड़ देता है।

यीशु का यह सामना आज भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि धार्मिक समुदाय चुपचाप उसी प्रलोभन की ओर बह सकते हैं, और विश्वासयोग्यता को विनम्र आज्ञाकारिता के बजाय दिखाई देने वाली अनुपालन से मापने लगते हैं। प्रास्तरीय नेतृत्व को ऐसी संस्कृति से सावधान रहना चाहिए जहाँ लोग प्रदर्शन के पीछे पाप छिपाते हैं और असुविधा को दोषबोध समझ बैठते हैं। मसीह केंद्रित चेलाई सिखाती है कि अनुग्रह पवित्रता को कमजोर नहीं करता, वह उसे स्थापित करता है, क्योंकि पिता हाथों से पहले हृदय बदलता है। यीशु अपने लोगों को ऐसी

धार्मिकता के लिए बुलाते हैं जो छवि बचाने पर नहीं, उन पर निर्भर होती है।

## सदूकी और आशा के बिना शक्ति का खतरा

यीशु ने सदूकियों का सामना किया जो मंदिर व्यवस्था के द्वारा प्रभाव रखते थे और अक्सर राजनीतिक स्थिरता के साथ अपने आप को जोड़ते थे, चाहे उससे आध्यात्मिक अपेक्षा मंद पड़ जाए। उनके धर्मशास्त्र ने पुनरुत्थान को अस्वीकार किया, और यीशु ने उन्हें परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर के वचन में आशा को आधार देकर सुधारा, न कि अभिजात मान्यताओं में (मत्ती 22:23-33, NIV)। उनके अधिकार ने उजागर किया कि आध्यात्मिक नेतृत्व खोखला हो सकता है जब वह प्रभु के भय से अधिक सत्ता की पहुँच से आकार लेता है।

यीशु का उत्तर किसी भी पीढ़ी के लिए चेतावनी बना रहता है जो संस्थागत सुरक्षा के लिए बाइबल की आशा को बेचने के लिए प्रलोभित होती है। जब नेता व्यवहार में पुनरुत्थान का इनकार करते हैं, चाहे सिद्धांत में नहीं, तो वे ऐसे व्यावहारिकपन की ओर बह जाते हैं जो मरते हुए को सांत्वना नहीं दे सकता और अन्याय का सामना साहस के साथ नहीं कर सकता। क्लीसिया को याद रखना चाहिए कि मसीही विश्वास कोई नैतिक कार्यक्रम नहीं है, वह जीवित परमेश्वर से आने वाला जीवन है, जो मसीह में सुरक्षित है और पुनरुत्थान के द्वारा प्रतिज्ञात है। यीशु केवल विचार नहीं देते, वह पिता की विश्वासयोग्यता में जड़ी हुई जीवित भविष्य देते हैं।

## आराधनालय जीवन और राज्य का सार्वजनिक वचन

यीशु नियमित रूप से आराधनालयों में शिक्षा देते थे, जो पवित्रशास्त्र पठन, प्रार्थना, और सामुदायिक गठन के स्थानीय केंद्र के रूप में कार्य करते थे। ये सभाएँ सप्ताह दर सप्ताह लोगों को आकार देती थीं, और एक ऐसे श्रोता वर्ग को तैयार करती थीं जो सुनने, प्रश्न करने, और उत्तर देने का अभ्यस्त था, जिससे यीशु की शिक्षा एक साथ सुलभ भी हुई और उकसाने वाली भी लूका लिखता है कि यीशु ने नासरत में यशायाह से पढ़ा और उसकी पूर्ति स्वयं में घोषित की, और इस प्रकार उन्होंने अपनी पहचान को इस्राएल की आशा के केंद्र में रखा (लूका 4:16-21, NIV)। उनका अधिकार अमूर्त नहीं था, वह एकत्रित आराधना के भीतर बोला गया।

यीशु का आराधनालय उपयोग कलीसिया को याद दिलाता है कि परमेश्वर चले सार्वजनिक प्रचार और साझा जीवन के द्वारा बनाता है, अलग थलग आध्यात्मिकता के द्वारा नहीं। परिपक्व विश्वास समुदाय में पवित्रशास्त्र पढ़े जाने, समझाए जाने, और लागू किए जाने से मजबूत होता है, और यह सब मसीह के प्रभुत्व के अधीन होता है फिर भी यीशु यह भी दिखाते हैं कि परिचय प्रतिरोध पैदा कर सकता है, क्योंकि लोग अक्सर उस सत्य को ठुकराते हैं जो उनकी धारणाओं को चुनौती देता है। प्रास्तरीय कार्य यह है कि वचन को केंद्र में रखा जाए, और पूर्ति को यीशु परिभाषित करें, न कि आराम व्याख्या को परिभाषित करें।

**एसेनी, अलगाव, और एकांत की सीमाएँ**

यीशु ऐसे संसार में आए जहाँ कुछ लोग पवित्रता को अलग होकर पाने की कोशिश करते थे, यह मानकर कि विश्वासयोभ्यता का मार्ग भ्रष्टता से दूरी है। यद्यपि सुसमाचार यीशु को एसेनी आंदोलन का भाग नहीं दिखाते, फिर भी अलग होने की सांस्कृतिक प्रवृत्ति पवित्रता की भूख और समझौता करने वाले नेतृत्व से निराशा को समझाने में सहायक है। यीशु ने अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना की कि वे बुराई से सुरक्षित रहें, पर संसार से निकाले न जाएँ, और इस प्रकार उन्होंने ऐसी पवित्रता प्रकट की जो भागती नहीं, बल्कि संलम्ब होती है (यूहन्ना 17:15-19, NIV)। उनका अधिकार लोगों को मिशन के लिए पवित्र करता है, छिपने के लिए नहीं।

यीशु का नमूना उन विश्वासियों से सीधे बोलता है जो सांस्कृतिक पतन से घृणा करके किसी सुरक्षित धार्मिक घेरे में लौट जाने के लिए प्रलोभित होते हैं। अनुशासित समुदाय और नैतिक गंभीरता का स्थान है, फिर भी मसीह अपने लोगों को पड़ोसियों को छोड़ने के लिए नहीं बुलाते। वह उन्हें सत्य, विनम्रता, और साहस के साथ भेजते हैं, क्योंकि उनकी पवित्रता सक्रिय प्रेम है, भयभीत अलगाव नहीं। तैलाई पाप का विरोध करना सीखती है, पर पापियों से बचना नहीं, क्योंकि यही वह तरीका है जिससे यीशु पिता का हृदय संसार में ले गए।

## **ज़ीलोट, हिंसा, और मसीहाई आशा का दुरुपयोग**

यीशु ऐसे वातावरण में आए जहाँ कुछ लोग मानते थे कि स्वतंत्रता बल से मिलेगी, और जहाँ उत्साह को विश्वासयोभ्यता समझ लेने का खतरा था। स्वतंत्रता की लालसा समझ में आने योग्य थी, पर प्रलोभन यह था कि मसीहा को हथियार बना दिया जाए और शत्रुओं को ही

वास्तविक समस्या मान लिया जाए यीशु ने उस दृष्टिकोण को अस्वीकार किया, शत्रुओं से प्रेम करने की शिक्षा दी, और अपने अनुयायियों को उस प्रतिशोधी प्रवृत्ति से दूर बुलाया जो संसार के क्रोध की नकल करती है (मती 5:43-48, NIV)। उनका अधिकार अन्याय को नकारता नहीं, पर घृणा के द्वारा उसका उद्धार करने से इंकार करता है।

यीशु का राज्य आज भी उस प्रलोभन का सामना करता है जो राजनीतिक जीत को आध्यात्मिक उद्धार मान लेता है और कठोरता को साहस कहकर उचित ठहराता है। प्रास्टरों और परिपक्व विश्वासियों को लोगों को ऐसी गहरी आशा में शिष्य बनाना चाहिए जो कष्ट सह सकती है, पर कड़वी नहीं होती, और जो न्याय खोज सकती है, पर दया खोती नहीं। मसीह केंद्रित परिपक्वता न कायरता चुनती है, न क्रूरता, क्योंकि यीशु पिता की पवित्रता को आत्म अर्पित आज्ञाकारिता के द्वारा प्रकट करते हैं। वह हिंसा से मेल खाकर नहीं, बल्कि भलाई के द्वारा बुराई पर जय पाते हैं, और वही मार्ग कलीसिया का मार्ग बना रहता है।

### अनुभाग 3: अंतरवर्ती काल के विकास

यीशु एक ऐसी कहानी में आए जो सदियों से विकसित हो रही थी, और जिसमें एक लंबा समय भी शामिल था जब इस्राएल विदेशी प्रभाव के अधीन रहा और दबाव के बीच अपनी पहचान से जूझता रहा। यद्यपि पुराने नियम की कथा समाप्त होती है, इतिहास नहीं रुकता, और लोग अपने पवित्रशास्त्र, अपने प्रभु, और परमेश्वर के हस्तक्षेप की लालसा को आगे लिए चलते रहे। पौलुस ने बाद में यीशु के आने को समय पूरा होने पर घटित बताया, और यह दिखाया कि यह दैवी समय निर्धारण था, कोई आकस्मिक परिस्थिति

नहीं (गलातियों 4:4-5, NIV) जिस संसार में यीशु आए, वह कठिनाई के माध्यम से भी, पुत्र के प्रकाशन के लिए तैयार किया जा रहा था।

यीशु ऐसे संदर्भ में भी आए जो सांस्कृतिक मिश्रण, राजनीतिक उथल पुथल, और मसीहा के बारे में बढ़ती अपेक्षाओं से आकार पाया था। यूनानी प्रभाव ने भाषा और शिक्षा को प्रभावित किया, और यहूदी समुदाय इस बात पर बहस करते थे कि दबाव के बीच विश्वासयोग्य कैसे रहा जाए। विद्रोह और शासन उठते गिरते रहे, और उन परिवर्तनों ने ऐसे छुड़ाने वाले की आशा को मजबूत किया जो अंततः धार्मिकता स्थापित करेगा। जब यीशु ने राज्य की घोषणा की, तो उन्होंने उस संचित इतिहास को संबोधित किया, झूठी अपेक्षाओं को सुधारा, और सच्ची प्रतिज्ञाओं को अपने व्यक्तित्व में पूरा किया।

## निर्वासन की स्मृति से मसीहाई लालसा तक

यीशु ऐसे लोगों में आए जो निर्वासन को दंड और शुद्धिकरण दोनों के रूप में याद करते थे, और उस स्मृति ने स्थायी पुनर्स्थापन की लालसा को तीव्र किया। भूमि में लौटने के बाद भी बहुतों को लगता था कि कुछ अभी भी अधूरा है, क्योंकि विदेशी प्रभुत्व जारी था और आध्यात्मिक समझौता बना रहने का खतरा था। यहून्ना बपतिस्मा देने वाले से भीड़ का प्रश्न दिखाता है कि मसीहाई अपेक्षा सक्रिय और खोजती हुई थी, क्योंकि वे सोचते थे कि शायद वह मसीह हैं (यूहन्ना 1:19-23, NIV)। यीशु उस लालसा के बीच आए, किसी पुराने छुड़ाने वाले की प्रतिध्वनि बनकर नहीं, बल्कि परमेश्वर के निर्णायक उत्तर के रूप में।

यीशु का आगमन दिखाता है कि परमेश्वर का उद्धार बाहरी दमन और आंतरिक विद्रोह दोनों को संबोधित करता है, और वह आंशिक मरम्मत पर संतुष्ट नहीं होता बहुत लोग चाहते हैं कि परमेश्वर परिस्थितियाँ ठीक कर दें, पर हृदय को अछूता छोड़ दें, फिर भी मसीह पापियों को पिता से मेल कराने और एक पवित्र लोगों को फिर से बनाने के लिए आते हैं प्रांतीय अनुप्रयोग यहीं से शुरू होता है, क्योंकि चेलाई को आराम की लालसा और परमेश्वर की लालसा में भेद करना सीखना चाहिए यीशु स्वयं को देकर आशा को पूरा करते हैं, और छुड़ौती को परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापन के रूप में परिभाषित करते हैं, किसी भी सांसारिक स्थिति के पुनर्स्थापन से पहले।

## हेलनिकीकरण और विश्वासयोग्यता को फिर से परिभाषित करने का दबाव

यीशु ऐसे संसार में आए जहाँ यूनानी सांस्कृतिक प्रभाव ने भाषा, दर्शन, और सामाजिक महत्वाकांक्षा के माध्यम से सार्वजनिक जीवन को नया आकार दिया था इस प्रभाव ने यहूदी पहचान को समायोजित करने का दबाव उत्पन्न किया, कभी खुली सतावट के द्वारा नहीं, बल्कि इस सूक्ष्म तरीके से कि क्या सम्मानजनक और आधुनिक लगता है नया नियम इस मिश्रित वातावरण को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ यूनानी भाषा व्यापक संवाद के लिए उपयोग होती थी, जबकि यहूदी समुदाय वाचा की विशिष्टता की रक्षा करते थे यूहन्ना यीशु का परिचय अनंत वचन के रूप में देता है जो देहधारी हुआ, और इस प्रकार वह हर संस्कृति के उस प्रयास को चुनौती देता है जो परमेश्वर को अपनी छवि में ढालना चाहती है (यूहन्ना 1:1-14, NIV)।

यीशु का अवतार प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रकार के दबावों को चुनौती देता है जो अपनापन पाने के लिए सत्य को नरम करना चाहते हैं परिपक्व चेलाई यह सीखती है कि सुसमाचार को लोगों की समझ की भाषा में बोला जाए, पर उस संदेश को छोड़ा न जाए जिसकी लोगों को आवश्यकता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि सांस्कृतिक स्वीकृति विश्वासयोभ्यता नहीं है, और समझौता अक्सर छोटे समायोजनों से शुरू होता है। यीशु संस्कृतियों में उन्हें छुड़ाने के लिए प्रवेश करते हैं, उनके द्वारा पुनर्बाँध होने के लिए नहीं, और उनका अधिकार विनम्रता तथा प्रेम के साथ अलग बने रहने का साहस देता है।

## मक्काबी विद्रोह और शक्ति के द्वारा महिमा पाने का आकर्षण

यीशु ऐसे देश में आए जहाँ वीर प्रतिरोध की स्मृतियाँ मनाई जाती थीं, और मक्काबी विरासत ने ऐसे मसीहा की आशा को आकार दिया जो शक्ति के द्वारा शत्रुओं को पराजित करेगा। उस इतिहास ने शक्ति और विजय के प्रति प्रशंसा बढ़ाई, और कष्ट को विश्वासयोभ्यता के बजाय विफलता जैसा बना दिया। फिर भी यीशु ने लगातार अपेक्षाओं को सेवा और बलिदान के द्वारा अपने मिशन का वर्णन करके मोड़ा, प्रभुत्व के द्वारा नहीं। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि मनुष्य का पुत्र सेवा लेने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपना प्राण फिरौती में देने आया है (मरकुस 10:45, NIV)।

यीशु की शिक्षा हर उस प्रवृत्ति को चुनौती देती है जो परमेश्वर के कार्य को दिखाई देने वाली जीत और त्वरित परिणामों से मापती है। क्लीसिया अक्सर प्रभाव, तालियाँ, और सांस्कृतिक पकड़ के पीछे दौड़ने के लिए प्रलोभित होती है,

मानो शक्ति ही सत्य का प्रमाण हो मसीह एक दूसरी प्रकार की महिमा प्रकट करते हैं, वह आज्ञाकारिता की महिमा है जो पिता पर भरोसा करती है, तब भी जब परिणाम कमजोर दिखें। पास्तरीय नेतृत्व को लोगों को विश्वासयोग्य धीरज में शिष्य बनाना चाहिए, क्योंकि यीशु का क्रूस आकार का अधिकार क्रूस आकार के लोगों को बनाता है। राज्य में शक्ति प्रेम से मापी जाती है, ऐसा प्रेम जो दबाव के नीचे भी पवित्र बना रहता है।

## स्थानीय शासकों का उदय और पतन, और सच्चे राजा की भूख

यीशु ऐसे राजनीतिक परिदृश्य में आए जो बदलते हुए शासकों से आकार पाया था, जो स्थिरता का वादा करते थे, पर अक्सर शोषण देते थे। स्थानीय नेतृत्व वास्तुकला में भव्य और नियंत्रण में निर्दयी हो सकता था, और साधारण लोगों ने सावधानी से जीना सीख लिया, बोलने और करने में चौकस रहकर। इस वातावरण में यीशु ने एक ऐसे राज्य की घोषणा की जो महलों के गठबंधनों पर निर्भर नहीं था, और उन्होंने यरुशलम में ऐसे प्रवेश किया जो पवित्रशास्त्र की पूर्ति करता था, पर सैन्य प्रदर्शन से इंकार करता था (मती 21:1-11, NIV)। उनके अधिकार ने दिखाया कि प्रदर्शनकारी शक्ति और धार्मिक राजत्व में कितना अंतर है।

यीशु आज भी उस आधुनिक भूख का सामना करते हैं जो ऐसे नेताओं को चाहती है जो मजबूत दिखें, पर आत्मिक रूप से खोखले हों। विश्वासी करिश्मे पर चरित्र से अधिक, और रणनीति पर पवित्रता से अधिक भरोसा करने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं, फिर भी मसीह पिता को विनम्र आज्ञाकारिता के द्वारा प्रकट करते हैं। पास्तरीय कार्य यह है कि

लोगों को सच्चे अधिकार को पहचानना सिखाया जाए, जो हमेशा सत्य और प्रेम से बंधा होता है। यीशु वह राजा हैं जो घमंडियों को प्रभावित करने नहीं, बल्कि नम्रों को बचाने के लिए आते हैं, और उनका शासन राजनीतिक अस्थिरता से भी आगे टिके रहने वाली भरोसे की ओर बुलाता है।

## भविष्यद्वाणी का मौन और परमेश्वर की प्रतीक्षा का अनुशासन

यीशु ऐसी पीढ़ियों के बाद आए जब बहुतां ने प्रतीक्षा का दर्द महसूस किया, मानो स्वर्ग शांत हो गया हो, जबकि समस्याएँ जोर से बोलती रहीं। इस प्रतीक्षा ने भूख भी पैदा की और झुंझलाहट भी, और इसने अनुमान, चिंता, और आत्मिक शॉर्टकट के लिए जगह बनाई। फिर भी पवित्रशास्त्र प्रतीक्षा को आशा को शुद्ध करने वाला अनुशासन प्रस्तुत करता है, क्योंकि परमेश्वर अपने समय में कार्य करते हैं, हमारे समय में नहीं। लूका शिमोन और हन्नाना को विश्वासयोग्य आराधक के रूप में दिखाता है जो परमेश्वर की सांतवना की प्रतीक्षा करते रहे, और उन्होंने यीशु को पूर्ति के रूप में पहचाना जब अन्य लोग उन्हें चूक गए (लूका 2:25-38, NIV)।

यीशु कलीसिया को धैर्य की बजाय विश्वास में प्रतीक्षा करना सिखाते हैं, क्योंकि जल्दबाज़ आशा अक्सर विकृत आशा बन जाती है। दबाव में विश्वासी नवीनता, त्वरित समाधान, या नाटकीय दावों को खोज सकते हैं, फिर भी मसीह पिता की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करके स्थिरता बनाते हैं। पास्टर्स को लोगों की मदद करनी चाहिए कि वे देखें, यदि प्रतीक्षा आराधना और आज्ञाकारिता में जड़ी हो, तो वह व्यर्थ समय नहीं है। यीशु ठीक सही समय पर आए, और उनका समय निर्धारण हमें आश्चर्य करता है कि परमेश्वर का प्रतीत

होने वाला मौन कभी त्याग नहीं होता, बल्कि अक्सर तैयारी होता है।

## अनुभाग 4: अवतार का धर्मशास्त्रीय महत्व

यीशु संसार में केवल परमेश्वर के एक संदेशवाहक के रूप में नहीं आए, बल्कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में मानव देह में आए, पूर्ण रूप से मानवता के साथ अपनी पहचान जोड़ते हुए भी दैवी पवित्रता को बनाए रखते हुए अवतार का अर्थ है कि अनंत पुत्र सच में मनुष्य बना, हमारे स्वभाव को अपनाकर हमें हमारी ही स्थिति के भीतर से छुड़ाने के लिए, दूर से बचाने के लिए नहीं। मती विशेष रूप से उनके जन्म को यशायाह की प्रतिज्ञा से जोड़ता है, और घोषित करता है कि यीशु इम्मानुएल हैं, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ (मती 1:22-23, NIV)। यह कोई भावुक निकटता नहीं है, यह उद्धारक उपस्थिति है जो सब कुछ बदल देती है।

यीशु का अवतार उनके अधिकार की नींव भी स्थापित करता है, क्योंकि वह किसी भविष्यद्वक्ता की तरह बोलते नहीं जो परमेश्वर की इच्छा का अनुमान लगाए, बल्कि पुत्र के रूप में बोलते हैं जो पिता को प्रकट करता है। उनके जीवन में हम परमेश्वर के चरित्र को क्रिया में देखते हैं, जिसमें ऐसी पवित्रता है जो समझौता नहीं करती, और ऐसी करुणा है जो पाप को बढ़ावा नहीं देती। धर्मशास्त्रीय रूप से, अवतार प्रायश्चित्त को आधार देता है, अर्थात् पापियों को परमेश्वर से मेल कराने के लिए मसीह का उद्धारक कार्य, जो उनके आज्ञाकारी जीवन और बलिदानी मृत्यु के द्वारा पूरा हुआ। यदि यीशु सच में परमेश्वर और सच में मनुष्य नहीं हैं, तो सुसमाचार या तो

किंवदंती बन जाता है या नैतिक सलाह, और दोनों ही उद्धार नहीं कर सकते।

## परमेश्वर हमारे साथ, और दूरस्थ धर्म का अंत

यीशु परमेश्वर हमारे साथ होकर संसार में आए, जिसका अर्थ है कि जीवित परमेश्वर केवल चर्चा का विषय नहीं, बल्कि मसीह के व्यक्तित्व में अनुभव का विषय हैं। भती के शुरुआती अध्याय यीशु की पहचान को परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा की पूर्ति के रूप में रखते हैं कि वह अपने लोगों के साथ वास करेगा, और यह उपस्थिति हर उस धार्मिक प्रयास को चुनौती देती है जो परमेश्वर को सुरक्षित दूरी पर रखना चाहता है। जब स्वर्गदूत ने उनका नाम इम्मानुएल रखा, तो उद्देश्य काव्यात्मक सांत्वना नहीं, बल्कि यह घोषणा थी कि परमेश्वर वाचा की विश्वासयोग्यता में निकट आ गया है (मती 1:22-23, NIV)। यीशु का अधिकार उनकी पहचान पर आधारित है, उधार लिए हुए प्रमाणपत्रों पर नहीं।

यीशु की उपस्थिति आज भी उस दूरस्थ, अलग थलग आध्यात्मिकता को सुधारती है जो विश्वास को संगति के बजाय जानकारी मानती है। परिपक्व चेलाई परमेश्वर को प्रबंधित करना सीखना नहीं, बल्कि मसीह के द्वारा, श्रद्धा और भरोसे के साथ, उसमें बने रहना सीखना है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे धार्मिक आदत से संबंधपरक आज्ञाकारिता की ओर बढ़ें, क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ होने का अर्थ है कि हम मसीही विश्वास को केवल रीति रिवाजों तक सीमित नहीं कर सकते। यीशु ऐसी निकटता लाते हैं जो पवित्र करती है, और वही निकटता ईमानदार पश्चाताप, गहरी आराधना, और व्यक्तित्व तथा स्थायी चेलाई की बुलाहट देती है।

## यीशु की सच्ची मानवता, और हमारे उद्धार की गरिमा

यीशु संसार में सच में मानवीय जीवन अपनाकर आए, जिसमें बढ़ना, थकान, भूख, और पाप रहित मानवीय अनुभव का पूरा विस्तार शामिल था। सुसमाचार उनकी मानवता को किसी अभिनय जैसी पोशाक नहीं मानते, और लूका का वर्णन यह जोर देता है कि वह बुद्धि और कद में बढ़ते गए, पिता की देखभाल में वास्तविक जीवन जीते हुए (लूका 2:46-52, NIV)। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि उद्धार यह नहीं है कि परमेश्वर निकट होने का नाटक करे, बल्कि यह है कि परमेश्वर हमारी स्थिति में प्रवेश करके उसे भीतर से चंगा करे। यीशु के अधिकार में वह अधिकार भी शामिल है जो हमारी मानवता में जी गई पूर्ण आज्ञाकारिता से आता है।

यीशु की सच्ची मानवता पीड़ा, परीक्षा, और कमजोरी के विषय में भी पास्तरीय रूप से बोलती है, क्योंकि चेले ऐसे उद्धारकर्ता का अनुसरण नहीं करते जो सहानुभूति नहीं रख सकता फिर भी मसीह में सहानुभूति कभी यह अनुमति नहीं देती कि हम वैसे ही बने रहें, क्योंकि वह बहाना बनाकर नहीं, बल्कि रूपांतरित करके छुड़ते हैं। कलीसिया को दोनों सत्य एक साथ पकड़कर रखना चाहिए, कि यीशु मानव दुर्बलता को समझते हैं, और यीशु अपनी कृपा के द्वारा मनुष्यों को पवित्रता में बुलाते हैं। क्योंकि वह सच में मनुष्य बने, हमारे जीवन, हमारे शरीर, और हमारे चुनाव महत्वपूर्ण हैं, और चेलाई देहधारी आज्ञाकारिता बन जाती है, केवल अमूर्त विश्वास प्रणाली नहीं।

**यीशु की सच्ची ईश्वरता, और उद्धार करने वाला अधिकार**

यीशु संसार में अनंत पुत्र के रूप में आए, और यूहन्ना का सुसमाचार उनके सांसारिक जीवन का वर्णन करने से पहले उनकी दैवी पहचान घोषित करता है। यूहन्ना कहता है कि वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था, और यही वचन देहधारी हुआ, अर्थात् यीशु कोई सृजित सहायक नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर प्रकट हुए हैं (यूहन्ना 1:1-14, NIV)। इसी कारण यीशु पापों को क्षमा कर सकते हैं, आँधियों को शांत कर सकते हैं, और अशुद्ध आत्माओं को अंतिम अधिकार के साथ आज्ञा दे सकते हैं, क्योंकि वह केवल परमेश्वर की सामर्थ्य की ओर संकेत नहीं करते, वह उसे धारण करते हैं। उनका अधिकार दावा किया हुआ नहीं, स्वभावगत है।

यीशु की ईश्वरता कलीसिया को इस बात से भी बचाती है कि हम उन्हें केवल नैतिक शिक्षक बना दें जिनका मुख्य मूल्य प्रेरक उदाहरण तक सीमित हो वह प्रभु हैं, और उनकी आज्ञाएँ आत्मिक सुधार के लिए वैकल्पिक सुझाव नहीं, बल्कि सृष्टिकर्ता और छुड़ाने वाले के न्यायसंगत दावे हैं। पास्टर्स को विधासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें, यीशु पर भरोसा प्रशंसा नहीं, समर्पण है, क्योंकि जो बोलता है वह परमेश्वर का पुत्र है फिर भी उनकी ईश्वरता ठंडी प्रभुता नहीं है, क्योंकि जो परमेश्वर राज्य करता है वही परमेश्वर आया, वही सेवा की, और वही पवित्र प्रेम के साथ उद्धार करता है।

## **अवतार और प्रायश्चित, क्रूस के लिए क्रिसमस क्यों आवश्यक है**

यीशु संसार में प्रायश्चित पूरा करने के लिए आए, अर्थात् पापियों को पिता से मेल कराने के लिए, अपने आज्ञाकारी जीवन और बलिदानी मृत्यु के द्वारा। अवतार आवश्यक है क्योंकि उद्धार के लिए एक सच्चा प्रतिनिधि चाहिए, एक

वास्तविक मनुष्य जो मानवता के स्थान पर खड़ा हो सके, और दैवी सामर्थ्य भी चाहिए, क्योंकि केवल परमेश्वर ही पाप का भार उठा सकता है और मृत्यु को पराजित कर सकता है। पौलुस समझता है कि परमेश्वर ने उस निष्पाप को हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरें (2 कुरिन्थियों 5:21, NIV) इसलिए यीशु का अधिकार उद्धारक अधिकार है, जो आत्म अर्पित आज्ञाकारिता के द्वारा प्रकट होता है।

यीशु का प्रायश्चित मिशन चेलाई को आत्म सुधार बनने से रोकता है, क्योंकि सुसमाचार की शुरुआत इस बात से होती है कि मसीह ने क्या किया है, न कि हम क्या कर सकते हैं। पास्तरीय अनुप्रयोग को बार बार क्रूस की ओर लौटना चाहिए, क्योंकि जो विश्वासी प्रायश्चित को भूल जाते हैं, वे या तो घमंड में या निराशा में बह जाते हैं। यीशु हमारे अपराध उठाने, हमारे विवेक को शुद्ध करने, और हमारे दत्तकपन को सुनिश्चित करने के लिए हमारे संसार में आए, और वही कार्य कृतज्ञता से प्रेरित आज्ञाकारिता उत्पन्न करता है। जब कलीसिया यह केंद्र खो देती है, तो वह नैतिकतावादी और थकी हुई बन जाती है, पर जब वह इसे पकड़े रहती है, तो वह पवित्र और आशावान बनती है, क्योंकि मसीह का पूरा किया हुआ कार्य विश्वासयोग्य जीवन को सहारा देता है।

## **देहधारी राजा और वह राज्य जो सब कुछ पुनः व्यवस्थित करता है**

यीशु संसार में परमेश्वर के राज्य की घोषणा करते हुए आए, अर्थात् राजा स्वयं के द्वारा इतिहास में परमेश्वर का शासन प्रवेश कर रहा था। राज्य केवल भविष्य का स्थान नहीं है, वह परमेश्वर का सक्रिय शासन है जो पश्चात्ताप, विश्वास, और

यीशु के प्रति जीवन भर की निष्ठा की मांग करता है। मरकुस यीशु की प्रारंभिक घोषणा का सार बताता है, कि समय पूरा हो गया है और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, और वह लोगों को बुलाते हैं कि वे पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें (मरकुस 1:14-15, NIV)। उनका अधिकार उस राजा का अधिकार है जो परमेश्वर के शासन को हृदयों, घरों, और समुदायों पर लागू करता है।

यीशु का राज्य हर उस पहचान चिन्ह को पुनः व्यवस्थित करता है जिसे लोग सुरक्षित रखना चाहते हैं, जिसमें प्रतिष्ठा, जातीयता, उपलब्धि, और आराम शामिल हैं। परिपक्व चेलाई यह सीखती है कि यीशु के प्रति निष्ठा प्राथमिकताओं, संबंधों, और समय के उपयोग को नया आकार देती है, क्योंकि राजा पूरे व्यक्ति पर दावा करते हैं। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें, राज्य का जीवन केवल कलीसिया की गतिविधियों तक सीमित नहीं, वह पेशा, पारिवारिक जीवन, और सार्वजनिक गवाही को भी रूपांतरित करता है। यीशु संसार में ऐसे लोगों को स्थापित करने आए जो पवित्र करुणा, सत्यपूर्ण वाणी, और बलिदान की सेवा के द्वारा उनके शासन को दर्शाएँ, और कलीसिया तब विश्वसनीय बनती है जब वह ऐसे जीती है जैसे राजा सच में उपस्थित हैं।

## अपने विशिष्ट संदर्भ में इस सामग्री को लागू करने के तीन तरीके

सुसमाचारों को ठोस इतिहास के रूप में पढ़ने के लिए दूसरों का नेतृत्व करें

यीशु एक वास्तविक संसार में आए, और हमें विश्वासियों को यह सिखाना चाहिए कि वे सुसमाचारों को स्थान, लोगों, और उद्देश्य पर ध्यान देकर पढ़ें, क्योंकि ये विवरण विश्वास को धुंधला होने से बचाते हैं। लूका अपने सुसमाचार को सावधानी से जाँची गई कथा के रूप में प्रस्तुत करता है, ताकि निश्चितता मिले, जिसका अर्थ है कि मसीह केंद्रित शिक्षा को पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक बनावट का सम्मान करना चाहिए, उसे नारों में समतल नहीं करना चाहिए (लूका 1:1-4, NIV)। जब नेता सावधानी से पढ़ने का नमूना देते हैं, तो कलीसियाएँ यीशु के अधिकार पर वास्तविकता में जड़े हुए सत्य के रूप में भरोसा करना सीखती हैं, केवल धार्मिक भावना के रूप में नहीं।

यहाँ यीशु केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि अपने लोगों को इस तरह प्रशिक्षित करें कि वे मसीह के कार्यों को उनके अर्थ से जोड़ें, ताकि सिद्धांत कथा से उगे, असंबद्ध शब्दों की तरह न तैरे वयस्कों को प्रेरित करें कि वे शासकों, स्थानों, संघर्षों, और श्रोताओं को देखें, फिर पूछें कि हर दृश्य में यीशु पिता के बारे में क्या प्रकट करते हैं। यह तरीका चेलाई को मजबूत करता है क्योंकि यह ऐसे विश्वासियों को बनाता है जो संदेह, पीड़ा, और सांस्कृतिक दबाव के सामने जानकारी आधारित विश्वास के साथ टिक सकते हैं। यीशु इतिहास में उद्धार करने आए, और सावधानी से पढ़ना कलीसिया को उन्हें आत्मविश्वास, स्पष्टता, और श्रद्धा के साथ घोषित करने में सहायता करता है।

**नियंत्रण और समझौते, इन दोहरे प्रलोभनों के विरुद्ध शिष्य बनाइए**

यीशु एक विभाजित धार्मिक वातावरण में आए, और अनेक समूह पवित्रता को नियंत्रण से सुरक्षित करना चाहते थे, या शांति को समझौते से सुरक्षित करना चाहते थे। वही दबाव आज भी कलीसियाओं को आकार देता है, जहाँ कुछ लोग कठोर नियम गढ़ने की ओर झुकते हैं, और कुछ लोग टकराव से बचने के लिए सत्य को नरम करने की ओर झुकते हैं। यीशु चेतावनी देते हैं कि संसार को पा लेना और आत्मा को खो देना भयानक सौदा है, और वह अपने अनुयायियों को बुलाते हैं कि वे मनुष्यों की स्वीकृति से अधिक परमेश्वर का भय मानें (मरकुस 8:36-37, NIV)। इसलिए पास्तरीय नेतृत्व को ऐसे विश्वास बनाने चाहिए जो विनम्र, बाइबल आधारित, और दबाव में भी स्थिर रहें।

यीशु केंद्रित सेवकाई लोगों को शर्मिंदा करके अनुपालन नहीं कराती, और वह लोगों को आराम देकर चापलूसी भी नहीं करती, क्योंकि मसीह सत्य और अनुग्रह दोनों के साथ नेतृत्व करते हैं। वयस्कों को यह जाँचने में सहायता करें कि उनका उत्साह परमेश्वर के प्रेम से जड़ित है या नियंत्रण के प्रेम से, और उनकी लचीलापन करुणा से जड़ा है या अस्वीकार के भय से। नक्ष्य न तो झगड़ालू कलीसिया है, न कायर कलीसिया, बल्कि विश्वासयोग्य कलीसिया है जो यीशु के सम्मान दिखे, पवित्रता में साहसी और दया में कोमल। जब मसीह केंद्र में होते हैं, तो नियंत्रण और समझौता, दोनों अपना आकर्षण खो देते हैं।

## अवतार को आशा और पवित्रता की नींव के रूप में प्रचार करें

यीशु परमेश्वर हमारे साथ होकर हमारे संसार में आए, और उस सत्य को सांत्वना और परिवर्तन, दोनों की नींव के रूप

में प्रचारित किया जाना चाहिए। जब लोग पीड़ित होते हैं, तो उन्हें केवल सलाह नहीं चाहिए, उन्हें यह आश्वासन चाहिए कि परमेश्वर मसीह में निकट आया है और पाप को स्वीकृति दिए बिना मानवीय कमजोरी को समझता है। इब्रानियों की पुस्तक घोषित करती है कि हमारे पास ऐसा महायाजक है जो हमारी दुर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति रख सकता है, और वह हमें बुलाती है कि हम अनुग्रह के सिंहासन के पास हियाव से जाएँ (इब्रानियों 4:15-16, NIV)। यही अवतार का पास्तरीय अनुप्रयोग है, ऐसी निकटता जो थके हुए शिष्यों को मजबूत करती है।

यीशु केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ यह भी है कि पवित्रता संभव है क्योंकि मसीह आए हैं, न कि इसलिए कि विश्वासी स्वभाव से मजबूत हैं। अवतार आज्ञाकारिता का समर्थन करता है क्योंकि यीशु पिता को प्रकट करते हैं, पूर्ण अधीनता का नमूना देते हैं, और अपने लोगों को अनुग्रह से अपने साथ एकता में जोड़ते हैं। अपने लोगों को प्रेरित करें कि वे पाप से लड़ें तो आराधना के साथ, लज्जा का विरोध करें तो सुसमाचार के सत्य के साथ, और परियववता का पीछा करें तो धीरज के साथ। जब कलीसिया देहधारी मसीह को बहुमूल्य मानती है, तो वह अधिक करुणामय भी बनती है और अधिक गंभीर भी, क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ होने से ऐसी दया निकलती है जो पवित्र है और ऐसी पवित्रता निकलती है जो मानवीय है।

## निष्कर्ष

यीशु एक ऐसे संसार में आए जो साम्राज्य, परंपरा, लालसा, और संघर्ष से आकार पाया था, और उनके आगमन ने उजागर किया कि वास्तव में मानव हृदयों पर क्या शासन

कर रहा था ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिवेश हमें उनकी सेवकाई के दाँव समझने में सहायता करता है, क्योंकि उनका अधिकार सार्वजनिक और विवादित स्थानों में प्रकट हुआ, सुरक्षित धार्मिक कोनों में नहीं। उन्होंने राजनीतिक भय का सामना बिना उसमें बंधे किया, धार्मिक घमंड को चुनौती दी बिना पवित्रता को छोड़े, और मानवीय पीड़ा से पिता की इच्छा में जड़ी करुणा के साथ मिले जिस संसार में वह आए, वह स्पष्ट करता है कि उनके वचन कुछ के लिए जीवन क्यों बने और दूसरों के लिए खतरा क्यों।

यीशु एक ऐसी कहानी में भी आए जो सदियों की अपेक्षा, निराशा, और अनुशासित प्रतीक्षा के द्वारा उनके लिए तैयार की जा रही थी, और उन्होंने उसे अवतार के द्वारा पूरा किया। परमेश्वर हमारे साथ कोई त्योहार का वाक्य नहीं है, वह वह धर्मशास्त्रीय केंद्र है जो सुसमाचार को एक साथ पकड़कर रखता है, क्योंकि उद्धार के लिए सच्चे परमेश्वर का सच्ची मानवता में निकट आना आवश्यक है। जब हम उस संसार को देखते हैं जिसमें यीशु आए, तो हम उन्हें किसी अमूर्त प्रतीक की तरह लेना छोड़ देते हैं, और हम उनके सामने जीवित प्रभु के रूप में झुकते हैं। क्लिसिया की चेलाई तब मजबूत होती है जब वह उस वास्तविकता में जड़ी होती है और उनके राज्य के द्वारा आकार पाती है।

## प्रश्न जिन पर विचार करना चाहिए

1. आप स्वयं को कहाँ राजनीतिक स्थिरता, सांस्कृतिक स्वीकृति, या धार्मिक नियंत्रण को यीशु के प्रति निष्ठा से अधिक तात्कालिक मानने के लिए प्रलोभित देखते हैं?

2. “सफल” मसीहा को क्या करना चाहिए, इस बारे में कौन सी अपेक्षा आज भी इस बात को आकार दे रही हो सकती है कि आप यीशु के मिशन का मूल्यांकन कैसे करते हैं?
3. यीशु के समय के धार्मिक गुटों को समझना उनकी सबसे तीखी टकराहटों और उनकी सबसे गहरी करुणा की व्याख्या करने में आपकी कैसे सहायता करता है?
4. अवतार आपके अपने शिष्यत्व में पीड़ा, कमजोरी, और यश्चाताप के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलता है?
5. जीवन के किस विशेष क्षेत्र में आपको ऐसे जीने की आवश्यकता है जैसे यीशु का राज्य सच में उपस्थित है और सच में अधिकारपूर्ण है?

# अध्याय 2: यीशु का जन्म और प्रारंभिक जीवन

## परिचय

यीशु इस संसार में ऐसे तरीके से आए जिसने पवित्रशास्त्र को पूरा भी किया और मानवीय अपेक्षाओं को ठेस भी पहुँचाई, क्योंकि जब बहुत से लोग प्रदर्शन चाहते थे, तब परमेश्वर ने नम्रता को चुना। जन्म कथाएँ क्रिसमस के आसपास की भावुक सजावट नहीं हैं, वे पहचान, अधिकार, और उद्धार के बारे में धर्मशास्त्रीय दावे हैं। सुसमाचार यीशु को प्रतिज्ञात मसीहा, सच्चा पुत्र, और न्यायसंगत राजा के रूप में प्रस्तुत करते हैं, फिर भी वे उन्हें चरनी में, खतरे के नीचे, और साधारण लोगों के बीच रखते हैं, जिनके जीवन किसी चमत्कार को गढ़ नहीं सकते थे। उनके प्रारंभिक वर्ष हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ्य अक्सर कमजोरी का वस्त्र पहनकर आती है।

यीशु का प्रारंभिक जीवन यह भी दिखाता है कि पिता तात्कालिक उपाय नहीं कर रहे थे, वह एक ऐसी योजना प्रकट कर रहे थे जो संगत, वाचा से आकार पाई हुई, और प्रेम में जड़ी हुई है। यीशु के प्रचार करने, चंगा करने, या धार्मिक नेताओं का सामना करने से पहले, उनका घोषणा किया जाना, जन्म लेना, सुरक्षित रखा जाना, और साधारण आज्ञाकारिता में बनना दिखाया जाता है, और हर कदम अर्थ से भरा है। यदि हम बहुत जल्दी सार्वजनिक सेवकाई पर पहुँच जाते हैं, तो हम यह चूक जाते हैं कि अवतार पूरे मिशन को कैसे स्थापित करता है, परमेश्वर का पुत्र सच में मनुष्य बनता

है, व्यवस्था के अधीन जीवन जीता है, और आज्ञाकारिता के उस मार्ग पर चलता है जो उद्धार में समाप्त होता है।

## अनुभाग 1: घोषणाएँ और जन्म कथाएँ

यीशु को देखा जाने से पहले उनकी घोषणा हुई, क्योंकि पिता चाहते थे कि उनकी पहचान विश्वास के द्वारा ग्रहण की जाए, अफवाह के द्वारा गढ़ी न जाए। लूका मरियम के लिए स्वर्गदूत की घोषणा को यीशु के राजत्व, उनकी दैवी पुत्रता, और उनके शासन की स्थायित्व के बारे में स्पष्ट प्रतिज्ञाओं के साथ दर्ज करता है, और पाठ हमें उनके जन्म को केवल प्रेरक इतिहास मानने नहीं देता (लूका 1:26–38, NIV)। पहले ही क्षण से, यीशु को प्रतिज्ञात राजा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो परमेश्वर की पहल से आता है, मानवीय महत्वाकांक्षा से नहीं।

यीशु वास्तविक असुरक्षा के भीतर भी जन्मे, इसलिए नहीं कि पिता में सामर्थ्य की कमी थी, बल्कि इसलिए कि पुत्र हमारी स्थिति में प्रवेश करके उद्धार करने आए, उससे बचकर नहीं। लूका यीशु के जन्म को साम्राज्यिक आदेश और स्थानीय कठिनाई के अधीन रखता है, और वह परिवेश की वास्तविकता तथा उस परमेश्वर की शांत व्यवस्था दोनों पर जोर देता है जो मानवीय अनुमति की आवश्यकता के बिना अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करता है (लूका 2:1–7, NIV)। इसलिए घोषणाएँ और जन्म कथाएँ चेलाई को सबसे बुनियादी स्तर पर सिखाती हैं, पिता अपना वचन निभाते हैं, और पुत्र अटल अधिकार के साथ नम्रता में आता है।

### स्वर्गदूत का वचन और पुत्र की पहचान

यीशु की घोषणा मरियम से ऐसे संदेश के साथ हुई जो वह क्या करेंगे, इस पर ध्यान देने से पहले वह कौन हैं, इस पर केंद्रित है, क्योंकि पहचान मिशन से पहले आती है। स्वर्गदूत घोषित करता है कि बालक को परमप्रधान का पुत्र कहा जाएगा, और वह दाऊद का सिंहासन प्राप्त करेगा, जो यीशु को वाचा की प्रतिज्ञा और राजकीय पूर्ति से सीधे जोड़ता है, और इसे नैतिक उदाहरण तक घटाया नहीं जा सकता (लूका 1:30-33, NIV)। इस घोषणा में यीशु को जन्मसिद्ध अधिकार के द्वारा राजा और दैवी कार्य के द्वारा पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, बाद की उपलब्धि के द्वारा नहीं।

इसलिए यीशु का अधिकार वयस्कता में कमाया हुआ नहीं है, वह उनके पास है क्योंकि वह पिता के भेजे हुए पुत्र हैं। मरियम की प्रतिक्रिया नियंत्रण के बजाय श्रद्धापूर्ण समर्पण का नमूना है, और यह उन परिपक्व विश्वासियों को चुनौती देती है जो परमेश्वर की इच्छा को अपनी शर्तों और समयरेखा पर चाहते हैं। प्रास्तरीय चलाई यहीं से शुरू होती है, जब मार्ग महंगा, अस्पष्ट, या सामाजिक रूप से जोखिम भरा लगे, तब भी पिता के वचन पर भरोसा करना सीखना। यीशु प्रतिज्ञात राजा हैं, और विश्वास उनकी कहानी पूरी तरह समझने से पहले ही उनकी पहचान के आगे झुक जाता है।

## यूसुफ की आज्ञाकारिता और प्रतिज्ञा की सुरक्षा

यीशु का प्रारंभिक जीवन यूसुफ के आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा सुरक्षित रखा गया, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर अक्सर सार्वजनिक पहचान के बजाय शांत धार्मिकता के द्वारा अपने मिशन को आगे बढ़ाते हैं। भती दर्ज करता है कि यूसुफ को स्वप्न में दिशा मिली, उसे कहा गया कि मरियम को पत्नी बनाने से न डरे, और उसे बालक का नाम यीशु रखने की

आज्ञा दी गई, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा (मती 1:20-21, NIV)। केंद्र यूसुफ का वीरत्व नहीं है, परमेश्वर की स्पष्टता है, और नाम स्वयं मिशन को केवल प्रेरणा में नहीं, उद्धार में जड़ देता है।

यीशु का उद्धारक उद्देश्य यह भी दिखाता है कि सबसे बड़ा खतरा कभी राजनीतिक असुविधा नहीं था, वह पाप और परमेश्वर से अलगाव था। यूसुफ की आज्ञाकारिता परिपक्व चेलाई का नमूना है जो प्रकाशन का उत्तर कार्य के साथ देती है, तब भी जब प्रतिष्ठा और आराम दाँव पर हों। प्रास्तरीय अनुप्रयोग के लिए यह उस प्रलोभन का सामना करता है जो जटिल परिस्थितियों में धार्मिकता को वैकल्पिक मानने लगता है। यीशु के सबसे आरंभिक कदम महँगी आज्ञाकारिता से घिरे थे, और कलीसिया को अपेक्षा करनी चाहिए कि मसीह के प्रति निष्ठा अक्सर व्यक्तिगत नियंत्रण के बजाय पिता की इच्छा चुनने की माँग करेगी।

## बेतलहम की नम्रता और स्वर्ग की घोषणा

यीशु बेतलहम में ऐसी परिस्थितियों में जन्मे जिन्होंने नम्रता को उभार दिया, और परमेश्वर ने उस नम्रता का उत्तर मानवीय तालियों से नहीं, स्वर्गीय घोषणा से दिया। लूका दर्ज करता है कि अतिथि कक्ष उपलब्ध न होने के कारण यीशु को चरनी में लिटाया गया, और यह परिवेश दिखाता है कि पुत्र विशेषाधिकार के बिना आया, फिर भी दैवी उद्देश्य में कोई कमी नहीं थी (लूका 2:6-7, NIV)। राजा बिना राजसी सुविधा के आया, और यह प्रकट करता है कि परमेश्वर का राज्य संसार की प्रतिष्ठा प्रणालियों से संचालित नहीं होता।

यीशु का जन्म कलीसिया को सिखाता है कि सच्ची महिमा को कैसे पहचाना जाए, क्योंकि परमेश्वर अपना महानतम कार्य अक्सर उन स्थानों में प्रकट करते हैं जिन्हें घमंडी लोग अनदेखा करते हैं। पास्तरीय नेतृत्व को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे उस धारणा से पश्चाताप करें कि परमेश्वर की कृपा हमेशा सहजता, सम्माननीयता, या सामाजिक प्रभाव जैसी दिखती है। अवतार हमारे मंच प्रेम का सामना करता है और हमें दैवी नम्रता के प्रति श्रद्धापूर्ण विस्मय में बुलाता है। यीशु वह प्रभु हैं जो नीचे झुकते हैं, और चेलाई तब बढ़ती है जब हम उसी को आदर देना सीखते हैं जिसे परमेश्वर आदर देते हैं, न कि जिसे संसार मनाता है।

## चरवाहे और दीनों के लिए सुसमाचार

यीशु के जन्म की पहली घोषणा चरवाहों को हुई, इसलिए नहीं कि चरवाहे प्रभावशाली थे, बल्कि इसलिए कि पिता उन लोगों तक शुभ समाचार पहुँचाना पसंद करते हैं जो जानते हैं कि उन्हें उसकी आवश्यकता है। लूका स्वर्गदूत का संदेश दर्ज करता है, जो सभी लोगों के लिए बड़े आनंद का शुभ समाचार घोषित करता है, और नवजात को मसीहा और प्रभु कहकर नामित करता है, जिसका अर्थ है कि जन्म कथा पहले से ही सुसमाचार सत्य का प्रचार कर रही है, केवल दृश्य का वर्णन नहीं (लूका 2:10-11, NIV)। चरवाहों को प्रकाशन में बुलाया जाता है, और बुलाहट स्वयं अनुग्रह के बारे में एक कथन है।

यीशु आज भी नम्रों, अनदेखों, और थके हुएों को इकट्ठा करते हैं, और यह नमूना उस घमंड को उजागर करता है जो अक्सर धार्मिक सम्माननीयता के भीतर छिपा रहता है। चरवाहे सामाजिक प्रभाव का लाभ नहीं उठा सकते थे, फिर भी वे प्रारंभिक गवाह बने, क्योंकि सुसमाचार प्रतिष्ठा के द्वारा

नहीं, साक्ष्य, आराधना, और आज्ञाकारिता के द्वारा फैलता है। पास्तरीय अनुप्रयोग के लिए यह कलीसिया को सांस्कृतिक विश्वसनीयता के बजाय विश्वासयोग्य घोषणा को महत्व देने के लिए प्रेरित करता है। ईशु प्रभु हैं, और उनके आगमन पर पहली सार्वजनिक प्रतिक्रिया साधारण लोगों की आराधना थी जिन्होंने हृदय उन्हें ग्रहण करने के लिए तैयार थे।

## मागी और वह राजा जिसकी खोज मूल्यवान है

ईशु ने शुरुआत से ही राष्ट्रों से आराधना खींची, यह दिखाते हुए कि उनका राजत्व कभी निजी, जनजातीय, या किसी एक सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं था। मत्ती दर्ज करता है कि पूर्व से मागी आए और यहूदियों के जन्मे राजा को खोजने लगे, और उनकी खोज आध्यात्मिक उदासीनता तथा आत्म संतुष्ट धार्मिकता दोनों का सामना करती है, क्योंकि बाहरी लोग दूर तक यात्रा करके उस का आदर करने आए जिसे अनेक भीतर वाले पहचान न सके (मत्ती 2:1-2, NIV)। उनका पीछा ज्योतिष का रोमानीकरण नहीं करता, वह परमेश्वर की संप्रभु क्षमता को उजागर करता है कि वह खोजने वालों को अपने पुत्र की ओर खींच सकता है।

ईशु आज भी वह राजा हैं जिन्हें महंगी भक्ति के साथ खोजना उचित है, क्योंकि सच्ची आराधना हमेशा हमें गतिमान करती है, वह हमें आरामदायक रूप से अपरिवर्तित नहीं छोड़ती। मागी की यात्रा परिचितपन की आलस्य को उजागर करती है, वह तरह जो सत्य को बार बार सुनती है, फिर भी समर्पण के साथ शायद ही उत्तर देती है। पास्तरीय चेलाई को उन विश्वासियों को चुनौती देनी चाहिए जो मसीह की शद्भावली जानते हैं, पर अपने जीवन को उनके प्रभुत्व के चारों ओर पुनः व्यवस्थित नहीं करते। ईशु केवल स्वीकार

किए जाने के लिए नहीं हैं, वह बहुमूल्य ठहराए जाने के लिए हैं, और राष्ट्रों की आरंभिक आराधना उनके उद्धारक शासन की वैश्विक पहुँच का पूर्व संकेत देती है।

## मंदिर में प्रस्तुति और प्रतिज्ञा की पहचान

यीशु को शिशु अवस्था में मंदिर में लाया गया, और परमेश्वर ने सुनिश्चित किया कि विश्वासयोग्य गवाह उन्हें पहचानें, यह पुष्टि करते हुए कि मसीहा इस्राएल की आशा के केंद्र में होना चाहिए। लूका दर्ज करता है कि शिमोन ने यीशु को अपनी बाँहों में लिया, परमेश्वर की स्तुति की, और घोषित किया कि उसने परमेश्वर का उद्धार देख लिया है, जो अवतार को पूर्ति में जड़ देता है और दिखाता है कि धीरज से प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं होती, जब वह आराधना में जड़ी हो (लूका 2:25-32, NIV)। यीशु को संभावना के रूप में नहीं, बल्कि देह में उपस्थित परमेश्वर के उद्धार के रूप में पहचाना जाता है।

यीशु की प्रस्तुति कलीसिया को यह भी सिखाती है कि उद्धार व्यक्तिगत भी है और सार्वजनिक भी, क्योंकि परमेश्वर का उद्धार मंदिर के आँगनों में प्रकट होता है, निजी आध्यात्मिकता में छिपा नहीं रहता। शिमोन के शत्रु परिपक्व पाठकों को याद दिलाते हैं कि मसीह राष्ट्रों के लिए ज्योति और इस्राएल की महिमा हैं, और चेलाई को दोनों को एक साथ थामना चाहिए, अनुग्रह की सार्वभौमिकता और वाचा की पूर्ति की विशिष्टता। प्रास्तरीय अनुप्रयोग विश्वासियों को मसीह का श्रद्धा के साथ उत्सव मनाने के लिए बुलाता है, क्योंकि जिसे हम आराधते हैं वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति है। यीशु को वे पहचानते हैं जो आशा में प्रशिक्षित हैं, और कलीसिया भी पवित्रशास्त्र तथा विश्वासयोग्य प्रतीक्षा के द्वारा उसी आशा में प्रशिक्षित होती है।

## अनुभाग 2: यीशु का बचपन और उनकी प्रारंभिक पहचान

यीशु के प्रारंभिक वर्षों को संयम के साथ प्रस्तुत किया गया है, इसलिए नहीं कि वे महत्वहीन हैं, बल्कि इसलिए कि सुसमाचार चाहते हैं कि हम उस आज्ञाकारिता के नमूने को देखें जो उनकी बाद की सेवकाई को आधार देता है। लूका यीशु की वृद्धि का सार इस प्रकार देता है कि वह बढ़ते गए और बलवान होते गए, और बुद्धि से परिपूर्ण थे, जिसका अर्थ है कि उनकी मानवता में वास्तविक विकास शामिल था, परिपक्वता का कोई मंचित प्रदर्शन नहीं (लूका 2:40, NIV)। पुत्र का बचपन हमें सिखाता है कि परमेश्वर का काम अक्सर शांत, विश्वासयोग्य, और स्थिर होता है, और पवित्रता समय के साथ आज्ञाकारिता के द्वारा बनती है।

यीशु की प्रारंभिक पहचान उन क्षणों के द्वारा भी उभरती है जहाँ उनके शत्रु पिता के उद्देश्यों के प्रति उनकी जागरूकता को प्रकट करते हैं, तब भी जब वह साधारण पारिवारिक लयों के भीतर रहते हैं। सुसमाचार निरंतरता और आश्चर्य दोनों दिखाते हैं, व्यवस्था तथा पारिवारिक जीवन के प्रति उनकी अधीनता में निरंतरता, और पिता के साथ उनके संबंध की स्पष्टता में आश्चर्य। यह चेलाई के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से विश्वासी आत्मिक गठन के बिना आत्मिक प्रभाव चाहते हैं, फिर भी यीशु का प्रारंभिक जीवन दिखाता है कि सार्वजनिक अधिकार निजी आज्ञाकारिता में जड़ा होता है। इसलिए कलीसिया को छिपी हुई विश्वासयोग्यता को महत्व देना चाहिए, क्योंकि स्वयं पुत्र ने उसे जिया।

**मिस्र को पलायन और परमेश्वर का संप्रभु संरक्षण**

यीशु के जीवन को लगभग तुरंत खतरा हुआ, और पिता ने उन्हें व्यवस्थित मार्गदर्शन के द्वारा सुरक्षित रखा, यह दिखाते हुए कि हिंसक भय से मिशन पटरी से नहीं उतरेगा। भती दर्ज करता है कि एक स्वर्गदूत ने यूसुफ को चेतावनी दी कि मिस्र भाग जाए, क्योंकि हेरोदेस बालक को मारने के लिए उसे खोजेगा, और परिवार का बच निकलना पवित्रशास्त्र को पूरा करता है, साथ ही उस अंधकार को उजागर करता है जो सच्चे राजत्व के विरुद्ध प्रतिक्रिया करता है (मती 2:13-15, NIV)। यीशु के प्रारंभिक वर्षों में खतरा, विस्थापन, और दैवी सुरक्षा शामिल हैं, और इनमें से कुछ भी आकस्मिक नहीं है।

यीशु का संरक्षण केवल ऐतिहासिक विवरण नहीं है, वह एक धर्मशास्त्रीय स्मरण है कि परमेश्वर की योजना दृढ़ है, तब भी जब बुराई निर्णायक प्रतीत होती है। प्रास्तरीय अनुप्रयोग को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे परमेश्वर के बारे में नाजुक दृष्टि को अस्वीकार करें, मानो पिता लगातार नियंत्रण खोने के जोखिम में हों। पुत्र का मिशन कठिनाई के माध्यम से आगे बढ़ा, और चेलों को कष्ट को इस बात का प्रमाण नहीं मानना चाहिए कि परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को छोड़ दिया है। यीशु को उनके उद्धारक कार्य को पूरा करने के लिए सुरक्षित रखा गया, और उनकी कलीसिया भरोसा कर सकती है कि जब आज्ञाकारिता महंगी हो और मार्ग अस्थिर लगे, तब भी पिता विश्वासयोग्य रहते हैं।

## नासरत और आज्ञाकारिता की साधारण मिट्टी

यीशु नासरत लौटे और कम सामाजिक प्रतिष्ठा वाले स्थान में रहे, यह सिखाते हुए कि पिता की योजना मानवीय पहचान पर निर्भर नहीं करती। भती बताता है कि नासरत में यीशु का बसना संक्षेप रूप में भविष्यदाणी की अपेक्षा को पूरा करता है,

और बात यह है कि परमेश्वर का मसीहा अभिजात शक्ति से नहीं, नम्रता से जुड़ा होगा (मत्ती 2:19-23, NIV) इसलिए यीशु की प्रारंभिक पहचान शांतता, धैर्य, और साधारण जीवन से चिह्नित है, तब भी जब उनकी बुलाहट असाधारण थी।

नासरत में यीशु के वर्ष कलीसिया की दृश्यता की लत का सामना करते हैं, क्योंकि अनेक विश्वासी मानते हैं कि विश्वासयोभ्यता हमेशा प्रभावशाली महसूस होनी चाहिए फिर भी पुत्र ने अपने सांसारिक जीवन का अधिकांश भाग छिपी हुई आज्ञाकारिता में बिताया, पारिवारिक जिम्मेदारियों का सम्मान करते हुए और दैनिक काम की सीमाओं के भीतर रहते हुए प्रास्तरीय चेलाई को वयस्कों को अदृश्य स्थानों में आज्ञाकारिता को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, क्योंकि मसीह सदृश परिपक्वता बहुत पहले बनती है, उससे पहले कि लोग उसे देखें। यीशु का अधिकार बाद में भीड़ों को चकित करता था, पर वह पिता की इच्छा के प्रति जीवन भर की विश्वासयोभ्य अधीनता में जड़ा था, तब भी जब वह इच्छा साधारण दिखती थी।

## बारह वर्ष की आयु में यरुशलम और पिता का घर

यीशु की प्रारंभिक पहचान तब स्पष्ट हो जाती है जब वह बारह वर्ष की आयु में मंदिर में रह जाते हैं, शिक्षकों के साथ सुनते भी हैं और प्रश्न भी करते हैं, और पिता के साथ अपने संबंध के प्रति गहरी जागरूकता प्रकट करते हैं। लूका दर्ज करता है कि यीशु ने कहा कि उन्हें अपने पिता के घर में होना ही था, और यह किशोर अवज्ञा नहीं है, बल्कि उनकी मसीहाई आत्म समझ का पहला स्पष्ट झरोखा है (लूका 2:41-49, NIV)। उन्हें

सच्चा मनुष्य भी दिखाया जाता है, सीखने में भाग लेते हुए, और विशिष्ट रूप से दैवी पुत्रता के प्रति जागरूक भी।

यीशु का कथन यह भी सिखाता है कि चेलाई में एक पवित्र अनिवार्यता होती है, क्योंकि पिता के प्रति प्रेम प्राथमिकताओं को आकार देता है और दैवी बाध्यता की भावना उत्पन्न करता है। प्रास्तरीय सेवकाई को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे स्वार्थी तात्कालिकता और आत्मा के द्वारा गड़ी हुई आवश्यकता में भेद कर सकें, क्योंकि यीशु पिता के उद्देश्यों से व्यवस्थित जीवन का नमूना देते हैं। फिर भी वही अंश दिखाता है कि बुलाहट की स्पष्टता विनम्रता को रद्द नहीं करती, क्योंकि यीशु अपने परिवार के संदर्भ में आदरपूर्ण बने रहते हैं। यीशु की पहचान पिता में स्थिर है, और कलीसिया स्थिरता सीखती है जब उसकी पहचान भी परिस्थिति या स्वीकृति में नहीं, मसीह में स्थिर होती है।

## घर में अधीनता और नम्रता की शक्ति

यीशु मरियम और यूसुफ के साथ लौटे और उनके अधीन रहे, यह दिखाते हुए कि सच्चा अधिकार वास्तविक अधीनता के साथ संगत है। लूका स्पष्ट रूप से कहता है कि मंदिर वाले प्रसंग के बाद भी यीशु उनके अधीन रहे, जिसका अर्थ है कि पुत्रता की जागरूकता ने घमंड उत्पन्न नहीं किया, बल्कि गहरी विनम्रता उत्पन्न की (लूका 2:51, NIV)। पुत्र ने पिता की आज्ञाकारिता के हिस्से के रूप में अपने सांसारिक माता पिता का आदर किया, और यह अधीनता आकस्मिक नहीं, उनके धर्मी जीवन का केंद्र है।

यीशु की अधीनता आधुनिक प्रवृत्ति को चुनौती देती है जो आत्मिक बुलाहट को साधारण जिम्मेदारियों की उपेक्षा का

औचित्य बना देती है। पास्टर्स को अक्सर वयस्कों को याद दिलाना पड़ता है कि पवित्रता नाटकीय दावों से नहीं, दैनिक कर्तव्यों में विश्वासयोग्यता से सिद्ध होती है, वाणी में, सत्यनिष्ठा में, और संबंधों में। यीशु ऐसी परिपक्वता का नमूना देते हैं जो प्रकाश की ओर दौड़ती नहीं, और उनका ढाँचा अधीरता तथा अधिकार भावना दोनों का सामना करता है। कलीसिया मसीह से सीखती है कि विनम्रता कमजोरी नहीं, वह अधिकार के अधीन शक्ति है, और वही भविष्य की फलवत्ता की मिट्टी बनती है।

## बुद्धि में वृद्धि और परमेश्वर की प्रत्यक्ष कृपा

यीशु बुद्धि, कद, और परमेश्वर तथा मनुष्यों के साथ अनुग्रह में बढ़ते गए, और यह सार कथन हमें उनकी मानवता को केवल प्रतीकात्मक मानने से बचाता है। लूका का वर्णन वास्तविक विकास, वास्तविक सामाजिक सहभागिता, और आज्ञाकारी जीवन के द्वारा प्रकट वास्तविक आत्मिक गठन पर जोर देता है (लूका 2:52, NIV)। अवतार का अर्थ है कि पुत्र मानव वृद्धि की लयों में प्रवेश करता है, कम दैवी बनने के लिए नहीं, बल्कि पिता की प्रसन्नता के अधीन उसे सिद्ध रूप से जीकर मानव जीवन को भीतर से छुड़ाने के लिए।

यीशु की वृद्धि कलीसिया को परिपक्वता के बारे में सोचने का तरीका भी सिखाती है, क्योंकि बाइबल की वृद्धि समग्र होती है, मन, चरित्र, संबंध, और भक्ति सभी को सम्मिलित करती हुई। पास्तरीय चेलाई को परिपक्वता की सतही परिभाषाओं का विरोध करना चाहिए जो आध्यात्मिकता को केवल भावना या ज्ञान से मापती हैं। यीशु एकीकृत विश्वासयोग्यता का नमूना देते हैं, बुद्धि जो कार्य में प्रकट होती है, भक्ति जो आज्ञाकारिता में प्रकट होती है, और ऐसा

अनुग्रह जो सार्वजनिक प्रदर्शन के बजाय परमेश्वर की स्वीकृति से आता है कलीसिया को मसीह सदृशता में बढ़ने के लिए बुलाया गया है, और यह पद याद दिलाता है कि वृद्धि अक्सर धीरे धीरे, स्थिर, और परमेश्वर की दृष्टि के अधीन साधारण विश्वासयोग्यता से गहराई से आकार पाती है।

## अनुभाग 3: यीशु का बपतिस्मा और पिता की सार्वजनिक पुष्टि

यीशु यरदन में इस पूर्ण जागरूकता के साथ उतरते हैं कि उनकी सार्वजनिक सेवकाई क्या माँगेगी, और वह दृश्यमान शक्ति के बजाय आज्ञाकारी नम्रता से शुरुआत करते हैं। मत्ती दर्ज करता है कि यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आए, और जब यूहन्ना हिचकिचाया, तब यीशु ने कहा, “हमें यही उचित है कि इस रीति से सब धर्म को पूरा करें” (मत्ती 3:13-15, NIV) निष्पाप पुत्र पानी में इसलिए नहीं उतरता कि उसे शुद्धि चाहिए, बल्कि इसलिए कि वह वहाँ खड़ा होना चाहता है जहाँ पश्चातापी लोग खड़े होते हैं, और पिता के प्रति खुली अधीनता में अपने उद्धारक कार्य की शुरुआत करना चाहता है।

यीशु का बपतिस्मा उनकी पहचान का सार्वजनिक उद्घाटन भी बन जाता है, क्योंकि स्वर्ग उनकी आज्ञाकारिता का उत्तर स्पष्टता और अधिकार के साथ देता है। पवित्रशास्त्र पिता के बोलने, आत्मा के उतरने, और पुत्र के विश्वासयोग्य तत्परता में खड़े होने को दिखाता है, और यह कलीसिया को चेलाई के लिए एक आधारभूत नमूना देता है जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से नहीं, मसीह से शुरु होता है। इस क्षण को ध्यान से पढ़ने पर हम देखते हैं कि यीशु पवित्रता को करुणा

से अलग नहीं करते, और वह मिशन को आज्ञाकारिता से अलग नहीं करते। राजा अपने शासन की शुरुआत सेवक के आसन को अपनाकर करता है, और वह आसन कमजोरी नहीं, उद्धारक शक्ति है।

## आज्ञाकारी पुत्र नदी में उतरता है

यीशु जानबूझकर यरदन के पास जाते हैं, और उनका पहला सार्वजनिक कार्य न कोई चमत्कार है, न कोई उपदेश, न धार्मिक नेताओं से कोई टकराव। मरकुस इसे सीधे कहता है, “उन दिनों यीशु गलील के नासरत से आया और यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया” (मरकुस 1:9, NIV)। यह सरलता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यीशु के उस जानबूझकर चुनाव को उजागर करती है कि वह नम्रता से शुरुआत करेंगे। वह पश्चाताप से जुड़ी जगह में प्रवेश करते हैं, इसलिए नहीं कि वह भीड़ के अपराध में सहभागी हैं, बल्कि इसलिए कि वह भीड़ का बोझ उठाएंगे।

यहाँ यीशु की आज्ञाकारिता परिपक्व विश्वासियों को सिखाती है कि सच्चा अधिकार अक्सर स्वतंत्रता के प्रदर्शन से नहीं, पिता के प्रति अधीनता से प्रकट होता है। अनेक लोग मानते हैं कि आत्मिक नेतृत्व देखा जाने, मजबूत दिखने, या प्रशंसित होने से शुरु होता है, फिर भी यीशु विश्वासयोग्यता से शुरु करते हैं। यह पास्तरीय रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि हम अक्सर असुरक्षा से सेवा करते हैं, स्वयं को सिद्ध करने की कोशिश करते हुए, जबकि मसीह पिता की इच्छा के आगे समर्पण से शुरुआत करते हैं। जब कलीसिया यीशु से शुरु करती है, तो वह तालियों के बजाय आज्ञाकारिता को, और छवि के बजाय विश्वासयोग्यता को महत्व देना सीखती है।

## धर्म को पूरा करना, धर्म का प्रदर्शन नहीं

यीशु अपने बपतिस्मा को ऐसे समझाते हैं जो कलीसिया को आज्ञाकारिता को नाटकीय संकेत मानने से बचाता है वह यूहन्ना से कहते हैं, “हमें यही उचित है कि इस रीति से सब धर्म को पूरा करें” (मत्ती 3:15, NIV) यहाँ धर्म केवल नियम पालन नहीं है, वह वाचा की विश्वासयोग्यता है, अर्थात् यीशु पिता की उद्धारक योजना के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के लिए स्वयं को समर्पित कर रहे हैं वह अपने स्थान को उस विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में ग्रहण कर रहे हैं जो पिता की योजना से हटे बिना क्रूस तक उद्धारक आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलेगा।

यीशु के शत्रु वयस्कों के एक सामान्य प्रलोभन का भी सामना करते हैं, वास्तविक आज्ञाकारिता के स्थान पर आध्यात्मिक दिखावा रख देना लोग धार्मिक भाषा, कलीसिया गतिविधि, और सार्वजनिक सेवकाई में कुशल हो सकते हैं, पर निजी जीवन में पिता की इच्छा को शांत रूप से ठुकरा सकते हैं मसीह धर्म को पदक नहीं मानते, और वह आध्यात्मिकता से अपनी प्रतिष्ठा का प्रबंधन नहीं करते वह आज्ञा मानते हैं क्योंकि पिता योग्य हैं, और क्योंकि मिशन इसकी माँग करता है पास्टर्स को स्पष्ट कहना चाहिए कि चेलाई प्रदर्शन नहीं, अधीनता है, और यीशु उसी अधीनता का नमूना शांत, स्थिर उद्देश्य के साथ देते हैं।

## आत्मा उतरता है और मसीह नियुक्त किए जाते हैं

यीशु के बपतिस्मा के बाद दैवी नियुक्ति का स्पष्ट चिन्ह आता है, यह जोर देते हुए कि उनकी सेवकाई परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य में आगे बढ़ेगी लूका दर्ज करता है कि

“पवित्र आत्मा कबूतर के समान देहधारी रूप में उस पर उतरा” (लूका 3:21–22, NIV) यह दृश्य मनोरंजन नहीं है, यह दैवी साक्ष्य है, पाठक को आश्चर्य करता हुआ कि यीशु प्रतिज्ञात मसीहा हैं जो अपने मिशन के लिए अभिषिक्त हैं। आत्मा की उपस्थिति मसीह के सार्वजनिक कार्य की शुरुआत को चिह्नित करती है, और यह संकेत देती है कि राज्य मानवीय रणनीति से नहीं, परमेश्वर की सामर्थ्य से आगे बढ़ेगा।

यीशु की नियुक्ति कलीसिया को उस आधुनिक आदत का विरोध करने में सहायता करती है जो सेवकाई को व्यक्तिगत, विषय, या तकनीक मान लेती है। परिपक्व विश्वासी अपने वरदानों, अपने अनुभव, या अपने प्रभाव पर भरोसा करने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं, विशेषकर जब सेवकाई की जिम्मेदारियाँ बढ़ती हैं। यीशु अलग तरह से शुरुआत करते हैं, क्योंकि वह निर्भरता चुनते हैं, और पिता इसे सार्वजनिक रूप से आत्मा भेजकर पुष्टि करते हैं। यह पास्टर्स को आत्मा पर निर्भर सेवकाई विकसित करने की शिक्षा देता है, जहाँ प्रार्थना, सत्य, और पवित्रता केंद्र में हों, और सफलता मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता से मापी जाए। जब हम यीशु को आत्मा प्राप्त करते देखते हैं, तो हमें याद आता है कि राज्य का कार्य हमेशा परमेश्वर का कार्य है।

## पिता बोलते हैं और पुत्र घोषित किए जाते हैं

यीशु ऐसी घोषणा प्राप्त करते हैं जो उनके किसी एक सार्वजनिक चमत्कार करने से पहले ही उनकी पहचान को स्थिर करती है, और यह उनके अधिकार को समझने के लिए निर्णायक है। पिता कहते हैं, “तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ” (मरकुस 1:11, NIV) यह सार्वजनिक पुष्टि यीशु को

प्रिय पुत्र के रूप में स्थापित करती है, इसलिए नहीं कि उन्होंने उपलब्धि के द्वारा प्रेम अर्जित किया, बल्कि इसलिए कि वह वह पुत्र हैं जिनमें पिता आनंद लेते हैं पिता की वाणी कलीसिया को स्पष्ट ढाँचा देती है, क्योंकि मसीह का मिशन सुरक्षित पुत्रता से बहता है, चिंतित प्रयत्न से नहीं।

यीशु की पुष्टि वास्तवीय रूप से चंगाई देने वाली है, क्योंकि बहुत से वयस्क ऐसे जीते हैं मानो उन्हें परिणाम, उत्पादकता, या आत्मिक प्रदर्शन के द्वारा स्वीकृति कमानी हो मसीह पहले पुष्टि प्राप्त करते हैं, फिर कठिनाई में प्रवेश करते हैं, जिसका अर्थ है कि दैवी प्रेम दबाव को हटाता नहीं, वह दबाव के भीतर आज्ञाकारिता को मजबूत करता है प्रास्टरों को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि वे अपनी पहचान को अपनी बदलती भावनाओं में नहीं, मसीह के पूरे किए हुए कार्य में स्थिर करें। पुत्र पर पिता की प्रसन्नता यह भी प्रकट करती है कि आज्ञाकारिता संबंधपरक है, लेन देन वाली नहीं। यीशु आज्ञा मानते हैं क्योंकि वह पिता से प्रेम करते हैं, और वही प्रेम उनके अधिकार और उनकी करुणा की नींव है।

**स्वर्ग खुलता है और आराधनापूर्ण विस्मय आरंभ होता है**

यीशु का बपतिस्मा केवल संक्रमण का क्षण नहीं है, वह श्रद्धापूर्ण विस्मय का आह्वान करने वाला क्षण है, क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी के बीच की सीमा खुली हुई दिखाई जाती है। मत्ती लिखता है, “उसी समय स्वर्ग खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और उस पर आते देखा” (मत्ती 3:16, NIV) प्रवित्रशास्त्र पाठक को यह समझने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है कि परमेश्वर इतिहास में निर्णायक रूप से कार्य कर रहे हैं, और उस कार्य का केंद्र

यीशु हैं स्वर्ग का खुलना देवी पहल का संकेत है, अर्थात् उद्धार परमेश्वर के उतरने से शुरू होता है, मनुष्यों के ऊपर चढ़ने से नहीं।

यीशु का बपतिस्मा कलीसिया को ऐसी आराधना में भी बुलाता है जो भावनात्मक आवेग के बजाय परमेश्वर के प्रकट सत्य से आकार पाती है। परियेव आराधना नवीनता पर नहीं, इस वास्तविकता पर निर्मित होती है कि परमेश्वर ने बोला है, परमेश्वर ने कार्य किया है, और परमेश्वर ने अपने पुत्र को प्रकट किया है। पास्टर्स को सभाओं की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें, आराधना मसीह की पहचान और मिशन का उत्तर है, केवल आध्यात्मिक मनोदशा नहीं। जब हम इस दृश्य को पढ़ते हैं, तो हमारे हृदय स्थिर होने चाहिए, क्योंकि परमेश्वर दूर नहीं हैं, और वह मौन नहीं हैं। वह उपस्थित हैं, वह बोलते हैं, वह अपनी आत्मा भेजते हैं, और वह अपने पुत्र को सार्वजनिक रूप से पहचानते हैं।

## अनुभाग 4: बपतिस्मा से जंगल तक, मसीह की सार्वजनिक सेवकाई की दहलीज़

यीशु यरदन पर इस तरह नहीं ठहरते मानो पिता की पुष्टि अपने आप में अंतिम लक्ष्य हो, क्योंकि उनकी सार्वजनिक सेवकाई तुरंत उद्देश्यपूर्ण गति के साथ आगे बढ़ती है। मत्ती दर्ज करता है, “तब यीशु आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया कि शैतान से परीक्षा पाए” (मत्ती 4:1, NIV)। यह एक वाक्य एक महत्वपूर्ण पुल बनाता है, क्योंकि यह दिखाता है कि जो आत्मा बपतिस्मा पर उतरता है, वही अब यीशु को परीक्षा के स्थान में ले जाता है। पुत्र को दंड नहीं दिया जा रहा,

उन्हें तैयार किया जा रहा है, और राजा पूरी आज्ञाकारिता के साथ संघर्ष में कदम रख रहा है।

पानी से जंगल की ओर यीशु की चाल कलीसिया को आत्मिक मील पत्थरों के बारे में सतही अपेक्षाओं से बचाती है। अनेक वयस्क मानते हैं कि आज्ञाकारिता तुरंत आराम, स्पष्टता, और सहजता उत्पन्न करेगी, फिर भी यीशु दैवी पुष्टि प्राप्त करके भी कठिनाई में प्रवेश करते हैं। षपतिस्मा और जंगल के बीच की दहलीज़ प्रकट करती है कि विश्वासयोग्य सेवकाई दबाव के अधीन आज्ञाकारिता से गढ़ी जाती है, बिना रुके स्थिरता से नहीं। पास्टर्स को विश्वासियों को तैयार करना चाहिए कि वे तनाव के मौसमों को ऐसे स्थान मानें जहाँ मसीह उन्हें आकार दे रहे हैं, क्योंकि यीशु स्वयं पहले उसी नमूने पर चले। प्रमेश्वर का पुत्र आत्मिक प्रतिरोध से आश्चर्यचकित नहीं होता, और वह उससे पीछे नहीं हटता।

## आत्मा के द्वारा कठिनाई में ले जाया गया

यीशु आत्मा के द्वारा ले जाए जाते हैं, अर्थात् जंगल कोई दुर्घटना नहीं है, और वह पिता की संप्रभु देखभाल के बाहर नहीं है। लूका कहता है, “यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटे और आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाए गए” (लूका 4:1, NIV)। पाठ आत्मा से परिपूर्ण होने को कठिनाई में आज्ञाकारिता से जोड़ता है, और यह कलीसिया को इस धारणा से बचाता है कि आत्मा के द्वारा संचालित जीवन हमेशा आरामदायक लगेगा। यीशु प्रिय पुत्र के रूप में आगे बढ़ते हैं, और उनका आज्ञाकारिता कठोर और एकांत परिवेश में भी स्थिर रहती है।

यीशु का उदाहरण विश्वासियों को कोमलता या विश्वास खोए बिना कठिनाई को नए ढंग से देखने की शिक्षा देता है। परिपक्व चले कभी कभी मान लेते हैं कि कष्ट यह सिद्ध करता है कि उन्होंने गलत कदम उठाया, फिर भी यीशु दिखाते हैं कि कष्ट आज्ञाकारिता के तुरंत बाद भी आ सकता है। पास्टरों को स्पष्ट कहना चाहिए कि आत्मा लोगों को ऐसे स्थानों में ले जा सकता है जहाँ निर्भरता गहरी होती है, घमंड उजागर होता है, और हृदय शुद्ध होता है। भसीह अपने आप में कष्ट का पीछा नहीं करते, पर जब पिता की इच्छा इसकी मांग करती है, तब वह उससे बचते नहीं। पतिस्मा से जंगल की दहलीज़ भरोसे का पाठ बनती है, क्योंकि जो परमेश्वर पुष्टि करते हैं, वही कठिनाई के बीच मार्गदर्शन भी करते हैं।

## चालीस दिन और मानवीय कमजोरी का भार

यीशु उपवास की ऐसी अवधि में प्रवेश करते हैं जो उनकी सच्ची मानवता को उजागर करती है, यह दिखाते हुए कि वह मानवीय अनुभव से ऊपर किसी दूरस्थ व्यक्ति की तरह कार्य नहीं कर रहे। भती लिखता है, “चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, उन्हें भूख लगी” (मती 4:2, NIV)। भूख कोई छोटा विवरण नहीं है, वह एक धर्मशास्त्रीय आधार है, क्योंकि वह पाठकों को याद दिलाती है कि पुत्र ने वास्तविक मानवीय सीमाएँ अपनाईं। यीशु मनुष्य होने का अभिनय नहीं कर रहे, और वह कमजोरी से सुरक्षित नहीं हैं। वह ऐसे शरीर में दबाव झेलते हैं जो थकता है, ऐसे पेट में जो भूख महसूस करता है, और ऐसी आत्मा में जो एकांत को जानती है।

यीशु की कमजोरी पास्तरीय रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अनेक वयस्क अपनी सीमाओं के बारे में लज्जा उठाते हैं,

मानो थकान, शोक, या भावनात्मक थकावट आत्मिक विफलता के संकेत हैं। मसीह मानव दुर्बलता की गरिमा को मान देते हैं क्योंकि वह उसमें प्रवेश करते हैं, और वह दिखाते हैं कि कमजोरी पाप नहीं है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे परीक्षा में होने और अवज्ञा चुनने में भेद करें, क्योंकि दबाव की उपस्थिति विद्रोह का प्रमाण नहीं है। ईशु मानवीय आवश्यकता की सीमा का अनुभव करते हैं, फिर भी वह विश्वासयोग्य बने रहते हैं, और उनकी विश्वासयोग्यता हमारी आशा की नींव बनती है। यह दहलीज़ गंभीर है, क्योंकि मसीह का मिशन आराम पर नहीं, आज्ञाकारी धीरज पर निर्मित है।

## शैतान की उपस्थिति और आत्मिक संघर्ष की वास्तविकता

ईशु के प्रारंभिक मिशन में शत्रु के साथ सीधा सामना शामिल है, और यह कलीसिया को सिखाता है कि आत्मिक संघर्ष कोई गौण विषय नहीं है, वह विश्वासयोग्य चेलाई का भाग है। लूका दर्ज करता है, “उसने शैतान से परीक्षा पाई” (लूका 4:2, NIV)। पाठ आत्मिक विरोध के बारे में संकोच नहीं करता, क्योंकि वह चाहता है कि पाठक समझे कि परमेश्वर का राज्य विवादित क्षेत्र में आगे बढ़ता है। ईशु शैतान को केवल आंतरिक संघर्ष का रूपक नहीं मानते, और वह संघर्ष को मिशन से ध्यान भटकाने वाली चीज नहीं मानते। राजा पवित्र दृढ़ता और स्थिर आज्ञाकारिता के साथ युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करता है।

ईशु का सामना विश्वासियों को भोले आशावाद और भयभीत अंधविश्वास दोनों से बचाता है। प्रियवचन मसीही कभी इनकार की ओर झुकते हैं, मानो आत्मिक युद्ध हमेशा

कल्याण हो, या वे जुनून की ओर झुकते हैं, मानो हर कठिनाई के पीछे शैतान हो। यीशु संतुलित मुद्रा का नमूना देते हैं, क्योंकि वह शत्रु को बढ़ा चढ़ाकर नहीं दिखाते, और वह उसे अनदेखा भी नहीं करते। वह खतरे को पहचानते हैं, सत्य के द्वारा प्रतिरोध करते हैं, और आज्ञाकारिता में आगे बढ़ते हैं। पास्टर्स को सभाओं को मसीह को केंद्र में रखना सिखाना चाहिए, क्योंकि हमारा ध्यान अंधकार पर नहीं, उस राजा पर है जो उस पर जय पाता है। षपतिस्मा और जंगल के बीच की दहलीज़ दिखाती है कि आज्ञाकारिता अक्सर प्रतिरोध को आमंत्रित करती है, फिर भी मसीह अडिग रहते हैं।

## सार्वजनिक सेवकाई के लिए तैयारी के रूप में जंगल

यीशु का जंगल अनुभव उनकी सार्वजनिक सेवकाई के स्वर को गढ़ने वाली तैयारी के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि उनका मार्ग शॉर्टकट से संचालित नहीं होगा। मरकुस लिखता है कि यीशु जंगल में “शैतान से परीक्षा पाते रहे” (मरकुस 1:13, NIV)। जंगल एक परीक्षा स्थल बन जाता है, यह पता लगाने के लिए नहीं कि यीशु योम्य हैं या नहीं, बल्कि विश्वासयोम्य आज्ञाकारिता के द्वारा पुत्र की योम्यता को प्रदर्शित करने के लिए। मसीह का मिशन राज्य का प्रचार, पवित्रता में जड़ी करुणा दिखाना, और धार्मिक पाखंड का सामना करना होगा, फिर भी उसकी शुरुआत शांत धीरज से होती है जहाँ कोई भीड़ नहीं देखती।

यीशु की तैयारी उन वयस्क शिष्यों से शक्तिशाली रूप से बोलती है जो मानते हैं कि तैयारी सार्वजनिक सफलता या बाहरी चमक से मापी जाती है। वास्तविकता में, परमेश्वर अक्सर लोगों को ऐसे छिपे स्थानों में आकार देते हैं जहाँ विनम्रता बढ़ती है और निर्भरता गहरी होती है। पास्टर्स को

विश्वासियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे जंगल के मौसमों को ऐसे स्थान मानें जहाँ मसीह उनके हृदयों को विश्वासयोग्य सेवा के लिए गढ़ रहे हैं, तब भी जब वह धीमा, अस्पष्ट, या एकांत लगे यीशु जंगल को व्यर्थ नहीं करते, और वह उससे नाराज़ नहीं होते, क्योंकि वह जानते हैं कि पिता कुछ अच्छा पूरा कर रहे हैं। यह दहलीज़ कलीसिया को परमेश्वर के समय पर भरोसा करना सिखाती है, क्योंकि विश्वासयोग्य सेवाकई जल्दबाज़ी में नहीं होती, वह परिष्कृत होती है।

## दहलीज़ पर आज्ञाकारिता और आगे का मार्ग

यीशु ऐसी दहलीज़ पर खड़े हैं जो उनकी पूरी सेवाकई के नमूने को प्रकट करती है, पिता की पुष्टि, आत्मा पर निर्भरता, और आज्ञाकारिता जो कठिनाई में आगे बढ़ती है। भती लिखता है कि यीशु “आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाए गए” (मत्ती 4:1, NIV)। यह चाल उद्देश्यपूर्ण है, और यह स्पष्ट करती है कि मसीह का अधिकार हमेशा पिता के प्रति अधीनता के भीतर ही प्रयोग होगा। वह अहंकार से कार्य नहीं करेंगे, और वह छल के द्वारा अपना राज्य नहीं बनाएंगे। आगे का मार्ग घोषणा, करुणा, संघर्ष, और अंततः क्रूस को शामिल करेगा, फिर भी उसकी शुरुआत आज्ञाकारी भरोसे से होती है।

यीशु का यह दहलीज़ क्षण कलीसिया को नाजुक उत्साह के बजाय गंभीर आत्मविश्वास के साथ उनका अनुसरण करने के लिए भी बुलाता है। अनेक वयस्क अपने विश्वास को प्रेरणा के किसी मौसम पर टिकाने के लिए प्रलोभित होते हैं, फिर भी केवल प्रेरणा लंबे दबाव के भीतर किसी विश्वासी को नहीं उठा सकती। पास्टर्स को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि वे अपने जीवन को मसीह के प्रभुत्व में स्थिर करें, क्योंकि यीशु

केवल मार्गदर्शक नहीं हैं, वह उद्धारकर्ता और राजा हैं जो आज्ञाकारिता के द्वारा नेतृत्व करते हैं। अपने संदर्भ में यह कहें, मसीह आपको सहज जीवन के लिए नहीं बुलाते, वह आपको विश्वासयोग्य भरोसे के जीवन के लिए बुलाते हैं। जब कलीसिया यह पाठ सीखती है, तो वह अधिक स्थिर, अधिक करुणामय, और अधिक साहसी बनती है, क्योंकि वह उस राजा का अनुसरण करती है जो पहले ही बपतिस्मा से जंगल तक अटल विश्वासयोग्यता के साथ चल चुका है।

## अपने विशिष्ट संदर्भ में इस सामग्री को लागू करने के तीन तरीके

### पिता की पुष्टि से जीना, उसके लिए नहीं

यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत पिता की घोषित प्रसन्नता में जड़ित होकर करते हैं, स्वीकृति कमाने की आवश्यकता से संचालित होकर नहीं। भती पिता के वचन स्पष्ट रूप से दर्ज करता है, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ” (मती 3:17, NIV)। वह पुष्टि चमत्कारों से पहले, प्रचार से पहले, और विरोध से पहले आती है, और यह विश्वासियों को सिखाती है कि परमेश्वर के राज्य में पहचान गतिविधि से पहले आती है। मसीह आज्ञा मानते हैं क्योंकि वह प्रिय पुत्र हैं, प्रिय बनने के लिए नहीं, और यह क्रम परिपक्व चेलाई के लिए बहुत महाराई से महत्व रखता है।

अपने संदर्भ में इसका अर्थ है उत्पादन, दृश्यता, या निरंतर सफलता के द्वारा आत्मिक मूल्य सिद्ध करने के शांत दबाव का विरोध करना। अनेक विश्वासी, विशेषकर नेता, ऐसे जीते हैं मानो परमेश्वर की प्रसन्नता उनके प्रदर्शन के साथ बढ़ती

घटती हो, और यह विश्वासयोग्यता के बजाय चिंता उत्पन्न करता है। यह स्पष्ट कहें, “हम परमेश्वर की प्रसन्नता कमाने के लिए काम नहीं करते, हम सेवा करते हैं क्योंकि मसीह ने उसे पहले ही सुरक्षित कर दिया है। जब कोई कलीसिया मसीह में प्रकट पिता की पुष्टि से जीना सीखती है, तो आज्ञाकारिता अधिक स्थिर हो जाती है, पश्चात्ताप अधिक स्वतंत्र हो जाता है, और विश्वास भय के बजाय अनुग्रह में जड़ित हो जाता है।

## कठिनाई में ले जाने वाली आज्ञाकारिता की सही व्याख्या करना

यीशु आत्मा की अगुवाई के अंतर्गत बपतिस्मा से सीधे कठिनाई में जाते हैं, और यह विश्वासियों को तनाव के मौसमों की व्याख्या करने का तरीका नया देता है। भती कहता है, “तब यीशु आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया” (मत्ती 4:1, NIV)। यह जोड़ जानबूझकर है, क्योंकि यह दिखाता है कि आज्ञाकारिता हमेशा आराम तक नहीं ले जाती, पर वह हमेशा परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहती है। यीशु गलती से कठिनाई में नहीं भटकते, और आज्ञाकारिता के बाद कष्ट आने पर वह पिता के प्रेम पर प्रश्न नहीं उठाते।

वास्तविक जीवन में अनेक वयस्क मानते हैं कि यदि कोई निर्णय विश्वासयोग्य है, तो उसे तुरंत शांत और पुरस्कार जैसा महसूस होना चाहिए, फिर भी यीशु का अनुभव इसके विपरीत सिखाता है। प्रास्तरीय बुद्धि को लोगों की सहायता करनी चाहिए कि वे अवज्ञा और दबाव के अधीन आज्ञाकारिता में भेद करें, क्योंकि कठिनाई की उपस्थिति यह अर्थ नहीं रखती कि परमेश्वर ने अपनी कृपा वापस ले ली है। अपने संदर्भ में यह कहें, “यीशु का विश्वासयोग्य अनुसरण हमें कठिन स्थानों में ले जा सकता है, पर कभी पिता की

देखभाल के बाहर नहीं! जब विश्वासी यह सीखते हैं, तो वे कठिनाई में घबराना छोड़ देते हैं और पूछना शुरू करते हैं कि मसीह विश्वासयोग्य धीरज के द्वारा उनमें क्या गढ़ रहे हैं।

## स्व निर्भरता के बजाय विश्वासयोग्य निर्भरता चुनना

यीशु पूरी तरह मानवीय होकर जंगल में प्रवेश करते हैं, वास्तविक शारीरिक सीमा को अपनाते हुए, कमजोरी को दरकिनार नहीं करते भती इस वास्तविकता पर जोर देते हुए कहता है, “चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, उन्हें भूख लगी” (मत्ती 4:2, NIV) यह सरल वाक्य कलीसिया को याद दिलाता है कि यीशु मानव आवश्यकता का इनकार करके नहीं, आवश्यकता के बीच पिता पर भरोसा करके विश्वास का नमूना देते हैं पुत्र असुविधा को स्वतंत्रता से मिटाने के लिए जल्दी नहीं करते, क्योंकि उनका मिशन नियंत्रण से नहीं, अधीनता से आकार पाता है।

अपने संदर्भ में यह विश्वासियों को बुलाता है कि वे देखें, दबाव कमजोरी को उजागर करते ही वे कितनी जल्दी स्व निर्भरता की ओर मुड़ जाते हैं वयस्क अक्सर विश्वास को शक्ति, दक्षता, या भावनात्मक नियंत्रण के बराबर मान लेते हैं, फिर भी यीशु दिखाते हैं कि चिंतित समस्या समाधान के बजाय विश्वासयोग्य निर्भरता परमेश्वर का अधिक आदर करती है। यह स्पष्ट कहें, “कमजोरी विफलता नहीं है, कमजोरी में पिता पर भरोसा करने से इंकार करना विफलता है! जब कलीसियाएँ प्रदर्शन के बजाय निर्भरता को सामान्य बनाती हैं, तो लोग अधिक ईमानदार बनते हैं, प्रार्थना अधिक सच्ची बनती है, और आज्ञाकारिता अधिक गहरी होती है बपतिस्मा से जंगल की ओर मसीह का मार्ग सिखाता है कि निर्भरता अपरिपक्वता नहीं है, वह मसीह सदृश विश्वास है।

## निष्कर्ष

यीशु का बपतिस्मा और उसके बाद की चाल एक ऐसे उद्धारकर्ता को प्रकट करती है जिसका अधिकार आज्ञाकारिता से अलग नहीं है, और जिसकी आज्ञाकारिता प्रिय पुत्र के रूप में सुरक्षित पहचान से बहती है वह विनम्रता में यरदन में उतरते हैं, पिता की सार्वजनिक पुष्टि प्राप्त करते हैं, और आत्मा की अगुवाई के आगे बिना हिचक समर्पित होते हैं। ये क्षण मसीह के मिशन के बाकी हिस्से को आधार देते हैं, क्योंकि वे दिखाते हैं कि परमेश्वर का राज्य बल के द्वारा नहीं, विश्वासयोग्यता के द्वारा आगे बढ़ता है, और स्व अभिमान के द्वारा नहीं, अधीनता के द्वारा आगे बढ़ता है कलीसिया को इन दृश्यों की ओर बार बार लौटना चाहिए ताकि वह याद रखे कि यीशु के जीवन में सच्चा अधिकार कैसा दिखता है।

बपतिस्मा से जंगल की ओर दहलीज़ विश्वासियों को भ्रम के बजाय स्पष्टता के साथ मसीह का अनुसरण करने के लिए भी तैयार करती है यीशु सहजता का वादा नहीं करते, पर वह भरोसे का नमूना देते हैं, और वह कठिनाई से बचते नहीं, पर वह पिता की देखभाल के अधीन उसमें से होकर चलते हैं। परिपक्व शिष्यों के लिए यह गंभीर आत्मविश्वास का निमंत्रण है, क्योंकि मसीह पहले ही आगे जा चुके हैं। उन्होंने वहाँ आज्ञा मानी जहाँ मानवता विफल हुई, उन्होंने वहाँ भरोसा किया जहाँ अन्य लोग नियंत्रण के लिए झपटते थे, और वह विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में खड़े हैं जिन पर हमारी आशा टिकी है। उनका अनुसरण करने का अर्थ है पिता पर स्थिर आज्ञाकारिता के साथ भरोसा करना, तब भी जब मार्ग कठिन होता जाए।

## प्रश्न जिन पर विचार करना चाहिए

1. पिता की यीशु के प्रति पुष्टि आपके आत्मिक सफलता को मापने के तरीके को कैसे चुनौती देती है?
2. आपने कहाँ यह मान लिया है कि आज्ञाकारिता हमेशा तुरंत आराम या स्पष्टता तक ले जाएगी?
3. वर्तमान में कौन सी कठिनाई को आत्मा आपके भरोसे को घटाने के बजाय गहरा करने के लिए उपयोग कर सकता है?
4. किस क्षेत्र में आप पिता पर निर्भर होने के बजाय स्वयं पर भरोसा करने के लिए सबसे अधिक प्रलोभित होते हैं?
5. यीशु की बपतिस्मा से जंगल की ओर चाल आपके विश्वासयोग्य शिष्यत्व की समझ को कैसे नया आकार देती है?

# अध्याय 3: सेवकाई की तैयारी

## परिचय

यीशु सार्वजनिक सेवकाई में लापरवाही से नहीं आए, और उन्होंने प्रचार इस प्रकार आरंभ नहीं किया मानो पिता की योजना केवल उत्साह के सहारे आरंभ की जा सकती हो। सुसमाचार ऐसी तैयारी दिखाते हैं जो जानबूझकर की गई, प्रत्यक्ष, और आत्मिक रूप से गंभीर है, क्योंकि पुत्र का मिशन पाप का सामना करेगा, झूठी धार्मिकता को प्रकट करेगा, और परमेश्वर के राज्य की घोषणा अधिकार के साथ करेगा। भीड़ के इकट्ठा होने और संघर्ष के तीव्र होने से पहले, यीशु एक अग्रदूत के द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, बपतिस्मा के द्वारा पुष्टि पाते हैं, जंगल में परीक्षा से गुजरते हैं, और वहाँ आज्ञाकारी सिद्ध होते हैं जहाँ आदम और इस्राएल असफल हुए।

यीशु की तैयारी कलीसिया को यह भी सिखाती है कि सामर्थ्य को सही ढंग से कैसे समझा जाए, क्योंकि मसीह का अधिकार कभी पिता के प्रति अधीनता से अलग नहीं होता। बहुत से लोग प्रभाव, मंच, और नियंत्रण की लालसा करते हैं, फिर भी यीशु नम्रता, स्पष्टता, और निर्भरता को अपनाते हैं। तैयारी की कथाएँ वैकल्पिक पृष्ठभूमि नहीं हैं, वे आगे आने वाली हर बात की नींव हैं, क्योंकि वे राजा को पिता की इच्छा, आत्मा की अगुवाई, और वचन की सच्चाई के अधीन दिखाती हैं। आज की चेलाई को वहीं से आरंभ होना चाहिए

जहाँ यीशु ने आरंभ किया, ऐसी आज्ञाकारिता से जो परमेश्वर में जड़ी हुई हो।

## अनुभाग 1: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और अग्रदूत का संदेश

यीशु को सार्वजनिक रूप से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, इसलिए नहीं कि यीशु को किसी मानवीय नेता से मान्यता चाहिए थी, बल्कि इसलिए कि पिता चाहते थे कि राजा के उनके बीच खड़े होने से पहले इस्राएल पश्चाताप की स्पष्ट पुकार सुने। यूहन्ना की सेवाकाई एक करुणा थी, क्योंकि उसने कठोर हृदयों का सामना किया और एक अवशेष को बिना बहाने मसीहा को ग्रहण करने के लिए तैयार किया। मरकुस यूहन्ना के प्रकट होने को सुसमाचार कथा की शुरुआत के रूप में प्रस्तुत करता है, यह दिखाते हुए कि यीशु का आगमन अचानक धार्मिक नवीनता नहीं, बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञात योजना से जुड़ा हुआ है (मरकुस 1:1-4, NIV)।

यीशु का अधिकार इस बात से भी उजागर होता है कि यूहन्ना स्वयं को केंद्र में रखने से इनकार करता है, क्योंकि अग्रदूत का मिशन स्वयं से हटकर मसीह की ओर संकेत करना है। पश्चाताप की पुकार केवल नैतिक सुधार नहीं है, वह पूरे जीवन का परमेश्वर की ओर लौटना है, जिसमें मन, इच्छा, और भावनाएँ सम्मिलित हैं। यूहन्ना का संदेश पाप को उजागर करता है, फिर भी वह अपेक्षा भी बनाता है, क्योंकि वह उस एक की घोषणा करता है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा, गहरी शुद्धि और परमेश्वर के नए वाचा कार्य का संकेत देते हुए (मरकुस 1:7-8, NIV)।

## जंगल में एक आवाज़ और राजा का आगमन

यीशु से पहले जंगल की एक आवाज़ आती है क्योंकि पिता अपने लोगों का सामना वहाँ करते हैं जहाँ आराम उन्हें भटका नहीं सकता। यूहन्ना का स्थान महत्वपूर्ण था, क्योंकि वह लोगों को मंदिर की उन दिनचर्याओं से दूर ले गया जो आत्मिक मृतता को छिपा सकती थीं, और उसने उन्हें एक कठोर वातावरण में परमेश्वर के दावों का सामना करने के लिए बाध्य किया। मत्ती यूहन्ना को यशायाह की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए वर्णित करता है, इस्राएल को प्रभु के मार्ग को तैयार करने के लिए बुलाते हुए, जिसका अर्थ है कि यीशु को उसी प्रभु के रूप में पहचाना जा रहा है जिसका मार्ग सीधा किया जाना चाहिए (मत्ती 3:1-3, NIV)।

यीशु आज भी लोगों के पास उन स्थानों में आते हैं जहाँ झूठी सुरक्षा छीन ली जाती है, क्योंकि अनुग्रह अक्सर बहानों को हटाने से आरंभ होता है। प्रास्तरीय नेतृत्व को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें, पश्चाताप अपमान के लिए अपमान नहीं है, वह करुणा है जो परमेश्वर के साथ संगति के लिए स्थान साफ करती है। यूहन्ना की आवाज़ कलीसिया को याद दिलाती है कि आत्मिक तैयारी धार्मिक व्यस्तता से नहीं, बल्कि प्रभु की ओर ईमानदार लौटने से उत्पन्न होती है। जब मसीह प्रकट होने वाले होते हैं, तब परमेश्वर अक्सर पहले दोषबोध भेजते हैं, क्योंकि शुद्ध हृदय एक पवित्र राजा को पहचानता है।

## राज्य की तैयारी के रूप में पश्चाताप

यीशु की तैयारी पश्चाताप की पुकार के द्वारा होती है, क्योंकि परमेश्वर का राज्य अधिकार से नहीं, समर्पण से ग्रहण किया

जाता है। यूसूहन्ना का बपतिस्मा सार्वजनिक स्वीकारोचित था कि पाप वास्तविक है, न्याय योम्य है, और केवल परमेश्वर ही शुद्ध कर सकता है और पुनः स्थापित कर सकता है। भरकुस यूसूहन्ना की सेवकाई को पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का बपतिस्मा कहकर संक्षेप करता है, यह बल देते हुए कि क्षमा किसी विधि के द्वारा अर्जित नहीं की जाती, बल्कि दीन हृदय के साथ परमेश्वर की ओर लौटने से प्राप्त होती है (मरकुस 1:4-5, NIV)।

यीशु का राज्य आज भी इस झूठ को उजागर करता है कि आत्मिक जीवन को अपरिवर्तित प्राथमिकताओं पर जोड़ा जा सकता है। पश्चाताप कोई निजी भावना नहीं है जो शाम तक मिट जाए, वह परमेश्वर की ओर निर्णायक पुनः उन्मुखता है जो हमारे प्रेम, हमारे लक्ष्य, और हमारे बहानों को नया आकार देती है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि पश्चाताप अनुग्रह में प्रवेश भी है और चेलाई की निरंतर मुद्रा भी, क्योंकि मसीह अपने लोगों को लगातार परिष्कृत करते रहते हैं। यूसूहन्ना ने पाप का स्पष्ट सामना करके मार्ग तैयार किया, और कलीसिया तब सर्वोत्तम रूप से हृदय तैयार करती है जब वह सत्य और करुणा के साथ वही करती है।

## अग्रदूत की नम्रता और मसीह की महिमा

जब अग्रदूत नम्रता को अपनाता है, तब यीशु का सम्मान होता है, क्योंकि यूसूहन्ना की महानता इस बात से प्रकट होती है कि वह घटता है ताकि मसीह प्रकट हों। यूसूहन्ना मसीह होने का दावा करने से इनकार करता है, और अपने से कहीं महान एक की ओर संकेत करता है, स्वयं को आने वाले राजा के लिए सबसे निम्न कार्य करने के भी अयोम्य बताता है। यूसूहन्ना का सुसमाचार उसका यह स्वीकारोचित दर्ज करता है कि वह

मसीह नहीं है और उसका मिशन स्वयं से परे संकेत करना है, जो कलीसिया को नेता केंद्रित आध्यात्मिकता से बचाता है (यूहन्ना 1:19-23, NIV)।

यीशु को हर पीढ़ी में केंद्र में रहना चाहिए, क्योंकि मानवीय नेता आसानी से मसीह के प्रति भक्ति के स्थानापन्न बन सकते हैं यदि लोग पवित्रता के बजाय व्यक्तित्व को प्राथमिकता दें। प्रास्तरीय अनुप्रयोग सीधा है, विश्वासयोग्य सेवकाई यीशु से प्रतिस्पर्धा नहीं करती, वह यीशु को स्पष्ट करती है। यूहन्ना की नम्रता सेवकाई की भूमिकाओं में घमंड का भी सामना करती है, क्योंकि लक्ष्य पहचान नहीं, बल्कि पिता के सौंपे गए कार्य के प्रति विश्वासयोग्यता है। अग्रदूत की मुद्रा सिखाती है कि सबसे स्वस्थ कलीसियाएँ वे हैं जहाँ नेता निरंतर मसीह की ओर संकेत करते हैं, और जहाँ लोग सब से ऊपर मसीह का अनुसरण करना सीखते हैं।

## जल का बपतिस्मा और आत्मा की प्रतिज्ञा

यीशु को उस एक के रूप में घोषित किया जाता है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा, और यह प्रतिज्ञा संकेत देती है कि बाहरी धुलाई से कहीं बढ़कर कुछ आने वाला है। यूहन्ना का जल बपतिस्मा पश्चात्ताप को चिह्नित करता था, पर वह हृदय को नया नहीं बना सकता था, क्योंकि केवल परमेश्वर ही भीतर नया जीवन दे सकते हैं। मरकुस यूहन्ना के वचनों को दर्ज करता है जो आने वाले आत्मा के बपतिस्मा के बारे में हैं, और यह कथन मसीहा के उस विशिष्ट अधिकार के लिए अपेक्षा बनाता है कि वह अपने लोगों पर परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य उंडेल सके (मरकुस 1:7-8, NIV)।

यीशु की सेवकाई इस प्रतिज्ञा को पूरा करती है, आत्मा के कार्य को चेलाई के केंद्र में लाते हुए, तमाशे के रूप में नहीं, बल्कि दैवी परिवर्तन के रूप में प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें, आत्मा से सामर्थ्य प्राप्त जीवन आज्ञाकारिता का स्थानापन्न नहीं है, वह आज्ञाकारिता का स्रोत है, क्योंकि आत्मा उस बात को सुदृढ़ करता है जिसे देह उत्पन्न नहीं कर सकती। यूसुहन्ना का भेद कलीसिया को पश्चाताप को केवल बाहरी सुधार मानने से भी बचाता है। मसीह केवल लोगों से बदलने को नहीं कहते, वह आत्मा प्रदान करते हैं जो हृदय बदलता है, इच्छाओं को नया करता है, और समय के साथ पवित्रता को आकार देता है।

### **भीड़, स्वीकारोक्ति, और हृदय का प्रकट होना**

यीशु के पास वे लोग आते हैं जो पाप स्वीकार करते हुए आते हैं, और यह दृश्य दिखाता है कि आत्मिक जागृति अक्सर अव्यवस्थित, सार्वजनिक, और धार्मिक दिनचर्या के लिए विघटनकारी होती है। यूसुहन्ना के पास जाने वाली भीड़ कोई शिष्ट धार्मिक संकेत नहीं कर रही थी, वे प्रकाश में आ रही थीं, दोष स्वीकार कर रही थीं, और परमेश्वर की करुणा खोज रही थीं। मत्ती लिखता है कि लोग बपतिस्मा लेते समय अपने पापों को स्वीकार करते थे, जिसका अर्थ है कि यूसुहन्ना की सेवकाई सजावटी आध्यात्मिकता के बजाय ईमानदार प्रकटता उत्पन्न कर रही थी (मत्ती 3:5-6, NIV)।

यीशु आज भी लोगों को सत्य में बुलाते हैं, क्योंकि अनुग्रह गोपनीयता और आत्म छल में फलता फूलता नहीं है। पास्तरीय सेवकाई को ऐसी संस्कृति बनानी चाहिए जहाँ स्वीकारोक्ति सामान्य, गंभीर, और आशा से भरी हो, न कि सनसनीखेज, क्योंकि पश्चाताप चंगाई का द्वार है। यूसुहन्ना का

आंदोलन यह भी चेतावनी देता है कि भीड़ परिवर्तन की गारंटी नहीं देती, क्योंकि भावनात्मक गति तब भिट सकती है जब हृदय समर्पण से इनकार करता है क्लीसिया को सच्ची स्वीकारोक्ति का उत्सव मनाना चाहिए और निरंतर मसीह की ओर संकेत करना चाहिए जो पाप को शुद्ध करने वाला, पिता के साथ संगति बहाल करने वाला, और स्थायी परिवर्तन को बनाए रखने वाला एकमात्र उद्धारकर्ता है।

## अनुभाग 2: यीशु का बपतिस्मा

यीशु बपतिस्मा के जल में पापी के रूप में शुद्धि खोजते हुए नहीं उतरते, बल्कि धर्मी पुत्र के रूप में उन लोगों के साथ अपनी पहचान जोड़ते हैं जिन्हें वह उद्धार करने आए यह क्षण अनिवार्य है क्योंकि यह उनकी नम्रता, उनके मिशन, और पिता की सार्वजनिक पुष्टि को प्रकट करता है भ्रती दर्ज करता है कि यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि सब धर्म को पूरा करने के लिए बपतिस्मा उचित है, जिसका अर्थ है कि उनकी आज्ञाकारिता उद्देश्यपूर्ण, वाचा से आकार पाई हुई, और मानवीय अपेक्षा के बजाय पिता की योजना के अनुरूप है (मती 3:13-15, NIV)।

यीशु का बपतिस्मा उद्धार के त्रिक स्वरूप को भी प्रस्तुत करता है, क्योंकि पुत्र बपतिस्मा लेते हैं, आत्मा उतरती है, और पिता बोलते हैं यह घटना कोई निजी रहस्यमय अनुभव नहीं है, वह दैवी स्वीकृति और दैवी मिशन का सार्वजनिक उद्घाटन है। इसी क्षण यीशु को प्रिय पुत्र के रूप में पुष्टि मिलती है, और वह भीड़ द्वारा कमाई गई नहीं, बल्कि स्वर्ग द्वारा घोषित पिता की प्रसन्नता के साथ अपनी सेवकाई आरंभ करते हैं क्लीसिया को समझना चाहिए कि मसीह का

अधिकार उनकी पुत्रता और आज्ञाकारिता से बहता है, न कि मानवीय तालियों से (मत्ती 3:16-17, NIV)।

## यीशु पापी बने बिना पापियों के साथ अपनी पहचान जोड़ते हैं

यीशु बपतिस्मा में इसलिए प्रवेश करते हैं कि वे वहाँ खड़े हों जहाँ पश्चातापी इस्राएल खड़ा है, और यह कार्य ऐसे उद्धारकर्ता को प्रकट करता है जो दूरी से आलोचना करने के बजाय उद्धार करने के लिए निकट आता है वह पाप स्वीकार नहीं करते, क्योंकि उनमें पाप नहीं है, फिर भी वह पाप स्वीकार करने वालों के साथ अपनी पहचान जोड़ते हैं, क्योंकि वह उनका बोझ उठाने और परमेश्वर के सामने उनका प्रतिनिधित्व करने आए मरकुस दर्ज करता है कि यीशु नासरत से आए और यरदन में गूहन्ना से बपतिस्मा लिया, सेवकाई की दहलीज़ पर पुत्र की नम्रता की सरलता और उद्देश्यपूर्णता को उजागर करते हुए (मरकुस 1:9, NIV)।

यीशु की यह पहचान कलीसिया को सिखाती है कि पवित्रता अलगाव नहीं है, वह शुद्धता और आज्ञाकारिता में जड़ी करुणा है पास्ट्रों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें, मसीह की निकटता पाप को छोटा नहीं करती, वह मानव स्थिति में प्रवेश करके पाप का सामना करती है ताकि उसे छुड़ाया जा सके यह क्षण उस घमंड को भी चुनौती देता है जो एकजुटता के बिना धार्मिकता चाहता है, क्योंकि यीशु धर्मी हैं और फिर भी पश्चातापियों के साथ स्वेच्छा से जुड़ते हैं तिलाई को इसी नमूने का अनुसरण करना चाहिए, आत्मधार्मिक दूरी को अस्वीकार करते हुए और नम्र सेवा को अपनाते हुए जो लोगों को परमेश्वर की शुद्ध करने वाली कृपा की ओर ले जाती है।

## सब धर्म को पूरा करना और आज्ञाकारिता का स्वरूप

यीशु अपने बपतिस्मा को धर्म की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसका अर्थ है कि उनकी आज्ञाकारिता किसी अलग थलग आत्मिक संकेत का रूप नहीं है, बल्कि एक व्यापक उद्धारक योजना का भाग है वह स्वयं को पिता के वाचा उद्देश्यों के साथ संरेखित करते हैं, उस विश्वासयोग्य प्रतिनिधि की भूमिका में प्रवेश करते हैं जो वहाँ आज्ञा मानेगा जहाँ अन्य असफल हुए भती यीशु के सब धर्म को पूरा करने के वचनों को दर्ज करता है, और वह वाक्य उनके मिशन को परमेश्वर की इच्छा के प्रति विश्वासयोग्य अधीनता में जड़ देता है, सार्वजनिक प्रतिष्ठा या व्यक्तिगत पसंद में नहीं (मत्ती 3:15, NIV)।

यहाँ यीशु की आज्ञाकारिता सिखाती है कि धार्मिकता तात्कालिक नैतिकता नहीं है, वह पिता की उस इच्छा के अनुरूप ढलना है जो पवित्रशास्त्र में प्रकट की गई है और विश्वास में पूरी की जाती है पास्तरीय सेवकाई को आज्ञाकारिता को केवल व्यक्तिगत अनुशासन के रूप में सिखाने का विरोध करना चाहिए, क्योंकि बाइबल की आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति संबंधपरक अधीनता है इसीह ऐसी आज्ञाकारिता का नमूना देते हैं जो शांत, दृढ़, और सर्वसमावेशी है, और वह उस चयनात्मक आज्ञाकारिता को उजागर करती है जिसे बहुत से लोग पसंद करते हैं विलाई तब मजबूत होती है जब विश्वासी उन स्थानों में भी आज्ञा मानना सीखते हैं जो नाटकीय नहीं लगते, क्योंकि यीशु का क्रूस की ओर मार्ग यरदन पर नम्र अधीनता से आरंभ होता है।

## स्वर्ग का खुलना और आत्मा का उतरना

यीशु के बपतिस्मा में आत्मा का कबूतर के समान उतरना सम्मिलित है, जो आगे आने वाले मिशन के लिए दैवी सामर्थ्य का संकेत देता है और यह पुष्टि करता है कि पिता का कार्य ठीक उसी प्रकार आगे बढ़ रहा है जैसा प्रतिज्ञा की गई थी। आत्मा का उतरना यह कथन नहीं है कि यीशु में पवित्रता की कमी थी, वह सार्वजनिक चिन्ह है कि मसीहा को परमेश्वर की सामर्थ्य में सेवकाई के लिए अभिषिक्त किया गया है। लूका दर्ज करता है कि पवित्र आत्मा कबूतर के समान देहधारी रूप में यीशु पर उतरा, यह बल देते हुए कि यह दैवी नियुक्ति का एक दृश्य, ऐतिहासिक क्षण है (लूका 3:21-22, NIV)।

यीशु का अभिषेक कलीसिया को यह भी सिखाता है कि सेवकाई व्यक्तिव संचालित नहीं, आत्मा पर निर्भर होनी चाहिए। पास्टर्स को नेताओं और सभाओं को स्मरण कराना चाहिए कि आत्मिक फल केवल कौशल से उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि राज्य परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा आज्ञाकारी सेवकों के माध्यम से आगे बढ़ता है। आत्मा का उतरना यीशु के भीतर और उनके द्वारा आत्मा के व्यापक कार्य की ओर संकेत करता है, जिसमें मार्गदर्शन, साहस, और परीक्षा में धीरज सम्मिलित है। मसीह की तैयारी दिखाती है कि सिद्ध आज्ञाकारिता भी आत्मा से भरी निर्भरता में पूरी की जाती है, और आज के चेले भी वही अपेक्षा करें, क्योंकि परमेश्वर का मिशन परमेश्वर की उपस्थिति से बनाए रखा जाता है।

## पिता की वाणी और प्रिय पुत्र

यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत पिता की पुष्टि के साथ करते हैं, जिसका अर्थ है कि किसी भी सार्वजनिक उपलब्धि से पहले उनकी पहचान सुरक्षित है। पिता पुत्र में आनंद व्यक्त करते हैं, और यह घोषणा यीशु के अधिकार को

प्रदर्शन में नहीं, संबंध में जड़ देती है भरकुस पिता के वचनों को दर्ज करता है, यीशु को प्रिय पुत्र के रूप में पहचानते हुए, और समय महत्वपूर्ण है क्योंकि यीशु को आरंभ में ही पुष्टि मिलती है, उपदेशों, चमत्कारों, और संघर्षों से पहले जो उनकी महानता को भीड़ के सामने प्रकट करेंगे (मरकुस 1:10-11, NIV)।

यीशु की पुष्टि कलीसिया को सिखाती है कि सबसे गहरी स्थिरता यह जानने से आती है कि हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ अपने संबंध में कौन हैं, न कि परिणामों से मूल्य मापने से पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे गतिविधि के द्वारा स्वीकृति कमाने के थकाने वाले चक्र को अस्वीकार करें, क्योंकि मसीह ने अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा पहले ही अपने लोगों के लिए स्वीकृति सुरक्षित कर ली है पिता की वाणी यह भी प्रकट करती है कि उद्धार पिता द्वारा पुत्र को अनिच्छा से सहन करना नहीं है, वह पिता द्वारा पुत्र में आनंद लेना और प्रेम से उसे भेजना है बिना तब बढ़ती है जब विश्वासी परमेश्वर की स्वीकृति से जीना सीखते हैं, उसके लिए नहीं, क्योंकि मसीह ने मार्ग खोल दिया है।

## मिशन की दहलीज़ के रूप में बपतिस्मा

यीशु बपतिस्मा से सीधे परीक्षा और सेवकाई में प्रवेश करते हैं, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर की इच्छा के साथ सार्वजनिक पहचान मार्ग का अंत नहीं, बल्कि दबाव के अधीन विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता की शुरुआत है। उनका बपतिस्मा एक दहलीज़ है, दृश्यमान अधीनता का क्षण जो जंगल के धीरज और राज्य की घोषणा की ओर ले जाता है भ्रती बपतिस्मा से आत्मा द्वारा यीशु को जंगल में ले जाने की गति

को दर्ज करता है, और यह प्रवाह दिखाता है कि आज्ञाकारिता सहजता की गारंटी नहीं देती, पर वह पिता के हाथ के अधीन उद्देश्य की गारंटी देती है (मत्ती 4:1, NIV)।

यीशु का दहलीज़ क्षण कलीसिया को आत्मिक मील पत्थरों के बारे में झूठी अपेक्षाओं से बचाता है। बपतिस्मा, प्रतिज्ञाएँ, और आज्ञाकारिता के नए मौसम अक्सर संघर्ष और परीक्षा से पहले आते हैं, क्योंकि शत्रु उस बात का विरोध करता है जिसे पिता आशीष देते हैं। पास्टरों को लोगों को विश्वासयोग्य धीरज के लिए तैयार करना चाहिए, यह सिखाते हुए कि परीक्षाएँ विफलता का प्रमाण नहीं हैं, बल्कि अक्सर इस बात का प्रमाण हैं कि मिशन वास्तविक है। यीशु यरदन को आत्मिक समापन रेखा नहीं मानते, बल्कि गहरी आज्ञाकारिता के द्वार के रूप में देखते हैं। त्वेलाई को भी वही मुद्रा अपनानी चाहिए, परमेश्वर की पुष्टि का उत्सव मनाते हुए और उसके बाद आने वाली परीक्षा के लिए तैयार रहते हुए।

## अनुभाग 3: जंगल में परीक्षा

यीशु को आत्मा जंगल में ले जाती है, और यह विवरण महत्वपूर्ण है क्योंकि परीक्षा अंधी क्रूरता नहीं, बल्कि पिता की योजना के भीतर उद्देश्यपूर्ण संघर्ष है। जंगल का परिवेश इस्राएल के इतिहास की मूँज करता है, और वह यीशु को उस विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है जो वहाँ सफल होगा जहाँ परमेश्वर के लोग असफल हुए। मत्ती दर्ज करता है कि यीशु ने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया, यह स्पष्ट करते हुए कि परीक्षा वास्तविक मानवीय कमजोरी में आती है, न कि नाटकीय अजेयता में (मत्ती 4:1-2, NIV)।

यीशु की परीक्षा यह भी प्रकट करती है कि आत्मिक युद्ध का केंद्र विश्वास और आराधना का प्रश्न है। शत्रु की रणनीति एक सी रहती है, पिता के वचन को विकृत करना, पहचान को मोड़ना, और ऐसे शॉर्टकट प्रस्तुत करना जो कष्ट से बचाते हुए तुरंत लाभ का वादा करते हैं। यीशु चतुर नारों से नहीं, बल्कि पवित्रशास्त्र, आज्ञाकारिता, और पिता के प्रति अटल निष्ठा से उत्तर देते हैं। यह प्रकरण दिखाता है कि यीशु का अधिकार केवल चमत्कारों और शिक्षा में नहीं, बल्कि दबाव के अधीन पवित्रता में भी प्रकट होता है, और वही पवित्रता आगे आने वाली सेवकाई की नींव बनती है।

## पुत्र के रूप में परीक्षा, पुत्र के रूप में स्थिर

यीशु की परीक्षा पहचान के बिंदु पर होती है, क्योंकि शत्रु जानता है कि पुत्रता के बारे में भ्रम आज्ञाकारिता को अस्थिर कर देता है। बार बार दी गई चुनौती, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है,” यीशु को शत्रु की शर्तों पर स्वयं को सिद्ध करने के लिए उकसाने के लिए है, न कि पिता की घोषित प्रसन्नता में विश्राम करने के लिए। भ्रमती इस रणनीति को स्पष्ट रूप से दर्ज करता है, और वह उजागर करता है कि परीक्षा अक्सर विश्वासियों को भरोसे के बजाय प्रदर्शन के द्वारा सुरक्षा खोजने के लिए दबाव डालती है (मत्ती 4:3, NIV)।

यीशु का उत्तर कलीसिया को सिखाता है कि पहचान उन्नत आत्म औचित्य के द्वारा नहीं, बल्कि स्थिर आज्ञाकारिता के द्वारा सुरक्षित रहती है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें, शत्रु अक्सर संवेदनशील मौसमों में निशाना साधता है, आत्मिक मील पत्थरों के बाद, और कमजोरी के क्षणों में, क्योंकि तब आश्वासन की आवश्यकता तीव्र लगती है। भ्रमती अपनी पहचान पर बातचीत नहीं करते,

और वह तमाशे के द्वारा मान्यता नहीं खोजते इसके बजाय, वह पिता के वचन और पिता की इच्छा में स्थिर रहते हैं, यह दिखाते हुए कि सच्ची पुत्रता भरोसे के द्वारा जी जाती है। चेलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी स्वयं को सिद्ध करने की इच्छा का विरोध करना सीखते हैं और मसीह की सुरक्षित पहचान में विश्राम करते हैं, जो अनुग्रह से उनकी पहचान बन जाती है।

## रोटी, भूख, और पिता की व्यवस्था पर भरोसा

यीशु को पत्थरों को रोटी बनाने की परीक्षा दी जाती है, इसलिए नहीं कि रोटी बुरी है, बल्कि इसलिए कि परीक्षा पिता की इच्छा से स्वतंत्र रूप से दैवी सामर्थ्य का उपयोग करने की है। लंबे उपवास के बाद भूख वास्तविक है, और सुझाव उचित प्रतीत होता है, फिर भी वह पिता की देखभाल पर अविश्वास करने का सूक्ष्म निमंत्रण है। यीशु परमेश्वर के हर एक वचन पर जीवित रहने के बारे में पवित्रशास्त्र का उद्धरण देकर उत्तर देते हैं, यह प्रकट करते हुए कि आज्ञाकारिता तत्काल राहत से अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती 4:4, NIV)।

यहाँ यीशु की विजय कलीसिया को यह पहचानने में सहायता करती है कि परीक्षा अक्सर वैध आवश्यकताओं के शॉर्टकट के रूप में आती है विश्वासी प्रावधान शीघ्र सुरक्षित करने के लिए सत्यनिष्ठा, प्रार्थनापूर्ण निर्भरता, या धीरजपूर्ण आज्ञाकारिता से समझौता करने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं, फिर भी यीशु दिखाते हैं कि पिता के समय पर भरोसा किया जा सकता है। पास्टर्स को वयस्कों की सहायता करनी चाहिए कि वे बिना कड़वाहट के प्रतीक्षा करना और बिना खीझ के धार्मिकता चुनना सीखें। मसीह का इनकार आत्म हानि नहीं, विश्वासयोग्य अधीनता है, और वह दिखाता है कि

सबसे गहरा पोषण परमेश्वर के साथ संगति है। विलाई तब दृढ़ होती है जब विश्वासी तात्कालिक लालसाओं के ऊपर परमेश्वर के वचन को प्राथमिकता देना सीखते हैं, क्योंकि पिता की व्यवस्था को अवज्ञा की आवश्यकता नहीं होती।

## परमेश्वर की परीक्षा और पिता को नियंत्रित करने से इनकार

यीशु को मंदिर से कूदने की परीक्षा दी जाती है ताकि एक नाटकीय बचाव को बाध्य किया जा सके, और यह उस आत्मिक खतरे को प्रकट करता है जो धार्मिक दिखाता है। शत्रु यहाँ तक कि पवित्रशास्त्र का उद्धरण भी करता है, यह दिखाते हुए कि बाइबिल भाषा का उपयोग घमंड और धृष्टता को उचित ठहराने के लिए किया जा सकता है। यीशु इस हेरफेर से इनकार करते हैं, यह उत्तर देते हुए कि परमेश्वर की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए, क्योंकि विश्वास प्रदर्शनकारी प्रमाण की माँग किए बिना पिता के चरित्र पर भरोसा करता है (मत्ती 4:5-7, NIV)।

यीशु का इनकार कलीसिया को तमाशा केंद्रित आध्यात्मिकता को अस्वीकार करना सिखाता है जो परमेश्वर को व्यक्तिगत निश्चितता या सार्वजनिक प्रभाव के उपकरण के रूप में उपयोग करती है। पास्टर्स को चेतावनी देनी चाहिए कि चिन्हों की माँग कभी कभी परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने से इनकार का छिपा हुआ रूप होती है, क्योंकि हृदय संगति नहीं, नियंत्रण चाहता है। इसीह दिखाते हैं कि सच्चा विश्वास परमेश्वर को हमारे समय पर कार्य करने के लिए कोने में नहीं करता, और वह मूर्खतापूर्ण व्यवहार के लिए सुरक्षा को प्रतिज्ञा नहीं मानता। आज्ञाकारिता परमेश्वर को हमें बचाने की चुनौती देना नहीं है, वह उस मार्ग पर श्रद्धापूर्ण

भरोसे के साथ चलना है जिसे परमेश्वर निर्धारित करते हैं। चैलाई तब स्वस्थ होती है जब विश्वासी परमेश्वर से सौदेबाज़ी करना छोड़कर उनके अधीन होना आरंभ करते हैं, क्योंकि मसीह का उदाहरण दिखाता है कि भरोसा स्थिर आज्ञाकारिता से सिद्ध होता है, न कि नाटकीय करतबों से।

## राज्य, सामर्थ्य, और केंद्रीय मुद्दे के रूप में आराधना

यीशु को संसार के राज्यों का प्रस्ताव आराधना के बदले दिया जाता है, और यह हर अन्य परीक्षा के नीचे छिपी सबसे गहरी लड़ाई को उजागर करता है। ख़ात्रु बिना कष्ट के दृश्यमान शासन का शॉर्टकट देता है, यह संकेत देते हुए कि यीशु क्रूस के बिना महिमा पा सकते हैं। यीशु निर्णायक रूप से इसे अस्वीकार करते हैं, केवल परमेश्वर की आराधना करने की आज्ञा देते हैं, और यह प्रकट करते हैं कि सच्चा अधिकार समझौते के द्वारा छीना नहीं जाता, वह आज्ञाकारिता के द्वारा ग्रहण किया जाता है (मत्ती 4:8-10, NIV)।

यीशु की विजय कलीसिया को सिखाती है कि अनेक परीक्षाएँ अंततः आराधना की परीक्षाएँ होती हैं, क्योंकि वे हमसे परमेश्वर के अलावा किसी और को अंतिम भक्ति देने को कहती हैं। प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें, कहाँ सामर्थ्य, स्वीकृति, आराम, या प्रभाव मूर्ति बन जाते हैं, क्योंकि मूर्तियाँ राज्य का वादा करती हैं पर समर्पण माँगती हैं। मसीह दिखाते हैं कि आराधना रविवार की पसंद नहीं, वह जीवन का संगठित केंद्र है, और वह प्रतिद्वंद्वियों के साथ साझा नहीं की जा सकती। चैलाई तब विश्वासयोग्य बनती है जब विश्वासी स्वीकार करते हैं कि आज्ञाकारिता में कष्ट, विलंब, और हानि शामिल हो सकती है, फिर भी उसमें पिता की प्रसन्नता और पुत्र की विजय भी

सम्मिलित है यीशु झूठे मुकुटों को ठुकराते हैं, क्योंकि उनका राज्य क्रूस के द्वारा आता है, और कलीसिया को उन शॉर्टकटों को अस्वीकार करना सीखना चाहिए जो पवित्रता के बदले प्रभाव का सौदा करते हैं।

## स्वर्गदूतों की सेवकाई और पिता की विश्वासयोम्य देखभाल

यीशु परीक्षा को अंत तक सहते हैं, और फिर उनकी सेवा की जाती है, यह दिखाते हुए कि जब आज्ञाकारिता महंगी होती है तब भी पिता की देखभाल वास्तविक होती है। यह विवरण विश्वासियों को निराशा से बचाता है, क्योंकि यह दर्शाता है कि विश्वासयोम्य प्रतिरोध को स्वर्ग अनदेखा नहीं करता। मरकुस संक्षेप में कहता है कि स्वर्गदूत उनकी सेवा करते थे, और यह सरलता इस बात को रेखांकित करती है कि दैवी सहायता हमेशा नाटकीय नहीं होती, पर वह हमेशा परमेश्वर की बुद्धि के अनुसार उपस्थित रहती है (मरकुस 1:12-13, NIV)।

यीशु का अनुभव कलीसिया को सिखाता है कि धीरज में अक्सर संघर्ष और सहारा दोनों शामिल होते हैं, और परिपक्व विश्वास को इन दोनों वास्तविकताओं को एक साथ धारण करना सीखना चाहिए। प्रास्टरों को विश्वासियों को स्मरण कराना चाहिए कि परमेश्वर की देखभाल पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, समुदाय, और समयोचित सामर्थ्य के द्वारा आ सकती है, न कि हमेशा तत्काल छुटकारे के द्वारा। मसीह की विजय को सहज नहीं बताया गया है, क्योंकि सुसमाचार भूख, कमजोरी, और निरंतर दबाव की वास्तविकता को स्वीकार करते हैं। फिर भी पिता की व्यवस्था उचित समय पर आती है, यह पुष्ट करते हुए कि आज्ञाकारिता कभी व्यर्थ नहीं होती। चेलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी घबराहट के बिना प्रतिरोध

की अपेक्षा करते हैं और किसी विशिष्ट रूप की माँग किए बिना परमेश्वर की सहायता की अपेक्षा करते हैं, क्योंकि मसीह दिखाते हैं कि पिता जंगल के मौसमों में भी विश्वासयोग्य रहते हैं।

## अनुभाग 4: यीशु की आज्ञाकारिता का धर्मशास्त्रीय अर्थ

यीशु की तैयारी ऐसी आज्ञाकारिता के चित्र में परिणत होती है जो आकस्मिक नहीं, बल्कि उद्धार के केंद्र में है। सुसमाचार यीशु को सार्वजनिक पहचान में, निजी परीक्षा में, और आत्मा द्वारा अगुवाई की गई निर्भरता में आज्ञा मानते हुए दिखाते हैं, यह प्रकट करते हुए कि उनका अधिकार पिता के प्रति अधीनता से अविभाज्य है। पौलुस बाद में यीशु को दास का स्वरूप धारण करने और मृत्यु तक आज्ञाकारी बनने वाला बताता है, यह दिखाते हुए कि आज्ञाकारिता पुत्र के उद्धारक मिशन का मार्ग है, न कि केवल विश्वासियों के लिए नैतिक उदाहरण (फिलिप्पियों 2:6-8, NIV)।

यीशु की आज्ञाकारिता का प्रतिनिधिक अर्थ भी है, क्योंकि वह उस विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में खड़े होते हैं जहाँ आदम असफल हुआ और जहाँ इस्राएल लड़खड़ा गया। यह चेलाई के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उद्धार पहले हमारी आज्ञाकारिता से नहीं, बल्कि मसीह की आज्ञाकारिता से प्राप्त होता है, जो विश्वास के द्वारा ग्रहण की जाती है। फिर भी मसीह की आज्ञाकारिता हमारे जीवनो को भी आकार देती है, क्योंकि जो उससे जुड़े हैं वे उसके स्वरूप में ढाले जाते हैं और आज्ञा मानने के लिए सामर्थ्य पाते हैं। इसलिए पास्तरीय सेवकाई को आज्ञाकारिता को वरदान और बुलाहट दोनों के रूप में

सिखाना चाहिए, मसीह के पूरे किए गए कार्य में जड़ी हुई और आत्मा से सामर्थ्य प्राप्त चेलाई के द्वारा व्यक्त की गई जो पिता का आदर करती है।

## पुत्र की स्वेच्छापूर्ण अधीनता के रूप में आज्ञाकारिता

यीशु इसलिए आज्ञा मानते हैं क्योंकि वह पिता से प्रेम करते हैं, और वह प्रेम अनिच्छुक अनुपालन के बजाय स्वेच्छापूर्ण अधीनता में प्रकट होता है। उनकी आज्ञाकारिता यांत्रिक नहीं है, और वह भय से प्रेरित नहीं है, क्योंकि सुसमाचार उन्हें प्रिय पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो पिता की इच्छा करने में आनंद लेते हैं। यूहन्ना यीशु को यह कहते हुए दर्ज करता है कि उनका भोजन उन्हें भेजने वाले की इच्छा पूरी करना और उसका कार्य समाप्त करना है, आज्ञाकारिता को केवल कर्तव्य नहीं, भक्ति के रूप में प्रकट करते हुए (यूहन्ना 4:34, NIV)।

यीशु का यह कथन कलीसिया को सिखाता है कि आज्ञाकारिता प्रेम से बनाए रखी जाती है, क्योंकि विधिवाद कठिनाई को सहन नहीं कर सकता, पर प्रेम कर सकता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे जाँचें, उनकी आज्ञाकारिता परमेश्वर के साथ संगति में जड़ी है या स्वीकृति की चिंता में, क्योंकि चिंतित आज्ञाकारिता दबाव में ढह जाती है। मसीह दिखाते हैं कि आज्ञाकारिता जीवन देने वाली है क्योंकि वह मानवीय इच्छा को दैवी भलाई के साथ संरेखित करती है, और केवल थकावट नहीं, आत्मिक पोषण उत्पन्न करती है। चेलाई तब आनंदमय होती है जब विश्वासी समझते हैं कि आज्ञाकारिता परमेश्वर को कमाने का मार्ग नहीं, बल्कि मसीह में परमेश्वर का आनंद लेने का मार्ग है। पुत्र की अधीनता नमूना भी है और साधन

भी, क्योंकि वह सिद्ध रूप से आज्ञा मानते हैं और फिर अनुग्रह के द्वारा अपने लोगों के साथ अपना जीवन बाँटते हैं।

## पवित्रशास्त्र की पूर्ति के रूप में आज्ञाकारिता

यीशु ऐसी आज्ञाकारिता करते हैं जो पवित्रशास्त्र को पूरा करती है, और यह प्रकट करती है कि पिता की योजना संगत, वाचा के प्रति विश्वासयोग्य, और भरोसेमंद है। उनका जीवन असंबद्ध आत्मिक क्षणों की शृंखला नहीं है, वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और उद्देश्यों को देहधारण करने वाला एकीकृत मिशन है। भती बार बार पूर्ति पर बल देता है, और तैयारी की कथाओं में भी बिंदु स्पष्ट है, मसीहा मार्ग का आविष्कार नहीं कर रहे, वह उसी मार्ग पर चल रहे हैं जिसे परमेश्वर पहले ही बोल चुके हैं (मत्ती 3:15, NIV)।

यीशु की पवित्रशास्त्र से आकार पाई आज्ञाकारिता कलीसिया को इस प्रलोभन का विरोध करना सिखाती है कि बाइबल को वैकल्पिक प्रेरणा माना जाए, अधिकारपूर्ण प्रकाशन नहीं। पास्टर्स को विश्वासियों को यह देखने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए कि मसीही जीवन पहले अंतः प्रेरणा से नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन से निर्देशित होता है, जिसे बुद्धि और प्रार्थना के द्वारा लागू किया जाता है। मसीह पवित्रशास्त्र को सजावट के रूप में उपयोग नहीं करते, वह उसे सत्य के रूप में उपयोग करते हैं जो निर्णयों का मार्गदर्शन करता है, झूठ को उजागर करता है, और आक्रमण के अधीन आत्मा को स्थिर करता है। तैलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी दबाव के अधीन बाइबिल के अनुसार सोचना सीखते हैं, क्योंकि परीक्षा अक्सर परमेश्वर के स्वरूप और आज्ञाकारिता की लागत के बारे में विकृत कथाओं के साथ आती है। यीशु अपने लोगों को छुड़ाने के लिए पवित्रशास्त्र को पूरा करते हैं, और

उनकी आज्ञाकारिता उनके लोगों को संस्कृति से नहीं, पवित्रशास्त्र से गढ़े जाने के लिए बुलाती है।

## आदम की असफलता को पलटने वाली आज्ञाकारिता

यीशु वहाँ आज्ञा मानते हैं जहाँ आदम असफल हुआ, और यह धर्मशास्त्रीय विरोध अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि मसीह की आज्ञाकारिता प्रतिनिधिक है, केवल उदाहरणात्मक नहीं। आदम ने प्रचुरता में परीक्षा का सामना किया और गिर पड़ा, जबकि यीशु भूख में परीक्षा का सामना करते हैं और जय पाते हैं, मानवता के लिए एक नए सिर को प्रकट करते हुए जो सिद्ध विश्वासयोग्यता में सफल होता है। पौलुस सिखाता है कि एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के द्वारा बहुतां को धर्मी ठहराया जाएगा, जिसका अर्थ है कि मसीह की आज्ञाकारिता उनके लोगों के लिए उद्धारक वरदान के रूप में गिनी जाती है (रोमियों 5:19, NIV)।

यीशु की प्रतिनिधिक आज्ञाकारिता उन विश्वासियों को सांत्वना देती है जो अपनी कमजोरी से पीड़ित रूप से अवगत हैं, क्योंकि उद्धार मसीह की विश्वासयोग्यता पर टिका है, हमारे बदलते संकल्प पर नहीं। पास्टर्स को वयस्कों की सहायता करनी चाहिए कि वे आश्वासन के लिए अपने भीतर प्रदर्शन की ओर नहीं, बल्कि बाहर मसीह की ओर देखें। फिर भी यह सिद्धांत चेलाई को भी सुदृढ़ करता है, क्योंकि जो मसीह में धर्मी ठहराए गए हैं, वे दैनिक जीवन में धार्मिकता का अनुसरण करने के लिए भी गढ़े जाते हैं। सुसमाचार निष्क्रियता उत्पन्न नहीं करता, वह अनुग्रह से सामर्थ्य प्राप्त कृतज्ञता और नई आज्ञाकारिता उत्पन्न करता है। यीशु आदम की असफलता को केवल हमारे पाप क्षमा करने के लिए नहीं, बल्कि भरोसे, आराधना, और पिता के प्रति विश्वासयोग्य

अधीनता से चिह्नित एक नई मानवता बनाने के लिए पलटते हैं।

## परीक्षा के अधीन आज्ञाकारिता और पवित्रता का नमूना

यीशु की आज्ञाकारिता परीक्षा के अधीन सिद्ध होती है, और यह वास्तविकता महत्वपूर्ण है क्योंकि पवित्रता केवल शांत क्षणों में किया गया दावा नहीं है, वह वह चुनाव है जो हम दबाव बढ़ने पर करते हैं। जंगल प्रकट करता है कि हृदय में क्या है, और यीशु दिखाते हैं कि पिता के वचन में जड़ा हृदय शत्रु की विकृतियों का सामना कर सकता है। इब्रानियों समझाता है कि यीशु हर प्रकार से परीक्षा में पड़े, फिर भी उन्होंने पाप नहीं किया, जिसका अर्थ है कि उनकी पवित्रता सैद्धांतिक नहीं, वास्तविक परीक्षा के अधीन जी हुई शुद्धता है (इब्रानियों 4:15, NIV)।

यीशु की परीक्षित आज्ञाकारिता कलीसिया को परीक्षाओं की सही व्याख्या करना सिखाती है, क्योंकि परीक्षाएँ हमेशा दंड नहीं होतीं, वे अक्सर वह क्षेत्र होती हैं जहाँ विश्वास परिष्कृत और सुदृढ़ किया जाता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे परीक्षा आने से पहले तैयारी करें, पवित्रशास्त्र में डूबे रहकर, प्रार्थना के द्वारा, और ईमानदार उत्तरदायित्व के द्वारा। मसीह का उदाहरण निराशा को भी सुधारता है, क्योंकि विश्वासी अकेले नहीं लड़ रहे, वे उस उद्धारकर्ता से जुड़े हैं जिसने पहले ही परीक्षा पर जय पाई है और जो आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह प्रदान करता है। चिलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी घबराहट के बजाय धीरज के साथ प्रतिरोध करना सीखते हैं, क्योंकि पवित्रता भरोसे के बार बार चुने गए निर्णयों के द्वारा बनती है।

यीशु उद्धार सुरक्षित करने के लिए परीक्षा के अधीन आज्ञा मानते हैं, और उनकी आत्मा उनके लोगों को उसी विश्वासयोग्य नमूने का अनुसरण करने के लिए सामर्थ्य देती है।

## यीशु के अधिकार की नींव के रूप में आज्ञाकारिता

यीशु का अधिकार आज्ञाकारिता में जड़ा है, क्योंकि वह सही रूप से शासन करते हैं क्योंकि वह पिता के प्रति सिद्ध रूप से अधीन रहते हैं। उनकी सामर्थ्य कभी स्वार्थी नहीं होती, और उनकी करुणा कभी पवित्रता से अलग नहीं होती, क्योंकि उनकी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के साथ संरेखित है। यीशु बाद में कहते हैं कि वह अपने आप से कुछ नहीं कर सकते और वह केवल वही न्याय करते हैं जो वह सुनते हैं, ऐसे अधिकार को प्रकट करते हुए जो स्वायत्त और आत्म उत्पन्न नहीं, बल्कि संबंधपरक और आज्ञाकारी है (यूहन्ना 5:19, NIV)।

यीशु का अधिकार कलीसिया को सिखाता है कि नेतृत्व कैसा होना चाहिए, क्योंकि आज्ञाकारिता के बिना आत्मिक अधिकार हेरफेर बन जाता है, और अधीनता के बिना प्रभाव अत्याचार बन जाता है। पास्टर्स को ऐसा नेतृत्व नमूना बनाना और अपेक्षित करना चाहिए जो मसीह के प्रति उत्तरदायी हो और पवित्रशास्त्र से आकार पाया हुआ हो, क्योंकि कलीसिया आज्ञाकारी राजा की है, मानवीय महत्वाकांक्षा की नहीं। मसीह केंद्रित चेलाई यीशु की आज्ञाओं पर भरोसा करना भी सीखती है क्योंकि वे कभी मनमानी नहीं होतीं, वे पिता की बुद्धि और प्रेम से बहती हैं। जब विश्वासी आज्ञाकारिता से संघर्ष करते हैं, समाधान यीशु के अधिकार को घटाना नहीं, बल्कि यीशु की भलाई को पुनः खोज करना है, क्योंकि जो आज्ञा देता है वही हमारे लिए आज्ञा मान चुका

है और अब हमें जीवन में अगुवाई करता है। उनका अधिकार सुरक्षित है क्योंकि उनकी आज्ञाकारिता सिद्ध है।

## अपने विशिष्ट संदर्भ में इस सामग्री को लागू करने के तीन तरीके

### पश्चाताप को सामान्य मसीही लय के रूप में विकसित करें

यीशु अपनी सार्वजनिक प्रकटता की शुरुआत यूहन्ना के द्वारा पश्चाताप की पुकार से करते हैं, जिसका अर्थ है कि कलीसियाओं को पश्चाताप को मसीही जीवन की सामान्य लय के रूप में देखना चाहिए, दुर्लभ आपात प्रतिक्रिया के रूप में नहीं। जब पश्चाताप की उपेक्षा की जाती है, तब लोग पाप छिपाना, समझौते को तर्कसंगत बनाना, और धार्मिक रूप बनाए रखना सीखते हैं, जबकि उनके हृदय परमेश्वर से भटक जाते हैं। वित्रशास्त्र विश्वासियों को पाप स्वीकार करने और शुद्धि प्राप्त करने के लिए बुलाता है, और वह प्रतिज्ञा ईमानदार चेलाई को सुदृढ़ करती है क्योंकि अनुग्रह उन लोगों को दिया जाता है जो प्रकाश में आते हैं (1 यूहन्ना 1:9, NIV)।

यीशु केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर और नेता पश्चाताप को आनंद में प्रवेश के निमंत्रण के रूप में प्रचार करें, क्योंकि पाप से फिरना परमेश्वर के जीवन की ओर फिरना है। विश्वासियों को विशिष्ट स्वीकारोक्ति, वास्तविक उत्तरदायित्व, और स्थिर प्रार्थना का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करें जो आत्मा से छिपे उद्देश्यों को प्रकट करने की विनती करती है। पश्चाताप को मसीह की आज्ञाकारिता से

जोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि हम उद्धार कमाने के लिए पश्चाताप नहीं करते, हम पश्चाताप करते हैं क्योंकि राजा में उद्धार निकट आ गया है। जब पश्चाताप सामान्य बनता है, तब कलीसिया टूटे हुआओं के लिए अधिक सुरक्षित, पाखंड के विरुद्ध अधिक दृढ़, और पिता की रूपांतरकारी कृपा के प्रति अधिक जीवित बनती है।

## आत्मिक मील पत्थरों के बाद परीक्षा के लिए लोगों को तैयार करें

यीशु बपतिस्मा के तुरंत बाद परीक्षा में पड़ते हैं, और यह क्रम पास्तरीय बुद्धि को आकार देना चाहिए, क्योंकि बहुत से विश्वासी प्रतिज्ञाओं, बुलाहटों, और आज्ञाकारिता के नए मौसमों के बाद तीव्र परीक्षा का सामना करते हैं। हानु अक्सर पहचान, प्रावधान, और आराधना पर आक्रमण करता है, और ये दबाव भ्रमित कर सकते हैं यदि लोग मान लें कि आत्मिक प्रगति सहजता की गारंटी देती है। पौलुस विश्वासियों को स्थिर रहने और परमेश्वर के हथियार पहनने की चेतावनी देता है, कलीसिया को स्मरण कराते हुए कि आत्मिक संघर्ष वास्तविक है और उसे आश्चर्य के बजाय तैयारी के साथ सामना करना चाहिए (इफिसियों 6:13, NIV)।

यीशु केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि नेता लोगों को यथार्थवादी अपेक्षा और व्यावहारिक तैयारी के साथ चेला बनाएँ विश्वासियों को मसीह में पहचान स्थिर करने, नियमित रूप से पवित्रशास्त्र से पोषण लेने, और सामान्य परीक्षा पैटर्नों को संकट बनने से पहले पहचानना सिखाएँ। प्रार्थना, समुदाय समर्थन, और कमजोरी के बारे में ईमानदार बातचीत की लयों को प्रोत्साहित करें, क्योंकि गोपनीयता परीक्षा को मजबूत करती है, जबकि प्रकाश उसे कमजोर

करता है लक्ष्य भय नहीं, बल्कि तैयारी है, क्योंकि मसीह पहले ही विजयी हो चुके हैं और अपनी विजय अपने लोगों के साथ साझा करते हैं। जब कोई कलीसिया मील पत्थरों के बाद परीक्षा की अपेक्षा करती है, तब वह संघर्ष को शर्मिंदा करने के बजाय स्थिर आज्ञाकारिता का समर्थन करने वाला समुदाय बनती है, और जंगल के मौसमों में रहने वालों के लिए यीशु की वास्तवीय देखभाल को प्रतिबिंबित करती है।

## आज्ञाकारिता को आश्वासन और बुलाहट दोनों के रूप में सिखाएँ

यीशु की आज्ञाकारिता उद्धार की नींव और चेलाई का नमूना है, इसलिए पास्टर्स को आज्ञाकारिता को इस प्रकार सिखाना चाहिए कि वह चिंता के बजाय आश्वासन उत्पन्न करे।

विश्वासियों को जानना चाहिए कि वे इसलिए स्वीकार किए गए हैं क्योंकि मसीह ने सिद्ध रूप से आज्ञा मानी, और उन्हें यह भी जानना चाहिए कि आत्मा वास्तविक परिवर्तन के लिए सामर्थ्य देती है। पौलुस सिखाता है कि विश्वासियों को मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजा गया है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि आज्ञाकारिता अनुग्रह से जुड़ी रहे, अलग थलग नैतिक प्रयत्न न बने (इफिसियों 2:10, NIV)।

यीशु केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि नेता आज्ञाकारिता को प्रेम के प्रत्युत्तर के रूप में प्रचार करें, प्रेम कमाने की रणनीति के रूप में नहीं विश्वासियों की सहायता करें कि वे पहचानें, कहाँ आज्ञाकारिता का विरोध होता है, और फिर उस विरोध को गलत आराधना, भय, या परमेश्वर की भलाई पर अविश्वास से जोड़ें। इस और संबंधपरक व्यावहारिक कदमों को प्रोत्साहित करें, जैसे टूटे संबंधों की मरम्मत करना, छिपे पाप

को अस्वीकार करना, और दैनिक निर्णयों में प्रार्थनापूर्ण अधीनता को प्राथमिकता देना। जब आज्ञाकारिता सही ढंग से सिखाई जाती है, तब कलीसिया नम्र और साहसी दोनों बनती है, क्योंकि लोग स्वयं को बचाने की कोशिश छोड़ देते हैं और उस उद्धारकर्ता का अनुसरण करना सीखते हैं जिसने उन्हें पहले ही बचा लिया है। मसीह की आज्ञाकारिता हमारी स्थिति को सुनिश्चित करती है, और मसीह की आत्मा हमारे चलने को सुदृढ़ करती है, इसलिए चेलाई सुरक्षित भी होती है और गंभीर भी।

## निष्कर्ष

यीशु की सेवकाई की तैयारी ऐसे उद्धारकर्ता को प्रकट करती है जिसका अधिकार आज्ञाकारिता से अविभाज्य है, और जिसकी सार्वजनिक सेवकाई पिता की योजना में जड़ी हुई है। यूहन्ना की पश्चाताप की पुकार भ्रमों को हटाती है, बपतिस्मा यीशु को प्रिय पुत्र के रूप में सार्वजनिक रूप से पुष्टि करता है, और जंगल की परीक्षा शत्रु की रणनीतियों को उजागर करते हुए मसीह की अटल अधीनता को प्रकाश में लाती है। ये कथाएँ परिपक्व पाठकों को सिखाती हैं कि परमेश्वर का राज्य करिश्मा, शॉर्टकट, या तमाशे के द्वारा नहीं, बल्कि विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के द्वारा आगे बढ़ता है जो पिता के वचन पर भरोसा करती है और हर प्रतिद्वंद्वी आराधना को अस्वीकार करती है।

यीशु की आज्ञाकारिता गहरे धर्मशास्त्रीय अर्थ भी रखती है, क्योंकि वह अपने लोगों की ओर से विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में आज्ञा मानते हैं। वह पवित्रशास्त्र को पूरा करते हैं, आदम की असफलता को पलटते हैं, बिना पाप के परीक्षा सहते हैं, और यह प्रकट करते हैं कि सच्चा अधिकार पिता के प्रति अधीनता

में जड़ा है क्लीसिया तब सुदृढ़ होती है जब वह स्मरण रखती है कि उद्धार मसीह की आज्ञाकारिता पर टिका है, मानवीय संकल्प पर नहीं, और चेलाई तब आकार पाती है जब विश्वासी आत्मा की सामर्थ्य से उसी मार्ग का अनुसरण करना सीखते हैं। यीशु आज्ञाकारिता के द्वारा सेवकाई की तैयारी करते हैं, और वह अपने लोगों को भी उसी प्रकार तैयार करते रहते हैं, उन्हें ऐसी पवित्रता में ले जाते हुए जो नम्र, दृढ़, और आराधना में जड़ी हुई हो।

## प्रश्न जिन पर विचार करना चाहिए

1. आपको कहाँ यीशु की पश्चाताप की पुकार का उत्तर सामान्य पछतावे के बजाय विशिष्ट और ईमानदार लौटने के साथ देना चाहिए?
2. कौन सी परीक्षा आपकी पहचान को सबसे अधिक निशाना बनाती है, और आप उस पहचान को मसीह की पुत्रता और स्वीकृति में और दृढ़ता से कैसे स्थिर कर सकते हैं?
3. प्रावधान, प्रभाव, या आराम का कौन सा “शॉर्टकट” इस समय आपकी आज्ञाकारिता के लिए सबसे बड़ा खतरा है?
4. जंगल में यीशु की विजय आपके भरोसे को कैसे नया आकार देती है जब आप निरंतर परीक्षा या आत्मिक सूखे का सामना करते हैं?
5. जीवन के किस क्षेत्र में आपको यीशु की आज्ञाकारिता को परमेश्वर के सामने अपने आश्वासन और दैनिक चेलाई के अपने नमूने दोनों के रूप में ग्रहण करने की आवश्यकता है?

# अध्याय 4: प्रारंभिक यहूदिया और गलील की सेवकाई

## परिचय

यीशु ने अपनी प्रारंभिक सेवकाई निर्णायक स्पष्टता के साथ आरंभ की, क्योंकि परमेश्वर का राज्य कोई चर्चा करने की अवधारणा नहीं था, बल्कि एक ऐसा शासन था जिसे घोषित किया जाना था और जीवन में प्रकट किया जाना था। सुसमाचार दिखाते हैं कि वह यहूदिया और गलील में ऐसे अधिकार के साथ चले जिसने साधारण लोगों को चकित किया और धार्मिक विशेषज्ञों को अस्थिर कर दिया। उन्होंने भीड़ बनाने से पहले शिष्यों को बुलाया, उन्होंने ऐसे चिन्ह किए जिनसे उनकी पहचान प्रकट हुई, और उन्होंने ऐसे भार के साथ शिक्षा दी जिसने मानव हृदय में भूख और विरोध दोनों को उजागर किया। प्रारंभ से ही, यीशु ने उस राजा के रूप में कार्य किया जो परमेश्वर का शासन निकट ले आता है।

यीशु ने यह भी प्रारंभ में स्पष्ट कर दिया कि चेलाई संबंधपरक, मूल्य चुकाने वाली, और सार्वजनिक होगी, क्योंकि उनका अनुसरण करना निष्ठा से लेकर बुलाहट तक सब कुछ नया रूप देगा। इनकी करुणा कभी पवित्रता से अलग नहीं हुई, और उनकी सामर्थ्य कभी पिता के प्रति आज्ञाकारिता से अलग नहीं हुई। जैसे जैसे उनके शत्रु फैलते गए, वैसे वैसे जांच भी बढ़ती गई, क्योंकि ज्योति अंधकार में प्रवेश किए बिना प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करती। यह अध्याय दर्शाता है कि यीशु की प्रारंभिक गतिविधियों ने पूरे सुसमाचार

की दिशा कैसे निर्धारित की, जिसमें आराधना, विस्मय, और बढ़ता हुआ संघर्ष शामिल है।

## अनुभाग 1: पहले शिष्यों की बुलाहट

यीशु ने लोगों को पहले अपने पास बुलाकर आरंभ किया, क्योंकि राज्य बदले हुए अनुयायियों के द्वारा आगे बढ़ता है, न कि दूर से प्रशंसा करने वालों के द्वारा। उन्होंने शिष्यों को ऐसे आत्मिक उपभोक्ताओं के रूप में नहीं बुलाया जो सुरक्षित दूरी से उनका मूल्यांकन करें, बल्कि ऐसे शिक्षार्थियों के रूप में बुलाया जो उनके मार्ग सीखें, उनका संदेश उठाएं, और उनके अधिकार के अधीन हों। उनके निमंत्रण व्यक्तिगत और सीधे थे, क्योंकि वह एक ऐसे समुदाय का निर्माण कर रहे थे जो संसार में उनके शासन को प्रकट करेगा। प्रारंभिक बुलाहटें दिखाती हैं कि यीशु पहले ऐसे लोगों को बना रहे थे जो सब कुछ समझने से पहले ही उनके हो जाते हैं।

यीशु ने यह भी स्पष्ट किया कि चेलाई में नियंत्रण का समर्पण शामिल होगा, क्योंकि उन्होंने साधारण कामगारों, अपूर्ण व्यक्तित्वों, और आत्मिक रूप से भूखे खोजियों को बुलाया। प्रारंभिक बुलाहट की कथाएँ मुख्य रूप से शिष्यों की संभावनाओं के बारे में नहीं हैं, बल्कि यीशु की पहल और अधिकार के बारे में हैं। उन्होंने उन्हें आकार देने, सुधारने, और भेजने की जिम्मेदारी स्वयं ली, जिससे यह प्रकट होता है कि मसीही चेलाई आत्म सुधार नहीं, बल्कि एक स्वामी के अधीन जीवन है। आरंभ से ही, यीशु की बुलाहट अनुग्रहपूर्ण भी थी और मांग करने वाली भी, क्योंकि उसमें उनके वचन पर तुरंत भरोसा करना आवश्यक था।

## पहला निमंत्रण और वह प्रश्न जो हृदय की खोज करता है

यीशु ने खोजियों को अपने निकट आने के लिए बुलाकर चेलाई की शुरुआत की, क्योंकि पहला कदम दक्षता नहीं, बल्कि प्रभु की निकटता है। जब अंद्रियास और एक अन्य शिष्य उनके पीछे चलने लगे, तो यीशु ने पूछा कि वे क्या चाहते हैं, जिससे यह प्रकट हुआ कि वह कार्य सौंपने से पहले उद्देश्यों का सामना करते हैं। पाठ यीशु को ऐसे गुरु के रूप में प्रस्तुत करता है जो लोगों को आकर्षित करते हुए यह भी प्रकट करते हैं कि वे वास्तव में क्या खोज रहे हैं, चाहे वह सुविधा हो, प्रतिष्ठा हो, या जीवित परमेश्वर हो।

यीशु आज भी चेलाई की शुरुआत इसी प्रकार करते हैं, लोगों को अपने निकट लाकर और ईमानदार आत्म परीक्षण के लिए बाध्य करके पास्टर्स और परिपक्व विश्वासियों को लोगों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि मसीह का अनुसरण केवल जिज्ञासा से प्रेरित नहीं होता, बल्कि उनके प्रति इच्छा, उनके सत्य, और उनके शासन से प्रेरित होता है। प्रारंभिक निमंत्रण यह भी सिखाता है कि यीशु सुलभ हैं, परंतु कभी भी हल्के नहीं हैं, क्योंकि उनकी उपस्थिति एक साथ गर्मजोशी और खोज करने वाली है। जो उनके पास आते हैं, उन्हें अनुग्रह मिलता है, और साथ ही वे ऐसी यात्रा में बुलाए जाते हैं जहां हर झूठी इच्छा अंततः प्रकट होती है।

## नया नाम और जीवन को परिभाषित करने का अधिकार

यीशु ने शमौन को नया नाम देकर अधिकार प्रकट किया, क्योंकि वह पहचान को परिभाषित करने का अधिकार अपने

पास रखते हैं। क्षमौन ने सिद्ध विधास के द्वारा नया नाम नहीं कमाया, और न ही वह निर्दोष चरित्र के कारण इसका पात्र था, फिर भी यीशु ने उसके ऊपर एक भविष्य घोषित किया जिसे केवल ईश्वरीय अधिकार ही वैध रूप से घोषित कर सकता है। यह क्षण प्रकट करता है कि यीशु वर्तमान कमजोरी से आगे देखते हैं, और साथ ही उससे ईमानदारी से निपटते भी हैं, और वह लोगों को उनके जीवन-वृत्तांत के अनुसार नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य के अनुसार बुलाते हैं।

यीशु की नाम बदलने की सामर्थ्य आज भी आधुनिक पहचान के भ्रम को चुनौती देती है, क्योंकि बहुत से लोग स्वयं को घावों, उपलब्धियों, असफलताओं, या सार्वजनिक स्वीकृति से परिभाषित करते हैं। विलाई यह सिखाती है कि पहचान मसीह से प्राप्त की जाती है, आत्म सुरक्षा के द्वारा गढ़ी नहीं जाती, और संस्कृति के साथ सौदेबाज़ी करके तय नहीं की जाती। प्रास्टोरल सेवकाई को इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि यीशु केवल पापियों को क्षमा नहीं करते, बल्कि उन्हें गढ़ते भी हैं, उन्हें अपने राज्य के उद्देश्यों के अनुसार नाम देते हैं, और समय के साथ उन्हें आकार देते हैं। नया नाम भावनात्मक सजावट नहीं है, बल्कि स्वामित्व का दावा है, और यह उस व्यक्ति में समर्पित भरोसे का निमंत्रण देता है जिसके पास जीवन को नया लिखने का अधिकार है।

## जाल छोड़ना और तुरंत आज्ञाकारिता की कीमत

यीशु ने मछुआरों को उनके काम के बीच बुलाया, यह दिखाते हुए कि उनका राज्य किसी सुविधाजनक समय की प्रतीक्षा किए बिना साधारण जीवन में प्रवेश करता है। पाठ उनके तुरंत उत्तर पर ज़ोर देता है, इसलिए नहीं कि वे आवेगशील थे, बल्कि इसलिए कि यीशु की बुलाहट में ऐसा

भार था जो भरोसे की माँग करता था। उन्होंने जाल छोड़े और उनके पीछे हो लिए, यह दिखाते हुए कि चेलाई खाली समय से जुड़ा कोई शौक नहीं, बल्कि राजा की आज्ञा के अधीन प्राथमिकताओं का पुनः क्रमण है।

यीशु आज भी लोगों को महँगी आज्ञाकारिता के लिए बुलाते हैं, और वह कीमत अक्सर उन चीज़ों में दिखाई देती है जिन्हें छोड़ना पड़ता है, जिनमें नियंत्रित करने की आदतें, समझौता किए गए संबंध, और करियर-केंद्रित पहचान शामिल हैं। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि बलिदान उद्धार का भुगतान नहीं, बल्कि समर्पित निष्ठा का प्रमाण है। जब यीशु बुलाते हैं, तो वह आंशिक निष्ठा नहीं माँगते, क्योंकि आंशिक निष्ठा वास्तव में आत्म शासन का ही एक और नाम है। प्रारंभिक शिष्यों को आगे क्या होगा यह सब नहीं पता था, परंतु वे इतना अवश्य जानते थे कि उस आवाज़ की आज्ञा मानें जिसका अधिकार उनकी आजीविका से भी अधिक भार रखता था।

## **जिज्ञासा से अंगीकार और सार्वजनिक साक्षी तक**

यीशु लोगों को जिज्ञासा से अंगीकार की ओर ले गए, क्योंकि चेलाई का उद्देश्य अनंत जाँच नहीं, बल्कि प्रतिबद्ध विश्वास है। नतनएल ने संदेह के साथ शुरुआत की, फिर भी यीशु की अंतर्दृष्टि उसके बाहरी आभासों को भेदती हुई यीशु की पहचान के अंगीकार तक ले गई। यह कथा यीशु को उस व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है जो मानव हृदय को जानता है, और इसलिए भरोसे के योग्य है, क्योंकि उनका ज्ञान चालाकी नहीं, बल्कि अधिकार और अनुग्रह के साथ बोला गया सत्य है।

यीशु की प्रारंभिक बातचीत कलीसिया को यह सिखाती है कि सुसमाचार प्रचार अक्सर संबंधपरक और तत्काल होता है, क्योंकि जो लोग मसीह से मिलते हैं वे स्वाभाविक रूप से दूसरों को उनकी ओर ले आते हैं। पास्टोरल नेताओं को विश्वासियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे रटे रटाए नारों के बजाय ईमानदार दृढ़ विश्वास के साथ यीशु के बारे में बोलें, क्योंकि सच्ची गवाही वास्तविक भेंट से उत्पन्न होती है। नतनएल का अंगीकार यह भी दिखाता है कि विश्वास अंधा नहीं होता, बल्कि प्रकाशन के प्रति उत्तरदायी होता है, और यीशु सच्चे उत्तर के लिए पर्याप्त ज्योति प्रदान करते हैं। जब लोग मसीह के ज्ञान और अधिकार से सामना करते हैं, तो तटस्थता कठिन हो जाती है, और चेलाई निजी पसंद के बजाय सार्वजनिक निष्ठा बन जाती है।

## नियुक्ति से पहले उपस्थिति के लिए ठहराया गया

यीशु ने शिष्यों को मुख्य रूप से अपने साथ रहने के लिए बुलाया, क्योंकि राज्य में उत्पादकता से पहले निकटता आती है। पाठ वर्णन करता है कि यीशु ने बारहों को इस उद्देश्य से नियुक्त किया कि वे उनके साथ रहें और फिर भेजे जाएँ, जिससे यह प्रकट होता है कि मिशन के लिए अधिकार संबंध से बहता है, न कि केवल प्राकृतिक प्रतिभा से। यीशु एक ऐसे समुदाय का निर्माण कर रहे थे जो उनकी उपस्थिति, उनकी शिक्षा, और उनकी पवित्रता से आकार पाता था, और वही आधार उन्हें दबाव और उत्पीड़न के समय संभाले रखता।

यीशु का यह ढाँचा उन सेवकाई संस्कृतियों को सुधारता है जो लोगों को मसीह के साथ संगति में गढ़े बिना कार्यों में झोंक देती हैं। पास्टरों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि बिना बने रहने की सेवा थकान, घमंड, या छिपे हुए समझौते

की ओर ले जाती है, क्योंकि हृदय प्रभु की निकटता के बिना आत्मिक भार नहीं उठा सकता। श्रीशु शिष्यों को उनके प्रेम, उनके स्वभाव, और उनके भरोसे को आकार देकर गढ़ते हैं, फिर उनकी जिम्मेदारियाँ बढ़ाते हैं। श्रीशु के साथ होना निष्क्रिय नहीं है, बल्कि रूपांतरित करने वाला है, क्योंकि राजा की उपस्थिति आत्मा को पुनः क्रमित करती है। जो उसमें बने रहते हैं, वे सीखते हैं कि कैसे बोलना है, कैसे सेवा करनी है, और कैसे स्थिर रहना है।

## अनुभाग 2: पहले चिन्ह और चमत्कार

श्रीशु ने जिज्ञासा को मनोरंजन देने के लिए चमत्कारों से शुरुआत नहीं की, बल्कि ऐसे चिन्हों से शुरुआत की जिन्होंने उनकी पहचान प्रकट की और उनके करुणामय मिशन को आगे बढ़ाया। प्रारंभिक चमत्कार उनके अधिकार से अलग नहीं किए जा सकते, क्योंकि वे दिखाते हैं कि परमेश्वर का शासन केवल घोषित ही नहीं किया जाता, बल्कि क्रियान्वित भी किया जाता है। श्रीशु ने चंगाई दी, छुटकारा दिया, और आवश्यकता पूरी की, ऐसे तरीकों से जो पाप और टूटन के प्रभावों का सामना करते थे, और साथ ही यह भी प्रकट करते थे कि वह केवल दूर से परमेश्वर की ओर संकेत करने वाले कोई भविष्यवक्ता नहीं थे। उनके कार्य वर्तमान संसार में राज्य के प्रवेश का भार उठाए हुए थे।

श्रीशु ने चिन्हों का उपयोग शिष्यों को विश्वास में प्रशिक्षित करने के लिए भी किया, क्योंकि चमत्कार अपने आप समर्पण उत्पन्न नहीं करते। कुछ लोगों ने बिना पश्चाताप किए विरुद्ध किया, और कुछ ने और भी तीव्र विरोध किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चिन्ह प्रकाशन के रूप में कार्य करते हैं जो उत्तर की माँग करते हैं। प्रारंभिक यहूदिया और मलील की

सेवकाई में, यीशु ने अपनी करुणा को पवित्रता में जड़ा हुआ प्रकट किया, क्योंकि उन्होंने केवल लक्षणों को शांत नहीं किया, बल्कि लोगों को परमेश्वर के शासन के अधीन पूर्णता में पुनः स्थापित किया। प्रत्येक चमत्कार इस बात का धार्मिक कथन करता है कि वह कौन हैं, क्यों आए, और उनका राज्य क्या करता है।

## एक विवाह और सच्चे दूल्हे का शांत अधिकार

यीशु ने अपना पहला चिन्ह एक विवाह में किया, एक ऐसे क्षण के माध्यम से अपनी महिमा प्रकट करते हुए जो साधारण प्रतीत होता था, परंतु गहरे धार्मिक भार को धारण करता था। जब आनन्द संकट में पड़ा, तब उन्होंने दाखमधु प्रदान किया, और उन्होंने यह किसी प्रदर्शनकारी के रूप में नहीं किया जो ध्यान चाहता हो, बल्कि उस प्रभु के रूप में किया जो सृष्टि पर शांत अधिकार का प्रयोग करता है। यह कथा इस बात पर ज़ोर देती है कि इस चिन्ह ने उनकी महिमा प्रकट की और उनके शिष्यों को विश्वास करने के लिए प्रेरित किया, यह दिखाते हुए कि चमत्कारों का उद्देश्य यीशु की पहचान में विश्वास को दृढ़ करना है, न कि केवल आश्चर्य उत्पन्न करना।

यीशु की यह क्रिया कलीसिया को यह सिखाती है कि उनका अधिकार वास्तविक मानवीय आवश्यकताओं तक पहुँचता है बिना उन्हें तुच्छ बनाए। पास्टोरल सेवकाई को ध्यान देना चाहिए कि यीशु आनन्द, गरिमा, और सामुदायिक जीवन की परवाह करते हैं, फिर भी वह मानवीय तात्कालिकता के द्वारा नियंत्रित होने से इनकार करते हैं। उनका समय और उनका तरीका यह प्रकट करता है कि वह उदार और बुद्धिमान हैं, आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा करते हैं कि ध्यान मानवीय प्रबंधन पर नहीं, बल्कि उनकी महिमा पर केंद्रित हो।

काना का यह चिन्ह उस गहरे आनन्द की ओर भी संकेत करता है जो वह राज्य के द्वारा लाते हैं, ऐसा आनन्द जो परिस्थितियों में नहीं, बल्कि छुटकारे में जड़ा होता है विश्वास तब बढ़ता है जब विश्वासी देखते हैं कि यीशु साधारण जीवन के स्थानों में भी करुणामय और संप्रभु दोनों हैं।

## एक कोढ़ी शुद्ध किया गया और पवित्रता में जड़ी हुई करुणा

यीशु ने एक कोढ़ी व्यक्ति को शुद्ध करके धार्मिक और सामाजिक अलगाव का सामना किया, और इससे उनकी करुणा और अशुद्धता पर उनका अधिकार दोनों प्रकट हुए। उस संसार में, कोढ़ अक्सर बहिष्कार, लज्जा, और सामुदायिक आराधना से लगातार अलगाव का अर्थ था, और यीशु का स्पर्श उन बाधाओं को भेद गया जो किसी व्यक्ति को अकेलेपन में फँसाए रखती थीं। पाठ यीशु की इच्छा पर जोर देता है, यह दिखाते हुए कि वह शुद्ध करने में अनिच्छुक नहीं हैं, और उनका अधिकार वह सब पुनः स्थापित करता है जिसे पाप और टूटन ने तोड़ दिया था।

यीशु की शुद्ध करने वाली सामर्थ्य आज भी उन लोगों से बात करती है जो लज्जा के बोझ से दबे हैं और जो मानते हैं कि उन्हें छुआ नहीं जा सकता। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि मसीह की पवित्रता अशुद्ध से पीछे नहीं हटती, वह अशुद्ध को बदल देती है, क्योंकि उनकी शुद्धता सक्रिय और छुटकारा देने वाली है। फिर भी यीशु की चंगाई पुनः स्थापित आज्ञाकारिता की भी पुकार है, क्योंकि शुद्ध किया गया व्यक्ति समुदाय और सत्य में वापस लाया जाता है, न कि स्वतंत्र आत्मिकता में। क्लीसिया को इस नमूने को प्रतिबिंबित करने के लिए बुलाया गया है,

ऐसी करुणामय देखभाल प्रदान करके जो पवित्रता में स्थिर रहती है। यीशु उस को छूते हैं जिससे दूसरे बचते हैं, और वह ऐसा इसलिए करते हैं कि लोगों को परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण शासन के अधीन जीवन में पुनः स्थापित करें।

## आत्माओं पर अधिकार और अंधकार में राज्य का आक्रमण

यीशु ने अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिखाया, यह प्रकट करते हुए कि परमेश्वर का राज्य आत्मिक दमन का निर्णायक सामर्थ्य से सामना करता है। आराधनालय की परिस्थिति में, यीशु की आज्ञा तुरंत और प्रभावी थी, और भीड़ की प्रतिक्रिया ने दिखाया कि उन्होंने एक नए प्रकार के अधिकार को पहचाना जो केवल व्याख्यात्मक कौशल नहीं था। कथा इस बात पर प्रकाश डालती है कि आत्मा ने आज्ञा मानी, और यीशु के वचन में ऐसा बल था जिसका अंधकार विरोध नहीं कर सका, और इससे मानव जीवन में आत्मिक संघर्ष की वास्तविकता उजागर हुई।

आत्माओं पर यीशु का अधिकार आज भी विश्वासयोग्य चेलाई को आकार देता है, क्योंकि बहुत से आधुनिक विश्वासी या तो आत्मिक युद्ध को अनदेखा करते हैं या अविवेकपूर्ण रूप से उसमें मोहित हो जाते हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि यीशु अंधकार से भयभीत नहीं हैं, और उनके लोगों को भय में नहीं जीना चाहिए, क्योंकि राजा का अधिकार अंतिम है। साथ ही, विश्वासियों को आत्मिक बुराई को मनोरंजन या अंधविश्वास की तरह लेने से बचना चाहिए, क्योंकि सुसमाचार इसे गंभीर संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसमें मसीह पर संयमी भरोसा आवश्यक है। यीशु छुटकारा इसलिए देते हैं कि आराधना, विवेक, और आज्ञाकारिता पुनः स्थापित

हो, न कि आत्मिक प्रदर्शन पैदा हो। उनका छुटकारा यह घोषित करता है कि परमेश्वर का शासन आ गया है, और अंधकार को झुकना ही होगा।

## लकवे के रोगी की चंगाई और पाप क्षमा करने का अधिकार

यीशु ने एक लकवे के रोगी को चंगा किया और सार्वजनिक रूप से पाप क्षमा करने की घोषणा की, यह दिखाते हुए कि उनका सबसे गहरा मिशन केवल लक्षणों से राहत नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप है। कथा में विवाद चमत्कार स्वयं नहीं है, बल्कि क्षमा में निहित दावा है, क्योंकि उस अंतिम अर्थ में केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है। फिर यीशु ने अपने अधिकार की पुष्टि के लिए चंगाई दी, यह दर्शाते हुए कि उनके वचन के पीछे सामर्थ्य है और राज्य में आत्मिक शुद्धता और शारीरिक पुनः स्थापन दोनों सम्मिलित हैं, जो परमेश्वर के शासन के चिन्ह हैं।

यीशु की यह क्रिया कलीसिया को उद्धार को केंद्र में रखने की शिक्षा देती है, क्योंकि लोग अक्सर पश्चाताप के बिना राहत, और समर्पण के बिना आराम चाहते हैं। पास्टरों को शारीरिक आवश्यकताओं की देखभाल की भलाई की पुष्टि करनी चाहिए, और साथ ही यह आग्रह करना चाहिए कि सबसे महान चंगाई पिता के साथ पुनः स्थापित संगति है जो मसीह के द्वारा मिलती है। यह प्रसंग धार्मिक निंदकता को भी सुधारता है, क्योंकि नेताओं ने यीशु के अधिकार पर प्रश्न उठाया जबकि एक पापी ने दया पाई। मसीह का अधिकार अमूर्त नहीं है, वह उद्धार देने वाला है, और वह उन पर लागू होता है जो विश्वास के साथ उनके पास आते हैं। कलीसिया को यीशु के द्वारा क्षमा का निडरता से प्रचार करना चाहिए,

क्योंकि जो क्षमा करता है उसके पास पूरी तरह पुनः स्थापित करने का अधिकार है।

## भीड़ों के लिए प्रावधान और राजा की करुणा

यीशु ने एक बड़ी भीड़ को भोजन कराया, यह प्रकट करते हुए कि उनकी करुणा व्यावहारिक है और उनका राज्य वास्तविक मानवीय आवश्यकता का सामना करता है बिना लोगों को समस्याओं में घटाए। कथा इस बात पर जोर देती है कि यीशु ने लोगों को ऐसे देखा जैसे भेड़ें जिनका कोई चरवाहा नहीं, जिससे यह दिखता है कि पवित्र अधिकार से बहने वाली पास्टोरल चिंता कैसी होती है। उन्होंने भोजन इस प्रकार प्रदान किया कि ईश्वरीय पर्याप्तता प्रकट हो, और जो बचा हुआ था उसकी बहुतायत ने गवाही दी कि उनका देना मुश्किल से पर्याप्त नहीं, बल्कि उदार, व्यवस्थित, और उद्देश्यपूर्ण है।

यीशु का यह प्रावधान कलीसिया को चुनौती देता है कि वह ऐसी करुणा का अभ्यास करे जो संगठित भी हो और विश्वास से भरी भी, क्योंकि सेवकाई में मसीह के प्रभुत्व के अधीन बुद्धिमान प्रबंधन आवश्यक है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि करुणा केवल भावना नहीं, वह भरोसे, प्रार्थना, और जिम्मेदारी से आकार पाई हुई कार्रवाई है। यह चमत्कार शिष्यों की उस प्रवृत्ति को भी उजागर करता है जिसमें वे पहले सीमाएँ देखते हैं, जबकि यीशु पिता की महिमा के अवसर देखते हैं। विश्वासी आज भी ऐसे क्षणों का सामना करते हैं जब संसाधन अपर्याप्त लगते हैं, फिर भी मसीह अपने लोगों को बुलाते हैं कि वे जो उनके पास है उसे लाएँ और भरोसा करें कि वह विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता को बढ़ा देंगे। राजा प्रावधान इसलिए नहीं करते कि चेलाई की जगह ले लें, बल्कि

इसलिए करते हैं कि चेलाई को गहरा करें, और ऐसे लोगों को गढ़ें जो उनकी पर्याप्तता पर भरोसा करते हैं और उनकी देखभाल को प्रतिबिंबित करते हैं।

## अनुभाग 3: प्रारंभिक शिक्षा और राज्य की घोषणा

यीशु ने परमेश्वर के राज्य को अपनी सेवकाई की केंद्रीय घोषणा के रूप में प्रचार किया, क्योंकि उनका मिशन पिता के शासन को प्रकट करना और लोगों को पश्चाताप और विश्वास के लिए बुलाना था। उनकी शिक्षा अमूर्त दर्शन नहीं थी, और न ही केवल नैतिक परामर्श था, क्योंकि उसमें राजा का अधिकार था जो परमेश्वर के वाचा-उद्देश्यों की ओर से बोलता है। उन्होंने ऐसी स्पष्टता के साथ सिखाया जिसने आत्मसंतोष को ललकारा, और उन्होंने ऐसी दया के साथ बोला जिसने थके हुएों को बुलाया, क्योंकि राज्य की घोषणा चेतावनी भी देती है और स्वागत भी करती है। आरंभ से ही, यीशु के शठों ने केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि उत्तर की माँग की।

यीशु ने ऐसी रीति से भी सिखाया जो शिष्यों को गढ़ती थी, क्योंकि राज्य केवल प्रवेश करने की चीज़ नहीं, वह जीने की चीज़ है। उनकी घोषणा में पवित्रता की ऐसी दृष्टि थी जो बाहरी प्रदर्शन से आगे जाती थी, और उसमें दया की ऐसी दृष्टि थी जो मानवीय गणना से आगे जाती थी। उन्होंने परमेश्वर के शासन को अपने ही व्यक्ति में वर्तमान के रूप में घोषित किया, और उन्होंने उन झूठी सुरक्षा-भावनाओं को उजागर किया जो लोगों को समर्पण से रोकती थीं, जिनमें प्रतिष्ठा, धन, भय, और आत्म-धार्मिक निश्चितता शामिल हैं। उनकी शिक्षा ने विश्वासयोग्य चेलाई की सीमाएँ निर्धारित कीं, जो

परमेश्वर के चरित्र में जड़ी हुई हैं और आज्ञाकारी भरोसे के माध्यम से प्रकट होती हैं।

## समय पूरा हुआ और पश्चातापी विश्वास की तात्कालिकता

यीशु ने यह प्रचार करना आरंभ किया कि समय पूरा हो गया है और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, यह दिखाते हुए कि उनका आगमन परमेश्वर की योजना में एक निर्णायक क्षण है। उनके संदेश में बिना हेरफेर के तात्कालिकता थी, क्योंकि वह वास्तविकता की घोषणा कर रहे थे, धार्मिक विकल्प पेश नहीं कर रहे थे। पश्चाताप करने और विश्वास करने की बुलाहट आत्म मरम्मत की माँग नहीं, बल्कि आत्म शासन से फिरकर राजा के द्वारा परमेश्वर के शासन को अपनाने का निमंत्रण है। यीशु के शत्रु राज्य को उपहार और दावा दोनों के रूप में प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि अनुग्रह अधिकार के साथ आता है।

यीशु की घोषणा आज भी उस आरामदेह मसीहीपन को ललकारती है जो विश्वास को निष्ठा के बजाय एक सहायक वस्तु मानता है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि पश्चाताप ऐसा मुड़ना है जो प्राथमिकताओं, आदतों, और निष्ठाओं को बदल देता है, क्योंकि राज्य का विश्वास यीशु के प्रभुत्व के प्रति समर्पण को शामिल करता है। यीशु के संदेश की तात्कालिकता उन विश्वासियों को सांत्वना भी देती है जो डरते हैं कि परमेश्वर का काम दूर है, क्योंकि राज्य मसीह में निकट आया है, और परमेश्वर तक पहुँच उनके द्वारा उपलब्ध है। चेलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी आज्ञाकारिता को टालना छोड़ते हैं और आज ही मसीह को उत्तर देना आरंभ करते हैं, क्योंकि राजा की बुलाहट तात्कालिक और दयालु है। राज्य

केवल भविष्य की आशा नहीं, वह वर्तमान शासन है जो जीवन को अभी बदल देता है।

## गरीबों के लिए सुसमाचार और मुक्त कराने का मिशन

यीशु ने गरीबों के लिए शुभ समाचार और दबे हुए लोगों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा की, यह प्रकट करते हुए कि राज्य वास्तविक मानवीय दुख का सामना करता है और साथ ही उसके नीचे छिपी आत्मिक बंधुआई को भी उजागर करता है। आराधनालय की परिस्थिति में, यीशु ने यशायाह से पढ़ा और पूर्ति की घोषणा की, और इस प्रकार अपनी पहचान और मिशन के बारे में एक स्पष्ट दावा किया। उन्होंने अपने आप को उस व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जिसे आत्मा ने भेजा है ताकि परमेश्वर का उद्धार देने वाला शासन टूटे हुए जीवन में प्रवेश करे, और यह घोषणा मानवीय उपलब्धि के बजाय ईश्वरीय पहल पर केंद्रित थी।

यीशु का मिशन कलीसिया को चुनौती देता है कि वह करुणा और सत्य को साथ रखे, क्योंकि राज्य में मुक्त किया जाना क्षमा, पुनः स्थापन, और परमेश्वर के शासन के अधीन नया जीवन शामिल करता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे यीशु के मिशन को केवल राजनीति में घटा न दें या केवल निजी आत्मिकता में सीमित न कर दें, क्योंकि सुसमाचार सम्पूर्ण व्यक्तियों और सम्पूर्ण समुदायों को संबोधित करता है। यह घोषणा घमंड को भी ललकारती है, क्योंकि राज्य को सबसे अधिक वे स्वागत करते हैं जो अपनी आवश्यकता जानते हैं। परिपक्व चेलाई दुखियों की सेवा करना सीखती है बिना उद्धार के केंद्रीय संदेश को खोए, क्योंकि यीशु की करुणा पवित्रता में जड़ी हुई है और लोगों को परमेश्वर की ओर ले जाती है। कलीसिया तब विश्वासयोग्य

बनती है जब वह मसीह के अधिकार के अधीन वही शुभ समाचार घोषित करती और जीवन में प्रकट करती है।

## अधिकार के साथ शिक्षा और परमेश्वर के वचन का भार

यीशु ने शास्त्रियों से भिन्न अधिकार के साथ शिक्षा दी, क्योंकि वह ऐसे बोलते थे जैसे उनके पास ईश्वरीय अधिकार हो, न कि केवल व्याख्यात्मक कौशल भीड़ की प्रतिक्रिया इस बात को उजागर करती है कि उनकी शिक्षा में तुरंत प्रभाव था, और उनका अधिकार केवल वाकपटुता से नहीं, बल्कि क्रिया से जुड़ा हुआ था। यह अधिकार प्रकट करता है कि यीशु केवल परमेश्वर के वचन पर टिप्पणी नहीं कर रहे थे, वह उसकी पूर्ति को खोल रहे थे और राजा के रूप में उसके दावों को लागू कर रहे थे। उनके शत्रु परमेश्वर से अलग नहीं थे, वे साधारण जीवन में प्रवेश करता हुआ परमेश्वर के शासन का स्वर थे।

यीशु की शिक्षा उन आधुनिक श्रोताओं को चुनौती देती है जो समर्पण के बिना प्रेरणा चाहते हैं, क्योंकि अधिकार उत्तर की माँग करता है। पास्टर्स को इस बात पर जोर देना चाहिए कि मसीह के शत्रु व्यक्तिगत सुधार के सुझाव नहीं, बल्कि उस प्रभु की उचित आज्ञाएँ हैं जो पिता को पूर्ण रूप से जानता है। साथ ही, यीशु का अधिकार गर्म और पास्टोरल है, क्योंकि वह नाजुक आत्माओं को कुचलने के लिए नहीं, बल्कि चंगाई देने, सुधारने, और शिष्यों को गढ़ने के लिए सिखाते हैं। परिपक्व चेलाई मसीह के अधिकार से प्रेम करना सीखती है, क्योंकि वह भरोसे योग्य, बुद्धिमान, और पिता की भलाई में जड़ा हुआ है। जब कलीसिया यीशु की शिक्षा को केंद्रीय मानती है, तो वह अधिक स्थिर, अधिक पवित्र, और अधिक

करुणामय बनती है, क्योंकि वह सांस्कृतिक बहाव से नहीं, बल्कि राजा से आकार पाती है।

## दृष्टांत और छिपे हुए प्रकाशन की दया

यीशु ने दृष्टांतों में इसलिए सिखाया कि ग्रहणशील हृदयों को राज्य प्रकट हो और कठोर विरोध उजागर हो, और इस प्रकार उनकी शिक्षा सेवकाई में दया और न्याय दोनों दिखें। दृष्टांत चतुर लोगों के लिए पहलियाँ नहीं हैं, वे ऐसी कहानियाँ हैं जो आत्मिक नम्रता की माँग करती हैं, क्योंकि वे श्रोताओं से सत्य को नियंत्रित करने के बजाय उसे ग्रहण करने की अपेक्षा करती हैं। यीशु ने समझाया कि राज्य के रहस्यों का ज्ञान उनके शिष्यों को दिया गया, यह दिखाते हुए कि समझ एक उपहार है जो उनके साथ संबंध के द्वारा आता है, न कि दूर से विश्लेषण के द्वारा।

यीशु के दृष्टांत आज भी आत्मिक दर्पण की तरह कार्य करते हैं, क्योंकि वे प्रकट करते हैं कि कोई व्यक्ति सत्य चाहता है या सुरक्षा चाहता है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे मसीह की शिक्षा के पास प्रार्थनापूर्ण नम्रता के साथ आएँ, प्रभु से यह मांगते हुए कि वह कठोर कोमल करे और भ्रमित को स्पष्ट करे। दृष्टांत यह भी सिखाते हैं कि प्रकाशन जिम्मेदारी उत्पन्न करता है, क्योंकि जो सुनते हैं वे उत्तर के लिए उत्तरदायी हैं, केवल जानकारी के लिए नहीं। परिपक्व चेलाई उस परिचय के घमंड को अस्वीकार करती है जो कहानियाँ सुनता है पर बदलता नहीं, और वह उस निंदकता को भी अस्वीकार करती है जो उसे तुरंत नियंत्रित न कर पाने पर उसे खारिज कर देती है। यीशु धैर्यपूर्ण बुद्धि के साथ सिखाते हैं, आज्ञाकारी विश्वास के लिए

पर्याप्त प्रकाश देते हैं, और उन से सांत्वना रोकते हैं जो धर्म का उपयोग समर्पण से बचने के लिए करते हैं।

## प्रार्थना, निर्भरता, और राज्य की सामर्थ्य का स्रोत

यीशु ने राज्य की सेवकाई पिता पर दृश्य निर्भरता के साथ की, यह दिखाते हुए कि ईश्वरीय अधिकार स्वतंत्र बल से नहीं, बल्कि आज्ञाकारी संगति के द्वारा प्रयोग किया जाता है। जब भीड़ दबाव डालती थी और आवश्यकताएँ बढ़ती थीं, तब भी यीशु प्रार्थना के लिए अलग हो जाते थे, यह दिखाते हुए कि उनकी शक्ति का स्रोत पिता के साथ संगति और पिता की इच्छा के साथ मेल था। कथा प्रार्थना को आवश्यक के रूप में प्रस्तुत करती है, वैकल्पिक के रूप में नहीं, क्योंकि यीशु ने सार्वजनिक मांग के द्वारा संचालित होने से इनकार किया, और इसके बजाय ईश्वरीय उद्देश्य के द्वारा चलना चुना।

यीशु की निर्भरता उस सेवकाई को चुनौती देती है जो तात्कालिकता से चलती है, क्योंकि तात्कालिकता आज्ञाकारिता का विकल्प बन सकती है। प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि प्रार्थना कोई धार्मिक जोड़ नहीं, बल्कि समर्पण की क्रिया है जो हृदय को परमेश्वर के शासन के अधीन फिर से केंद्रित करती है। इसीह का नमूना उन लोगों को भी सांत्वना देता है जो बोझिल महसूस करते हैं, क्योंकि यह दिखाता है कि विश्वासयोग्य सेवकाई असीम क्षमता की मांग नहीं करती, वह विश्वासयोग्य निर्भरता की मांग करती है। त्विलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी शोर से पीछे हटना, पिता को खोजना, और फिर स्पष्टता और शांति के साथ आज्ञाकारिता में लौटना सीखते हैं। यीशु की राज्य-घोषणा सामर्थ्यशाली थी क्योंकि वह संगति से बहती थी, और कलीसिया तब फलदायी बनती

है जब वह उसी प्रभु के अधीन उसी लय का अनुसरण करती है।

## अनुभाग 4: धार्मिक नेताओं के साथ बढ़ता हुआ तनाव

यीशु की प्रारंभिक सेवकाई ने शीघ्र ही धार्मिक नेताओं के साथ तनाव उत्पन्न किया, इसलिए नहीं कि यीशु लापरवाह थे, बल्कि इसलिए कि सत्य नियंत्रण की जड़ पकड़ चुकी व्यवस्थाओं का सामना करता है। नेता केवल विचारों पर बहस नहीं कर रहे थे, वे अधिकार, प्रतिष्ठा, और धार्मिक सीमाओं की रक्षा कर रहे थे जो उन्हें प्रभाव देती थीं। यीशु ने पाखंड उजागर किया, मनुष्यों द्वारा बनाए गए बोज़ों को चुनौती दी, और ईश्वरीय अधिकारों का दावा किया, और उन क्रियाओं ने निर्णय को अपरिहार्य बना दिया। तनाव धार्मिक और नैतिक था, क्योंकि यीशु ने प्रकट किया कि परमेश्वर कैसा है, और वह प्रकाशन उन लोगों के लिए खतरा था जो नियंत्रित किया जा सकने वाला धर्म पसंद करते थे।

यीशु ने यह भी दिखाया कि विरोध बेहतर सार्वजनिक संबंधों से हल नहीं होगा, क्योंकि संघर्ष की जड़ आराधना में थी। जो लोग आत्म धार्मिकता पर पहचान बनाते हैं, वे ऐसे उद्धारकर्ता का स्वागत आसानी से नहीं कर सकते जो पश्चाताप की बुलाहट देता है, और जो नेता सार्वजनिक प्रशंसा पर निर्भर रहते हैं, वे ऐसे राजा के अधीन आसानी से नहीं हो सकते जो उनके हृदय उजागर करता है। प्रारंभिक टकराव यीशु के अधिकार को करुणामय और अडिग दोनों दिखाते हैं, क्योंकि वह चंगा करते, क्षमा करते, और पुनः स्थापित करते हैं, और साथ ही उन लोगों का सामना भी करते हैं जो धर्म का

उपयोग परमेश्वर से बचने के लिए करते हैं बढ़ता हुआ तनाव क्रूस की ओर संकेत करता है, क्योंकि राजा की पवित्रता उस संसार में शत्रुता उकसाती है जो अंधकार को पसंद करता है।

## क्षमा करने का अधिकार और अनुग्रह का घोटाला

यीशु ने पाप क्षमा करके विवाद खड़ा किया, क्योंकि उस अधिकारपूर्ण अर्थ में क्षमा केवल परमेश्वर की है धार्मिक नेताओं ने उनके शत्रुओं में छिपे दावे को पहचाना, और उनके हृदय ने विरोध किया क्योंकि वे उनकी पहचान के आगे झुकना नहीं चाहते थे फिर यीशु ने चंगाई के द्वारा अपने अधिकार की पुष्टि की, यह दिखाते हुए कि अनुग्रह कोई भावुक घोषणा नहीं, बल्कि सामर्थ्य में जड़ा हुआ ईश्वरीय कार्य है यह टकराव प्रकट करता है कि यीशु का विरोध अक्सर स्वयं अनुग्रह का विरोध होता है, क्योंकि अनुग्रह आत्म उद्धार को बाधित करता है।

यीशु की क्षमा का यह घोटाला आज भी लोगों को बाँटता है, क्योंकि जो लोग नैतिक प्रदर्शन पर भरोसा करते हैं वे ऐसी दया से भयभीत होते हैं जिसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि अनुग्रह सांत्वना देने से पहले नम्र करता है, क्योंकि वह घोषित करता है कि पापियों के पास देने को कुछ नहीं, केवल आवश्यकता है, और मसीह सब कुछ प्रदान करते हैं साथ ही, यीशु की क्षमा अनुमतिवादी नहीं है, क्योंकि वह लोगों को परमेश्वर के शासन में पुनः स्थापित करती है और उन्हें नई आज्ञाकारिता के लिए बुलाती है। कलीसिया को निर्भीकता से क्षमा का प्रचार करना चाहिए, क्योंकि वह राज्य का केंद्र है, चाहे वह धार्मिक घमंड को ठेस ही क्यों न पहुँचाए यीशु उस हृदय का सामना करते हैं जो

सम्मानजनक धर्म पसंद करता है, और वह उद्धार देने वाला अनुग्रह प्रदान करते हैं जो समर्पण की माँग करता है।

## भोजन की संगति और धार्मिक सीमाओं के लिए खतरा

यीशु ने चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ भोजन किया, और यह एक उबाल का बिंदु बन गया क्योंकि भोजन की संगति स्वीकार्यता, संबंध, और साझा समुदाय का संकेत देती थी। धार्मिक नेताओं को अशुद्ध होने और प्रतिष्ठा खोने का भय था, जबकि यीशु ने दिखाया कि पवित्रता नाजुक नहीं है और दया परमेश्वर के चरित्र का भाग है। जब प्रश्न किया गया, तब यीशु ने उत्तर दिया कि वह बीमारों के लिए आए हैं, स्वस्थों के लिए नहीं, और इस प्रकार आत्म धार्मिक अंधापन उजागर किया और मिशन को अलगाव के बजाय उद्धार पर फिर से केंद्रित किया।

यीशु की संगति आज भी उन कलीसियाओं को चुनौती देती है जो सम्मानजनक दिखने को पवित्रता का विकल्प बना देती हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि मसीह-केंद्रित समुदाय पापियों का स्वागत करता है बिना पाप का उत्सव मनाए, क्योंकि यीशु लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाते हैं और साथ ही उन्हें इतना निकट भी लाते हैं कि वे बदले जाएँ। नेताओं की शिकायत यह प्रकट करती है कि धर्म कितनी आसानी से असुविधाजनक लोगों से बचने का तरीका बन जाता है, सत्य में प्रेम करने का तरीका नहीं। कलीसिया तब यीशु को प्रतिबिंबित करती है जब वह अनुशासित करुणा का अभ्यास करती है, जिसमें आतिथ्य, उत्तरदायित्व, और धैर्यपूर्ण चेलाई सम्मिलित है। यीशु की मेज़ नैतिक समझौते की जगह नहीं थी, वह वह स्थान था जहाँ अनुग्रह ने पाप का सामना किया और परमेश्वर के शासन के अधीन नया जीवन प्रदान किया।

## सब्त का संघर्ष और यीशु का प्रभुत्व

यीशु ने सब्त के विवादों का सामना किया क्योंकि नेताओं ने परमेश्वर के उपहार को हथियार बना दिया था, और लोगों पर मनुष्यों द्वारा बनाए गए प्रतिबंधों का बोझ डाल दिया था जो अक्सर परमेश्वर के हृदय को चूक जाते थे। यीशु ने कहा कि सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया है, और उन्होंने उस पर प्रभुत्व का दावा किया, यह प्रकट करते हुए कि वह उस संस्था से ऊपर हैं और उसके उद्देश्य की व्याख्या करने का अधिकार रखते हैं। यह यीशु का पवित्रता को अनदेखा करना नहीं था, बल्कि यीशु का पवित्रता को उसके उचित लक्ष्य पर लौटाना था, दया, आराधना, और परमेश्वर के अधीन जीवन देने वाला विश्राम।

यीशु के सब्त संबंधी संघर्ष आज भी उन कलीसियाओं से बात करते हैं जो लोगों के ऊपर नियमों को प्राथमिकता देने के लिए प्रलोभित होती हैं और उसे विश्वासयोग्यता कहती हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि आज्ञाकारिता का उद्देश्य कभी कुचलना नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाएँ उनकी बुद्धिमान प्रेम की अभिव्यक्तियाँ हैं। फिर भी यीशु का प्रभुत्व विपरीत त्रुटि के विरुद्ध भी चेतावनी देता है, अनुग्रह को आत्मशासन का बहाना बना देना, क्योंकि व्यवस्था के कठोरपन का उत्तर उच्छ्रंखलता नहीं, बल्कि मसीह के प्रति समर्पण है। केवल राजा ही विश्वासयोग्य अभ्यास को परिभाषित करता है, और उसकी परिभाषा में हमेशा पवित्रता में जड़ी हुई करुणा सम्मिलित होती है। त्वेलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी परमेश्वर की आज्ञाओं का सम्मान यीशु के अधिकार के दृष्टिकोण से करना सीखते हैं, यह भरोसा करते हुए कि उसका प्रभुत्व सत्य भी है और भला भी।

## चिन्हों की माँग और समर्पण से इनकार

यीशु ने ऐसे नेताओं का सामना किया जो चिन्हों की माँग करते थे, इसलिए नहीं कि वे सत्य चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वे नियंत्रण चाहते थे चिन्ह की माँग हृदय को दूरी पर रखने का तरीका हो सकती है, यह दिखावा करके पश्चाताप टालना कि विश्वास को बस एक और प्रमाण चाहिए। यीशु ने उस खेल को खेलने से इनकार किया, अनुरोध के नीचे छिपे अविश्वास को उजागर किया, और चेतावनी दी कि कठोर हृदय चमत्कारों को भी संदेह के द्वारा व्याख्यायित करते हैं। कथा दिखाती है कि विरोध अक्सर बौद्धिक कमी नहीं, बल्कि नैतिक इनकार होता है, क्योंकि हृदय राजा के आगे झुकना नहीं चाहता।

यीशु का उत्तर कलीसिया को यह पहचानने में सहायता करता है कि केवल प्रमाण हृदय के समर्पण को उत्पन्न नहीं कर सकता जब हृदय स्वायत्तता से चिपका रहता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे प्रश्नों से धैर्य के साथ जुड़ें, और साथ ही आराधना के गहरे मुद्दे का सामना भी करें, क्योंकि बहुत से लोग ऐसा यीशु चाहते हैं जिसे वे आज्ञा माने बिना परख सकें। नेताओं की माँग मसीहियों को भी चेतावनी देती है कि वे परमेश्वर को आश्वासन की मशीन की तरह न लें, जहाँ आज्ञाकारिता केवल तब दी जाए जब परमेश्वर आदेश के अनुसार प्रदर्शन करें। यीशु पश्चातापी विश्वास की बुलाहट देते हैं, अंतहीन सौदेबाज़ी की नहीं, और उनका अधिकार मानवीय शर्तों के अधीन नहीं है। विलाई तब परिपक्व होती है जब विश्वासी नियंत्रण की माँग करना छोड़ते हैं और भरोसे का अभ्यास करना शुरू करते हैं, क्योंकि राजा का वचन आज्ञाकारिता के लिए पर्याप्त है।

## विरोध की साजिश और क्रूस का प्रारंभिक स्वरूप

यीशु की प्रारंभिक सेवकाई में ऐसी शत्रुता शामिल थी जो कठोर होकर साजिश में बदलने लगी, यह दिखाते हुए कि क्रूस कोई आश्चर्यजनक पटरी से उतरना नहीं था, बल्कि लगातार अस्वीकार किए जाने का चरम था। नेताओं ने उनकी चंगाइयों और अधिकार पर क्रोध के साथ प्रतिक्रिया दी, क्योंकि उनकी करुणा ने उनकी ठंडक को उजागर किया और उनकी पवित्रता ने उनके पाखंड को प्रकट किया। कथा दर्ज करती है कि विरोध शीघ्र ही आकार लेने लगा, यह दिखाते हुए कि आत्म धार्मिक व्यवस्थाएँ जीवित मसीह के सामने कितनी भयभीत हो जाती हैं। यीशु शान्त अधिकार के साथ आगे बढ़ते रहे, क्योंकि वह पिता के मिशन के प्रति आज्ञाकारी थे, मानवीय प्रतिक्रिया के भय से संचालित नहीं।

यीशु का प्रारंभिक विरोध कलीसिया को यह सिखाता है कि विश्वासयोग्य सेवकाई प्रतिरोध उकसा सकती है, तब भी जब वह करुणामय और सत्यनिष्ठ हो। पास्टरों को विश्वासियों को तैयार करना चाहिए कि वे गलत समझे जाने को सहें बिना कड़वे हुए, और पवित्र रहें बिना कठोर हुए। विरोध यह भी याद दिलाता है कि राज्य दुख सहने वाली आज्ञाकारिता के द्वारा आगे बढ़ता है, क्योंकि राजा का मार्ग आत्म सुरक्षा के बजाय बलिदान की ओर ले जाता है। यीशु ने सत्य से समझौता करके संघर्ष से बचने का प्रयास नहीं किया, और उन्होंने घमंड से संघर्ष को बढ़ाया भी नहीं, क्योंकि वह पिता की इच्छा में चले। त्विलाई मसीह का अनुसरण उसी मुद्रा के साथ करना सीखती है, यह भरोसा करते हुए कि आज्ञाकारिता कीमत के योग्य है क्योंकि राजा अनुसरण के योग्य है।

# अपने विशिष्ट संदर्भ में इस सामग्री को लागू करने के तीन तरीके

## ऐसे शिष्य तैयार करें जो नेतृत्व करने से पहले यीशु का अनुसरण करें

यीशु ने शिष्यों को जिम्मेदारियाँ बढ़ाने से पहले संबंध में बुलाया, यह दिखाते हुए कि मसीह के साथ उपस्थिति फलदायी सेवकाई का आधार है। कलीसियाएँ अक्सर लोगों को बिना गहरे गठन के कार्यों, मंचों, या नेतृत्व भूमिकाओं में जल्दबाज़ी से डाल देती हैं, और यह जल्दबाज़ी थकान, घमंड, और छिपे हुए समझौते उत्पन्न करती है। यीशु का नमूना सिखाता है कि उनके साथ होना चरित्र, स्वभाव, और सहनशीलता को आकार देता है, और वही गुण तब सेवकाई को संभालते हैं जब दबाव बढ़ता है और तालियाँ कम होती हैं।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर ऐसे मार्ग तैयार करें जो बने रहने, पवित्रशास्त्र ग्रहण करने, प्रार्थना, अंगीकार, और उत्तरदायी समुदाय को प्राथमिकता दें। विश्वासियों को प्रोत्साहित करें कि वे वृद्धि को दृश्यता से नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता और नम्रता से मायें, और इस धारणा का विरोध करें कि वरदान ही तैयारी है। स्वस्थ नेतृत्व-मार्गों को विश्वासयोग्य उपस्थिति, निरंतर सेवा, और मसीह के अधिकार के अधीन सीखने योग्य मनोभाव पर जोर देना चाहिए। जब कलीसिया लोगों को धीरे और गहराई से बनाती है, तो वह उस तरीके को प्रतिबिंबित करती है जिससे यीशु ने अपने शिष्यों को बनाया, और वह व्यक्तित्व-चालित सेवकाई के प्रति कम असुरक्षित बनती है। लक्ष्य बड़ा स्वेच्छासेवक

सूची नहीं, बल्कि अधिक मसीह-सदृश लोग हैं जो पवित्रता, साहस, और करुणा के साथ राज्य की गवाही उठा सकें।

## लोगों को चमत्कारों को प्रकाशन के रूप में समझना सिखाएँ, मनोरंजन के रूप में नहीं

यीशु ने ऐसे चिन्ह किए जिन्होंने उनकी पहचान प्रकट की और उनके उद्धार देने वाले मिशन को आगे बढ़ाया, और कलीसिया को लोगों की सहायता करनी चाहिए कि वे चमत्कारों को उसी प्रकार पढ़ें जैसे सुसमाचार पढ़ते हैं बहुत से आधुनिक विश्वासी या तो प्रदर्शन के पीछे भागते हैं या चमत्कारों को पूरी तरह खारिज कर देते हैं, फिर भी सुसमाचार की कथाएँ संयमी विस्मय की पुकार करती हैं जो आराधना और आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। यीशु के चिन्ह कभी केवल सामर्थ्य के प्रदर्शन नहीं थे, वे राजा का प्रकाशन थे और विश्वास, पश्चाताप, और परमेश्वर के शासन के प्रति निष्ठा का निमंत्रण थे।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर परमेश्वर की सामर्थ्य को परमेश्वर के उद्देश्य से जोड़ें, यह सिखाते हुए कि मसीह चंगा करते, छुड़ाते, और प्रावधान करते हैं, राज्य के आगमन के चिन्हों के रूप में और पवित्र करुणा की अभिव्यक्तियों के रूप में विश्वासियों को नम्रता के साथ परमेश्वर को खोजने, वास्तविक आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने, और परमेश्वर की बुद्धि को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करें जब उत्तर अपेक्षा से भिन्न दिखें साथ ही, कलीसिया को जिज्ञासा-चालित आत्मिकता से सुरक्षित रखें जो आत्मिक सामर्थ्य को रोमांच मानती है। जब चमत्कारों को प्रकाशन के रूप में सिखाया जाता है, तो विश्वासी उपभोक्तावाद के बजाय भरोसे में बढ़ते हैं, क्योंकि वे

अनुभवों से अधिक मसीह को मूल्यवान मानना सीखते हैं। यीशु की सामर्थ्य के प्रति परिपक्व उत्तर उनके प्रभुत्व के प्रति गहरा समर्पण है, निरंतर नवीनता की ऊँची माँग नहीं।

## लोगों को विरोध के लिए तैयार करें बिना उन्हें लड़ाकू बनने का प्रशिक्षण दिए

यीशु ने प्रारंभिक विरोध का सामना किया क्योंकि उनकी पवित्रता ने आत्म धार्मिक नियंत्रण को खतरा पहुँचाया, और उनकी दया ने धार्मिक घमंड को खतरा पहुँचाया, इसलिए कलीसियाओं को प्रतिरोध की अपेक्षा करनी चाहिए जब मसीह का प्रचार विश्वासयोग्यता से किया जाता है फिर भी यीशु ने विरोध को जिस प्रकार संभाला वह महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने सत्य से समझौता नहीं किया, और उन्होंने असुरक्षा से भी कार्य नहीं किया वह शांत, साहसी, और पिता के प्रति आज्ञाकारी रहे, यह दिखाते हुए कि विश्वासयोग्य गवाही क्रोध से नहीं, बल्कि श्रद्धापूर्ण निष्ठा से संचालित होती है।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर विश्वासियों को शत्रुता के प्रति स्पष्टता, धैर्य, और दृढ़ पवित्रता के साथ उत्तर देने की चेलाई दें। लोगों को यह भेद करना सिखाएँ कि सताव क्या है और अविवेकपूर्ण व्यवहार के परिणाम क्या हैं, क्योंकि हर संघर्ष विश्वासयोग्य दुख नहीं होता। झंडलियों को सिखाएँ कि वे सत्य को तिरस्कार के बिना बोलें, दृढ़ विश्वास को क्रूरता के बिना थामें, और सुसमाचार को केंद्र में रखें, ताकि वे संस्कृति-युद्ध की पहचान की ओर न बह जाएँ। जब विरोध आए, विश्वासियों को प्रार्थना करने, पश्चातापी रहने, और पड़ोसियों की ठोस करुणा से सेवा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करें। कलीसिया तब विश्वासनीय बनती है जब वह

दबाव को मसीह के चरित्र के साथ सहती है, क्योंकि लक्ष्य बहस जीतना नहीं, बल्कि उस राजा की गवाही देना है जिसका अधिकार पवित्र प्रेम के द्वारा प्रकट होता है।

## निष्कर्ष

यीशु की प्रारंभिक यहूदिया और गलील की सेवकाई एक ऐसे राजा को प्रकट करती है जो अधिकार, करुणा, और पिता के प्रति स्थिर आज्ञाकारिता के साथ कार्य करता है वह शिष्यों को व्यक्तिगत दावे के साथ बुलाते हैं, ऐसे चिन्ह करते हैं जो उनकी पहचान प्रकट करते हैं, राज्य को तात्कालिकता और स्पष्टता के साथ घोषित करते हैं, और धार्मिक प्रतिरोध का सामना बिना भय के करते हैं। प्रारंभिक गतिविधियाँ स्थापित करती हैं कि मसीह का मिशन उद्धार देने वाला भी है और व्यवधान उत्पन्न करने वाला भी, क्योंकि परमेश्वर का शासन टूटे हुआओं को पुनः स्थापित करता है और साथ ही उन झूठे देवताओं को भी उजागर करता है जिनका उपयोग लोग स्वयं को बचाने के लिए करते हैं। वही यीशु जिन्होंने मछुआरों को पीछे चलने का निमंत्रण दिया, उन्होंने उन नेताओं का सामना भी किया जिन्होंने समर्पण से इनकार किया, और उनकी सेवकाई ने निर्णयों को अनिवार्य बना दिया।

यीशु यह भी दिखाते हैं कि राज्य का मार्ग संबंधपरक और क्रूस-आकार का है, क्योंकि चेलाई उनके साथ होने से शुरू होती है और फिर उनके अधिकार के अधीन भेजे जाने से। चमत्कार महिमा प्रकट करते हैं, शिक्षा पश्चाताप की माँग करती है, और विरोध अनुग्रह के प्रति हृदय के प्रतिरोध को उजागर करता है। जैसे जैसे तनाव बढ़ता है, यीशु स्थिर रहते हैं, इसलिए नहीं कि संघर्ष सुखद है, बल्कि इसलिए कि आज्ञाकारिता आवश्यक है और प्रेम पवित्र है। आज की

कलीसिया इसी मसीह के द्वारा बनाई जाती है, और विश्वासयोग्य सेवकाई उनके नमूने को प्रतिबिंबित करेगी, करुणामय और साहसी, परमेश्वर के वचन में गहराई से जड़ी हुई, और सत्य की कीमत सहने के लिए तैयार यीशु की प्रारंभिक सेवकाई केवल इतिहास नहीं, वह वह आधार है जिससे उनके लोग अधिकार, चेलाई, और राज्य की गवाही को समझते हैं।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. एक ठोस “जाल” कौन सा है जिसे आपको छोड़ना चाहिए ताकि यीशु के प्रति आपकी निष्ठा अधिक तुरंत और अधिक दृश्यमान हो जाए?
2. आप यीशु के चिन्हों पर किस प्रकार प्रतिक्रिया देते हैं, आराधनापूर्ण समर्पण के साथ, या ऐसी जिज्ञासा के साथ जो आज्ञाकारिता से पहले रुक जाती है?
3. आपको यीशु की राज्य-शिक्षा की कहाँ आवश्यकता है कि वह आपकी प्राथमिकताओं को नया रूप दे, विशेषकर पश्चाताप, दया, और भरोसे के विषय में?
4. किस प्रकार धार्मिक सम्मानजनकता आपको उन लोगों से दूरी बनाए रखने के लिए प्रलोभित कर रही है जिन्हें यीशु ने जानबूझकर स्वागत किया?
5. आप अपने हृदय को कैसे तैयार कर सकते हैं कि आप विरोध को मसीह-सदृश पवित्रता, शांत साहस, और निरंतर करुणा के साथ सहें?

# अध्याय 5: पहाड़ पर दिया गया उपदेश

## परिचय

यीशु एक पहाड़ी पर चढ़े और राजा के अधिकार के साथ बोले, और कलीसिया कभी भी उनके शत्रुओं को सहज रूप से पढ़ नहीं पाई है। प्रवृत्त उपदेश प्रेरणादायक कथनों का संग्रह नहीं है, यह राज्य के जीवन की एक राजसी घोषणा है, जो यीशु की पहचान में जड़ी हुई है, और उनके अधिकार द्वारा लागू की जाती है। वह केवल एक उच्च नैतिक संहिता प्रस्तुत नहीं करते, वह यह प्रकट करते हैं कि पिता का शासन मानवीय हृदयों, संबंधों, और दैनिक प्राथमिकताओं में कैसा दिखता है। यदि हम इन अध्यायों को सही रीति से सुनते हैं, तो हम केवल प्रभावित होकर नहीं जाते, हम सामना किए हुए, सांत्वना पाए हुए, और बुलाए हुए होकर जाते हैं।

यीशु यहाँ विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में भी बोलते हैं जो पवित्रशास्त्र को पूरा करता है और हर नकली धार्मिकता को उजागर करता है। उनकी शिक्षा गर्म, पास्टोरल, और चुभने वाली है, क्योंकि वह नम्रों को आशीष देते हैं और आत्म-निश्चिंतों को चेतावनी देते हैं, और वह दोनों बिना किसी क्षमा-याचना के करते हैं। प्रवृत्त उपदेश ऐसे शिष्यों को गढ़ता है जो पिता के चरित्र से आकार पाते हैं, न कि सार्वजनिक प्रशंसा, धार्मिक प्रदर्शन, या सांस्कृतिक दबाव से। यह अध्याय दिखाता है कि यीशु कैसे राज्य के मूल्यों की स्थापना करते हैं, व्यवस्था की पूर्ति को स्पष्ट करते हैं, हृदय को लक्ष्य बनाते

हैं, और विश्वासियों को पिता की प्राथमिकताओं पर केंद्रित एक धर्मी जीवन की ओर निर्देशित करते हैं।

## अनुभाग 1: धन्यवचन और राज्य के मूल्य

यीशु आशीष की घोषणा से शुरुआत करते हैं, और यह क्रम महत्वपूर्ण है क्योंकि राज्य को आज्ञाकारिता के रूप में जीने से पहले अनुग्रह के रूप में ग्रहण किया जाता है। धन्यवचन मानवीय सामर्थ्य की चापलूसी नहीं करते, वे उन लोगों को सम्मान देते हैं जिन्हें संसार अक्सर अनदेखा कर देता है, आत्मा के दीन, नम्र, दयालु, और शुद्ध हृदय वाले। यीशु कमजोरी को अपने आप में आशीष नहीं देते, वह उन्हें आशीष देते हैं जो पिता के शासन को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं क्योंकि वे अपनी आवश्यकता जानते हैं और आत्मनिर्भरता पर पहचान बनाने से इनकार करते हैं। आरंभ से ही, यीशु सिखाते हैं कि राज्य सांसारिक प्रतिष्ठा को उलट देता है और इस बात को नया रूप देता है कि “अच्छा जीवन” क्या है।

यीशु यह भी स्थापित करते हैं कि आशीष केवल आराम नहीं है, वह वाचा का अनुग्रह है जो लोगों को पिता के चरित्र से आकार पाए हुए जीवन में खींच लाता है। राज्‍य के मूल्य स्वीकार्यता कमाने की सीढ़ियाँ नहीं हैं, वे बदले हुए लोगों का वर्णन हैं जो राजा के द्वारा परमेश्वर के शासन के अधीन रहते हैं। धन्यवचन प्रकट करते हैं कि यीशु का अधिकार पास्टोरल है क्योंकि वह उस जीवन को नाम देते हैं जो सच्ची समृद्धि की ओर ले जाता है, और वह भविष्यवाणी करने वाला है क्योंकि वह सामर्थ्य, नियंत्रण, और धार्मिक घमंड के खोखले वादों को उजागर करते हैं। राज्य के मूल्य यीशु द्वारा उन

लोगों को आशीष देने से आरंभ होते हैं जो परमेश्वर के अधीन होते हैं, न कि उन्हें जो दूसरों को नियंत्रित करते हैं।

## आत्मा के दीन और राज्य में प्रवेश का द्वार

यीशु घोषणा करते हैं कि राज्य आत्मा के दीनों का है, और यह कथन स्थापित करता है कि आत्मिक दरिद्रता छिपाने का दोष नहीं है, वह अनुग्रह का द्वार है। आत्मा का दीन होना परमेश्वर के सामने अपनी नैतिक दिवालियापन को पहचानना और यह दिखावा करने से इनकार करना है कि आत्मिक जीवन प्रयास या प्रतिष्ठा के द्वारा खरीदा जा सकता है। यीशु उन्हें आशीष देते हैं जो खाली हाथ आते हैं, क्योंकि खाली हाथ राजा का उपहार ग्रहण कर सकते हैं, जबकि मुट्टियाँ भींचे हुए हाथ नहीं कर सकते। उनका अधिकार आत्म-औचित्य की प्रवृत्ति का सामना करता है, और उनकी दया उन्हें ग्रहण करती है जो अंततः स्वयं का बचाव करना छोड़ देते हैं।

यीशु की यह आशीष उस सेवकाई को भी सुधारती है जो मानती है कि चेलाई आत्मविश्वासी दक्षता से शुरू होती है। पास्टर्स को वयस्कों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि सच्ची परिपक्वता निरंतर निर्भरता से बढ़ती है, क्योंकि घमंड पश्चाताप को रोकता है, और पश्चाताप जीवन का मार्ग है। जब विश्वासी यह स्वीकार करते हैं कि उन्हें प्रतिदिन दया की आवश्यकता है, तो वे दूसरों के प्रति कम कठोर और पवित्रता के प्रति अधिक गंभीर हो जाते हैं। यीशु ऐसा समुदाय बना रहे हैं जहाँ आवश्यकता लज्जाजनक नहीं है, और जहाँ अनुग्रह सस्ता नहीं है, क्योंकि राजा पवित्र और निकट है। धन्यवचन नम्र समर्पण से आरंभ होते हैं क्योंकि राज्य आत्म-निर्मित

धार्मिकता के द्वारा प्रवेश नहीं किया जा सकता (मत्ती 5:3, एनआईवी)।

## नम्रता और पिता के शासन के अधीन सामर्थ्य

यीशु नम्रों को आशीष देते हैं, इसलिए नहीं कि नम्रता निष्क्रियता है, बल्कि इसलिए कि नम्रता वह सामर्थ्य है जो पिता के अधीन समर्पित है ऐसे संसार में जो आक्रामक आत्म-प्रदर्शन का उत्सव मनाता है, यीशु उन लोगों का सम्मान करते हैं जो नियंत्रण को पकड़ने से इनकार करते हैं, यह भरोसा करते हुए कि परमेश्वर का न्याय और समय भरोसेमंद हैं। नम्रता कमजोरी नहीं है, वह प्रतिशोध लेने, प्रभुत्व जमाने, या हेरफेर करने से अनुशासित इनकार है, क्योंकि हृदय व्यक्तित्व शक्ति के बजाय परमेश्वर के शासन में स्थिर होता है। यीशु नम्रों को आशीष देते हैं क्योंकि उनकी मुद्रा स्वयं राजा को प्रतिबिंबित करती है, जो बाद में पवित्रता को छोड़े बिना दुःख सहेंगे।

यीशु की शिक्षा उन विश्वासियों का सामना करती है जो साहस को कठोरता और दृढ़ विश्वास को प्रभुत्व से जोड़ देते हैं। पास्टर्स को लोगों को यह पहचानने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए कि राज्य की सामर्थ्य धैर्यशील, संयमित, और भरोसे में जड़ी हुई होती है, क्योंकि पिता अपने बच्चों की रक्षा उन्हें क्रूर बनाए बिना करते हैं। नम्रता नेतृत्व को भी नया रूप देती है, क्योंकि अगुवों को लोगों को नियंत्रित करने के लिए नहीं, बल्कि मसीह के अधिकार के अधीन चराने के लिए बुलाया गया है। आक्रोश और सार्वजनिक प्रदर्शन की संस्कृति में, नम्र शिष्य अलग दिखाई देते हैं, क्योंकि वे प्रतिष्ठा खोने के भय से संचालित होने से इनकार करते हैं। यीशु अपने लोगों को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वारिसों के रूप में जीने के लिए बुलाते

हैं, न कि स्थान के लिए घबराए हुए प्रतिस्पर्धियों के रूप में (मत्ती 5:5, एनआईवी)।

## दया और वह हृदय जो राजा को प्रतिबिंबित करता है

यीशु दयालुओं को आशीष देते हैं, क्योंकि दया ऐसा हृदय प्रकट करती है जिसने वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह का सामना किया है। दया नैतिक उदासीनता नहीं है, वह दोषियों, घायलों, और जरूरतमंदों के प्रति करुणामय कार्य है, जो सत्य से आकार पाता है और प्रेम से प्रेरित होता है। दयालु पाप को बहाना नहीं बनाते, पर वे दंड में आनंद लेने से इनकार करते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की कृपा पर अपनी निर्भरता को याद रखते हैं। यहाँ यीशु का अधिकार पास्टोरल है, क्योंकि वह ऐसा समुदाय बना रहे हैं जहाँ न्याय क्रूरता के बिना किया जाता है और क्षमा भोलेपन के बिना अभ्यास की जाती है।

यीशु की यह आशीष एक खतरनाक धार्मिक प्रवृत्ति को भी उजागर करती है, दयालु हुए बिना सही होने की इच्छा। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि कठोरता अक्सर अनुग्रह को भूल जाने से उत्पन्न होती है, क्योंकि जो हृदय दया को स्मरण रखता है वह दोष लगाने में धीमा और पुनः स्थापित करने में तत्पर होता है। यह धन्यवचन पवित्रता को अनदेखा करने की अनुमति नहीं है, यह पिता के चरित्र को प्रतिबिंबित करने की बुलाहट है, क्योंकि परमेश्वर की दया पवित्र दया है जो लोगों को पाप से बचाती है, न कि उन्हें उसमें छोड़ देती है। जब कलीसिया दयालु बनती है, तो वह विश्वासनीय बनती है, क्योंकि वह उस राजा को प्रतिबिंबित करती है जो खोजने और उद्धार करने के लिए आए। यीशु प्रतिज्ञा करते हैं कि दया का उत्तर दया से दिया जाएगा, और इस प्रकार ऐसे राज्य को प्रकट करते हैं जहाँ

अनुग्रह ग्रहण भी किया जाता है और अभ्यास भी (मती 5:7, एनआईवी)।

## शुद्ध हृदय और चेलाई की एकनिष्ठ निष्ठा

यीशु शुद्ध हृदय वालों को आशीष देते हैं, क्योंकि राज्य अंततः आराधना और निष्ठा के विषय में है, न कि केवल व्यवहार प्रबंधन के विषय में। हृदय की शुद्धता वह आंतरिक अखंडता है जो दोहरे मन की भक्ति से इनकार करती है, और छिपी हुई मूर्तियों के बजाय परमेश्वर को चुनती है। यीशु केवल उन्हें आशीष नहीं देते जो बाहर से स्वच्छ दिखाई देते हैं, बल्कि उन्हें जिनकी इच्छाएँ और प्रेरणाएँ पिता के द्वारा बदली जा रही हैं। यह गहराई से सामना करने वाला है, क्योंकि यह घोषित करता है कि भीतर परिवर्तन के बिना बाहरी धर्म राज्य की धार्मिकता नहीं है।

यीशु की यहाँ की शिक्षा पास्टोरल सेवकाई को केवल व्यवहार संशोधन से हटाकर सुसमाचार के द्वारा हृदय निर्माण की ओर ले जाती है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे उन मूर्तियों की पहचान करें जो हृदय को अशुद्ध करती हैं, जिनमें स्वीकृति, आराम, नियंत्रण, और गुप्त लिप्तता शामिल हैं, और फिर उन्हें मसीह के अनुग्रह में जड़े पश्चाताप की ओर ले जाएँ। शुद्धता आत्म-स्वच्छता से प्राप्त नहीं होती, बल्कि परमेश्वर के साथ संगति से उत्पन्न होती है जो नई इच्छाएँ और नए स्वभाव पैदा करती है। यह प्रतिज्ञा कि शुद्ध हृदय वाले परमेश्वर को देखेंगे, भावुक नहीं है, वह वाचा की वास्तविकता है, क्योंकि जो यीशु के हैं उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति के लिए उपयुक्त बनाया जा रहा है। राज्य की चेलाई एकनिष्ठ है क्योंकि यीशु अविभाजित भक्ति के योग्य हैं (मती 5:8, एनआईवी)।

## मेल कराने वाला स्वभाव और मेलमिलाप का साहस

यीशु मेल कराने वालों को आशीष देते हैं क्योंकि राज्य में शांति संघर्ष से बचने का नाम नहीं है, वह परमेश्वर के शासन के अधीन मेलमिलाप की साहसी खोज है। मेलमिलाप के लिए सत्य, नम्रता, धैर्य, और कीमत सह लेने की तैयारी आवश्यक है, क्योंकि टूटे हुए संबंध प्रायः बलिदान के बिना नहीं भरते। यीशु का अधिकार सिखाता है कि पिता के बच्चे उनके समान दिखाई देते हैं जब वे विभाजन को ईंधन देने के बजाय पुनः स्थापन की खोज करते हैं। ऐसे संसार में जो अक्सर शांति को मौन और मेलमिलाप को इनकार समझ लेता है, यीशु शांति को एक पवित्र खोज के रूप में परिभाषित करते हैं जो जहाँ संभव हो लोगों को सही संबंध में वापस लाती है।

यीशु की यह आशीष उन कलीसियाओं का भी सामना करती है जो अनसुलझी शत्रुता को सामान्य बनने देती हैं। पास्टरों को विश्वासियों को अंगीकार, क्षमा, और जवाबदेह बातचीत का अभ्यास करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, क्योंकि राज्य ऐसा मेल-मिलाप वाला समुदाय बनाता है जो पिता के हृदय को प्रतिबिंबित करता है। मेलमिलाप का अर्थ दृढ़ विश्वास छोड़ देना नहीं है, वह अपने दृढ़ विश्वासों को इस प्रकार जीना है कि वह दूसरे के भले की खोज करे और परमेश्वर के सत्य का आदर करे। यीशु बाद में क्रूस के द्वारा मेलमिलाप का प्रदर्शन करते हैं, शत्रुता को सहकर पापियों को पिता से मेल कराते हैं, और वही ढाँचा यह आकार देता है कि शिष्य संबंधों के घावों को कैसे संभालते हैं। मेल कराने वाले परमेश्वर के पुत्र कहलाते हैं क्योंकि वे परिवार की समानता को प्रतिबिंबित करते हैं, प्रेम में जड़ा हुआ साहस (मत्ती 5:9, एनआईवी)।

## अनुभाग 2: व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की यीशु द्वारा पूर्ति

यीशु स्पष्ट करते हैं कि वह व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को रद्द करने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आए हैं, और यह कथन पर्वत उपदेश को परमेश्वर की वाचा-उद्देश्यों के साथ निरंतरता में स्थिर करता है। उनका अधिकार उस सुधारक का अधिकार नहीं है जो पवित्रशास्त्र को त्याग देता है, बल्कि उस मसीहा का अधिकार है जो पवित्रशास्त्र को पूर्णता तक पहुँचाता है। पूर्ति का अर्थ है कि यीशु व्यवस्था के अभिप्राय को अपने जीवन में धारण करते हैं, भविष्यद्वक्ताओं की कथा को पूरा करते हैं, और उस धार्मिकता को प्रकट करते हैं जिसकी परमेश्वर ने हमेशा माँग की, सूची के रूप में नहीं, बल्कि हृदय-स्तरीय वास्तविकता के रूप में। इसलिए यीशु स्वयं को पुराने नियम का व्याख्यात्मक केंद्र स्थापित करते हैं, और यह दावा कोई साधारण शिक्षक ईमानदारी से नहीं कर सकता।

यीशु यह भी उजागर करते हैं कि व्यवस्था का उद्देश्य कभी भी बाहरी अनुपालन तक सिमट जाना नहीं था जो हृदय को छुए बिना रह जाए। व्यवस्था को पूरा करके, वह उसकी गहराई, उसका आत्मिक लक्ष्य, और उसकी अंतिम दिशा स्वयं की ओर प्रकट करते हैं। उनकी शिक्षा विधिवाद और स्वेच्छाचार दोनों का सामना करती है, क्योंकि विधिवाद व्यवस्था को चढ़ने की सीढ़ी मानता है, जबकि स्वेच्छाचार अनुग्रह को परमेश्वर की इच्छा की उपेक्षा करने की अनुमति मानता है। यीशु पवित्रशास्त्र को इसलिए पूरा करते हैं कि वह अपने लोगों को छुड़ाएँ और उन्हें ऐसे समुदाय में ढालें जिसकी धार्मिकता उनसे संगति से बहती है। इसलिए पर्वत उपदेश

व्यवस्था का अवमूल्यन नहीं है, वह राजा के अधीन उसके सच्चे उद्देश्य का प्रकाशन है।

## रद्द नहीं, बल्कि परमेश्वर के वाचा-उद्देश्य को पूर्ण करना

यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के साथ निरंतरता पर जोर देते हैं, और वह ऐसा इसलिए करते हैं कि शिष्य यह कल्याण न करें कि परमेश्वर की पवित्रता डीली हो गई है। वाचा के अधीन परमेश्वर ने जिस धार्मिकता की माँग की, वही धार्मिकता परमेश्वर को प्रिय है, और यीशु उसे सिद्ध आज्ञाकारिता जीकर और वह प्रतिज्ञात उद्धार लाकर पूरा करते हैं जिसे भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से देखा था। उनका कथन रेखांकित करता है कि पवित्रशास्त्र एकीकृत है, और पिता की योजना संगत है, विरोधाभासी नहीं। यीशु उसी के रूप में बोलते हैं जिसकी ओर व्यवस्था संकेत करती है और जिसमें भविष्यद्वक्ताओं की सच्ची पूर्ति पाई जाती है।

यीशु की शिक्षा कलीसिया का पवित्रशास्त्र में भरोसा मजबूत करती है, क्योंकि वह आग्रह करती है कि परमेश्वर का वचन अधिकारपूर्ण और सुसंगत बना रहता है। पास्टर्स को विधासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पुराने नियम को मसीह के द्वारा पढ़ें, उसमें नैतिक माँगों को देखें जो परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करती हैं, और उसमें उद्धारकारी प्रतिज्ञाओं को देखें जो यीशु में चरम पर पहुँचती हैं। पूर्ति का अर्थ यह भी है कि शिष्य पवित्रशास्त्र के साथ चयनात्मक व्यवहार नहीं करते, सुविधाजनक भागों को पकड़े रहकर और महँगी माँगों को अनदेखा करके। यीशु व्यवस्था को पूरा करते हैं, और फिर वह अपने लोगों को सिखाते हैं कि वे उस पूरी हुई वाचा-कथा से संबंधित लोगों के रूप में कैसे जिंँ।

इसलिए राज्य की चेलाई पवित्रशास्त्र का आदर करती है क्योंकि वह पिता का वचन है, और वह मसीह की आराधना करती है क्योंकि वही पवित्रशास्त्र की पूर्ति हैं (मती 5:17, एनआईवी)।

## ऐसी धार्मिकता जो बाहरी प्रदर्शन से बढ़कर हो

यीशु घोषणा करते हैं कि शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर धार्मिकता आवश्यक है, और यह बात हर उस व्यक्ति को चौंका देती है जो पवित्रता को दिखाई देने वाली धार्मिक सफलता से मापता है वह अधिक प्रभावशाली नियम-पालन की बुलाहट नहीं देते, बल्कि ऐसी गहरी धार्मिकता की जो हृदय तक पहुँचती है और आज्ञाकारिता में बाहर की ओर बहती है। शास्त्री और फरीसी दिखावे को संभाल सकते थे, विवरणों पर बहस कर सकते थे, और सीमाएँ लागू कर सकते थे, फिर भी यीशु उजागर करते हैं कि बाहरी धार्मिकता घमंड, कड़वाहट, और कपट के साथ साथ रह सकती है। उनका अधिकार सीधा है, क्योंकि वह बातचीत नहीं कर रहे, वह राज्य के जीवन की प्रकृति का वर्णन कर रहे हैं।

यीशु का यह कथन यह भी स्पष्ट करता है कि सुसमाचार क्यों आवश्यक है, क्योंकि बढ़कर धार्मिकता केवल मानवीय प्रयास से प्राप्त नहीं होती। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि मसीह अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा धार्मिकता प्रदान करते हैं, और फिर अपने लोगों को बदलते हैं ताकि वे भीतर से बाहर की ओर धर्मी जीवन जीना शुरू करें। यह विश्वासियों को निराशा से बचाता है, क्योंकि मानक ऊँचा है, और यह उन्हें घमंड से भी बचाता है, क्योंकि समाधान मसीह हैं, स्वयं नहीं। राज्य का जीवन मानवीय दर्शकों के लिए प्रदर्शन नहीं है, वह

पिता की दृष्टि के अधीन निष्ठा है, अनुग्रह से आकार पाया हुआ और आत्मा के द्वारा सामर्थ्य पाया हुआ यीशु मानक को ऊँचा करते हैं ताकि हृदय प्रकट हो और हमें अपनी ओर खींचें, जहाँ सच्ची धार्मिकता पाई जाती है (मत्ती 5:20, एनआईवी)।

## परमेश्वर के वचन के अधिकारपूर्ण व्याख्याकार के रूप में यीशु

यीशु बार बार कहते हैं, “तुम ने सुना है कि कहा गया था,” और फिर वह आज्ञा को और गहरा करते हैं, यह प्रकट करते हुए कि वह केवल परंपरा को नहीं दोहरा रहे, वह दैवी व्याख्यात्मक अधिकार के साथ बोल रहे हैं वह हत्या, व्यभिचार, तलाक, शपथ लेना, प्रतिशोध, और शत्रु-प्रेम को लक्ष्य बनाते हैं, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर की आज्ञाएँ हमेशा हृदय की मुद्रा पर लक्षित थीं, केवल बाहरी संयम पर नहीं। यह यीशु का मूसा का खंडन करना नहीं है, यह यीशु का यह उजागर करना है कि मानवीय परंपरा कैसे अक्सर परमेश्वर की आज्ञाओं को सिकोड़कर संभाले जा सकने वाली बाहरी सीमाओं में बदल देती है। उनका अधिकार निर्विवाद है क्योंकि वह उसी के रूप में बोलते हैं जो पिता के अभिप्राय को पूर्ण रूप से जानता है।

यीशु की यह विधि कलीसिया को सिखाती है कि वह पवित्रशास्त्र के अधीन वैसे ही हो जैसे यीशु उसे सिखाते हैं, न कि वैसे जैसे हम उसे सुनना पसंद करते हैं। पास्ट्रों को विधासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि हम कितनी आसानी से पवित्रता को इस तरह घटा देते हैं कि महंगा परिवर्तन टल जाए, क्योंकि चयनात्मक आज्ञाकारिता सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया है। यीशु परमेश्वर के वचन को उद्देश्यों, इच्छाओं, और आंतरिक जीवन तक ले आते हैं, कोई

सुरक्षित खंड अछूता नहीं छोड़ते ऐसी शिक्षा को वैकल्पिक नहीं माना जा सकता, क्योंकि राजा ऐसा राज्य-समुदाय बना रहे हैं जिसके जीवन पिता के चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं। जब विश्वासी मसीह की व्याख्या का विरोध करते हैं, तो वे केवल किसी प्रचारक से असहमत नहीं होते, वे प्रभु का विरोध कर रहे होते हैं। उपदेश का अधिकार श्रद्धापूर्ण समर्पण की माँग करता है, क्योंकि यीशु विश्वासयोग्य पुत्र हैं जो परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करते हैं (मत्ती 5:21-22, एनआईवी)।

## व्यवस्था का सच्चा लक्ष्य और वह प्रेम जो उसे पूरा करता है

यीशु व्यवस्था को उसके सच्चे लक्ष्य की ओर ले जाते हैं, और वह लक्ष्य ऐसा प्रेम है जो पिता की पवित्रता को प्रतिबिंबित करता है। इसी कारण वह शिष्यों को प्रतिशोध से आगे दया में, शत्रु-घृणा से आगे प्रेम में, और सतही अनुपालन से आगे आंतरिक अखंडता में बुलाते हैं। व्यवस्था का उद्देश्य कभी आत्म-धर्मों घमंड पैदा करना नहीं था, उसका उद्देश्य ऐसा लोग-समुदाय बनाना था जो आराधना, संबंधों, और न्याय में परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करे। यीशु की शिक्षा प्रकट करती है कि पवित्रता और प्रेम प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं, क्योंकि पवित्रता के बिना प्रेम लिप्तता बन जाता है, और प्रेम के बिना पवित्रता क्रूरता बन जाती है।

यीशु की यह शिक्षा आधुनिक प्रवृत्ति को भी सुधारती है जो सत्य को करुणा के विरुद्ध खड़ा कर देती है, मानो एक विश्वासयोग्य मसीही को किसी एक को चुनना पड़े। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि पिता की आज्ञाएँ उनके बुद्धिमान प्रेम की अभिव्यक्तियाँ हैं, और इसलिए आज्ञाकारिता आनंद की शत्रु नहीं, जीवन का मार्ग है। यीशु व्यवस्था को अलग

रखकर नहीं, बल्कि उसे धारण करके, उसे जीकर, और फिर अपने लोगों को अपने ही जीवन में खींचकर पूरा करते हैं। इसी कारण मसीही नैतिकता को मसीह से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि वही केंद्र, मानक, और स्रोत हैं। व्यवस्था एक धर्मी उद्धारकर्ता की आवश्यकता की ओर संकेत करती है, और यीशु वह धार्मिकता प्रदान करते हैं, और साथ ही ऐसा समुदाय बनाते हैं जो उसे जीना शुरू करता है। विलाई तब बढ़ती है जब आज्ञाकारिता को परमेश्वर के शासन के अधीन मसीह-सदृश प्रेम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है (मती 5:44-45, एनआईवी)।

## मसीहा के राज्य मिशन में भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति

यीशु भविष्यद्वक्ताओं को पूरा करते हैं क्योंकि वह प्रतिज्ञात राज्य की वास्तविकताओं को अपने ही व्यक्तित्व और सेवकाई के द्वारा वर्तमान में ले आते हैं। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के शासन, परमेश्वर के छुड़ाने, और परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की शुद्धि के लिए तरसते थे, और यीशु राज्य की घोषणा करके और एक नया समुदाय बनाकर उस आशा को धारण करते हैं। उनकी शिक्षा भविष्यद्वक्ताओं की अपेक्षा के साथ मेल खाती है, फिर भी वह राजनीतिक विजय की उथली धारणाओं को सुधारती है, क्योंकि राज्य पश्चाताप और हृदय परिवर्तन के द्वारा आगे बढ़ता है। यीशु केवल भविष्यवाणी की गई घटनाओं की पूर्ति ही नहीं, बल्कि वाचा-विश्वासयोग्यता के लिए भविष्यद्वक्ताओं की पुकार की भी पूर्ति के रूप में खड़े हैं।

यीशु द्वारा भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति पास्टोरल सेवकाई को भी मजबूत करती है, क्योंकि वह भरोसा देती है कि सुसमाचार देर से गढ़ा गया विचार नहीं, बल्कि परमेश्वर की दीर्घ योजना का चरम है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी

चाहिए कि वे देखें कि पवित्रशास्त्र की कथा का केंद्र मसीह हैं, और भविष्यद्वक्ताओं को विश्वासयोग्य रीति से पढ़ना यीशु के उद्धारकारी कार्य और राज्य-घोषणा में उनकी पूर्ति को देखना है। इसका अर्थ यह भी है कि चेलाई यीशु को अलग-थलग नैतिक शिक्षक के रूप में देखने का विरोध करे, क्योंकि वह मसीहा हैं जो परमेश्वर का प्रतिज्ञात शासन लाते हैं। भविष्यद्वक्ताओं की कथा एक ऐसे राजा में पूर्ण होती है जो पाप का सामना करता है, एक समुदाय इकट्ठा करता है, और आज्ञाकारिता के द्वारा पिता के चरित्र को प्रकट करता है। जब विश्वासी यीशु को भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति के रूप में देखते हैं, तो आराधना गहरी होती है, और आज्ञाकारिता स्थिरता पाती है, क्योंकि विश्वास परमेश्वर के सुसंगत वाचा-उद्देश्य में स्थिर होता है (मती 5:17-18, एनआईवी)।

## अनुभाग 3: आंतरिक धार्मिकता और हृदय परिवर्तन

यीशु बाहरी आज्ञाओं से आंतरिक वास्तविकताओं की ओर चलते हैं क्योंकि राज्य हृदय के विषय में है, जो आराधना और इच्छा का नियंत्रण केंद्र है। वह शिष्यों को यह कल्पना करने से इनकार करते हैं कि दिखाई देने वाले घोटाले से बचना ही पवित्रता है, क्योंकि छिपा हुआ क्रोध, कामना, छल, और कड़वाहट स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के रूप में प्रवृत्त उपदेश उजागर करता है कि पाप केवल वह नहीं जो हम करते हैं, वह वह भी है जिसे हम प्रेम करते हैं, जिसे हम तरसते हैं, और जिसे हम उचित ठहराते हैं। यीशु राजा के रूप में बोलते हैं जो हृदय को देखता है, और इसलिए वह उस बात को संबोधित करते हैं जिसे मानवीय पर्यवेक्षक माप नहीं सकते।

यीशु यह भी दिखाते हैं कि हृदय परिवर्तन केवल लज्जा के द्वारा नहीं होता, बल्कि उनके अधिकार के अधीन अनुग्रह-प्रेरित पश्चात्ताप के द्वारा होता है। उनके शत्रु तीखे हैं, फिर भी वे चंगाई के लिए हैं, क्योंकि वह शिष्यों को ऐसे जीवन में बुला रहे हैं जहाँ आंतरिक अखंडता बाहरी कर्म से मेल खाती है। यह आंतरिक धार्मिकता कलीसिया को कपट से बचाती है, क्योंकि कपट दिखावे और वास्तविकता के बीच की खाई है। यीशु उस खाई को बंद करते हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं को उद्देश्य, कल्पना, वाणी, और निजी जीवन तक ले आकर। राजा ऐसा समुदाय बनाते हैं जो संपूर्ण है, विभाजित नहीं, और जो पिता की दृष्टि के अधीन ईमानदारी और श्रद्धा से जीता है।

**क्रोध, तिरस्कार, और वह हत्या जो भीतर से शुरू होती है**

यीशु क्रोध को एक जड़ के रूप में उजागर करते हैं जो बढ़कर तिरस्कार बन सकती है, और तिरस्कार एक आत्मिक हिंसा है जो दूसरे व्यक्ति को निरर्थक मानती है। वह शारीरिक हत्या की गंभीरता से इनकार नहीं करते, पर वह प्रकट करते हैं कि हृदय क्रोध, अपमान, और अमानवीयकरण के द्वारा हत्या की आत्मा को ढो सकता है। यीशु का अधिकार अस्थिर कर देने वाला है क्योंकि वह परमेश्वर के न्याय को निजी दृष्टिकोणों और सार्वजनिक वाणी तक ले आते हैं, और शिष्यों को यह मानने नहीं देते कि मौखिक क्रूरता हानिरहित है। वह सिखाते हैं कि मेलमिलाप तुरंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शत्रुता को संजोए हुए आराधना स्वस्थ नहीं हो सकती।

यीशु के शत्रु कलीसिया पर दबाव डालते हैं कि वह संबंधों की पवित्रता को गंभीरता से ले, विशेषकर ऐसे समय में जब तिरस्कार सांस्कृतिक रूप से सामान्य है। पास्टर्स को

विश्वासियों को वाणी, स्वर, और छिपी हुई नाराज़गी की जाँच करना सिखाना चाहिए, क्योंकि क्रोध अक्सर धार्मिकता का रूप धारण कर लेता है जब वह वास्तव में घमंड होता है। यीशु अपने लोगों को तुरंत मेलमिलाप की खोज करने के लिए बुलाते हैं, भावनाएँ ठंडी होने तक उसे टालने के लिए नहीं, क्योंकि अनसुलझा क्रोध चरित्र को आकार देता है और समुदाय को नुकसान पहुँचाता है। यह शिक्षा भावनाओं को दबाने की बुलाहट नहीं है, यह पश्चातापी नम्रता की बुलाहट है जो परमेश्वर के शासन के अधीन शांति की खोज करती है। यीशु क्रोध का सामना करते हैं क्योंकि वह ऐसा राज्य-समुदाय बना रहे हैं जहाँ प्रेम वास्तविक है और आराधना विश्वसनीय है। राजा का अधिकार हृदय तक पहुँचता है क्योंकि पिता भीतर के अस्तित्व में सत्य चाहते हैं (मत्ती 5:21-24, एनआईवी)।

## कामना, इच्छा, और कल्पना का व्यभिचार

यीशु व्यभिचार को संबोधित करते हैं, कार्य से नीचे इच्छा तक जाकर, यह दिखाते हुए कि पाप अक्सर एक दृष्टि से शुरू होता है जो कल्पना बनती है और फिर आदत बनती है। वह शिष्यों को यह बधाई देने नहीं देते कि उन्होंने शारीरिक घोटाले से बचकर अच्छा किया, जबकि वे भीतर की लिप्तता को पाल रहे हों। यह महाराई से पास्टोरल है क्योंकि यह उजागर करता है कि हृदय शरीर से बहुत पहले वाचा-विश्वासयोभ्यता का विश्वासघात कर सकता है। कामना के बारे में यीशु के शत्रु संकीर्ण नियंत्रण नहीं हैं, वे सुरक्षा हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि विकृत इच्छा दास बनाती है और नाश करती है।

यीशु की शिक्षा कलीसिया को पवित्रता को हृदय की अखंडता के रूप में खोजने के लिए बुलाती है, बाहरी प्रतिष्ठा प्रबंधन के रूप में नहीं। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि निजी उपभोग, छिपी हुई कल्पनाएँ, और असंयमित मनोरंजन कैसे हृदय को विश्वासयोग्य प्रेम से दूर प्रशिक्षित कर सकते हैं। यीशु कट्टर कार्रवाई के बारे में कठोर भाषा का उपयोग करते हैं क्योंकि वह पाप के खतरे को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बोल रहे, वह उसकी शक्ति को उजागर कर रहे हैं और निर्णायक पश्चाताप के लिए बुला रहे हैं। यह आत्म-घृणा की बुलाहट नहीं है, यह जीवन की बुलाहट है, क्योंकि राजा अपने अधिकार के अधीन समर्पण के द्वारा स्वतंत्रता देते हैं। त्वेलाई को यौन पवित्रता को परमेश्वर की रचना के प्रति आनंदित निष्ठा के रूप में लेना चाहिए, चिंताग्रस्त नियम-पालन के रूप में नहीं। यीशु कामना का सामना करते हैं क्योंकि वह आराधना को बहाल करना, विवाहों को मजबूत करना, और ऐसे हृदय बनाना चाहते हैं जो सचमुच स्वतंत्र हों (मत्ती 5:27-29, एनआईवी)।

## सच्चाई और एक सरल हाँ की स्वतंत्रता

यीशु शपथ लेने को संबोधित करते हैं ताकि एक गहरे मुद्दे को उजागर करें, स्वार्थ की रक्षा के लिए सत्य में हेरफेर करने की मानवीय आदत वह ऐसी वाणी की बुलाहट देते हैं जो सरल और भरोसेमंद हो, जहाँ हाँ का अर्थ हाँ हो और नहीं का अर्थ नहीं, क्योंकि राज्य के लोगों को विश्वास दिलाने के लिए जटिल मौखिक प्रणालियों की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यह हर परिस्थिति में सभी औपचारिक प्रतिज्ञाओं पर यीशु का प्रतिबंध नहीं है, यह उन हृदयों का सामना करना है जो शत्रुओं को सत्य की अभिव्यक्ति के बजाय लाभ के उपकरण की तरह मानते हैं। उनका अधिकार प्रकट करता है कि सच्चाई

आराधना है, क्योंकि वह पिता के चरित्र को प्रतिबिंबित करती है।

यीशु की शिक्षा उन विश्वासियों को चुनौती देती है जो छाया-सी सच्चाई बोलने, बढ़ा-चढ़ाकर बताने, या ऐसी प्रतिज्ञाएँ करने के प्रलोभन में रहते हैं जिन्हें वे निभा नहीं सकते, ताकि वे अपनी छवि बचा सकें प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि वाणी की अखंडता समुदाय में भरोसा बनाती है और गवाही में विश्वसनीयता, क्योंकि जब मसीही टालमटोल के लिए जाने जाते हैं तो सुसमाचार को क्षति पहुँचती है। सच्ची वाणी कठोर वाणी नहीं है, क्योंकि राजा के लोगों को प्रेम और नम्रता के साथ सत्य बोलना चाहिए, फिर भी उन्हें उसे स्पष्ट बोलना चाहिए। यीशु की आज्ञा उन्हें भी सांत्वना देती है जो चालबाज़ी से थक गए हैं, क्योंकि राज्य का जीवन हेरफेर के बजाय स्पष्टता से चिन्हित होता है। तैलाई तब अधिक स्वस्थ होती है जब विश्वासी सरलता से बोलना, जल्दी स्वीकार करना, और प्रतिबद्धताओं को विश्वासयोग्य रीति से निभाना सीखते हैं, क्योंकि पिता का शासन ऐसे लोग उत्पन्न करता है जिनके शत्रु भरोसे योग्य हों। यीशु ऐसा समुदाय बनाते हैं जहाँ सत्य सामान्य है क्योंकि परमेश्वर का आदर होता है (मत्ती 5:33-37, एनआईवी)।

## प्रतिशोध, दया, और व्यक्तिगत बदले का अंत

यीशु प्रतिशोध का सामना करते हैं, शिष्यों को व्यक्तिगत बदले से आगे दया में बुलाकर, यह दिखाते हुए कि राज्य संसार के बढ़ते हुए प्रतिशोध-चक्रों को प्रतिबिंबित नहीं करता। वह न्याय से इनकार नहीं करते, पर वह शिष्यों को बदला लेकर न्याय अपने हाथों में लेने से रोकते हैं। दूसरे गाल को आगे करने और एक और मील चलने के बारे में उनकी

आज्ञाएँ दुर्यवहार को अपनाने की बुलाहट नहीं हैं, वे व्यक्तिगत प्रतिशोध की मूर्ति को ठुकराने की बुलाहट हैं। यीशु ऐसे हृदय बना रहे हैं जो पिता पर भरोसा करते हैं कि वह सही न्याय करेगा और अपने लोगों की रक्षा अपने समय में करेगा।

यीशु की यह शिक्षा वहाँ विशेष रूप से आवश्यक है जहाँ क्रोध और आक्रोश को गुण माना जाता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे न्याय की धर्मी खोज और घमंड से प्रेरित स्वार्थी प्रतिशोध में भेद करें। राज्य के लोग गलत कार्य का सामना कर सकते हैं, सीमाएँ स्थापित कर सकते हैं, और वैधानिक उपाय खोज सकते हैं, फिर भी उन्हें प्रतिशोध के अधीन होने से इनकार करना चाहिए। यीशु का अपना जीवन इस शिक्षा की पुष्टि करता है, क्योंकि वह अपमान सहते हैं बिना पवित्रता छोड़े, और वह स्वयं को पिता को सौंप देते हैं। तब अधिक स्थिर होती है जब विश्वासी संयम का अभ्यास करते हैं, क्योंकि संयम आराधना का कार्य है जो घोषणा करता है कि परमेश्वर न्यायी और राजा हैं। यीशु अपने लोगों को दया-आकार की मुद्रा में बुलाते हैं जो प्रतिशोध का चक्र तोड़ती है और जहाँ संभव हो मेलमिलाप के लिए स्थान बनाती है (मत्ती 5:38-41, एनआईवी)।

## **शत्रु-प्रेम और परमेश्वर के बच्चों की पारिवारिक समानता**

यीशु शत्रुओं से प्रेम करने की आज्ञा देते हैं क्योंकि राज्य पिता के चरित्र पर बना है, और पिता कृतघनों पर भी कृपा दिखाते हैं। यह भावुक लगाव नहीं है, यह प्रार्थना, अखंडता, और बुराई के बदले बुराई लौटाने से इनकार के द्वारा व्यक्त सक्रिय भलाई है। यीशु सिखाते हैं कि केवल उनसे प्रेम करना जो तुमसे प्रेम करते हैं साधारण मानवीय व्यवहार है, पर शत्रुओं

से प्रेम करना यह प्रकट करता है कि पिता का शासन हृदय पर अधिकार कर चुका है। यह उपदेश की सबसे चुभने वाली आज्ञाओं में से एक है, क्योंकि यह उजागर करती है कि हम अपने लिए दया और दूसरों के लिए न्याय कितनी गहराई से चाहते हैं।

यीशु की यह आज्ञा पास्टोरल सेवकाई को भी नया रूप देती है क्योंकि वह कलीसिया को दलवाद और कड़वाहट से आगे लोगों को शिष्य बनाने के लिए बाध्य करती है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि शत्रु-प्रेम गलत कार्य से सहमति नहीं है, वह घृणा की आराधना करने से इनकार है, और वह दूसरे के अंतिम भले की खोज है, जिसमें जहाँ संभव हो पश्चाताप और मेलमिलाप शामिल हैं। यह प्रेम महंगा है, और वही कीमत उसकी प्रामाणिकता दिखाती है, क्योंकि आसान प्रेम बहुत कम सिद्ध करता है। यीशु अपने लोगों को पिता को प्रतिबिंबित करने के लिए बुलाते हैं, और प्रतिबिंब के लिए परिवर्तन आवश्यक है, केवल प्रयास नहीं। राजा शत्रु-प्रेम की आज्ञा देते हैं क्योंकि वह स्वयं मृत्यु तक शत्रुओं से प्रेम करेंगे, और उनका क्रूस इस राज्य-नीति का स्रोत भी बनेगा और नमूना भी। शत्रुओं से प्रेम करना शिष्यों के लिए वैकल्पिक नहीं है, यह उन लोगों की पारिवारिक समानता है जो परमेश्वर के हैं (मत्ती 5:44-45, एनआईवी)।

## अनुभाग 4: धार्मिकता का अभ्यास और राज्य की प्राथमिकताएँ

यीशु आंतरिक परिवर्तन से अभ्यास की गई धार्मिकता की ओर जाते हैं क्योंकि राज्य जिया जाता है, केवल प्रशंसा नहीं किया जाता। वह दान, प्रार्थना, उपवास, धन, चिंता, और

न्याय के विषयों को संबोधित करते हैं, क्योंकि चेलाई उन व्यावहारिक तालों को छूती है जहाँ आराधना प्रतिदिन व्यक्त होती है यीशु कपट को एक स्थायी खतरे के रूप में उजागर करते हैं, केवल धार्मिक अगुवों के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए जो पिता की प्रसन्नता से अधिक मानवीय स्वीकृति चाहता है। उनका अधिकार स्थिर और पास्टोरल है, क्योंकि वह ऐसे शिष्य बना रहे हैं जो परमेश्वर के सामने ईमानदारी से जीते हैं, लोगों के सामने प्रदर्शन के रूप में नहीं।

यीशु यह भी सिखाते हैं कि राज्य की प्राथमिकताएँ इस बात को पुनः क्रमित करती हैं कि हम किसे मूल्यवान मानते हैं, क्योंकि हम जिसे मूल्यवान मानते हैं वही नियंत्रित करता है कि हम किससे डरते हैं। वह अपने अनुयायियों को स्वर्ग में धन जमा करने, परमेश्वर के राज्य को पहले खोजने, और पिता की देखभाल पर भरोसा करने के लिए बुलाते हैं, जिसका अर्थ है कि चेलाई मूलतः आराधना का विषय है। प्रवृत्त उपदेश चिंताग्रस्त तीव्रता की बुलाहट नहीं है, यह समर्पित भरोसे की बुलाहट है जो आज्ञाकारिता के द्वारा व्यक्त होता है। यीशु की आज्ञाएँ मांग करने वाली हैं क्योंकि पिता का शासन सर्वांगीण है, और वे जीवन देने वाली हैं क्योंकि पिता भले हैं। इसलिए धार्मिकता का अभ्यास परमेश्वर का प्रेम कमाना नहीं है, वह उन लोगों के रूप में जीना है जो पहले से राजा के हैं।

## गुप्त भक्ति और देखने वाला पिता

यीशु सिखाते हैं कि मानवीय प्रशंसा के लिए की गई धार्मिकता का भुगतान पूरा हो चुका होता है, क्योंकि उसे उसी दर्शक से उसका पुरस्कार मिल जाता है जिसकी वह आराधना करती है। वह शिष्यों को गुप्त रूप से देने, गुप्त रूप से प्रार्थना करने, और गुप्त रूप से उपवास करने के लिए

बुलाते हैं, क्योंकि पिता की दृष्टि ही आत्मिक जीवन का सच्चा मैदान है इसका अर्थ यह नहीं कि धार्मिकता कभी दिखाई नहीं देनी चाहिए, इसका अर्थ यह है कि धार्मिकता को कभी भी मान्यता के लिए प्रदर्शन नहीं बनाया जाना चाहिए। यीशु का अधिकार उस हृदय का सामना करता है जो देखा जाना, सम्मानित होना, और प्रशंसित होना चाहता है, क्योंकि वह इच्छा आराधना को भ्रष्ट करती है और धर्म को स्वयं के लिए उपकरण बना देती है।

यीशु की शिक्षा पास्टोरल है क्योंकि वह प्रदर्शन-चालित आध्यात्मिकता से स्वतंत्रता प्रदान करती है पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे निजी भक्ति को बोझ नहीं, वरदान के रूप में विकसित करें, क्योंकि निजी आज्ञाकारिता अखंडता को मजबूत करती है और कपट को घटाती है देखने वाला पिता कठोर निरीक्षक नहीं है, वह प्रेमी पिता है, और यीशु का उनकी देखभाल पर जोर इस बात को नया रूप देता है कि शिष्य कैसे प्रार्थना करते हैं और कैसे देते हैं भ्रुप्त भक्ति कलीसिया को अगुवा-चालित संस्कृति से भी बचाती है, क्योंकि वह ऐसे लोग बनाती है जो प्रशंसा के बिना भी विश्वासयोग्य रहते हैं विलाई तब और गहरी होती है जब विश्वासी पिता की प्रसन्नता के लिए जीना सीखते हैं, क्योंकि राजा सिखाता है कि अदृश्य जीवन ही सबसे वास्तविक जीवन है पिता दिखावे को नहीं, बल्कि सच्चाई को प्रतिफल देता है, और वह वास्तविकता आत्मा को मुक्त करती है (मत्ती 6:1-4, एनआईवी)।

**ऐसी प्रार्थना जो पिता का आदर करे और उनके शासन की खोज करे**

यीशु अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाते हैं, खाली दोहराव से नहीं, बल्कि श्रद्धापूर्ण, केंद्रित निवेदनों के साथ जो पिता के नाम और राज्य से आकार पाते हैं प्रभु की प्रार्थना आराधना से शुरू होती है, परमेश्वर की पवित्रता का आदर करती है, उनके राज्य और इच्छा की खोज करती है, और फिर दैनिक प्रावधान, क्षमा, और संरक्षण के लिए विनती करती है, यह प्रकट करते हुए कि प्रार्थना आवश्यकताओं की सूची होने से पहले समर्पण का कार्य है प्रार्थना सिखाने में यीशु का अधिकार पास्टोरल है क्योंकि वह शिष्यों को ऐसे जीवन में निर्देशित करता है जहाँ निर्भरता सामान्य बनती है और जहाँ परमेश्वर की प्राथमिकताएँ मानवीय प्राथमिकताओं को आकार देती हैं।

यीशु की यह शिक्षा उस प्रार्थना का सामना करती है जो या तो प्रदर्शनात्मक हो या केवल स्वयं-केंद्रित प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि प्रार्थना दूसरों को प्रभावित करने या परिणामों को नियंत्रित करने का तरीका नहीं है, वह पुत्र के द्वारा पिता के साथ संगति है प्रभु की प्रार्थना शिष्यों को क्षमा करना भी सिखाती है, क्योंकि जो दया प्राप्त करते हैं उन्हें दया का अभ्यास करना चाहिए, और यीशु क्षमा को संबंधों की अखंडता से जोड़ते हैं राज्य की प्रार्थना नैतिकता से अलग नहीं है, क्योंकि हम क्या माँगते हैं यह प्रकट करता है कि हम किसकी आराधना करते हैं और हम क्या मूल्यवान मानते हैं। चेलाई तब स्थिर होती है जब प्रार्थना परमेश्वर के शासन से आकार पाती है, क्योंकि वह हृदय को प्रतिदिन पिता पर भरोसा करना, उनकी इच्छा की खोज करना, और राज्य के नागरिकों के रूप में जीना सिखाती है यीशु प्रार्थना इसलिए सिखाते हैं कि उनके लोग परमेश्वर के द्वारा गढ़े जाएँ, केवल परमेश्वर के द्वारा आपूर्ति पाए हुए नहीं (मत्ती 6:9-12, एनआईवी)।

## धन, निष्ठा, और दो स्वामियों की प्रतिद्विष्टता

यीशु उजागर करते हैं कि हृदय हमेशा धन की ओर बढ़ रहा होता है, और धन हमेशा निष्ठा पैदा करता है वह चेतावनी देते हैं कि पृथ्वी पर धन जमा करना हानि और चिंता के प्रति असुरक्षा पैदा करता है, जबकि स्वर्ग में धन जमा करना हृदय को परमेश्वर के अनंत शासन के साथ संरेखित करता है फिर वह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर और धन के बीच भवित विभाजित नहीं हो सकती बिना भ्रष्ट हुए यीशु काम या प्रावधान की निंदा नहीं कर रहे, वह मूर्तिपूजा का सामना कर रहे हैं, सुरक्षा, आराम, और नियंत्रण की आराधना का, मानो वही अंतिम हों।

यीशु की यह शिक्षा गहराई से प्रासंगिक है क्योंकि आधुनिक जीवन लोगों को संचय और सुरक्षा के द्वारा पहचान समझने के लिए प्रेरित करता है पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे जाँचें कि वे सबसे अधिक किसे खोने से डरते हैं, क्योंकि वह अक्सर प्रकट करता है कि वे किसकी सेवा करते हैं राज्य की प्राथमिकताएँ बुद्धिमान योजना का विरोध नहीं करती, पर वे संपत्तियों पर अंतिम भरोसे का विरोध करती हैं, और वे शिष्यों को उदारता, सरलता, और आराधनात्मक प्रबंधकता के लिए बुलाती हैं परमेश्वर की सेवा करने का अर्थ है कि धन स्वामी नहीं, उपकरण बन जाता है, और निर्णय भय से नहीं, आज्ञाकारिता से आकार पाते हैं। चेलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी आराम से बढ़कर मसीह को मूल्यवान मानना सीखते हैं, क्योंकि मसीह को मूल्यवान मानना लोभ से स्वतंत्रता और प्रेम करने की स्वतंत्रता उत्पन्न करता है यहाँ यीशु का अधिकार दिया है, क्योंकि वह हमें ऐसे स्वामियों से दूर चेतावनी देते हैं जो बचा नहीं सकते, और

उस पिता की ओर ले जाते हैं जो बचा सकते हैं (मत्ती 6:24, एनआईवी)।

## चिंता, प्रबंध, और पिता की देखभाल पर भरोसा करना

यीशु चिंता को कमजोरी को लज्जित करके नहीं, बल्कि पिता के प्रबंध की ओर ध्यान मोड़कर संबोधित करते हैं, अर्थात् सृष्टि पर उनकी बुद्धिमान और सक्रिय देखभाल वह पक्षियों और फूलों की ओर संकेत करते हैं यह दिखाने के लिए कि पिता प्रावधान करता है, और वह शिष्यों को चिंतित भागदौड़ को अविश्वास के रूप में ठुकराने के लिए बुलाते हैं जो परमेश्वर की भलाई को भूल जाता है यह शिक्षा सरल नहीं है, क्योंकि यीशु वास्तविक आवश्यकताओं को स्वीकार करते हैं, भोजन और वस्त्र सहित, और वह सीधे उन्हीं दबावों में बोलते हैं। उनका अधिकार पास्टोरल है क्योंकि वह पिता की नई दृष्टि के द्वारा भय से भरोसे तक का मार्ग देते हैं।

यीशु की आज्ञा जिम्मेदार कार्रवाई को निषिद्ध नहीं करती, वह उस चिंतित आसक्ति को निषिद्ध करती है जो परमेश्वर को दूर और अविश्वसनीय मानती है। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि विश्वासी अपनी आवश्यकताओं को ईमानदारी से पिता के पास लाएँ, परिणामों की आराधना किए बिना परिश्रम से काम करें, और घबराहट के अधीन हुए बिना परमेश्वर के समय पर भरोसा करें। चिंता अक्सर तब बढ़ती है जब हृदय उस पर नियंत्रण करना चाहता है जिसे केवल परमेश्वर संचालित कर सकता है, और यीशु उस चक्र को तोड़ते हैं, शिष्यों को वापस आराधना की ओर बुलाकर भरोसा कठिनाई का इनकार नहीं है, वह कठिनाई को अंतिम बनने देने से इनकार है। राज्य के लोग आज विश्वासयोग्य जीने के लिए स्वतंत्र किए जाते हैं क्योंकि पिता कल को थामे हुए हैं, और

यीशु यह इसलिए सिखाते हैं कि शिष्य भय में डूब न जाएँ। राजा अपने लोगों को पहले राज्य खोजने के लिए बुलाते हैं, और फिर आवश्यक वस्तुओं के लिए पिता पर भरोसा करने के लिए (मत्ती 6:31-33, एनआईवी)।

## न्याय, नम्रता, और आत्म-परीक्षा की मुद्रा

यीशु कपटी न्याय के विरुद्ध चेतावनी देते हैं, यह उजागर करते हुए कि मनुष्य की प्रवृत्ति दूसरों की जाँच करने की है जबकि व्यक्तिगत पाप को अनदेखा किया जाता है। वह सजीव भाषा का उपयोग करते हैं यह दिखाने के लिए कि आत्म-धार्मिक अंधापन कितना गहरा हो सकता है, और वह शिष्यों को बुलाते हैं कि वे दूसरे की आँख के तिनके को संबोधित करने से पहले अपनी आँख का लट्टा निकालें। यह यीशु का नैतिक विवेक को निषिद्ध करना नहीं है, क्योंकि वह झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बारे में भी चेतावनी देते हैं और बुद्धिमान मूल्यांकन के लिए बुलाते हैं, पर वह निंदा कर रहे हैं निंदा करने को, वह मुद्रा जो स्वयं को ऊँचा करती है और पड़ोसी को नष्ट करती है।

यीशु की शिक्षा स्वस्थ कलीसियाई संस्कृति को आकार देती है, क्योंकि कपट वहाँ पनपता है जहाँ न्याय कठोर हो और अंगीकार दुर्लभ मास्टरो को ऐसे समुदाय विकसित करने चाहिए जहाँ सत्य नम्रता के साथ कहा जाता है, जहाँ सुधार प्रेम के साथ किया जाता है, और जहाँ आत्म-परीक्षा सामान्य है। तैलाई को विश्वासियों को दूसरों के पास अनुग्रह के जरूरतमंद साथी पापियों के रूप में जाना सिखाना चाहिए, श्रेष्ठता के लक्ष्य के रूप में नहीं। जब यीशु नम्रता के लिए बुलाते हैं, तो वह अपने लोगों की एकता और उनकी गवाही की विश्वसनीयता दोनों की रक्षा कर रहे होते हैं। एक

न्यायप्रिय, निंदात्मक कलीसिया एक दयालु मसीह का विश्वसनीय रूप से प्रचार करने में संघर्ष करेगी, क्योंकि उसका स्वर उसके संदेश का विरोध करता है। यीशु ऐसा समुदाय बनाते हैं जहाँ पवित्रता और दया साथ-साथ काम करती हैं, क्योंकि राजा का शासन ऐसे लोग उत्पन्न करता है जो सत्य बोलते हैं बिना निंदा की आराधना किए (मत्ती 7:1-5, एनआईवी)।

## इस विषयवस्तु को आपके विशिष्ट संदर्भ में लागू करने के तीन तरीके

**ऐसी कलीसियाई संस्कृति बनाइए जहाँ हृदय-स्तरीय चेलाई सामान्य हो**

यीशु का उपदेश हृदय को लक्ष्य बनाता है क्योंकि पिता अखंडता चाहते हैं, प्रदर्शन नहीं, और कलीसियाओं को उसी स्तर पर शिष्य बनाना चाहिए यदि वे स्थायी पवित्रता चाहते हैं। बहुत से विश्वासी दिखावे को संभालना, घोटाले से बचना, और धार्मिक भाषा बोलना सीख लेते हैं जबकि क्रोध, कामना, भय, और घमंड काफी हद तक अछूते रहते हैं। यीशु उस ढाँचे का सामना करते हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं को उद्देश्यों, इच्छाओं, और निजी जीवन तक ले आकर, और उनका अधिकार पास्टर्स को बुलाता है कि वे उतनी ही महाराई से प्रचार करें और परामर्श दें (मत्ती 5:8, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि अगुवे ऐसी चेलाई की लय विकसित करें जिसमें अंगीकार, जवाबदेही, और छिपे हुए पाप के बारे में सुसमाचार-केंद्रित बातचीत शामिल हो। सदस्यों को प्रोत्साहित कीजिए कि वे जाँचें कि वे किससे प्रेम करते हैं,

किससे डरते हैं, और किसे उचित ठहराते हैं, और फिर उन्हें मसीह की दया में जड़े पश्चाताप की ओर ले जाइए इसके लिए धैर्यवान् पास्टोरल देखभाल भी आवश्यक है, क्योंकि हृदय परिवर्तन अक्सर धीमा होता है, और इसके लिए समुदाय का समर्थन भी आवश्यक है, क्योंकि अलगाव कपट को मजबूत करता है। जब हृदय-स्तरीय चेलाई सामान्य बनती है, तो कलीसिया ईमानदार संघर्ष करने वालों के लिए अधिक सुरक्षित और आराम से बैठे बहानों वालों के लिए अधिक चुनौतीपूर्ण बनती है। मसीह का शासन अखंडता उत्पन्न करता है, और अगुवे अपने लोगों की सर्वोत्तम सेवा तब करते हैं जब वे केवल व्यवहार नहीं, परिवर्तन को लक्ष्य बनाते हैं।

## **विश्वासियों को सार्वजनिक युग में गुप्त भक्ति का अभ्यास करना सिखाइए**

यीशु शिष्यों को गुप्त रूप से धार्मिकता का अभ्यास करने के लिए बुलाते हैं क्योंकि पिता की प्रसन्नता ही एकमात्र ऐसा पुरस्कार है जो सचमुच संतुष्ट करता है। ऐसे सार्वजनिक युग में जहाँ पहचान अक्सर दृश्यता से आकार पाती है, विश्वासी स्वीकृति के आदी हो सकते हैं, धार्मिक सेवा में भी यीशु की चेतावनी दया है क्योंकि प्रदर्शन-चालित धर्म आत्मा को खाली कर देता है और आराधना को परमेश्वर से हटाकर स्वयं की ओर चुपचाप मोड़ देता है। देखने वाला पिता विश्वासियों को अदृश्य विश्वासयोग्यता के द्वारा स्वतंत्रता में बुलाता है (मती 6:4, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर निजी प्रार्थना की ठोस आदतों, बिना घोषणा के उदार देने, और ऐसे उपवास के लिए प्रोत्साहित करें जो नाटकीय नहीं, सच्चा हो। विश्वासियों को सिखाइए कि वे पहचान की आवश्यकता के

बिना सेवा करें, और विश्वासयोग्यता को प्रतिक्रिया के द्वारा नहीं, आज्ञाकारिता के द्वारा मापें अगुवों को इसे नमूने के रूप में दिखाना चाहिए, आत्म-प्रचार का विरोध करके, और शांत सेवा को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करके, फिर भी उसे प्रदर्शन में बदले बिना भ्रुप्त भक्ति परिवारों को भी मजबूत करती है, क्योंकि जो माता-पिता निजी रूप से प्रार्थना करते हैं वे बच्चों को सिखाते हैं कि विश्वास रविवार की दृश्यता से आगे भी वास्तविक है जब कलीसिया छिपी हुई विश्वासयोग्यता का अभ्यास करती है, तो वह कम नाजुक, कम अहं-चालित, और दबाव के अधीन अधिक टिकाऊ बनती है, क्योंकि उसकी आराधना पिता की दृष्टि में स्थिर होती है।

## **पहले राज्य को खोजकर प्राथमिकताओं को पुनः क्रमित कीजिए**

यीशु सिखाते हैं कि चिंता और लोभ अक्सर गलत धन के लक्षण होते हैं, और वह शिष्यों को पहले राज्य खोजने के लिए बुलाते हैं क्योंकि पिता पर भरोसा किया जा सकता है। यह गैर-जिम्मेदार जीवन की बुलाहट नहीं है, यह आराधनात्मक प्राथमिकताओं की बुलाहट है जो संचय और भय से ऊपर मसीह के शासन को रखती है। जब विश्वासी पहले राज्य खोजते हैं, तो वे संसाधनों का उदारता से प्रबंध करना, सफलता की आराधना किए बिना विश्वासयोग्य रीति से काम करना, और घबराहट के बिना पिता के प्रावधान पर भरोसा करना सीखते हैं (मती 6:33, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर लोगों को उनके कैलेंडरों, बजटों, और भावनात्मक ढाँचों को आत्मिक संकेतकों के रूप में जाँचने में अगुवाई करें परिवारों को

प्रोत्साहित कीजिए कि वे आराधना, पवित्रशास्त्र, और सेवा को प्राथमिकता दें, और ऐसे वितीय निर्णय लें जो कमी के भय के बजाय परमेश्वर पर भरोसे को प्रतिबिंबित करें विधासियों को सिखाइए कि वे उदारता का अभ्यास इस घोषणा के रूप में करें कि धन स्वामी नहीं है, और प्रार्थना का अभ्यास इस घोषणा के रूप में करें कि परमेश्वर पिता हैं पहले राज्य को खोजना कलीसियाओं की सेवकाई योजना को भी नया रूप देता है, क्योंकि कार्यक्रमों को चेलाई की सेवा करनी चाहिए, उसकी जगह नहीं लेनी चाहिए। जब प्राथमिकताएँ मसीह के चारों ओर पुनः क्रमित होती हैं, तो शांति बढ़ती है, मिशन अधिक स्पष्ट होता है, और कलीसिया ऐसा समुदाय बनती है जो संसार को दिखाती है कि पिता पर भरोसा करना वास्तव में कैसा दिखता है।

## निष्कर्ष

यीशु का पर्वत उपदेश राज्य के जीवन को ऐसी अनुग्रह-आकार की धार्मिकता के रूप में प्रकट करता है जो हृदय तक पहुँचती है और पूरे व्यक्ति को नया रूप देती है वह उन लोगों को आशीष देते हैं जिन्हें संसार अनदेखा करता है, वह व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर की माँगों और प्रतिज्ञाओं को पूर्णता तक लाकर पूरा करते हैं, और वह पाप की उन आंतरिक जड़ों को उजागर करते हैं जिन्हें बाहरी धर्म अक्सर अनदेखा कर देता है। उनका अधिकार सात्वनादायक भी है और सामना करने वाला भी, क्योंकि वह नम्रों का स्वागत करते हैं और आत्म-निश्चितों को चेतावनी देते हैं, और वह शिष्यों को ऐसी धार्मिकता के लिए बुलाते हैं जिसे प्रदर्शन के द्वारा बनाया नहीं जा सकता। यह उपदेश हर पाठक पर यह निर्णय थोपता है कि यीशु की प्रशंसा की जाएगी या उनकी आज्ञा मानी जाएगी।

यीशु यह भी सिखाते हैं कि धार्मिकता का अभ्यास मूलतः आराधना का विषय है, क्योंकि हम क्या खोजते हैं, हम किससे डरते हैं, और हम किसे मूल्यवान मानते हैं, यह प्रकट करता है कि हम पर शासन कौन करता है वह शिष्यों को गुप्त भक्ति, राज्य-आकार की प्रार्थना, पुनः क्रमित प्राथमिकताओं, और नम्र आत्म-परीक्षा में बुलाते हैं, और वह ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि पिता भले हैं और उनका शासन जीवन देने वाला है। धर्म उपदेश चुनौतीपूर्ण है, फिर भी वह दया है, क्योंकि वह उन झूठे मार्गों को उजागर करता है जो संतोष नहीं दे सकते और विश्वासियों को परमेश्वर के शासन के अधीन जीवन की स्वतंत्रता की ओर निर्देशित करता है। यीशु राजा के रूप में बोलते हैं, और उनके लोग तब फलते-फूलते हैं जब वे श्रद्धापूर्ण भरोसे और अभ्यास की गई आज्ञाकारिता के साथ उनके शब्दों के अधीन होते हैं।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. कौन सा धन्यवचन आपके वर्तमान अच्छे जीवन की परिभाषा को सबसे अधिक चुनौती देता है, और क्यों?
2. आप कहाँ सबसे अधिक इस बात के लिए प्रलोभित होते हैं कि आप धार्मिकता को पिता की दृष्टि के बजाय दृश्यता के लिए अभ्यास करें?
3. कौन सा हृदय-स्तरीय पाप, क्रोध, कामना, या तिरस्कार है जिसका सामना यीशु की शिक्षा आपसे निर्णायक पश्चात्ताप के साथ करने की माँग करती है?
4. आपके धन और चिंता के ढाँचे किस व्यावहारिक रीति से यह प्रकट करते हैं कि आप वर्तमान में किसे सबसे अधिक मूल्यवान मानते हैं?

5. इस सप्ताह आपको कौन सी एक विशिष्ट प्राथमिकता को पुनः क्रमित करने की आवश्यकता है ताकि पहले राज्य को खोजना दृश्यमान और ठोस हो जाए?

# अध्याय 6: यीशु के दृष्टांत

## परिचय

यीशु ने दृष्टांतों में इसलिए शिक्षा दी क्योंकि वह केवल जानकारी स्थानांतरित नहीं कर रहे थे, वह हृदयों पर अधिकार का प्रयोग कर रहे थे। दृष्टांत एक ऐसी कथा है जो सत्य को इस रूप में वहन करती है कि सुनने वाले को उजागर कर दे, क्योंकि वह निष्क्रिय सहमति के बजाय प्रतिक्रिया की माँग करती है। यीशु के दृष्टांत कठोर शिक्षा को आसान बनाने के लिए कोमल उदाहरण नहीं हैं, वे कथात्मक रूप में राज्य की घोषणा हैं, जो परमेश्वर के शासन को प्रकट करने, आत्म-छल को उजागर करने, और सच्चे शिष्यों को इकट्ठा करने के लिए रचे गए हैं। यदि हम उन्हें केवल नैतिक कथाओं के रूप में पढ़ते हैं, तो हम उस राजा को चूक जाएंगे जो उनके द्वारा बोलता है।

यीशु ने दृष्टांतों का उपयोग ऐसे समुदाय को आकार देने के लिए भी किया जो विरोधी संसार में पिता के शासन के अधीन जी सके। दृष्टांत यह उजागर करते हैं कि लोग किससे प्रेम करते हैं, किससे डरते हैं, और परमेश्वर के बारे में क्या मान लेते हैं, क्योंकि सुनने वाले की प्रतिक्रिया अक्सर हृदय की स्थिति को प्रकट करती है। कुछ दृष्टांत टूटे हुए लोगों को दया से सांत्वना देते हैं, कुछ आत्म-संतुष्टों को न्याय से चेतावनी देते हैं, और सभी इस बात पर जोर देते हैं कि कहानी का निर्णायक केंद्र स्वयं यीशु हैं। दृष्टांत परिपक्व पाठकों को नम्रता से यीशु को सुनने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि केवल

समर्पित हृदय ही राज्य के सत्य को जीवन के रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

## अनुभाग 1: यीशु ने दृष्टांतों में क्यों शिक्षा दी

यीशु ने दृष्टांतों में राजा के रूप में शिक्षा दी, जो केवल आज्ञाओं के द्वारा नहीं, बल्कि ऐसे प्रकाशन के द्वारा शासन करता है जो आत्मिक नम्रता की माँग करता है। उन्होंने ऐसी कहानियों में बात की जो सतह पर सुलभ थीं, फिर भी गहराई में माँग करने वाली थीं, क्योंकि राज्य चतुराई से नहीं, बल्कि पिता के अधीन समर्पण से प्राप्त होता है। दृष्टांत इच्छुकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त कोमल और विरोध करने वालों को उजागर करने के लिए पर्याप्त तीक्ष्ण होते हैं, और यीशु उन्हें ऐसे पास्टोरल उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं जो चंगाई भी करते हैं और चेतावनी भी देते हैं। वह सत्य को क्रूरता से नहीं छिपा रहे, बल्कि उसे इस प्रकार प्रकट कर रहे हैं कि हर श्रोता की वास्तविक इच्छा सामने आ जाए।

यीशु ने दृष्टांतों में इसलिए भी शिक्षा दी कि ऐसे शिष्य तैयार हों जो साधारण जीवन में परमेश्वर के शासन को पहचान सकें और इस भ्रम का विरोध कर सकें कि धर्म केवल प्रदर्शन है। दृष्टांत परमेश्वर को प्रणालियों के द्वारा नियंत्रित करने की मानवीय प्रवृत्ति का सामना करते हैं, और श्रोताओं को यह तय करने के लिए बाध्य करते हैं कि वे पिता की बुद्धि पर भरोसा करेंगे या नहीं। यीशु के मुख में, एक कहानी एक बुलाहट बन जाती है, और वह बुलाहट हमेशा निष्ठा के विषय में होती है। राजा बोलता है, और हृदय या तो पश्चाताप में

कोमल होता है या बहाने में कठोर, और यही कारण है कि दृष्टांत महत्वपूर्ण हैं।

## दृष्टांत एक साथ प्रकट भी करते हैं और छिपाते भी हैं

यीशु ने समझाया कि दृष्टांत प्रकाशन और छिपाव दोनों का कार्य करते हैं, और यह दोहरा प्रभाव श्रोता की आत्मिक स्थिति को उजागर करता है जो नम्रता के साथ यीशु के पास आते हैं उन्हें समझ मिलती है, जबकि अधिकार की भावना और विरोध के साथ आने वाले अक्सर केवल एक कहानी ही सुनते हैं। यह बौद्धिक दंड नहीं है, यह नैतिक उद्घाटन है, क्योंकि अनिच्छुक हृदय सत्य को खतरे के रूप में देखते हैं, जबकि भूखे हृदय सत्य को जीवन के रूप में ग्रहण करते हैं। यीशु का अधिकार स्पष्ट है क्योंकि वह केवल जानकारी नहीं देते, वह अपनी शिक्षा के रूप के द्वारा श्रोता की स्थिति का न्याय करते हैं। वह वह राजा हैं जो मनुष्य के भीतर की बात जानते हैं।

यीशु की यह विधि कलीसिया को सुनने को गंभीरता से लेने की शिक्षा देती है, क्योंकि सुनना कभी तटस्थ नहीं होता, वह या तो ग्रहणशील होता है या प्रतिरोधी। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे जाँचें क्यों कुछ शिक्षाएँ आनंद के साथ उतरती हैं और कुछ झुंझलाहट के साथ, क्योंकि झुंझलाहट अक्सर चुनौती दी जा रही किसी मूर्ति को प्रकट करती है। दृष्टांत श्रोताओं को कहानी के भीतर प्रवेश करने और स्वयं को पहचानने का निमंत्रण देते हैं, और वह निमंत्रण अनुग्रह का क्षण बन जाता है। वही दृष्टांत एक हृदय को कोमल और दूसरे को कठोर कर सकता है, क्योंकि अंतर कहानी की स्पष्टता में नहीं, बल्कि हृदय की झुकने की इच्छा में होता है (मती 13:10-13, एनआईवी)।

## दृष्टांत परमेश्वर की छिपी हुई बुद्धि के ढाँचे को पूरा करते हैं

यीशु ने दृष्टांतों में शिक्षा दी क्योंकि यह एक व्यापक बाइबिलीय ढाँचे का भाग है, जहाँ परमेश्वर नम्रों को बुद्धि प्रकट करता है और घमंडियों को उलझन में डालता है। दृष्टांतों के द्वारा बोलते हुए, यीशु अपनी सेवकाई को पिता के उस निरंतर तरीके के साथ संरेखित करते हैं जिससे वह मानवीय घमंड से निपटते हैं। दृष्टांत कोई नई युक्ति नहीं हैं, वे इस बात की पूर्ति हैं कि परमेश्वर राज्य को मसीहा के द्वारा इस प्रकार प्रकट करेगा कि विश्वास की आवश्यकता हो। यीशु का अधिकार इस बात में दिखाई देता है कि वह केवल पवित्रशास्त्र का उपयोग नहीं करते, वह उसे पूरा करते हैं, क्योंकि वह प्रतिज्ञात जन के रूप में शिक्षा देते हैं जो स्वयं उस संदेश को धारण करता है जिसकी वह घोषणा करता है।

यीशु की यह पूर्ति चेलाई को भी मजबूत करती है क्योंकि यह विश्वासियों को स्मरण दिलाती है कि परमेश्वर की बुद्धि अक्सर नियंत्रण के बजाय भरोसे के द्वारा ग्रहण की जाती है। पास्टर्स को इस धारणा के विरुद्ध चेतावनी देनी चाहिए कि आत्मिक परिपक्वता का अर्थ है कि परमेश्वर पूर्वानुमेय हो जाए, क्योंकि पिता मानवीय अपेक्षाओं से नियंत्रित नहीं होते। दृष्टांत धैर्य, मनन, और प्रार्थनापूर्ण सुनने की माँग करते हैं, और ये आदतें नम्रता को विकसित करती हैं। जब विश्वासी यीशु की कहानियों के अधीन बैठना सीखते हैं, तो वे परमेश्वर के शासन को अधिकार नहीं, बल्कि वरदान के रूप में ग्रहण करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। इसलिए मसीह के दृष्टांत ऐसी कलीसिया का निर्माण करते हैं जो परमेश्वर से महाराई से बोलने की अपेक्षा रखती है और सत्य को

उपभोक्ता वस्तु की तरह लेने से इनकार करती है (मत्ती 13:34-35, एनआईवी)।

## दृष्टांत शिष्यों को राज्य की श्रेणियों में सोचने के लिए प्रशिक्षित करते हैं

यीशु ने दृष्टांतों का उपयोग शिष्यों को देखने का नया ढंग सिखाने के लिए किया, क्योंकि राज्य का जीवन केवल नियम-पालन से अधिक की माँग करता है, वह परमेश्वर के शासन से आकार पाई हुई नई कल्पना की माँग करता है। कहानियाँ सत्य को साधारण अनुभव से जोड़ती हैं, और यीशु उस जोड़ का उपयोग प्रवृत्तियों को बनाने के लिए करते हैं, केवल मतों को नहीं वह ऐसे शिष्य बना रहे हैं जो मिट्टी, बीज, ऋण, परिश्रम, और उत्सव में पिता की प्राथमिकताओं को पहचानते हैं, क्योंकि राज्य जीवन के हर भाग को छूता है। इसलिए यीशु का अधिकार रूपांतरणकारी है, क्योंकि वह केवल गलतियों को सुधार नहीं रहे, वह यह बदल रहे हैं कि उनके अनुयायी वास्तविकता को कैसे देखते हैं।

यीशु की चेलाई की रणनीति सतही सुनने का भी सामना करती है, क्योंकि दृष्टांत शीघ्र निष्कर्षों के बजाय निरंतर ध्यान की माँग करते हैं। पास्टर्स को विश्वासियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे यीशु की कहानियों के साथ इतना समय बिताएँ कि आत्मा धारणाओं को उजागर करे और इच्छाओं को पुनः क्रमित करे। जब लोग हृदय परिवर्तन के बिना तुरंत स्पष्टता चाहते हैं, तो दृष्टांत निराशाजनक लग सकते हैं, फिर भी वह निराशा अक्सर नियंत्रण में रहने की इच्छा को प्रकट करती है। यीशु अपने शिष्यों को धैर्य से समझाते हैं, यह दिखाते हुए कि उनके साथ संबंध ही वह संदर्भ है जहाँ गहरी समझ बढ़ती है। राजा दृष्टांतों में इसलिए शिक्षा देते हैं कि ऐसा

लोग-समुदाय बने जो परमेश्वर के शासन के अधीन बुद्धिमान्नी से जीए, न कि केवल धार्मिक तथ्यों को जानने वाला समुदाय (मरकुस 4:33-34, एनआईवी)।

## दृष्टांत हृदय की मिट्टी की परीक्षा लेते हैं

यीशु के दृष्टांत बार बार इस बात पर जोर देते हैं कि ग्रहणशीलता महत्वपूर्ण है, क्योंकि वही संदेश उसे ग्रहण करने वाले हृदय के अनुसार अलग अलग परिणाम उत्पन्न करता है। राज्य की शिक्षा में प्रश्न यह नहीं है कि परमेश्वर के वचन में सामर्थ्य है या नहीं, बल्कि यह है कि हृदय उसे धीरज के साथ ग्रहण करने को तैयार है या नहीं। यीशु अच्छी मिट्टी का वर्णन उन लोगों के रूप में करते हैं जो वचन को सुनते हैं, उसे थामे रखते हैं, और धीरज धरते हैं, यह दिखाते हुए कि सच्ची चेलाई क्षणिक उत्साह नहीं, बल्कि निरंतर आज्ञाकारिता है। राजा अस्थायी जोश में रुचि नहीं रखते जो दबाव में ढह जाए, क्योंकि उनका शासन उन लोगों में स्थायी फल उत्पन्न करता है जो समर्पित होते हैं।

हृदय की मिट्टी पर यीशु का जोर पास्ट्रों को सेवकाई का यथार्थवादी ढाँचा भी देता है कुछ लोग शीघ्र प्रतिक्रिया देते हैं पर उनकी जड़ें उथली होती हैं, और कुछ इसलिए विरोध करते हैं क्योंकि वचन उनके प्रेम को चुनौती देता है, और यीशु उस गतिशीलता को निराश हुए बिना नाम देते हैं दृष्टांत सिखाते हैं कि विश्वासयोग्य सेवकाई को केवल प्रारंभिक प्रतिक्रिया से नहीं, बल्कि दीर्घकालीन फल से मापा जाना चाहिए जो धीरज के द्वारा उभरता है। यह अगुवों को धैर्यपूर्वक शिष्य बनाने, गहराई को विकसित करने, और आत्मिक शॉर्टकट्स के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए प्रोत्साहित करता है। यीशु की कहानियाँ विश्वासियों को यह जाँचने के लिए

बुलाती हैं कि वे सत्य को इस प्रकार ग्रहण कर रहे हैं या नहीं जो आदतों, संबंधों, और प्राथमिकताओं को बदल देता है मिट्टी समय के साथ प्रकट होती है, और राजा सच्चे सुनने के प्रमाण के रूप में धीरज की माँग करते हैं (लूका 8:15, एनआईवी)।

## दृष्टांत केवल सहमति नहीं, निर्णय का निमंत्रण देते हैं

यीशु के दृष्टांत श्रोताओं को निर्णय की ओर दबाव देते हैं क्योंकि राज्य को शैक्षणिक रुचि के रूप में नहीं लिया जा सकता कई दृष्टांत किसी झटके, उलटफेर, या असहज प्रश्न के साथ समाप्त होते हैं, जो श्रोता को यह चुनने के लिए मजबूर करते हैं कि वह झुकेगा या बहाना बनाएगा यीशु बुद्धिमान घर बनाने वाले को वह बताते हैं जो उनके वचनों को सुनता है और उन्हें करता है, यह प्रकट करते हुए कि आज्ञाकारिता के बिना सुनना आत्मिक आत्म-छल है राजा का अधिकार स्पष्ट है क्योंकि वह अपने ही वचनों को न्याय और स्थिरता के केंद्र में रखते हैं, और आग्रह करते हैं कि जीवन या तो उनके प्रति प्रतिक्रिया से बनता है या बिगड़ता है।

निर्णय की यीशु की यह पुकार कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक मसीहियत आज्ञाकारिता के बिना सहमति में फिसल सकती है पास्टरों को सिखाना चाहिए कि चेलाई केवल यीशु की नैतिकता की प्रशंसा करना नहीं है, वह ठोस कार्यों में यीशु के प्रभुत्व के अधीन होना है दृष्टांत आत्म-पहचान के लिए स्थान बनाते हैं, और आत्म-पहचान ईमानदार होने पर पश्चाताप बन जाती है जब विश्वासी निर्णय से बचते हैं, तो वे अक्सर आराम, घमंड, या छिपे पाप की रक्षा कर रहे होते हैं, और यीशु की कहानियाँ उसी बचाव को तोड़ने के लिए बनाई गई हैं दृष्टांत का रूप दिया है क्योंकि वह

लोगों को स्वयं को देखने और मुड़ने का निमंत्रण देता है, फिर भी वह चैतावनी भी है क्योंकि आज्ञा न मानना रेत पर निर्माण करना है। राजा तालियों से अधिक की माँग करते हैं, वह समर्पण की माँग करते हैं (मत्ती 7:24-27, एनआईवी)।

## अनुभाग 2: परमेश्वर के राज्य के विषय में प्रमुख दृष्टांत

यीशु के राज्य संबंधी दृष्टांत प्रकट करते हैं कि परमेश्वर का शासन अक्सर मानवीय अपेक्षाओं के विपरीत तरीकों से आता है। बहुत से लोग तुरंत राजनीतिक विजय, दिखाई देने वाला प्रभुत्व, और सार्वजनिक प्रतिफल चाहते थे, फिर भी यीशु ने ऐसे राज्य का वर्णन किया जो शांत, निरंतर तरीकों से बढ़ता है, फैलता है, और रूपांतरित करता है। उन्होंने सिखाया कि राज्य विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाता है, कि वह समय के साथ फल उत्पन्न करता है, और कि वह हर कीमत के योग्य है क्योंकि वह राजा के द्वारा संसार में प्रवेश करता हुआ परमेश्वर का उद्धारकारी शासन है। ये दृष्टांत चेलाई को ऐसी आशा में स्थिर करते हैं जो धैर्यशील, आज्ञाकारी, और आराधनात्मक होती है।

यीशु ने राज्य के दृष्टांतों का उपयोग आत्मिक घमंड को सुधारने के लिए भी किया, क्योंकि राज्य उन लोगों का अधिकार नहीं है जो मान लेते हैं कि वे इसके योग्य हैं। दृष्टांत यह प्रकट करते हैं कि कुछ लोग सुनेंगे और ठुकराएंगे, कुछ सुनेंगे और धीरज धरेंगे, और कुछ राज्य के मूल्य को खोजकर आनंदपूर्वक समर्पण करेंगे। यीशु ऐसे शिष्य बना रहे हैं जो समझते हैं कि राज्य वर्तमान भी है और अभी आगे बढ़ रहा है, और कि विश्वासयोग्य जीवन के लिए पिता के समय

पर भरोसा आवश्यक है। ये कहानियाँ विश्वासियों को आत्मिक यथार्थवाद के साथ जीना सिखाती हैं, इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर का शासन आगे बढ़ रहा है, चाहे वह छोटा ही क्यों न दिखाई दे।

## बीज बोने वाला और अनेक हृदयों में राज्य का वचन

यीशु राज्य के संदेश को व्यापक रूप से बिखरे हुए बीज के समान बताते हैं, यह दिखाते हुए कि राजा घोषणा में उदार हैं और सुनना व्यापक रूप से उपलब्ध है। यह दृष्टांत इस धारणा को अस्वीकार करता है कि सत्य के निकट होना अपने आप रूपांतरण की गारंटी देता है, क्योंकि परिणाम ग्रहण करने के तरीके पर निर्भर करते हैं। कुछ हृदय कठोर होते हैं, कुछ उथले होते हैं, कुछ भीड़ से भरे होते हैं, और कुछ तैयार होते हैं, और राजा इस वास्तविकता को नाम देते हैं ताकि शिष्य भोले न बनें। यीशु का अधिकार हृदय के उनके निदान में दिखाई देता है, क्योंकि वह उस कारण को जानते हैं कि लोग जिस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं, और वह स्थायी विश्वास के लिए बुलाते हैं।

यीशु का यह दृष्टांत पास्टोरल सेवकाई को भी आकार देता है क्योंकि यह धैर्य और विवेक सिखाता है। अगुवों को विश्वासयोग्य रूप से बोने के लिए बुलाया गया है, परिणामों में हेरफेर करने के लिए नहीं, क्योंकि वृद्धि केवल पिता ही देते हैं, फिर भी शिष्यों को अपनी ग्रहणशीलता की जाँच करने के लिए भी बुलाया गया है। यह दृष्टांत उन विश्वासियों को चुनौती देता है जो प्रचार को पृष्ठभूमि शोर की तरह लेते हैं, क्योंकि परिवर्तन के बिना सुनना तटस्थ नहीं होता। यह उन लोगों को भी सांत्वना देता है जो विश्वासयोग्य सेवकाई में मिश्रित प्रतिक्रियाएँ देखते हैं, क्योंकि स्वयं यीशु ने मिश्रित मिट्टी की अपेक्षा की थी। राज्य वचन के द्वारा आगे बढ़ता है,

और वचन वहाँ फल उत्पन्न करता है जहाँ उसे पश्चाताप और धीरज के साथ ग्रहण किया जाता है इसलिए चेलाई को ऐसे सुनने को प्राथमिकता देनी चाहिए जो आज्ञाकारिता की ओर ले जाए, क्योंकि राजा का बीज स्थायी फल के लिए है (मती 13:1-9, एनआईवी)।

## सरसों का दाना और राज्य की अप्रत्याशित वृद्धि

यीशु ने राज्य की तुलना सरसों के दाने से की ताकि यह सिखाएँ कि परमेश्वर का शासन अक्सर देखने में छोटे आरंभ से शुरू होता है, फिर भी वह मानवीय गणना से कहीं अधिक बढ़ता है। बीज नगण्य प्रतीत होता है, और वह नगण्यता उस प्रकार को दर्शाती है जैसे बहुतों को यीशु की सेवकाई दिखाई देती थी, नासरत का एक शिक्षक जो साधारण अनुयायियों को इकट्ठा करता है। फिर भी राज्य का जीवन प्रारंभिक रूप से सीमित नहीं होता, क्योंकि वह मानवीय शक्ति से नहीं, बल्कि परमेश्वर के अधिकार से संचालित होता है। यीशु का यह दृष्टांत शिष्यों को आश्चर्य करता है कि छोटे आरंभों में विश्वासयोग्यता व्यर्थ नहीं जाती, क्योंकि पिता उसी को बढ़ाना पसंद करते हैं जिसे संसार तुच्छ समझता है।

यीशु की शिक्षा अधीरता और निराशा को भी सुधारती है, जो सेवकाई और चेलाई में निरंतर प्रलोभन हैं। बहुत से विश्वासी तुरंत दिखाई देने वाले प्रभाव की इच्छा रखते हैं, और जब वह नहीं आता, तो वे आज्ञाकारिता के महत्व पर प्रश्न उठाने लगते हैं, फिर भी यीशु कहते हैं कि राज्य परमेश्वर के समय में बढ़ता है। पास्टरों को कलीसियाओं को शांत वृद्धि, निरंतर पश्चाताप, और विश्वासयोग्य सेवा का उत्सव मनाने में सहायता करनी चाहिए, क्योंकि राज्य की प्रगति अक्सर धीरे और गहराई से होती है। यह दृष्टांत मंच की लालसा रखने

वाले अंगुवों को भी नम्र करता है, क्योंकि राजा का ढाँचा तमाशे से नहीं, बल्कि जीवन से संचालित होता है जो स्वाभाविक रूप से फैलता है। राज्य की वृद्धि वास्तविक है, चाहे वह बीज के रूप में ही क्यों न आरंभ हो, और यीशु अपने लोगों को पिता के प्रकट होते कार्य पर भरोसा करने के लिए बुलाते हैं (मत्ती 13:31-32, एनआईवी)।

## खमीर और राज्य का छिपा हुआ प्रभाव

यीशु ने राज्य की तुलना आटे में काम करने वाले खमीर से की, यह प्रकट करते हुए कि परमेश्वर का शासन अक्सर त्वरित बाहरी प्रदर्शन के बजाय भीतर से रूपांतरण करता है। खमीर स्वयं को जोर से घोषित नहीं करता, फिर भी समय के साथ पूरे गूंथे हुए आटे को बदल देता है, और यीशु इस चित्र का उपयोग यह सिखाने के लिए करते हैं कि राज्य का प्रभाव शांत, निरंतर, और व्यापक हो सकता है। यह दृष्टांत उस धारणा को चुनौती देता है कि केवल दिखाई देने वाली बातें ही मूल्यवान हैं, क्योंकि यीशु उस छिपे हुए रूपांतरण को सम्मान देते हैं जो चरित्र, समुदाय, और आराधना को बदल देता है। राजा का अधिकार इस विश्वास में दिखाई देता है कि पिता का शासन रोका नहीं जा सकता, चाहे उसे मापना कठिन ही क्यों न हो।

यीशु का यह दृष्टांत आत्मिक गठन के विषय में पास्टोरल अपेक्षाओं को भी दिशा देता है। लोग अक्सर त्वरित परिवर्तन और नाटकीय सफलताओं की इच्छा रखते हैं, फिर भी स्थायी पवित्रता प्रायः निरंतर पश्चात्ताप, बार बार की आज्ञाकारिता, और हृदय में चल रहे नवीनीकरण के द्वारा उभरती है। पास्टरों को विश्वासियों को धीमी विश्वासयोग्यता का मूल्य सिखाना चाहिए, जिसमें प्रार्थना, उदारता, और मेल-

मिलाप शामिल हैं, क्योंकि इन्हीं अभ्यासों में राज्य का खमीर अपना कार्य करता है। यह दृष्टांत उन कलीसियाओं को भी चुनौती देता है जो निरंतर नवीनता के पीछे भागती हैं, क्योंकि राज्य की शक्ति भावनात्मक तीव्रता पर निर्भर नहीं होती। यीशु अपने लोगों को यह भरोसा करने के लिए बुलाते हैं कि आत्मा साधारण साधनों के द्वारा असाधारण रूपांतरण उत्पन्न करती है। खमीर चुपचाप काम करता है, और राजा चिंतित नहीं होते, क्योंकि पिता का शासन प्रभावी है (मती 13:33, एनआईवी)।

## छिपा हुआ खजाना और राज्य की आनंदपूर्ण कीमत

यीशु ने एक व्यक्ति का वर्णन किया जो छिपा हुआ खजाना खोजकर सब कुछ बेच देता है ताकि वह खेत खरीद सके, यह सिखाते हुए कि राज्य पूर्ण समर्पण के योग्य है। यहाँ जोर उदास कर्तव्य पर नहीं, बल्कि आनंद पर है, क्योंकि व्यक्ति जो कुछ भी बेचता है वह खुशी से बेचता है जब उसे पता चलता है कि उसने क्या पाया है। यीशु आधे मन के धर्म का सामना करते हैं और यह प्रकट करते हैं कि सच्ची चेलाई मूल्य से प्रेरित होती है, दबाव से नहीं। जब राज्य को सही रूप में देखा जाता है, तो बलिदान तर्कसंगत बन जाता है, क्योंकि राजा के अधीन परमेश्वर का होना हर चीज़ से बढ़कर है।

यीशु का यह दृष्टांत यह उजागर करता है कि बहुत से लोग पूर्ण आज्ञाकारिता का विरोध क्यों करते हैं। वे अक्सर राज्य के मूल्य को कम आँकते हैं और उस चीज़ के मूल्य को अधिक आँकते हैं जिसकी वे रक्षा कर रहे होते हैं, चाहे वह आराम हो, प्रतिष्ठा हो, या नियंत्रण हो। पास्ट्रों को विश्वासियों को ऐसी आराधना विकसित करने में सहायता करनी चाहिए जो मसीह के मूल्य की धारणा को बढ़ाए, क्योंकि यीशु के लिए

प्रेम दोषबोध की तुलना में महँगी आज्ञाकारिता को अधिक विश्वसनीय रूप से प्रेरित करता है। यह दृष्टांत उन लोगों को भी सांत्वना देता है जिन्होंने बहुत कुछ त्यागा है, क्योंकि यह आश्वस्त करता है कि राज्य के लिए किया गया नुकसान अंतिम नुकसान नहीं है, वह ऐसे आनंद के लिए विनिमय है जिसे छीना नहीं जा सकता। यीशु शिष्यों को आत्म-विनाश के लिए नहीं बुलाते, वह बुद्धिमान समर्पण के लिए बुलाते हैं, क्योंकि खजाना वास्तविक है। जब हृदय राज्य को स्पष्ट रूप से देखता है, तो वह आनंद के साथ आज्ञाकारिता की ओर बढ़ता है (मत्ती 13:44, एनआईवी)।

## **बहुमूल्य मोती और एकमात्र सर्वोत्तम निवेश**

यीशु ने राज्य की तुलना उस व्यापारी से की जो एक बहुमूल्य मोती खोजकर सब कुछ बेच देता है, यह जोर देते हुए कि समर्पण केंद्रित और निर्णायक होना चाहिए। व्यापारी न तो भ्रमित है और न ही हिचकिचाता है, क्योंकि मूल्य स्पष्ट है और मोती दिखाई देने के बाद निर्णय स्वाभाविक हो जाता है। यीशु सिखाते हैं कि राज्य अनेक योम्य प्रतिबद्धताओं में से एक नहीं है, वह निर्णायक खजाना है जो हर दूसरी निष्ठा को पुनः क्रमित करता है। राजा का अधिकार श्रोताओं पर दबाव डालता है कि वे बातचीत बंद करें और समर्पण आरंभ करें, क्योंकि राज्य को आत्म-शासन के सहायक के रूप में नहीं लिया जा सकता।

यीशु का यह दृष्टांत परियवव विश्वासियों को भी संबोधित करता है जो विभाजित भक्ति में फिसल सकते हैं, प्राथमिकताओं को पुनः क्रमित किए बिना मसीह को रखना चाहते हैं। पास्टर्स को शिष्यों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि यीशु प्रभुत्व साझा नहीं करते, क्योंकि विभाजित

निष्ठा अंततः पाखंड या पतन बन जाती है। यह दृष्टांत उत्तरदायित्व के विरुद्ध नहीं, बल्कि अंतिम प्रतिबद्धता के पक्ष में है, क्योंकि जब मसीह सबसे अधिक मूल्यवान होते हैं, तब बाकी सब अपने सही स्थान पर आ जाता है। व्यापारी का निर्णय यह सिखाता है कि चेलाई में विवेक शामिल है, क्योंकि बुद्धिमान लोग पहचानते हैं कि वास्तव में क्या मूल्यवान है और उसी के अनुसार कार्य करते हैं। यीशु अपने लोगों को उस पर जीवन निवेश करने के लिए बुलाते हैं जो स्थायी है, न कि उस पर जो मिट जाता है, क्योंकि उनका राज्य ही एकमात्र अनंत शासन है। भोती एक है, और निष्ठा भी एक ही होनी चाहिए, क्योंकि यीशु इसके योम्य हैं (मत्ती 13:45-46, एनआईवी)।

## अनुभाग 3: अनुग्रह, दया, और उद्धार के दृष्टांत

यीशु ने अनुग्रह के दृष्टांत इसलिए सुनाए क्योंकि राज्य मानवीय योम्यता पर नहीं, बल्कि पापियों के प्रति पिता की दया पर आधारित है। ये कहानियाँ पाप को कम नहीं करतीं, वे उसे उजागर करती हैं, फिर भी वे परमेश्वर के उस हृदय को प्रकट करती हैं जो बचाने, बहाल करने, और पश्चात्ताप पर आनन्दित होने के लिए तत्पर है। यीशु के दया के दृष्टांत धार्मिक घमंड का सामना करते हैं, क्योंकि घमंड मान लेता है कि परमेश्वर सम्मानितों को पुरस्कृत करने के लिए है, जबकि यीशु ऐसे परमेश्वर को प्रकट करते हैं जो खोए हुएों को खोजता है और पश्चात्ताप करने वालों का स्वागत करता है। राजा की करुणा भावुक नहीं, बल्कि पवित्र है, क्योंकि वह पापियों को अंधकार से निकालकर परमेश्वर के शासन के अधीन जीवन में बुलाती है।

यीशु उद्धार के दृष्टांतों का उपयोग यह बदलने के लिए भी करते हैं कि कलीसिया टूटे हुए लोगों के साथ कैसा व्यवहार करती है। यदि परमेश्वर पश्चाताप पर आनन्दित होते हैं, तो शिष्य पश्चाताप करने वालों के प्रति तिरस्कार, संदेह, या स्थायी लज्जा का व्यवहार नहीं कर सकते। ये दृष्टांत ऐसे समुदाय को बनाने के लिए हैं जो पिता के स्वागतपूर्ण हृदय को उसकी पवित्रता से समझौता किए बिना प्रतिबिंबित करें। वे परिपक्व विश्वासियों को भी चेतावनी देते हैं कि वे केवल धार्मिक गतिविधि के निकट होने के कारण स्वयं को सुरक्षित न समझें। यीशु की अनुग्रह की कहानियाँ यह उजागर करती हैं कि वास्तव में कौन दया को समझता है, क्योंकि जिन्होंने दया को आनंदपूर्वक ग्रहण किया है वे उसे आगे बढ़ाते हैं, और जो आत्म-धार्मिकता से चिपके रहते हैं वे उससे नाराज़ होते हैं।

### **खोई हुई भेड़ और खोज करने वाला चरवाहा**

यीशु एक चरवाहे का वर्णन करते हैं जो एक खोई हुई भेड़ को खोजने के लिए निन्यानवे को छोड़ देता है, यह प्रकट करते हुए कि पिता की दया सक्रिय है, निष्क्रिय नहीं। ब्रह्मा यह नहीं है कि निन्यानवे महत्वहीन हैं, बल्कि यह कि चरवाहे का हृदय उद्धार की ओर झुकता है, और वह उद्धार व्यक्तिगत, उद्देश्यपूर्ण, और आनंदपूर्ण होता है। यीशु दिखाते हैं कि परमेश्वर केवल पापियों की प्रतीक्षा नहीं करते कि वे लौट आएँ, वह उन्हें खोजते हैं, उठाते हैं, और झुंड में बहाल करते हैं। राजा का अधिकार कोमल खोज में प्रकट होता है, क्योंकि दिव्य सामर्थ्य कुचलने के लिए नहीं, बल्कि बचाने के लिए प्रयुक्त होती है।

यीशु का यह दृष्टांत पास्टोरल सेवकाई को भी आकार देता है क्योंकि यह सिखाता है कि अगुवों को व्यक्तिगत आत्माओं

को कैसे मूल्य देना चाहिए कलीसियाएँ भीड़ से प्रभावित हो सकती हैं और उस एक को नज़रअंदाज़ कर सकती हैं जो भटक रहा है, छिप रहा है, या घायल है, फिर भी यीशु सिखाते हैं कि एक पापी के पश्चाताप पर स्वर्ग आनन्दित होता है। पास्टरों को मंडलियों को भटके हुआओं का नम्रता, धैर्य, और सत्य के साथ पीछा करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, गपशप और कठोरता से बचते हुए उद्देश्य नियंत्रण नहीं, बल्कि चरवाहे की देखभाल के अधीन बहाली है। यह दृष्टांत उस विश्वासी को भी सांत्वना देता है जो स्वयं को भुला हुआ महसूस करता है, क्योंकि यीशु प्रकट करते हैं कि परमेश्वर का ध्यान संख्या से कम नहीं होता। चरवाहे का आनंद पुनः प्राप्ति से जुड़ा है, और वही आनंद कलीसिया के मिशन और स्वर को आकार देना चाहिए (लूका 15:3-7, एनआईवी)।

## खोया हुआ सिक्का और स्थायी दया की गरिमा

यीशु एक स्त्री का वर्णन करते हैं जो खोए हुए सिक्के को परिश्रमपूर्वक खोजती है, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर की दया स्थायी है और उन बातों पर भी ध्यान देती है जो दूसरों को छोटी लगती हैं। सिक्का स्वयं को नहीं खोज सकता, और स्त्री का प्रयास उद्देश्यपूर्ण खोज, सावधानीपूर्ण तलाश, और खोई हुई वस्तु के मिलने पर आनंदपूर्ण उत्सव को दर्शाता है। यीशु प्रकट करते हैं कि पिता का अनुग्रह लापरवाह नहीं, बल्कि उद्देश्यपूर्ण है, और वह उन लोगों को मूल्य देता है जो स्वयं को तुच्छ, अनदेखा, या आत्मिक रूप से अटके हुए महसूस करते हैं। राजा घरेलू चित्र का उपयोग करते हैं ताकि दिव्य संकल्प को संप्रेषित किया जा सके, क्योंकि राज्य साधारण जीवन में प्रवेश करता है और जो परमेश्वर का है उसे दावा करता है।

यीशु का यह दृष्टांत कलीसिया की उस प्रवृत्ति का भी सामना करता है जो शांत पापियों को नज़रअंदाज़ कर देती है जो सार्वजनिक ध्यान नहीं खींचते पास्टरों को विश्वासियों को स्मरण दिलाना चाहिए कि आत्मिक खोया जाना हमेशा नाटकीय नहीं होता, कभी कभी वह धीमा बहाव, सूक्ष्म समझौता, या सुन्न विवेक होता है, और वे रूप भी परमेश्वर के लिए गहराई से महत्वपूर्ण हैं। यह कहानी सिखाती है कि सेवकाई में स्थायित्व एक गुण है, क्योंकि दया शीघ्र हार नहीं मानती। यह यह भी सिखाती है कि पश्चाताप पर उत्सव मनाना उचित है, क्योंकि पश्चाताप केवल सुधार नहीं, बल्कि जीवन में बहाली है। पिता का आनंद अनिच्छुक नहीं, बल्कि वास्तविक है, और कलीसिया को पश्चाताप करने वालों का बिना संदेह स्वागत करके उसी आनंद को प्रतिबिंबित करना चाहिए। यीशु की दया तब तक खोजती है जब तक वह पा न ले, और वही उद्धार का स्वर है (लूका 15:8-10, एनआईवी)।

## उड़ाऊ पुत्र और दौड़ता हुआ पिता

यीशु एक पुत्र की कहानी सुनाते हैं जो अपनी विरासत को व्यर्थ करता है और लौट आता है, और पिता उससे मिलने के लिए दौड़ता है, यह उस अनुग्रह को प्रकट करता है जो आत्म-धार्मिक हृदयों के लिए चौंकाने वाला है। पुत्र का विद्रोह वास्तविक है, और उसकी वापसी में नम्र स्वीकारोक्ति शामिल है, फिर भी पिता की प्रतिक्रिया तत्काल स्वागत है जो केवल जीवित रहने की अनुमति नहीं, बल्कि पुत्रत्व को बहाल करती है। यीशु प्रकट करते हैं कि परमेश्वर की दया अनिच्छुक रियायत नहीं, बल्कि प्रेम में निहित उत्सुक बहाली है। राजा सिखाते हैं कि पश्चाताप को आलिंगन मिलता है, क्योंकि पिता का उद्देश्य मेल-मिलाप है, न कि अंतहीन परीक्षण।

यीशु का यह दृष्टांत उन लोगों के साथ पास्टोरल देखभाल के लिए भी ढाँचा देता है जो पाप से लौट रहे हैं। क्लीसियाएँ लौटने वालों को स्थायी जोखिम के रूप में देख सकती हैं, फिर भी यीशु पिता को गरिमा बहाल करते और जीवन की पुनर्प्राप्ति का उत्सव मनाते हुए दिखाते हैं। यह परिणामों की अनदेखी नहीं करता, लेकिन पश्चाताप करने वाले को उसके सबसे बुरे अध्याय से परिभाषित करने से इनकार करता है। यह कहानी उन परिवर्तित विश्वासियों को भी चेतावनी देती है जो बड़े भाई के समान हैं, क्योंकि अनुग्रह के प्रति कड़वाहट उस हृदय को उजागर करती है जो अभी भी अपनापन कमाने का प्रयास कर रहा है। पास्ट्रों को मंडलियों को ऐसे उत्सव में शिष्य बनाना चाहिए जो पवित्र हो, क्योंकि वह परमेश्वर की दया का सम्मान करता है और बहाल किए गए लोगों को नई आज्ञाकारिता में बुलाता है। पिता का आलिंगन पाप की स्वीकृति नहीं, बल्कि पाप से उद्धार है, और वह पूरे समुदाय को आनंद में आमंत्रित करता है (लूका 15:11-24, एनआईवी)।

## **फरीसी और महसूल लेने वाला और धर्मी ठहराए जाने का झटका**

यीशु दो मनुष्यों की प्रार्थना का दृष्टांत सुनाते हैं, एक अपने ही धर्म में आत्मविश्वास से भरा और दूसरा दया की याचना करता हुआ, और वह घोषित करते हैं कि नम्र पापी धर्मी ठहराया गया धर्मी ठहराया जाना का अर्थ है परमेश्वर के सामने सही ठहराया जाना, अर्जित योग्यता के कारण नहीं, बल्कि पश्चाताप करने वालों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण निर्णय के कारण। यीशु उजागर करते हैं कि धार्मिक भाषा आत्म-आराधना बन सकती है, जहाँ प्रार्थना घमंड में बदल जाती है, और तुलना पश्चाताप का स्थान ले लेती है। राजा का

अधिकार इस बात में दिखाई देता है कि वह यह नाम दे सकते हैं कि वास्तव में कौन परमेश्वर के साथ सही है, जो पवित्रता के सतही मापदंडों को उलट देता है।

यीशु का यह दृष्टांत पास्ट्रों के लिए आवश्यक है क्योंकि यह आत्म-धार्मिक आत्मविश्वास के आत्मिक खतरे को उजागर करता है विश्वासी बाहरी अभ्यासों में विश्वासयोग्य हो सकते हैं, फिर भी चुपचाप परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय स्वयं पर भरोसा कर सकते हैं, और यीशु कहते हैं कि वह स्थिति आत्मिक रूप से घातक है महसूल लेने वाले की प्रार्थना परिष्कृत नहीं है, फिर भी वह सत्य है, और सत्य दया का द्वार खोल देता है पास्ट्रों को सिखाना चाहिए कि नम्रता व्यक्तित्व का गुण नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने एक स्थिति है, और वही स्थिति अनुग्रह को ग्रहण करती है यह दृष्टांत उन विश्वासियों को भी प्रोत्साहित करता है जो स्वयं को अयोग्य महसूस करते हैं, क्योंकि यीशु दिखाते हैं कि परमेश्वर चमकदार नहीं, बल्कि खेदित हृदयों का स्वागत करते हैं। राज्य का जीवन ग्रहण की गई दया से आरंभ होता है, और ग्रहण की गई दया आगे बढ़ाई गई दया उत्पन्न करती है (लूका 18:9-14, एनआईवी)।

## **भला सामरी और सीमाओं को पार करने वाली दया**

यीशु एक घायल व्यक्ति की कहानी सुनाते हैं जिसे धार्मिक राहगीर अनदेखा करते हैं और एक सामरी उसकी सहायता करता है, यह उजागर करते हुए कि पड़ोसी का प्रेम जातीय सीमाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता यह दृष्टांत उस प्रवृत्ति का सामना करता है जिसमें “पड़ोसी” को संकीर्ण रूप से परिभाषित किया जाता है ताकि आज्ञाकारिता सुविधाजनक बनी रहे यीशु दया को महँगी करुणा के रूप में

दिखाते हैं जो समय, धन, और व्यक्तिगत जोखिम का उपयोग पीड़ित की सेवा के लिए करती है राजा का अधिकार भावुक सहमति से आगे बढ़कर ठोस कार्य की माँग करता है, क्योंकि प्रश्न यह नहीं है कि दया की प्रशंसा होती है या नहीं, बल्कि यह है कि दया का अभ्यास होता है या नहीं।

यीशु का यह दृष्टांत कलीसिया की पवित्रता और करुणा के विषय में सोच को भी पुनः आकार देता है कहानी के धार्मिक अग्रुवे इसलिए खलनायक नहीं बनते कि वे पवित्रशास्त्र से प्रेम करते हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने धार्मिक चिंता को पीड़ित व्यक्ति से बचने का बहाना बना लिया पास्टरों को सिखाना चाहिए कि दया पवित्रता में जड़ी होनी चाहिए, फिर भी पवित्रता कभी प्रेम से बचने का कारण नहीं बननी चाहिए। सामरी की करुणा प्रदर्शनकारी नहीं, बल्कि ठोस है, और वह उस प्रकार के राज्य-पड़ोसी प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करती है जिसकी आज्ञा यीशु देते हैं। यह दृष्टांत विश्वासियों को पूर्वाग्रहों की जाँच करने की चुनौती भी देता है, क्योंकि दया दूसरे व्यक्ति को परमेश्वर के स्वरूप में बना हुआ, देखभाल के योग्य मानने की माँग करती है। यीशु अपने लोगों को ऐसी दया के लिए बुलाते हैं जो आवश्यकता की ओर बढ़ती है, क्योंकि राजा इसी प्रकार प्रेम करते हैं (लूका 10:30-37, एनआईवी)।

## अनुभाग 4: चेतावनी, जवाबदेही, और न्याय के दृष्टांत

यीशु ने चेतावनी के दृष्टांत इसलिए सुनाए क्योंकि राज्य केवल निमंत्रण नहीं, बल्कि पवित्र राजा के अधीन जवाबदेही भी है। अनुग्रह वास्तविक है, पर अनुग्रह उत्तरदायित्व को

मिटाता नहीं, और यीशु शिष्यों को दया को बहाव की अनुमति मानने नहीं देते। वे दृष्टांत आत्म-संतोष, पाखंड, और झूठी सुरक्षा का सामना करते हैं, क्योंकि बहुत से लोग मान लेते हैं कि केवल धार्मिक निकटता उन्हें सुरक्षित बनाती है। यीशु चेतावनी देते हैं कि पिता का न्याय न्यायसंगत है, कि तैयारी महत्वपूर्ण है, और कि भंडारीपन आवश्यक है, क्योंकि राजा के शासन में नैतिक भार है।

यीशु चेतावनी के दृष्टांतों का उपयोग भय-प्रेरित घबराहट के बजाय चौकसी उत्पन्न करने के लिए भी करते हैं। वह शिष्यों को तैयार, विश्वासयोग्य, और ईमानदार जीवन जीने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि अंत निश्चित है, भले ही समय अज्ञात हो। वे दृष्टांत पास्टोरल हैं क्योंकि वे विश्वासियों को आत्म-छल से बचाते हैं, और वे धार्मिक हैं क्योंकि वे प्रकट करते हैं कि स्वयं यीशु न्यायी और लौटने वाले प्रभु हैं। जब कलीसिया यीशु की चेतावनियों की उपेक्षा करती है, तो वह प्रायः पाप के विषय में कोमल और अनंतता के विषय में उथली हो जाती है। जब कलीसिया उन्हें ग्रहण करती है, तो वह गंभीर, नम्र, और मसीह से और अधिक चिपकने वाली बन जाती है, क्योंकि केवल राजा का अनुग्रह ही शिष्य की विश्वासयोग्यता को संभाल सकता है।

## धनी मूर्ख और स्वयं-सुरक्षित जीवन का भ्रम

यीशु एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाते हैं जो बहुतायत को जमा करता है और स्वयं से ऐसे बात करता है जैसे धन शांति की गारंटी दे सकता हो, यह प्रकट करते हुए कि संपत्ति को अंतिम सुरक्षा मानना मूर्खता है। वह व्यक्ति आराम की योजना बनाता है पर परमेश्वर को अनदेखा करता है, और उसका जीवन अचानक समाप्त हो जाता है, यह उजागर

करते हुए कि नियंत्रण एक भ्रम है और आत्मा को खलिहानों से सुरक्षित नहीं किया जा सकता। यहाँ यीशु का अधिकार प्रत्यक्ष है, क्योंकि वह लोभ की आंतरिक तर्कशक्ति का न्याय करते हैं, केवल धन की बाहरी वास्तविकता का नहीं। यह दृष्टांत चेतावनी देता है कि संचय पर केंद्रित जीवन आत्मिक रूप से खाली हो सकता है, चाहे वह सफल ही क्यों न दिखाई दे।

यीशु की यह कहानी पास्टोरल रूप से अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आधुनिक शिष्य ऐसे संदेशों से घिरे रहते हैं जो सुरक्षा को वित्तीय गद्दी से जोड़ते हैं। पास्टरों को विश्वासियों को बुद्धिमानी से योजना बनाने की शिक्षा देनी चाहिए, पर सुरक्षा की आराधना से इनकार करना भी सिखाना चाहिए, क्योंकि सुरक्षा की आराधना परमेश्वर को परिधीय बना देती है। धनी मूर्ख को काम करने के कारण दोषी नहीं ठहराया गया, बल्कि इसलिए कि उसने ऐसे जीवन जिया मानो परमेश्वर अप्रासंगिक हों और कल की गारंटी हो। यह दृष्टांत विश्वासियों को परमेश्वर की ओर धनी बनने के लिए बुलाता है, अर्थात् उसे मूल्य देना, उसके उद्देश्यों की सेवा करना, और संसाधनों को पहचान के बजाय भंडारीपन के रूप में उपयोग करना। यीशु चेतावनी देते हैं क्योंकि वह प्रेम करते हैं, और उनकी चेतावनी कृतज्ञता, उदारता, और निर्भरता को जमाने के लिए है। जीवन भरा हुआ होकर भी खाली हो सकता है, और राजा अपने लोगों को स्थायी वस्तुओं की खोज के लिए बुलाते हैं (लूका 12:16-21, एनआईवी)।

**दस कुँवारियाँ और वह तैयारी जो उधार नहीं ली जा सकती**

यीशु दस कुँवारियों का दृष्टांत सुनाते हैं जो दूल्हे की प्रतीक्षा कर रही हैं, और केंद्रीय चेतावनी यह है कि तैयारी अंतिम क्षण में नहीं बनाई जा सकती कुछ तेल के साथ तैयार होती हैं, कुछ नहीं, और जब समय आता है, तो तैयारी का अभाव अपरिवर्तनीय हो जाता है यह कहानी प्रकट करती है कि विवाह उत्सव के निकट होना प्रवेश की गारंटी नहीं है, क्योंकि मुद्दा संबंध नहीं, बल्कि तैयारी है यीशु का अधिकार शिष्यों को चौकसी के लिए दबाव देता है क्योंकि उनकी वापसी का समय अज्ञात है, इसलिए विश्वासयोग्यता को टाला नहीं जा सकता।

यीशु का यह दृष्टांत आत्मिक टालमटोल को सुधारता है, यह धारणा कि गंभीरता बाद में लाई जा सकती है प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि तैयारी दैनिक निष्ठा, प्रार्थनापूर्ण निर्भरता, और निरंतर आज्ञाकारिता से विकसित होती है। इसका उद्देश्य घबराहट पैदा करना नहीं, बल्कि गंभीर स्पष्टता देना है, क्योंकि राज्य वास्तविक है और राजा आएँगे। यह दृष्टांत उधार की आत्मिकता का भी सामना करता है, जहाँ लोग पारिवारिक विरासत, कलीसियाई संस्कृति, या सम्मानित अगुवों पर निर्भर करते हैं, न कि मसीह के प्रति व्यक्तिगत समर्पण पर तैयारी संबंधात्मक है, क्योंकि वह दूल्हे से वास्तविक संबंध से उत्पन्न होती है यीशु चेतावनी देते हैं ताकि शिष्य जागते हुए जिँ, बहते हुए नहीं, क्योंकि अनंत वास्तविकताएँ सौदेबाज़ी योग्य नहीं हैं (मती 25:1-13, एनआईवी)।

## तोड़े और राजा के अधिकार के अधीन भंडारीपन

यीशु उन सेवकों की कहानी सुनाते हैं जिन्हें संसाधन सौंपे जाते हैं, और यह दृष्टांत उजागर करता है कि चेलाई निष्क्रिय

प्रतीक्षा नहीं, बल्कि भंडारीपन है। सेवकों का मूल्यांकन आपसी तुलना से नहीं, बल्कि उन्हें जो सौंपा गया उसके प्रति विश्वासयोग्यता से किया जाता है, और वह विश्वासयोग्यता स्वामी के चरित्र में भरोसा प्रकट करती है। जो तोड़ा छिपा देता है वह केवल सावधान नहीं, बल्कि अवज्ञाकारी है, और उसका बहाना उस हृदय को उजागर करता है जो वास्तव में स्वामी को नहीं जानता। इस दृष्टांत में यीशु का अधिकार न्यायिक है, क्योंकि वह लौटने वाले प्रभु के शासन के अधीन वास्तविक जवाबदेही और वास्तविक परिणाम का वर्णन करते हैं।

यीशु की यह शिक्षा पास्टोरल सेवकाई को आकार देती है क्योंकि यह आलस्य और भय दोनों का सामना करती है। कुछ विश्वासी असफलता के भय से वरदानों और अवसरों को छिपा देते हैं, और कुछ आराम को प्राथमिकता देकर आज्ञाकारिता को टालते हैं, फिर भी यीशु दोनों को विश्वासयोग्य कार्य के लिए बुलाते हैं। यह दृष्टांत अधिकार की भावना को भी सुधारता है, क्योंकि सब कुछ सौंपा गया है, स्वामित्व नहीं, और राजा को समय, संसाधनों, प्रभाव, और क्षमता पर अधिकार है। पास्टरों को भंडारीपन को आराधना के रूप में सिखाना चाहिए, क्योंकि जो परमेश्वर सौंपते हैं उसका उपयोग करना उनके प्रभुत्व का सम्मान करना है। विश्वासयोग्य शिष्य अपनापन कमाने के लिए सेवा नहीं करते, वे इसलिए सेवा करते हैं क्योंकि वे उसके हैं, और उनकी सेवा उनके भरोसे को प्रकट करती है। यीशु चेतावनी देते हैं कि व्यर्थ भंडारीपन हानिरहित नहीं है, क्योंकि राजा का मिशन गंभीर है और उनकी वापसी निश्चित है (मत्ती 25:14-30, एनआईवी)।

**दुष्ट किसान और पुत्र की अस्वीकृति**

यीशु उन किसानों की कहानी सुनाते हैं जो स्वामी के दासों को ठुकराते हैं और अंत में उसके पुत्र को मार डालते हैं, यह परमेश्वर के उचित अधिकार के विरुद्ध मानवीय विद्रोह की महाराई को उजागर करता है। यह दृष्टांत प्रकट करता है कि परमेश्वर की अस्वीकृति प्रायः क्रमिक होती है, उसके संदेशवाहकों की उपेक्षा से लेकर उसके दावों का विरोध करने और अंततः उसके पुत्र को तुच्छ जानने तक। यीशु स्वयं को इस संघर्ष के केंद्र में रखते हैं, क्योंकि पुत्र निर्णायक व्यक्ति है, और उसके प्रति प्रतिक्रिया हृदय की वास्तविक स्थिति को प्रकट करती है। यीशु का अधिकार स्पष्ट है क्योंकि वह उस पुत्र के रूप में बोलते हैं जिसे ठुकराया जा रहा है, और साथ ही उस अस्वीकृति पर न्याय की घोषणा करने वाले के रूप में भी।

यीशु का यह दृष्टांत कलीसिया को चेतावनी देता है कि वह परमेश्वर के धैर्य को अनुमति न समझे। स्वामी बार बार दास भेजता है, यह दया को प्रकट करता है, फिर भी वह दया विद्रोह की अनंत सहनशीलता नहीं है। पास्टर्स को विश्वासियों को शीघ्रता से दोषारोपण पर प्रतिक्रिया देने की शिक्षा देनी चाहिए, क्योंकि आज्ञाकारिता में देरी विवेक को कठोर कर सकती है और प्रतिरोध को मजबूत कर सकती है। यह दृष्टांत यह भी उजागर करता है कि धार्मिक नेतृत्व कैसे आत्म-सुरक्षात्मक बन सकता है, नियंत्रण की रक्षा करते हुए परमेश्वर के अधीन होने से इनकार कर सकता है, और यीशु उस ढाँचे का सामना करते हैं क्योंकि वह आत्माओं को नष्ट करता है। यह चेतावनी केवल अगुवों के लिए नहीं, बल्कि हर उस हृदय के लिए है जो पुत्र से इनकार करते हुए परमेश्वर का सम्मान करने का दावा करता है। यीशु पिता के द्वारा भेजे गए पुत्र हैं, और उन्हें ठुकराना स्वयं परमेश्वर के शासन को ठुकराना है (मत्ती 21:33-41, एनआईवी)।

## भेड़ें और बकरियाँ और निष्ठा का प्रमाण

यीशु अंतिम विभाजन का वर्णन करते हैं जहाँ भेड़ों और बकरियों को अलग किया जाता है, यह प्रकट करते हुए कि न्याय यह उजागर करेगा कि किसी व्यक्ति के जीवन में वास्तव में क्या उपस्थित था। दृश्य इस बात पर जोर देता है कि राजा के प्रति निष्ठा केवल दावा नहीं है, वह दृश्य फल उत्पन्न करती है, जिसमें ज़रूरतमंदों के प्रति दयालु कार्य शामिल हैं जो स्वयं राजा की करुणा को प्रतिबिंबित करते हैं। यीशु स्वयं को भूखे, अजनबी, और कैदियों के साथ जोड़ते हैं, यह दिखाते हुए कि कमजोरों के साथ व्यवहार यह प्रकट करता है कि किसी ने वास्तव में उनके शासन के अधीन सिर झुकाया है या नहीं। यीशु का अधिकार पूर्ण है क्योंकि वह न्यायी के रूप में विराजमान होते हैं, और उनका निर्णय अंतिम होता है।

यीशु की यह शिक्षा यह भी स्पष्ट करती है कि कार्य उद्धार को खरीदते नहीं, फिर भी वे यह प्रकट करते हैं कि कौन सा विश्वास वास्तविक है। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि दया वैकल्पिक सहायक नहीं, बल्कि इस बात का प्रमाण है कि हृदय अनुग्रह से परिवर्तित हुआ है। यह खंड ऐसे विश्वास का सामना करता है जो केवल शब्दों में और निजी सुविधा में सीमित है, क्योंकि राजा का शासन प्राथमिकताओं को पुनः आकार देता है, जिसमें उन लोगों के साथ व्यवहार भी शामिल है जो बदले में कुछ नहीं दे सकते। यह उन विश्वासयोग्य शिष्यों को भी सांत्वना देता है जो चुपचाप सेवा करते हैं, क्योंकि यीशु आज्ञाकारिता में किए गए कार्यों को देखते हैं और उन्हें अपनी सेवा मानते हैं। त्वेतावनी गंभीर है क्योंकि न्याय वास्तविक है, और निमंत्रण दयालु है क्योंकि यीशु राज्य के जीवन का मार्ग प्रकट कर रहे हैं। राजा अपने

लोगों को ऐसे विश्वास के लिए बुलाते हैं जो प्रेम उत्पन्न करता है, क्योंकि प्रेम उनके शासन को प्रतिबिंबित करता है (मत्ती 25:31-46, एनआईवी)।

## तीन तरीके इस सामग्री को अपने विशेष संदर्भ में लागू करने के

लोगों को दृष्टांतों को आज्ञाकारिता के बुलावे के रूप में सुनना सिखाएँ

यीशु के दृष्टांत कभी सुरक्षित दूरी से प्रशंसा के लिए नहीं थे, वे राजा की वाणी के रूप में आज्ञा मानने के लिए थे। कलीसियाएँ दृष्टांतों को परिचित कहानियों की तरह मान सकती हैं, फिर भी परिचय पश्चाताप को सुस्त कर सकता है, क्योंकि लोग मान लेते हैं कि वे समझते हैं बिना आत्मा को चुनौती देने दिए। एक विश्वासियों को चेतावनी देता है कि वे केवल वचन के सुनने वाले बनकर स्वयं को धोखा न दें, बल्कि उसके करने वाले हों, और यह यीशु के इस आग्रह के साथ मेल खाता है कि सुनना कार्य की ओर ले जाना चाहिए। दृष्टांत तब जीवनदायी बनते हैं जब वे व्याख्या से आगे बढ़कर समर्पण की ओर ले जाते हैं।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को दृष्टांतों का प्रचार दो उद्देश्यों के साथ करना चाहिए, यीशु के अर्थ की स्पष्टता और पश्चाताप तथा विश्वास के लिए सीधा निमंत्रण। विश्वासियों को कहानी में स्वयं को ईमानदारी से पहचानने के लिए प्रोत्साहित करें, आत्म-सुरक्षात्मक बहानों के बिना, और फिर राज्य को प्रतिबिंबित करने वाला आज्ञाकारिता का ठोस कदम उठाने के लिए बुलाएँ इसमें मनोरंजन-प्रेरित

प्रचार का विरोध भी शामिल है, क्योंकि लक्ष्य यीशु से बेहतर कहानी सुनाना नहीं, बल्कि यीशु की कहानी को हृदय पर शासन करने देना है। दृष्टांत शिष्यों को जागते, दयालु, और विश्वासयोग्य जीवन के लिए प्रशिक्षित करते हैं, और पास्टर अपने लोगों की सबसे अच्छी सेवा तब करते हैं जब वे दृष्टांतों को केवल नैतिक पाठ बनकर रहने नहीं देते। राजा बोल रहे हैं, और उनके लोगों को प्रतिक्रिया देनी चाहिए (याकूब 1:22, एनआईवी)।

## दृष्टांतों का उपयोग ऐसी कलीसिया बनाने के लिए करें जो दया से प्रेम करे और घमंड को ठुकराए

यीशु ने दया के दृष्टांतों का उपयोग आत्म-धार्मिक कड़वाहट को उजागर करने और पश्चाताप पर आनंदित होने वाले समुदाय को विकसित करने के लिए किया। कलीसियाएँ टूटे हुए लोगों के प्रति कठोर हो सकती हैं यदि वे अपने स्वयं के अनुग्रह की आवश्यकता को भूल जाएँ, और वह कठोरता प्रायः धार्मिक रूप से छिपे घमंड को प्रकट करती है। मौलुस विश्वासियों को करुणा, भलाई, नम्रता, कोमलता, और धीरज धारण करने के लिए बुलाता है, और वह स्थिति यीशु के खोजने और बहाल करने वाले दृष्टांतों में प्रकट पिता के हृदय को प्रतिबिंबित करती है। दया कमजोरी नहीं, बल्कि मसीह-सदृश सामर्थ्य है जो खोए हुए लोगों की ओर बढ़ती है।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि अगुवे बहाली का समर्थन करने वाली प्रणालियाँ और आदतें बनाएं, जिनमें स्वीकारोक्ति, जवाबदेही, धैर्यपूर्ण चेलाई, और पश्चाताप करने वालों का आनंदपूर्ण पुनः एकीकरण शामिल हो। मंडलियों को बिना भोलेपन के पश्चाताप का उत्सव मनाने और बिना क्रूरता के अनुशासन का अभ्यास करने की शिक्षा

दें, क्योंकि पवित्रता और दया यीशु के अधिकार के अधीन साथ साथ रहती हैं विश्वासियों को बड़े भाई की प्रवृत्तियों का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित करें, जिनमें गपशप, संदेह, और तुलना शामिल हैं, क्योंकि वे समुदाय को विषाक्त बना देती हैं दया के दृष्टांत केवल सांत्वनादायक कहानियाँ नहीं, बल्कि गठन के उपकरण हैं जो ऐसी संस्कृति बनाते हैं जहाँ अनुग्रह का मूल्य होता है और घमंड का सामना किया जाता है जब दया सामान्य हो जाती है, तब कलीसिया उस पिता के समान बन जाती है जो पश्चाताप करने वाले पापियों की ओर दौड़ता है (कुलुस्सियों 3:12, एनआईवी)।

## **चेतावनी के दृष्टांतों को चौकसी उत्पन्न करने दें, आत्मिक उदासीनता नहीं**

यीशु के चेतावनी के दृष्टांत इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि शिष्य बहने, टालने, और यह मानने के प्रलोभन में रहते हैं कि तैयारी को बाद में सुधारा जा सकता है बहुत से विश्वासी दिनचर्या, आराम, और विचलन के कारण आत्मिक रूप से सुन्न हो जाते हैं, और यीशु की कहानियाँ चौकसी और विश्वासयोग्य भंडारीपन को जमाने के लिए हैं लूका यीशु की चेतावनी को दर्ज करता है कि ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो, क्योंकि जो अपने पास होने का विचार करते हैं वे वह भी खो सकते हैं जिसे वे सुरक्षित मानते हैं, और वह चेतावनी उस दृष्टांत ढाँचे से मेल खाती है जहाँ आज्ञाकारिता के बिना सुनना हानि की ओर ले जाता है चौकसी भय नहीं, बल्कि लौटने वाले राजा के प्रति सजग निष्ठा है।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को तैयारी को दैनिक अभ्यास के रूप में सिखाना चाहिए, जिसमें अद्यतन पश्चाताप, ईमानदार प्रार्थना, और निरंतर विश्वासयोग्य सेवा

शामिल हो विश्वासियों को यह जाँचने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे भय या आलस्य के कारण अपना “तोड़ा” कहाँ छिपा रहे हैं, और कहाँ वे धनी मूर्ख की तरह आराम जमा कर रहे हैं। सिखाएँ कि यीशु की वापसी कोई धुंधली धारणा नहीं, बल्कि नैतिक वास्तविकता है जो आज की प्राथमिकताओं को आकार देती है, जिसमें उदारता, मेल-मिलाप, और विश्वासयोग्य साक्षी शामिल हैं। चेतावनी के दृष्टांत गंभीर आनंद उत्पन्न करने चाहिए, क्योंकि विश्वासी भविष्य के विषय में अनुमान नहीं लगा रहे, वे राजा की प्रतिज्ञा के प्रकाश में जी रहे हैं। जब कलीसिया जागती हुई जीवन जीती है, तब वह कम चिंतित, अधिक विश्वासयोग्य, और मसीह में अधिक स्थिर होती है (लूका 8:18, एनआईवी)।

## निष्कर्ष

यीशु के दृष्टांत प्रकट करते हैं कि राजा केवल आत्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान नहीं कर रहे, वह श्रोता की निष्ठा पर अधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। बीज, खजाने, दया, और न्याय की कहानियों के द्वारा, यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि राज्य वास्तविक है, महँगा है, और हर चीज़ के योग्य है, और कि उनके वचन के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया हृदय की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है। दृष्टांत पश्चाताप करने वालों को सांत्वना देते हैं क्योंकि वे ऐसे पिता को प्रकट करते हैं जो खोजते हैं, बहाल करते हैं, और आनंदित होते हैं, फिर भी वे आत्म-संतुष्टों को चेतावनी भी देते हैं क्योंकि परमेश्वर का धैर्य बहने की अनुमति नहीं है। यीशु दृष्टांतों में इसलिए बोलते हैं कि सच्चे शिष्यों को इकट्ठा करें, आत्म-छल का सामना करें, और यह स्पष्ट करें कि सुनना कभी तटस्थ नहीं होता, क्योंकि सुनना हमेशा या तो आज्ञाकारिता या प्रतिरोध की ओर बढ़ता है।

यीशु के दृष्टांत कलीसिया को ऐसे समुदाय में भी ढालते हैं जो एक साथ अनुग्रह का मूल्य करता है और पवित्रता को गंभीरता से लेता है। दया की कहानियाँ विश्वासियों को पश्चाताप करने वालों का बिना कड़वाहट स्वागत करने के लिए बुलाती हैं, जबकि चेतावनी की कहानियाँ विश्वासियों को मसीह की वापसी और न्याय की निश्चितता के अधीन चौकस, तैयार, और विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिए बुलाती हैं। ये प्रतिस्पर्धी विषय नहीं, बल्कि एक ही संदेश हैं, वह राज्य का संदेश जिसे राजा उद्धारकर्ता और न्यायी दोनों रूप में बोलते हैं। जब कलीसिया यीशु के दृष्टांतों को नम्रता से ग्रहण करती है, तब वह अधिक दयालु, अधिक गंभीर, और अधिक साहसी बन जाती है, क्योंकि वह स्वर्ग के मूल्यों को महत्व देना और आत्म-सुरक्षित जीवन के भ्रम को ठुकराना सीखती है। यीशु हर दृष्टांत का निर्णायक केंद्र हैं, और चेलाई का अर्थ है उनके आगे झुकने का निर्णय।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. आप कहाँ यीशु के दृष्टांतों को आज्ञाकारिता के बुलावे के रूप में ग्रहण करने का सबसे अधिक विरोध करते हैं, और समर्पण के बिना केवल व्याख्या को प्राथमिकता देते हैं?
2. “मिट्टी” का कौन सा वर्णन यीशु के वचन के प्रति आपकी वर्तमान ग्रहणशीलता को सबसे अधिक दर्शाता है, और स्थायी फल के लिए क्या बदलना आवश्यक है?
3. आप कौन सा आराम, नियंत्रण, या प्रतिष्ठा सुरक्षित रख रहे हैं जो आपको राज्य को हर चीज़ के योग्य खजाने के रूप में देखने से रोकता है?

4. आप किस प्रकार पश्चाताप करने वालों के प्रति पिता की दया को प्रतिबिंबित करने के बजाय बड़े भाई की कड़वाहट वाली स्थिति अपनाते हैं?
5. चौकस तैयारी का कौन सा ठोस कदम यीशु के लौटने वाले अधिकार के अधीन विश्वासयोग्य भंडारीपन को सबसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करेगा?

# अध्याय 7: यीशु के चमत्कार

## परिचय

यीशु ने चमत्कार एक ऐसे राजा के रूप में किए जिनका अधिकार केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि क्रियात्मक था, और सुसमाचार उनके कार्यों को कभी भी आत्मिक मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। उनके चमत्कार ऐसे चिन्ह हैं जो उनकी पहचान प्रकट करते हैं, ऐसी दया हैं जो टूटे हुएों को बहाल करती हैं, और राज्य का ऐसा आक्रमण हैं जो पाप, बीमारी, और अंधकार का सामना करता है। जब यीशु चंगे करते हैं, उद्धार करते हैं, आँधियों को शांत करते हैं, और मरे हुएों को जिलाते हैं, तो वह केवल मानवीय परिस्थितियों को बेहतर नहीं बनाते, बल्कि यह प्रकट करते हैं कि जब परमेश्वर का शासन सामर्थ्य और पवित्रता में आता है तो वह क्या करता है। ये घटनाएँ पवित्रशास्त्र में ऐतिहासिक रूप से स्थापित हैं, वास्तविक स्थानों में घटित हुई हैं, और ऐसे गहरे धर्मशास्त्रीय अर्थ से भरी हैं जो उस क्षण से आगे बढ़कर पुत्र के मिशन की ओर संकेत करता है।

यीशु के चमत्कार चेलाई को भी आकार देते हैं क्योंकि वे प्रतिक्रिया की माँग करते हैं, और वही सामर्थ्य जो नम्रों को सांत्वना देती है, घमंडियों को कठोर भी कर सकती है। कुछ लोगों ने विश्वास किया और आराधना की, कुछ ने और चिन्हों की माँग की, और कुछ ने विरोध की योजनाएँ बनाई, और विभाजन की रेखा शायद ही कभी केवल बुद्धि थी। चमत्कार यह उजागर करते हैं कि लोग क्या प्रेम करते हैं, किससे डरते हैं, और क्या वे मसीह के अधिकार के अधीन होना चाहेंगे,

क्योंकि राज्य केवल प्रशंसा का निमंत्रण नहीं देता, वह निष्ठा की माँग करता है। यह अध्याय यीशु के चंगाई, उद्धार, प्रकृति, और पुनरुत्थान के चमत्कारों का अनुगमन करता है ताकि यह दिखाया जा सके कि उनकी करुणा पवित्रता में निहित है, उनकी सामर्थ आञ्जाकारिता में कार्य करती है, और उनका अधिकार पिता का वही अधिकार है जो पुत्र में दृश्य हो गया है।

## अनुभाग 1: चंगाई के चमत्कार और करुणामय सेवकाई

यीशु ने चंगाई को राज्य की जानबूझकर की गई अभिव्यक्ति के रूप में किया, क्योंकि बीमारी इस बात की दृश्य स्मृति है कि सृष्टि पाप से टूटी हुई है और परमेश्वर के शासन के अधीन पूर्ण बहाली की प्रतीक्षा कर रही है। चंगाई के चमत्कार कभी भी आकस्मिक दयालु कार्यों के रूप में प्रस्तुत नहीं किए जाते, वे उद्देश्यपूर्ण चिन्ह हैं जो यीशु की पहचान और लोगों को देह और आत्मा दोनों में पूर्णता में बहाल करने के उनके मिशन को प्रकट करते हैं। उन्होंने अशुद्धों को छुआ, बहिष्कृतों का स्वागत किया, और विश्वास का सम्मान ऐसे तरीकों से किया जो सतही धर्म को उजागर करते हैं और पिता के हृदय को प्रकट करते हैं। सुसमाचार यीशु को ऐसी करुणा के साथ आवश्यकता की ओर बढ़ते हुए दिखाते हैं जो भावुक नहीं है, क्योंकि उनकी करुणा उनकी पवित्रता और बहाल करने के उनके अधिकार से जुड़ी हुई है।

यीशु की चंगाई की सेवकाई कलीसिया के लिए पास्टोरल प्राथमिकताओं का भी आदर्श प्रस्तुत करती है, क्योंकि यह दिखाती है कि सच्ची करुणा में सत्य, साहस, और व्यक्तिगत सहभागिता सम्मिलित होती है। उन्होंने दुःख से

परहेज नहीं किया, और उन्होंने लोगों को बाधा के रूप में नहीं देखा, क्योंकि राजा का शासन इस बात में प्रकट होता है कि वह टूटे हुआ से कैसे मिलता है फिर भी यीशु ने चंगाई को कभी पश्चाताप के विकल्प या चेलाई के स्थानापन्न के रूप में स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उनका सबसे बड़ा वरदान पिता के साथ मेल-मिलाप है इसलिए चंगाई के चमत्कार दया भी हैं और प्रकाशन भी, और वे उस उद्धारकर्ता की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जो केवल शरीरों को नहीं, बल्कि जीवनों को भी छुड़ाता है।

## एक कोढ़ी की शुद्धि और बहाल करने वाली पवित्रता

यीशु ने एक कोढ़ी व्यक्ति को चंगा किया यह दिखाने के लिए कि उनकी पवित्रता अशुद्धता से संकटग्रस्त नहीं होती, बल्कि उसे बहाल करने वाली सामर्थ से पराजित करती है। मरकुस लिखता है कि वह व्यक्ति यीशु से विनती कर रहा था, और यीशु करुणा से भरकर उसे छूते हैं और इच्छा प्रकट करते हैं, और वह स्पर्श स्वयं अधिकार का वक्तव्य है, क्योंकि वह उन बाधाओं को पार करता है जिन्होंने उस व्यक्ति को अलगाव और लज्जा में कैद कर रखा था (मरकुस 1:40-42, एनआईवी) यीशु स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए दूर से चंगा नहीं करते, क्योंकि पुत्र निकट आने और बहाल करने के लिए आया है।

यीशु की यह शुद्धि चेलाई को भी सिखाती है कि सच्ची पवित्रता सत्य को छोड़े बिना दया के साथ टूटे हुआ की ओर बढ़ती है प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि लज्जा अक्सर लोगों को यह विश्वास दिला देती है कि वे बहाली से परे हैं, फिर भी यीशु सिद्ध करते हैं कि पिता का अनुग्रह अशुद्धता या कलंक से सीमित नहीं होता।

यह चमत्कार यह भी प्रकट करता है कि यीशु की करुणा में पुनः एकीकरण सम्मिलित है, क्योंकि शुद्धि केवल शारीरिक राहत नहीं थी, बल्कि आराधना और सामुदायिक जीवन में बहाली थी। कलीसिया मसीह को तब प्रतिबिंबित करती है जब वह दयालु पवित्रता का अभ्यास करती है, जहाँ घायल स्वागत पाते हैं, पश्चात्ताप करने वाले बहाल होते हैं, और अशुद्धों को अछूत नहीं माना जाता। यीशु शुद्ध करते हैं क्योंकि उनका राज्य बहाल करने वाली पवित्रता का शासन है, न कि नाजुक अलगाव का।

## लकवे का रोगी और क्षमा तथा चंगाई का अधिकार

यीशु ने कफरनहूम में एक लकवे के रोगी को चंगा किया, और इस चमत्कार का सबसे गहरा बिंदु यह है कि यीशु ने पहले पापों की क्षमा की घोषणा की, यह प्रकट करते हुए कि उनका अधिकार हर लक्षण के नीचे की जड़ समस्या को संबोधित करता है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने कहा कि उसके पाप क्षमा किए गए हैं, और शास्त्रियों ने प्रतिक्रिया दी क्योंकि क्षमा परमेश्वर का अधिकार क्षेत्र है, फिर यीशु ने उस व्यक्ति को चंगा किया ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार है (मरकुस 2:5-12, एनआईवी)। चंगाई उस दावे की पुष्टि करती है, और दावा मिशन को प्रकट करता है, क्योंकि यीशु पापियों को पिता से मेल कराने के लिए आए थे।

यीशु की यह क्रिया कलीसिया की करुणा की समझ को आकार देती है, क्योंकि शारीरिक राहत अच्छी है, पर आत्मिक बहाली सर्वोपरि है। पास्टरों को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि वे दया का अनुसरण करें पर सुसमाचार को केवल आराम तक सीमित न करें, क्योंकि यीशु ने कभी चंगाई को

परमेश्वर के शासन की घोषणा से अलग नहीं किया। यह घटना उस धार्मिक संशयवाद का भी सामना करती है जो यीशु के निकट बैठ सकता है और फिर भी उन्हें अस्वीकार कर सकता है, क्योंकि शास्त्रियों ने सामर्थ देखी और अनुग्रह का विरोध किया। तब बड़ती है जब विश्वासी लोगों को यीशु के पास लाना सीखते हैं, चाहे शाब्दिक रूप से हो या प्रार्थना और साक्षी के द्वारा, इस भरोसे के साथ कि मसीह दृश्य टूटन और छिपे हुए दोष दोनों को संबोधित कर सकते हैं। यीशु चिन्ह के रूप में चंगा करते हैं, और उद्धार के रूप में क्षमा करते हैं, और दोनों राजा के अधिकार को प्रकट करते हैं।

## रक्तस्राव से पीड़ित स्त्री और विश्वास की गरिमा

यीशु ने बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित एक स्त्री को चंगा किया, यह दिखाते हुए कि राजा की करुणा उन लोगों को भी सम्मिलित करती है जिन्हें समाज अक्सर अनदेखा करता है और जिन्हें धर्म असुविधाजनक मान सकता है। भरकुस वर्णन करता है कि उसने विश्वास से यीशु के वस्त्र को छुआ, और यीशु रुककर उसे सामने बुलाते हैं और उसे “बेटी” कहकर संबोधित करते हैं, जिससे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ गरिमा और संबन्धात्मक अपनापन भी बहाल होता है (मरकुस 5:25-34, एनआईवी)। यीशु उसे गुमनाम रहने नहीं देते, क्योंकि राज्य व्यक्तिगत है और लोगों को परमेश्वर के अधीन पहचान में बहाल करता है।

यीशु की प्रतिक्रिया यह भी प्रकट करती है कि विश्वास कोई जादुई तकनीक नहीं है, बल्कि सही व्यक्ति की ओर निर्देशित भरोसा है। प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि पीड़ा किसी व्यक्ति की परमेश्वर की समझ को विकृत कर सकती है, उसे निराशा या अंधविश्वास की

ओर ले जा सकती है, फिर भी यीशु पीड़ित से स्पष्टता और शांति के साथ मिलते हैं। यह चमत्कार कलीसिया को यह चुनौती भी देता है कि वह छिपे हुए, दीर्घकालिक संघर्षों वाले लोगों का सम्मान करे, क्योंकि उस स्त्री की पीड़ा लंबी और महँगी थी, और यीशु ने उसके दर्द की अवधि के लिए उसे लज्जित नहीं किया। उन्होंने उसे प्रकाश में बुलाया ताकि उसकी चंगाई की पुष्टि हो और उसे शांति मिले, यह दिखाते हुए कि पिता की देखभाल न तो उतावली है और न ही उपेक्षात्मक। यीशु ऐसी करुणा से चंगा करते हैं जो पूरे व्यक्ति को बहाल करती है, देह, हृदय, और समुदाय में स्थान को।

## अंधों की चंगाई और आँखें खोलने वाली दया

यीशु ने अंधे लोगों को चंगा किया ताकि दया को प्रकट किया जा सके और आत्मिक दृष्टि का प्रतीक प्रस्तुत किया जा सके, क्योंकि राज्य प्रकाश भी लाता है और बहाली भी भती लिखता है कि दो अंधे लोग यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में पुकारते हुए चिल्लाए, और यीशु ने उनकी आँखों को छूकर उनके विश्वास के अनुसार उन्हें चंगा किया, जो इस चमत्कार को मसीही पहचान और भरोसे की प्रतिक्रिया से जोड़ता है (मत्ती 9:27-30, एनआईवी)। यीशु केवल दृष्टि में सुधार नहीं करते, वह स्वयं को प्रतिज्ञात दाऊदी राजा के रूप में प्रकट करते हैं जिनकी दया असहायों तक पहुँचती है।

अंधों की चंगाई आत्मिक अंधेपन का भी सामना करती है, क्योंकि बहुत से लोग चमत्कार देखकर भी मसीहा को देखने से इंकार कर देते हैं। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि सबसे बड़ी अंधता शारीरिक नहीं, बल्कि हृदय की वह अस्वीकृति है जो यीशु के अधिकार को पहचानने और उनके शासन के अधीन होने से इंकार करती है। यह चमत्कार विश्वासियों को

निरंतर पुकारने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि अंधे लोगों ने यीशु से सौदेबाज़ी नहीं की, उन्होंने दया की याचना की, और दया वही है जिसे राजा देना पसंद करते हैं। यह कलीसिया को यह भी चुनौती देता है कि वह उन लोगों की परवाह करे जो बदले में कुछ नहीं दे सकते, क्योंकि राज्य की करुणा लेन-देन पर आधारित नहीं होती। यीशु आँखें खोलते हैं ताकि पिता की दया प्रकट हो, और शिष्यों को ऐसे लोगों के रूप में जीने के लिए बुलाया जाता है जिनकी आँखें मसीह की महिमा के लिए खुल चुकी हैं और जिनका जीवन अब उनकी करुणा को प्रतिबिंबित करता है।

## **बेथेस्दा में चंगाई और बहानों का सामना करने वाला अधिकार**

यीशु ने यरूशलेम में बेथेस्दा के कुंड के पास एक व्यक्ति को चंगा किया, यह प्रकट करते हुए कि करुणामय अधिकार निष्क्रियता को चापलूसी नहीं करता। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने उससे पूछा कि क्या वह चंगा होना चाहता है, और उस व्यक्ति ने कारण बताए, फिर यीशु ने उसे उठने, अपनी खाट उठाने, और चलने की आज्ञा दी, यह दिखाते हुए कि यीशु का वचन वही आज्ञाकारिता उत्पन्न करता है जिसकी वह आज्ञा देता है (यूहन्ना 5:6-9, एनआईवी)। चंगाई तुरंत हुई, और उसने वर्षों से अपंग पड़े जीवन को बहाल करने वाली राजा की सामर्थ को प्रकट किया।

यीशु का प्रश्न यह भी उजागर करता है कि पीड़ा कैसे पहचान के साथ जुड़ सकती है, और लोग कैसे पराजय की सीमाओं के भीतर जीने लगते हैं। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे ईमानदार विलाप और ऐसे बहाने बनाने के बीच अंतर समझें जो जड़ता की रक्षा करते हैं, क्योंकि

यीशु आत्मा के लकवे का भी सामना करते हैं, केवल शरीर के लकवे का नहीं। यह चमत्कार संघर्ष को भी जन्म देता है क्योंकि यह सब्त के दिन हुआ, यह दिखाते हुए कि यीशु की करुणा उन धार्मिक प्रणालियों से सीमित नहीं होती जो लोगों से अधिक नियमों को महत्व देती हैं। कलीसिया को यीशु की करुणामय आज्ञाओं का पालन करना सीखना चाहिए, भले ही वे आरामदायक ढाँचों को बाधित करें, क्योंकि राजा का अधिकार जीवन के लिए लक्षित है। यीशु चंगा करते हैं और आज्ञा देते हैं क्योंकि वह ऐसे शिष्य बना रहे हैं जो अपने स्पष्टीकरणों से अधिक उनके वचन पर भरोसा करते हैं।

## अनुभाग 2: उद्धार के चमत्कार और अंधकार पर अधिकार

यीशु ने अशुद्ध आत्माओं से लोगों को छुड़ाया ताकि यह प्रकट किया जा सके कि राज्य अंधकार पर सीधा आक्रमण है, न कि नैतिक सुधार का विनम्र निमंत्रण। सुसमाचार आत्मिक बुराई को वास्तविक, व्यक्तिगत, और विनाशकारी के रूप में प्रस्तुत करते हैं, और यीशु को उससे पूर्णतः निडर दिखाते हैं। उनके उद्धार के चमत्कार यह प्रदर्शित करते हैं कि उनके पास ऐसा अधिकार है जिसे अंधकार को मानना ही पड़ता है, और यह अधिकार इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर का शासन उनके व्यक्तित्व में आ चुका है। यीशु दुष्टात्माओं से बातचीत नहीं करते, और न ही उन्हें जिज्ञासा की वस्तु मानते हैं, क्योंकि उनका मिशन बंदियों को स्वतंत्र करना और पिता के लिए आराधना को बहाल करना है।

यीशु की उद्धार की सेवकाई कलीसिया को यह भी सिखाती है कि आत्मिक युद्ध को भय या जुनून के बजाय गंभीर

आत्मविश्वास के साथ कैसे देखा जाए बहुत से विश्वासी या तो आत्मिक संसार से इंकार करने के लिए प्रलोभित होते हैं या उससे अत्यधिक मोहित हो जाते हैं, फिर भी यीशु न तो इनकार का और न ही मोह का आदर्श प्रस्तुत करते हैं वह पवित्र जन के रूप में अंधकार का सामना करते हैं जो आज्ञा देता है, और लोगों को स्वस्थ मन, समुदाय, और चेलाई में बहाल करते हैं। उद्धार के चमत्कार यह भी उजागर करते हैं कि यीशु का विरोध केवल मानवीय असहमति नहीं है, वह राजा के वैध शासन के प्रति आत्मिक प्रतिरोध भी हो सकता है। इसलिए ये घटनाएँ मसीह की करुणा और उनकी पवित्रता दोनों को प्रकट करती हैं, क्योंकि वह पीड़ितों को स्वतंत्र करते हैं और हर प्रतिस्पर्धी सामर्थ्य पर पिता के अधिकार को प्रदर्शित करते हैं।

## आराधनालय में उद्धार और उपासना स्थलों में अधिकार

यीशु ने कफरनहूम के आराधनालय में एक अशुद्ध आत्मा को निकाला, यह प्रकट करते हुए कि अंधकार धार्मिक स्थलों में भी छिप सकता है और राजा का अधिकार उन स्थानों तक भी पहुँचता है जिन्हें लोग सुरक्षित मान लेते हैं। मरकुस लिखता है कि आत्मा चिल्लाई, यीशु को परमेश्वर का पवित्र जन पहचानते हुए, और यीशु ने उसे चुप रहने और बाहर निकलने की आज्ञा दी, और आत्मा ने तुरंत आज्ञा मानी, यह ऐसा अधिकार प्रदर्शित करता है जो मानवीय शिक्षा से कहीं बढ़कर है (मरकुस 1:23-26, एनआईवी)। लोगों की प्रतिक्रिया यह दर्शाती है कि यीशु का अधिकार गुण में नया था, केवल स्वर में नहीं।

आराधनालय में यीशु का यह उद्धार कलीसिया को चेतावनी भी देता है कि आराधना के निकट होना आत्मिक स्वास्थ्य की गारंटी नहीं है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि धार्मिक दिनचर्या हृदय के पश्चाताप का विरोध करने पर बंधन के साथ सहअस्तित्व में रह सकती है, और यीशु दिखावे को बनाए रखने के लिए नहीं, बल्कि उजागर करने और स्वतंत्र करने के लिए आए हैं। यह चमत्कार कैसे हुए विश्वासियों को सांत्वना भी देता है, क्योंकि यह दिखाता है कि यीशु को कार्य करने के लिए लंबी बातचीत की आवश्यकता नहीं होती, वह आज्ञा देते हैं और अंधकार चला जाता है। कलीसिया को श्रद्धायुक्त आत्मविश्वास के साथ प्रतिक्रिया देनी चाहिए, क्योंकि मसीह अब भी प्रभु हैं, और शत्रु की सामर्थ उनके समान नहीं है। यीशु आराधना को बहाल करने के लिए उद्धार करते हैं, क्योंकि पिता का शासन उस स्थान को पुनः प्राप्त करता है जिस पर अंधकार ने अधिकार करने का प्रयास किया था।

## गरासेनी दुष्टात्माग्रस्त और राजा की बहाल करने वाली दया

यीशु ने गरासेनी प्रदेश में एक ऐसे व्यक्ति को छुड़ाया जो पीड़ा और अलगाव में था, यह दिखाते हुए कि राजा की दया अत्यधिक टूटन तक भी निर्भय होकर पहुँचती है। मरकुस उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो कब्रों के बीच रहता था, अनियंत्रित और स्वयं को घायल करने वाला था, और यीशु ने अशुद्ध आत्माओं को निकालकर उसे स्वस्थ मन और गरिमा में बहाल किया (मरकुस 5:1-15, एनआईवी)। यह कहानी केवल सामर्थ पर नहीं, बल्कि बहाली पर भी जोर देती है, क्योंकि वह व्यक्ति बाद में बैठा हुआ, वस्त्र पहने हुए,

और अपने होश में देखा जाता है, जो मसीह के शासन के अधीन पूर्णता का चित्र है।

यीशु का यह उद्धार यह भी प्रकट करता है कि आत्मिक उत्पीड़न अक्सर सामाजिक अलगाव, लज्जा, और भय उत्पन्न करता है, और राजा का उद्धार किसी व्यक्ति को जीवन में पुनः एकीकृत करता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि मसीह का अधिकार केवल अंधकार को हटाता नहीं, बल्कि नई चेलाई उत्पन्न करता है, क्योंकि छुड़ाया गया व्यक्ति यीशु का अनुसरण करना चाहता था और उसे गवाही देने के लिए भेजा गया। यह कहानी यह भी उजागर करती है कि समुदाय कभी कभी यीशु की उपस्थिति से अधिक अपने आराम और अर्थव्यवस्था को पसंद करते हैं, क्योंकि लोगों ने उनसे चले जाने की विनती की, जो उनके विघटनकारी अधिकार के प्रति प्रतिरोध को दर्शाता है। इसलिए चेलाई को ईमानदार होना चाहिए कि यीशु का उद्धार सामाजिक गतिशीलताओं को बदल देता है, क्योंकि बहाल किए गए लोग गवाह बन जाते हैं, और आराम-केंद्रित प्रणालियाँ अक्सर उस परिवर्तन का विरोध करती हैं। यीशु जीवनों को पिता के लिए पुनः प्राप्त करने के लिए उद्धार करते हैं, और उनकी दया बंधन की गहराई से सीमित नहीं होती।

## गूँगी आत्मा और निर्भर विश्वास का बुलावा

यीशु ने एक ऐसे बालक को छुड़ाया जो एक आत्मा से पीड़ित था जिसने उसे बोलने से वंचित कर रखा था और उसका जीवन संकट में डाल दिया था, यह दिखाते हुए कि अंधकार विनाशकारी है और शिष्यों को मसीह के अधिकार पर निर्भर होना चाहिए। भरकुस पिता की हताश विनती, यीशु द्वारा

अशुद्ध आत्मा को डाँटना, और बालक की बहाली का वर्णन करता है, और कथा इस बात पर जोर देती है कि कुछ आत्मिक संघर्ष शिष्यों की कमजोरी को उजागर करते हैं और उन्हें प्रार्थनापूर्ण निर्भरता की ओर लौटने के लिए बुलाते हैं (मरकुस 9:17-27, एनआईवी)। यीशु का अधिकार निर्णायक है, और उनकी करुणा परिवार के भय को नकारे बिना उससे जुड़ती है।

यीशु की पिता के साथ बातचीत यह भी प्रकट करती है कि वह मिश्रित विश्वास की ईमानदार स्वीकारोक्ति को आमंत्रित करने वाली पास्टोरल कोमलता रखते हैं। पास्टरों को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि विश्वास मजबूत होने का दिखावा नहीं है, बल्कि कमजोरी को यीशु के पास लाना और उन पर भरोसा करना है। यह घटना उन कलीसियाओं को चुनौती देती है जो प्रार्थना की उपेक्षा करते हुए तकनीक और आत्मविश्वास पर निर्भर रहती हैं, क्योंकि यीशु स्पष्ट करते हैं कि निर्भरता अनिवार्य है। यह उन विश्वासियों को भी सांत्वना देता है जो जटिल पीड़ा से अभिभूत महसूस करते हैं, क्योंकि यीशु पूर्ण भावनात्मक स्थिरता की माँग नहीं करते, वह केवल अपनी ओर मुड़ने की माँग करते हैं। यहाँ उद्धार दिया भी है और प्रशिक्षण भी, क्योंकि राजा बालक को स्वतंत्र करते हैं और अपने अनुयायियों को सिखाते हैं कि वे पिता के साथ निर्भर संगति में जीएँ। यीशु छुड़ाते हैं, और वह ऐसे शिष्य भी बनाते हैं जो जानते हैं कि वे उनके बिना सेवकाई नहीं कर सकते।

## शैतान की हार और बलवान जो बाँधता है

यीशु ने अपनी उद्धार की सेवकाई की व्याख्या यह सिखाते हुए की कि वह बलवान को बाँध रहे हैं, यह प्रकट करते हुए कि

भूत-प्रेत निकालना अलग-थलग कार्य नहीं, बल्कि शैतान के क्षेत्र पर बड़ी विजय के चिन्ह हैं। आरोपों के संदर्भ में यीशु ने स्पष्ट किया कि उनकी सामर्थ अंधकार से जुड़ी नहीं, बल्कि उसके विरुद्ध है, क्योंकि विभाजित राज्य स्थिर नहीं रह सकता। उनके उद्धार के कार्य यह प्रकट करते हैं कि वह वह बलवान हैं जो शत्रु के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, उसे बाँधते हैं, और जो बंधुआ बना रखा गया था उसे छुड़ाते हैं (मरकुस 3:27, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा कलीसिया को यह समझने में सहायता करती है कि आत्मिक युद्ध अंततः मसीह-केंद्रित है, न कि दुष्टात्मा-केंद्रित पास्टरों को सिखाना चाहिए कि निर्णायक विजय मानवीय तीव्रता से नहीं, बल्कि मसीह के अधिकार से प्राप्त होती है, क्योंकि वही वह बलवान राजा हैं जिन्होंने पहले ही पराजय की शुरुआत कर दी है। यह विश्वासियों को निराशा से भी बचाता है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि अंधकार समान सामर्थ नहीं है, वह परमेश्वर की अनुमति के अधीन पराजित सामर्थ है। फिर भी यह दृष्टांत आत्मसंतोष के विरुद्ध चेतावनी भी देता है, क्योंकि यह वास्तविक संघर्ष और चौकसी की वास्तविक आवश्यकता को दर्शाता है। यीशु बलवान को बाँधते हैं ताकि उसके घर को लूट सकें, अर्थात् लोगों को पिता की महिमा के लिए छुड़ा सकें, और कलीसिया को उस उद्धार की घोषणा आत्मविश्वास और नम्रता के साथ करनी चाहिए।

## उद्धार और नवीकृत निष्ठा का बुलावा

यीशु के उद्धार के चमत्कारों में अक्सर यह चेतावनी सम्मिलित होती थी कि स्वतंत्रता के बाद क्या होता है, क्योंकि मुक्ति का उद्देश्य चेलाई की ओर ले जाना है, न कि आत्मिक

खालीपन की ओर झटती लिखता है कि यीशु ने चेतावनी दी कि यदि कोई व्यक्ति “खाली” रहता है तो अशुद्ध आत्मा और भी अधिक सामर्थ्य के साथ लौट सकती है, यह दिखाते हुए कि समर्पण के बिना उद्धार व्यक्ति को गहरे बंधन के प्रति संवेदनशील बना सकता है (मत्ती 12:43-45, एनआईवी)। यीशु भय-प्रेरित अंधविश्वास नहीं सिखा रहे, वह यह सिखा रहे हैं कि हृदय को परमेश्वर से भरा जाना है, और उससे कम कुछ भी अस्थिरता है।

यीशु की यह चेतावनी पास्टोरल देखभाल को आकार देती है क्योंकि यह दिखाती है कि स्वतंत्रता राजा के प्रति निरंतर निष्ठा के द्वारा बनी रहती है पास्टोरों को लोगों को पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, समुदाय, और आज्ञाकारिता में शिष्य बनाना चाहिए, क्योंकि नया जीवन परमेश्वर के शासन के अधीन नए ढाँचों की माँग करता है। यह विश्वासियों को उद्धार को एक अलग घटना के रूप में देखने से भी बचाता है जो चेलाई के बिना दीर्घकालिक पवित्रता की गारंटी देती हो। यीशु आराधना को बहाल करने के लिए छुड़ाते हैं, और आराधना बनी रहनी चाहिए, क्योंकि हृदय हमेशा किसी न किसी की सेवा करेगा। इसलिए कलीसिया को छुड़ाए गए, थके हुए, और नये स्वतंत्र किए गए लोगों को ऐसे जीवन में बुलाना चाहिए जो मसीह की उपस्थिति से भरा हो और मसीह की आज्ञाओं के द्वारा निर्देशित हो। राजा बंदियों को इसलिए स्वतंत्र करते हैं ताकि वे उनके हों, और अपनापन ही स्थायी स्वतंत्रता की सुरक्षा है।

## अनुभाग 3: प्रकृति के चमत्कार और दिव्य सामर्थ्य

यीशु ने प्रकृति के चमत्कार किए ताकि यह प्रकट हो कि उनका अधिकार स्वयं सृष्टि तक विस्तृत है, यह पुष्टि करते हुए कि जो बोलता है वह संसार के भीतर केवल सेवक नहीं, बल्कि उसका प्रभु है। जब यीशु आँधियों को शांत करते हैं, रोटियाँ बढ़ाते हैं, और पानी पर चलते हैं, तो सुसमाचार इन कार्यों को दिव्य पहचान के प्रकाशन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रकृति उनकी आज्ञा मानती है, और वह आज्ञाकारिता पुराने नियम के उन विषयों की प्रतिध्वनि करती है जहाँ केवल परमेश्वर ही समुद्र पर शासन करते हैं और जंगल में प्रावधान करते हैं। यीशु की सामर्थ उधार ली हुई नहीं है, क्योंकि उनकी आज्ञा वास्तविक समय में प्रभावी है, और सृजित व्यवस्था ऐसे प्रत्युत्तर देती है मानो वह अपने सृष्टिकर्ता को पहचानती हो।

यीशु के प्रकृति के चमत्कार चेलाई को भी आकार देते हैं क्योंकि वे भय, अभाव, और गलत भरोसे का सामना करते हैं। शिष्य बार बार यह समझने में संघर्ष करते थे कि यीशु का अधिकार क्या अर्थ रखता है, विशेषकर तब जब प्रकृति स्वयं उनकी आज्ञा मानती थी, और उनका भय यह उजागर करता था कि सामर्थ देखने के बाद भी विश्वास कितना उथला रह सकता है। यीशु ने ये चिन्ह उन्हें अपमानित करने के लिए नहीं, बल्कि प्रशिक्षित करने के लिए किए, उन्हें पिता के प्रावधान और अपनी पहचान में गहरे भरोसे के लिए बुलाते हुए। इसलिए प्रकृति के चमत्कार मसीह के दिव्य अधिकार को प्रकट करते हैं और साथ ही शिष्यों की परिवर्तन की आवश्यकता को भी उजागर करते हैं। राजा हवा और लहरों पर शासन करते हैं, और उनके लोगों को तब भी उन पर भरोसा करने के लिए बुलाया जाता है जब परिस्थितियाँ अराजक प्रतीत होती हैं।

## आँधी को शांत करना और भय को शांत करने वाला अधिकार

यीशु ने गलील की झील पर एक प्रचंड आँधी को शांत किया, यह प्रकट करते हुए कि उनका अधिकार अराजकता पर भी विस्तृत है और भय उनकी उपस्थिति से सामना किया जाता है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने हवा को डाँटा और लहरों को शांत होने की आज्ञा दी, और आँधी थम गई, और शिष्य विस्मय से भर गए और पूछने लगे कि यह कौन है कि हवा और लहरें भी इसकी आज्ञा मानती हैं (मरकुस 4:35-41, एनआईवी)। यह चमत्कार दिखाता है कि प्रकृति यीशु की आज्ञा को पहचानती है, और यह उजागर करता है कि शिष्यों को अभी भी उनकी पहचान के विषय में बहुत कुछ सीखना था।

यीशु द्वारा आँधी को शांत करना यह भी सिखाता है कि चेलाई में तब भी राजा पर भरोसा करना सम्मिलित है जब आज्ञाकारिता हमें अस्थिर परिस्थितियों में ले जाती है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि विश्वास शांत समुद्रों की गारंटी नहीं देता, पर यह आँधी में मसीह की उपस्थिति और अधिकार की गारंटी देता है। शिष्यों का भय उपहास का विषय नहीं बनाया गया, बल्कि उसका सामना किया गया, क्योंकि यीशु उनसे पूछते हैं कि वे क्यों डर रहे थे, उन्हें यह समझने के लिए प्रेरित करते हुए कि उनकी उपस्थिति भय का अर्थ बदल देती है। यह चमत्कार चिंता के लिए एक पास्टोरल ढाँचा भी प्रदान करता है, क्योंकि यह दिखाता है कि समाधान स्वयं उत्पन्न शांति नहीं, बल्कि यह जानना है कि यीशु कौन हैं। जो राजा सृष्टि को आज्ञा देता है वह अपने लोगों को नियंत्रण के द्वारा भय प्रबंधित करने के लिए नहीं, बल्कि उन पर भरोसा करने के लिए बुलाता है, क्योंकि उनका अधिकार पर्याप्त है।

## पाँच हजार को भोजन देना और चरवाहा-राजा का प्रावधान

यीशु ने पाँच हजार पुरुषों को, स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त, भोजन दिया, यह प्रकट करते हुए कि राज्य मानवीय आवश्यकता को संबोधित करता है और साथ ही परमेश्वर के बड़े प्रावधान की ओर संकेत करता है। मरकुस यीशु की करुणा पर जोर देता है क्योंकि उन्होंने भीड़ को बिना चरवाहे की भेड़ों के समान देखा, और फिर बढ़ोतरी के द्वारा प्रावधान किया, और टोकरी भर बचे हुए टुकड़े व्यवस्था और प्रचुरता को दर्शाते हैं, न कि अराजकता को (मरकुस 6:34-44, एनआईवी)। यह चमत्कार जंगल के प्रावधान के विषयों की प्रतिध्वनि करता है और यीशु को उस चरवाहे के रूप में प्रकट करता है जो अपने लोगों के लिए प्रावधान करता है।

यीशु का यह प्रावधान कलीसिया को यह सिखाता है कि वह अभाव के भय में आत्मसमर्पण किए बिना करुणा के साथ सेवा करे। पास्टरों को विश्वासियों को यह सिखाना चाहिए कि वे भय में जमा करने के बजाय जो उनके पास है उसे यीशु के पास लाएँ, क्योंकि राजा विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता को बढ़ाते हैं, चिंताग्रस्त नियंत्रण को नहीं। यह चमत्कार यह भी उजागर करता है कि शिष्य कितनी शीघ्रता से प्रभु की उपस्थिति के बजाय संसाधनों की अपर्याप्तता पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, क्योंकि शिष्यों ने केवल कमी देखी। यीशु व्यावहारिक चिंताओं को खारिज नहीं करते, बल्कि उन्हें दिव्य पर्याप्तता के अधीन पुनः परिभाषित करते हैं, और वह शिष्यों को वितरण में सम्मिलित करते हैं, उन्हें सेवक-अगुवे बनाते हुए राज्य का प्रावधान आलस्य का बहाना नहीं, बल्कि भरोसा करने और सहभागिता का निमंत्रण है, क्योंकि

चरवाहा-राजा देह और आत्मा दोनों में लोगों की परवाह करते हैं।

## पानी पर चलना और दिव्य निकटता का प्रकाशन

यीशु गलील की झील पर पानी पर चले, यह प्रकट करते हुए कि जल पर उनका दिव्य अधिकार है और शिष्यों के भय का सामना उनकी उपस्थिति से होता है भती लिखता है कि यीशु उनकी ओर चलते हुए आए, शिष्य डर गए, और यीशु ने कहा कि ढाढ़स रखो, मैं ही हूँ, और डरो मत (मत्ती 14:25-27, एनआईवी)। यह चमत्कार केवल सामर्थ्य का प्रदर्शन नहीं, बल्कि पहचान का प्रकाशन है, क्योंकि यीशु स्वयं को उस के रूप में प्रकट कर रहे हैं जो अंधकार में निकट है, हवा में उपस्थित है, और जो भय उत्पन्न करता है उस पर प्रभुता रखता है।

यीशु का यह निकट आना यह भी सिखाता है कि भय अक्सर धारणा को विकृत कर देता है, क्योंकि शिष्यों ने पहले यीशु को उद्धारकर्ता के बजाय खतरे के रूप में समझा। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि आत्मिक वृद्धि में यह सीखना सम्मिलित है कि अस्थिर समयों में मसीह की उपस्थिति को कैसे पहचाना जाए, जब परिस्थितियाँ अपरिचित लगती हैं और हृदय घबराने के लिए प्रलोभित होता है। यह चमत्कार यह भी जोर देता है कि यीशु भय में बोलते हैं, और उनके शब्दों में अधिकार और सांत्वना दोनों होते हैं। राजा केवल खतरे को हटाते नहीं, वह उसके भीतर स्वयं को प्रकट करते हैं, और वही प्रकाशन साहस का आधार बनता है। विलाई तब बढ़ती है जब विश्वासी आँधी की आवाज़ से अधिक यीशु की आवाज़ पर भरोसा करते हैं, क्योंकि उनकी उपस्थिति ही वास्तविक सुरक्षा है।

## मछली में सिक्का और गरिमा खोए बिना अधीन होने वाला अधिकार

यीशु ने मछली के मुँह से एक सिक्का प्रदान किया ताकि मंदिर का कर चुकाया जा सके, यह प्रकट करते हुए कि उनके पास सृष्टि पर दिव्य अधिकार भी है और शांति के लिए विनम्र अधीनता भी भती लिखता है कि यीशु ने समझाया कि पुत्र होने के नाते वह स्वतंत्र हैं, फिर भी ठोकर से बचने के लिए वह चुकाते हैं, और प्रावधान स्वयं सार्वजनिक तमाशे के बिना सार्वभौमिक नियंत्रण को दर्शाता है (मती 17:24-27, एनआईवी)। यीशु दिखाते हैं कि वह मानवीय प्रणालियों में फँसे हुए नहीं हैं, फिर भी वह अनावश्यक संघर्ष में नहीं जीते जब विश्वासयोग्य अधीनता पिता के उद्देश्यों की सेवा कर सकती है।

यीशु की यह क्रिया कलीसिया को विवादास्पद संसार में परिपक्व स्थिति सिखाती है, जहाँ विश्वासियों को यह जानना चाहिए कि कब सत्य पर अडिग रहना है और कब गवाही के लिए विनम्र रियायत का अभ्यास करना है। पास्टरों को शिष्यों को ऐसे लड़ाकू घमंड से बचने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए जो केवल स्वतंत्रता सिद्ध करने के लिए संघर्ष उत्पन्न करता है, क्योंकि यीशु दिखाते हैं कि स्वतंत्रता संयम को चुन सकती है। साथ ही यह चमत्कार यह प्रकट करता है कि अधीनता कमजोरी नहीं है, क्योंकि यीशु ऐसे ढंग से प्रावधान करते हैं जो सार्वभौमिक नियंत्रण को प्रदर्शित करता है। राजा प्रभुत्व खोए बिना अधीन होते हैं, और वही ढाँचा मसीही नागरिकता, कलीसियाई नेतृत्व, और दैनिक पारस्परिक जीवन को आकार देता है। यीशु का अधिकार विनम्रता से संकटग्रस्त नहीं होता, और शिष्य दृढ़ विश्वास खोए बिना शांति का अभ्यास कर सकते हैं।

## अंजीर का वृक्ष और फलहीनता का न्याय करने वाला अधिकार

यीशु ने एक अंजीर के वृक्ष को शाप दिया एक भविष्यवाणी चिन्ह के रूप में, यह प्रकट करते हुए कि उनके अधिकार में न्याय भी सम्मिलित है और परमेश्वर वहाँ फल की अपेक्षा करते हैं जहाँ दावा किया जाता है मरकुस लिखता है कि यीशु ने वृक्ष से बात की, और बाद में शिष्यों ने उसे सूखा हुआ देखा, और यीशु ने उस क्षण का उपयोग विश्वास और प्रार्थना के विषय में सिखाने के लिए किया, फिर भी यह चिन्ह फलहीन धार्मिकता के विरुद्ध चेतावनी का भार भी रखता है (मरकुस 11:12-14, एनआईवी) यह कार्य तुच्छ निराशा नहीं, बल्कि ऐसा प्रतीकात्मक न्याय है जो जीवन के दिखावे के बिना फल की वास्तविकता का सामना करता है।

यीशु का यह चिन्ह उन कलीसियाओं और विश्वासियों को चुनौती देता है जो पश्चाताप और आज्ञाकारिता के फल के बिना धार्मिक गतिविधि की पत्तियाँ धारण करते हैं पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि परमेश्वर बाहरी प्रदर्शन से प्रभावित नहीं होते, क्योंकि राजा ऐसे फल की खोज करते हैं जो पिता के शासन को प्रतिबिंबित करे, जिसमें न्याय, दया, सत्यनिष्ठा, और नम्र आराधना सम्मिलित हैं। यह चमत्कार शिष्यों को यह भी स्मरण दिलाता है कि यीशु का अधिकार केवल सांत्वनादायक नहीं, बल्कि शुद्ध करने वाला भी है, क्योंकि पवित्र राजा पाखंड का सामना करते हैं। कलीसिया को मसीह की दया और उनकी चेतावनी दोनों को ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि दोनों उनके प्रभुत्व की अभिव्यक्तियाँ हैं। यीशु फलहीनता का न्याय इसलिए करते हैं ताकि अपने लोगों को सच्ची चेलाई में लौटाएँ, जहाँ विश्वास वास्तविक हो और आज्ञाकारिता दृश्य हो।

## अनुभाग 4: पुनरुत्थान के चमत्कार और जीवन की सामर्थ

यीशु ने मरे हुआ को जिलाया ताकि यह प्रकट किया जा सके कि उनका अधिकार मानव के सबसे गहरे शत्रु, मृत्यु तक भी पहुँचता है, और ये चमत्कार उनके अपने पुनरुत्थान की बड़ी विजय की पूर्वझलक देते हैं। सुसमाचार पुनरुत्थान के चमत्कारों को ऐसे चिन्हों के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो क्षय, शोक, और अंतिमता से चिह्नित संसार में राज्य के जीवन के प्रवेश को दर्शाते हैं। जब यीशु मरे हुआ को जिलाते हैं, तो वह केवल अस्थायी रूप से त्रासदी को उलट नहीं देते, बल्कि यह घोषणा करते हैं कि पिता का शासन ऐसा जीवन सम्मिलित करता है जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। ये घटनाएँ शोकाकुल परिवारों के प्रति उनकी करुणा, निराशा का सामना करने वाली उनकी पवित्रता, और उस पहचान को प्रकट करती हैं जिसके द्वारा जीवन आता है।

यीशु के पुनरुत्थान के चमत्कार चेलाई को और गहरा करते हैं क्योंकि वे यह दिखाते हैं कि विश्वास को अक्सर शोक और भरोसे दोनों को एक साथ थामना पड़ता है। इन कथाओं में लोग शांत नहीं हैं, और यीशु उनके दुःख को ऐसे नहीं डाँटते जैसे शोक अविश्वास हो इसके बजाय, वह शोक में प्रवेश करते हैं, अधिकार के साथ बोलते हैं, और सामर्थ के साथ कार्य करते हैं, यह दिखाते हुए कि राजा शोक में निकट हैं और जो अपरिवर्तनीय प्रतीत होता है उस पर प्रभुता रखते हैं। ये चमत्कार यह भी स्पष्ट करते हैं कि यीशु का मिशन केवल जीवन को बेहतर बनाना नहीं, बल्कि अपने उद्धारकारी कार्य के द्वारा अनंत जीवन देना है। पुनरुत्थान के चिन्हों में प्रकट जीवन की सामर्थ सीधे क्रूस और खाली कब्र की ओर संकेत

करती है, क्योंकि जो राजा दूसरों को जिलाते हैं वही अपना जीवन देंगे और फिर उसे पुनः ग्रहण करेंगे।

## याईर की बेटी और शोक में प्रवेश करने वाला अधिकार

यीशु ने याईर की बेटी को जिलाया, यह दिखाते हुए कि उनकी करुणामय सामर्थ परिवार के शोक में बिना हिचक प्रवेश करती है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने बालिका का हाथ पकड़कर जीवन के शत्रु कहे, और वह तुरंत उठ खड़ी हुई, यह दर्शाते हुए कि उनकी आशा वहाँ तक पहुँचती है जहाँ मानवीय सामर्थ समाप्त हो जाती है (मरकुस 5:39-42, एनआईवी)। कथा यह भी दिखाती है कि यीशु ने शोक करने वालों से घबराने को नहीं कहा, इसलिए नहीं कि मृत्यु तुच्छ है, बल्कि इसलिए कि उनकी उपस्थिति मृत्यु का अर्थ बदल देती है।

यीशु की यह क्रिया कलीसिया को यह सिखाती है कि शोक में सेवकाई कोमलता और आशा दोनों के साथ कैसे की जाए। पास्ट्रों को विश्वासियों को दो अतियों से बचने में सहायता करनी चाहिए, ऐसी निराशा जो मान ले कि परमेश्वर अनुपस्थित हैं, और ऐसा इनकार जो मान ले कि दर्द आत्मिक नहीं है। यीशु तीसरा मार्ग प्रस्तुत करते हैं, करुणामय निकटता और दिव्य अधिकार का संयोजन, क्योंकि वह उपस्थित भी हैं और सामर्थी भी। यह चमत्कार शिष्यों को यह भी स्मरण दिलाता है कि यीशु अक्सर तब विश्वास की माँग करते हैं जब परिस्थितियाँ अंतिम प्रतीत होती हैं, और वह विश्वास काँपता हुआ भी वास्तविक हो सकता है। राजा उस वस्तु को छूते हैं जिसे अछूत माना जाता है, वहाँ बोलते हैं जहाँ शत्रु असफल हो जाते हैं, और जीवन को बहाल करते हैं एक

चिन्ह के रूप में कि पिता का शासन मृत्यु के दावे से अधिक शक्तिशाली है।

## नैन की विधवा का पुत्र और बिना माँगे की गई दया

यीशु ने नैन की विधवा के पुत्र को जिलाया, और कथा उस दया को उजागर करती है जिसकी शुरुआत यीशु से होती है, न कि मानवीय पहल से। लूका लिखता है कि यीशु ने उस माता को देखा, उनका हृदय उसके लिए द्रवित हुआ, और उनकी आज्ञा ने युवक को जीवन में लौटा दिया, यह दिखाते हुए कि करुणा उस दुःख का उत्तर देती है जहाँ कोई विनती दर्ज नहीं की गई थी (लूका 7:12-15, एनआईवी)। यीशु पूर्ण धर्मशास्त्र या सुसज्जित विश्वास की प्रतीक्षा नहीं करते, वह प्रभु के अधिकार के साथ शोक की ओर बढ़ते हैं।

यहाँ यीशु की दया कलीसिया को यह सिखाती है कि करुणा हमेशा प्रतिक्रियात्मक नहीं होती, वह सक्रिय भी हो सकती है, क्योंकि मसीह-सदृश प्रेम देखता है और आगे बढ़ता है। पास्टर्स को मंडलियों को यह प्रोत्साहन देना चाहिए कि वे शोकाकुल और असुरक्षित लोगों को सेवकाई परियोजनाओं के रूप में नहीं, बल्कि भारी बोझ उठाने वाले पड़ोसियों के रूप में देखें। यह चमत्कार यह भी प्रकट करता है कि यीशु की करुणा केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि सक्रिय बहाली है जो पिता के हृदय की ओर संकेत करती है। यीशु ने परमेश्वर के दर्शन को पहचाना, और वह पहचान महत्वपूर्ण है, क्योंकि चमत्कार ऐसे चिन्ह हैं जो आराधना को मसीह में परमेश्वर की उद्धारकारी उपस्थिति की ओर निर्देशित करने के लिए हैं। यीशु मरे हुए लोगों को जिलाते हैं ताकि दिव्य दया प्रकट हो, और शिष्यों को ऐसी दया को अपनाते हुए बुलाया जाता है जो दुःख की ओर

व्यावहारिक देखभाल और सुसमाचार की आशा के साथ बढ़ती है।

## लाज़र और वह महिमा जो कार्य करने से पहले प्रतीक्षा करती है

यीशु ने विलंब के बाद लाज़र को जिलाया, यह प्रकट करते हुए कि उनका समय महँगा प्रतीत हो सकता है, फिर भी वह पिता की महिमा और गहरे विश्वास के लिए क्रमबद्ध होता है। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने मार्था से कहा कि वह पुनरुत्थान और जीवन हैं, और फिर लाज़र को बाहर आने की आज्ञा दी, और लाज़र बाहर आया, यह दर्शाते हुए कि उनका अधिकार कब्र तक पहुँचता है (यूहन्ना 11:25, 43-44, एनआईवी)। यह घटना दिखाती है कि यीशु केवल जीवन के विषय में सिखाते नहीं, वह स्वयं जीवन हैं, और मृत्यु को उनके वचन का पालन करना पड़ता है।

यीशु का विलंब चेलाई को यह भी सिखाता है कि विश्वास की परीक्षा अक्सर समय के द्वारा होती है, क्योंकि विश्वासी विलंब को उदासीनता के रूप में समझ सकते हैं। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि यीशु का प्रेम गति से मापा नहीं जाता, क्योंकि पुत्र पिता के उद्देश्यों के प्रति आज्ञाकारी हैं, और उन उद्देश्यों में परिस्थिति से गहरा विश्वास बनाना सम्मिलित है। कथा यह भी प्रकट करती है कि यीशु रोए, यह दिखाते हुए कि करुणा सार्वभौमिकता का खंडन नहीं करती, क्योंकि राजा शोक कर सकते हैं और फिर भी अधिकारपूर्ण हो सकते हैं। लाज़र का पुनरुत्थान यीशु के अपने पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है, फिर भी वह विरोध को भी तीव्र करता है, यह दिखाते हुए कि निर्विवाद सामर्थ्य भी आत्म-शासन के प्रति प्रतिबद्ध हृदयों को कठोर कर

सकती है यीशु लाज़र को परमेश्वर की महिमा प्रकट करने और विश्वास को दृढ़ करने के लिए जिलाते हैं, और कलीसिया को उनकी पहचान से चिपके रहते हुए उनके समय पर भरोसा करना चाहिए।

## पुनरुत्थान के चिन्ह और मृत्यु पर आने वाली विजय

यीशु के पुनरुत्थान के चमत्कार ऐसे चिन्ह के रूप में कार्य करते हैं जो उनकी अंतिम विजय की पूर्वझलक देते हैं, क्योंकि अस्थायी जीवन-प्रदान उनकी अपनी पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु की स्थायी पराजय की ओर संकेत करता है। पौलुस बाद में समझाता है कि मसीह मरे हुआओं में से पहले फल के रूप में जी उठे हैं, अर्थात् उनका पुनरुत्थान उनके लोगों के लिए पुनरुत्थान के जीवन की कटनी की शुरुआत है (1 कुरिन्थियों 15:20, एनआईवी) ये चिन्ह दिखाते हैं कि मृत्यु अंतिम अधिकार नहीं है, क्योंकि राजा के पास जीवन पर अधिकार है और वह उस वस्तु को बहाल कर सकते हैं जो स्थायी रूप से खोई हुई प्रतीत होती है।

यीशु की जीवन देने वाली सामर्थ मसीही आशा को भी आकार देती है, क्योंकि वह चेलाई को भय-प्रेरित जीवित रहने के बजाय पुनरुत्थान की वास्तविकता में स्थिर करती है। पास्ट्रों को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि वे ईमानदारी से शोक करें पर आशा से चिपके रहें, क्योंकि पुनरुत्थान दुःख को मिटाता नहीं, बल्कि उसके क्षितिज को बदल देता है। पुनरुत्थान के चिन्ह यह भी सिखाते हैं कि यीशु की सामर्थ केवल नाटकीय क्षणों के लिए नहीं, बल्कि विश्वासयोग्य धीरज के लिए है, क्योंकि विश्वासी वर्तमान पीड़ा और भविष्य की बहाली के तनाव में जीते हैं। कलीसिया को आत्मविश्वास के साथ गवाही देने के लिए बुलाया गया है,

क्योंकि सुसमाचार अर्थ के विषय में कोई दर्शन नहीं, बल्कि यह घोषणा है कि क्रूसित और जी उठा राजा ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। ईशु मरे हुएों को जिलाते हैं ताकि राज्य के जीवन को प्रकट करें, और वह उस जीवन को पूर्ण करेंगे जब वह अंतिम नवीनीकरण में अपने लोगों को जिलाएँगे।

## पुत्र में जीवन और ईशु के चिन्हों का उद्देश्य

ईशु के चिन्ह, जिनमें पुनरुत्थान के चमत्कार भी सम्मिलित हैं, इसलिए लिखे गए हैं ताकि पाठक विश्वास करें और उनके नाम में जीवन पाएँ, यह प्रकट करते हुए कि चमत्कार अपने आप में लक्ष्य नहीं, बल्कि उद्धारकारी विश्वास के निमंत्रण हैं। यूहन्ना इस उद्देश्य को स्पष्ट रूप से बताता है, यह दिखाते हुए कि चमत्कार की कथाएँ सुसमाचार प्रचार और चेलाई के निर्माण के लिए हैं, न कि केवल ऐतिहासिक जिज्ञासा के लिए (यूहन्ना 20:31, एनआईवी)। ईशु केवल अस्थायी रूप से शरीरों को बहाल करके ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में उनके साथ एकता के द्वारा अनंत जीवन प्रदान करके जीवन देते हैं।

ईशु का उद्देश्य कलीसिया को यह चुनौती देता है कि वह चमत्कारों की व्याख्या तमाशे के चश्मे से नहीं, बल्कि सुसमाचार के चश्मे से करे। पास्ट्रों को सिखाना चाहिए कि सबसे बड़ा चमत्कार नया जन्म है, आत्मिक मृत्यु से मसीह में विश्वास के द्वारा जीवन में परिवर्तन, क्योंकि वह जीवन अनंत है और नष्ट नहीं किया जा सकता। पुनरुत्थान के चिन्ह पीड़ा को भी पुनः परिभाषित करते हैं, क्योंकि विश्वासी हानि को निराशा के बिना सहन कर सकते हैं, यह जानते हुए कि राजा के पास जीवन है और वह अपने लोगों को जिलाएँगे। यह वर्तमान दर्द को छोटा नहीं करता, बल्कि उसे ऐसी कथा में

स्थिर करता है जहाँ मृत्यु का अंतिम शब्द नहीं है यीशु पुनरुत्थान और जीवन हैं, और चेलाई का अर्थ है उस जीवन के प्रकाश में अभी जीना जो वह देते हैं, उन्हें प्रभु के रूप में आराधना करना और हर भय पर उनके अधिकार पर भरोसा करना।

## तीन तरीके इस सामग्री को अपने विशेष संदर्भ में लागू करने के

**ऐसी करुणा का अभ्यास करें जो पवित्रता खोए बिना आवश्यकता की ओर बढ़े**

यीशु ने पवित्र करुणा की अभिव्यक्ति के रूप में चंगा किया और बहाल किया, और कलीसिया को यह सीखना चाहिए कि वह पाप के प्रति भोली बने बिना पीड़ा की ओर बढ़े बहुत से समुदाय टूटे हुए लोगों से पीछे हटने वाली कठोरता और उन्हें नष्ट करने वाली बातों को क्षमा करने वाली कोमलता के बीच झूलते रहते हैं, फिर भी यीशु पवित्रता में निहित दया को देहधारण करते हैं। उनका स्पर्श अशुद्धों को शुद्ध करता था, उनके शब्द पापों को क्षमा करते थे, और उनकी उपस्थिति गरिमा को बहाल करती थी, यह दिखाते हुए कि करुणा छूट नहीं, बल्कि ऐसा प्रेम है जो परमेश्वर के शासन के अधीन बहाली की ओर ले जाता है (मरकुस 1:41, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को विश्वासियों को व्यावहारिक सेवा के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए और साथ ही सत्य को स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए, जिसमें बीमारों की देखभाल, शोकाकुलों का समर्थन, और पश्चाताप करने वालों की जवाबदेही सम्मिलित हो। कलीसिया को यह

प्रोत्साहित करें कि वह पीड़ित लोगों को परियोजनाओं के रूप में नहीं, बल्कि पड़ोसियों के रूप में देखे, और ऐसी प्रदर्शन-प्रेरित करुणा से बचे जो प्रशंसा चाहती है। पवित्रता बुद्धिमान सीमाओं की माँग करती है, फिर भी करुणा निकटता की माँग करती है, और यीशु दिखाते हैं कि दोनों पिता के अधिकार के अधीन कैसे सहअस्तित्व में रह सकती हैं। इसका अर्थ यह भी है कि प्रार्थना सामान्य होनी चाहिए, क्योंकि चंगाई और बहाली अंततः परमेश्वर का कार्य है, और कलीसिया तब सर्वोत्तम सेवा करती है जब वह तकनीक के बजाय मसीह पर निर्भर करती है। जब करुणा पवित्र होती है, तब वह विश्वसनीय और चंगाई लाने वाली बन जाती है, क्योंकि वह राजा को प्रतिबिंबित करती है।

## आत्मिक अंधकार का सामना मसीह में गंभीर आत्मविश्वास के साथ करें

यीशु ने दुष्टात्माओं का सामना शांत अधिकार के साथ किया, यह दिखाते हुए कि आत्मिक विरोध से निपटते समय विश्वासियों को भय, जुनून, या शेखी की आवश्यकता नहीं है। बहुत से मसीही या तो आत्मिक युद्ध को अनदेखा करने या उसमें उलझ जाने के लिए प्रलोभित होते हैं, फिर भी यीशु ऐसी गंभीर स्थिति का आदर्श प्रस्तुत करते हैं जो उनके अधिकार और पिता के शासन पर केंद्रित होती है। पवित्रशास्त्र विश्वासियों को शैतान की युक्तियों के विरुद्ध दृढ़ खड़े होने के लिए बुलाता है, आत्म-विश्वास से नहीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ्य और सत्य पर निर्भरता के द्वारा (इफिसियों 6:11, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को विश्वासियों को आराधना, पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, और पश्चात्ताप को

प्राथमिकता देना सिखाना चाहिए, क्योंकि अंधकार अवसर वहाँ स्थान बनाता है जहाँ पाप को संजोया जाता है और सत्य की उपेक्षा की जाती है। भंडलियों को यह प्रोत्साहित करें कि जब आत्मिक उत्पीड़न का संदेह हो तो वे बुद्धिमान पास्टोरल परामर्श खोजें, और शत्रु को महिमामयित करने वाली सनसनी से बचें। विश्वासियों को स्मरण दिलाएँ कि निर्णायक विजय मसीह की है, और आत्मिक स्वतंत्रता उनके प्रति निरंतर निष्ठा से बनी रहती है, किसी एक भावनात्मक क्षण से नहीं। कलीसिया तब अधिक स्वस्थ बनती है जब वह आत्मिक युद्ध को वास्तविक पर अंतिम नहीं मानती, क्योंकि अंतिम यीशु हैं। जब विश्वासी मसीह के प्रभुत्व के अधीन जीते हैं, तब अंधकार अपनी पकड़ खो देता है, और कलीसिया स्थिर आत्मविश्वास और नम्र निर्भरता का समुदाय बन जाती है।

## ऐसी पुनरुत्थान की आशा के साथ जिँ जो वर्तमान आज्ञाकारिता को आकार दे

यीशु ने मरे हुएों को जिलाया यह दिखाने के लिए कि मृत्यु अंतिम नहीं है, और पुनरुत्थान की आशा को विश्वासियों के जीवन, शोक, और सेवा को पुनः आकार देना चाहिए। बहुत से लोग ऐसे जीते हैं मानो वर्तमान जीवन ही सब कुछ हो, जिससे व्यग्र प्रयास, हानि का भय, और उथली प्राथमिकताएँ उत्पन्न होती हैं, फिर भी यीशु के चमत्कार ऐसे राज्य की ओर संकेत करते हैं जहाँ जीवन मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। पौलुस सिखाता है कि क्योंकि मसीह जी उठे हैं, विश्वासी स्थिर रह सकते हैं और प्रभु के काम में पूरी तरह लग सकते हैं, यह जानते हुए कि परिश्रम व्यर्थ नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:58, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टरो को विश्वासियों को ठोस आज्ञाकारिता के द्वारा आशा का अभ्यास करने में सहायता करनी चाहिए, जिसमें पीड़ितों की सेवा, चेलाई में निवेश, और ऐसी उदारता का अभ्यास सम्मिलित हो जो मानती है कि अनंतता वास्तविक है विश्वासियों को ईमानदारी से शोक करने के लिए प्रोत्साहित करें पर निराश न हों, क्योंकि पुनरुत्थान की आशा दर्द को समाप्त नहीं करती, वह उसे परमेश्वर की प्रतिज्ञा में स्थिर करती है। परिवारों को सिखाएँ कि वे विश्वासयोग्यता को अस्थायी धार्मिक गतिविधि के बजाय अनंत निवेश के रूप में देखें, क्योंकि राजा अपने लोगों को जिलाएँगे और सब कुछ बहाल करेंगे। जब पुनरुत्थान की आशा केंद्र में होती है, तब चिंता घटती है, साहस बढ़ता है, और धीरज सुदृढ़ होता है, क्योंकि विश्वासी अब केवल उस के लिए नहीं जीते जो खो सकता है। कलीसिया स्थायी आनंद का समुदाय बन जाती है जब वह यीशु के जीवन देने वाले अधिकार के प्रकाश में जीती है।

## निष्कर्ष

यीशु के चमत्कार ऐसे राजा को प्रकट करते हैं जिनका अधिकार व्यापक है, जो बीमारी, दुष्टात्माओं, सृष्टि, और मृत्यु तक फैला हुआ है, और वह अधिकार सदैव पिता की आज्ञाकारिता में प्रयोग किया जाता है। विंगार्ड के चमत्कार करुणामय पवित्रता को प्रदर्शित करते हैं, उद्धार के चमत्कार अंधकार की पराजय की घोषणा करते हैं, प्रकृति के चमत्कार दिव्य प्रभुत्व को प्रकट करते हैं, और पुनरुत्थान के चमत्कार यह घोषणा करते हैं कि जीवन की सामर्थ्य क्षय से शासित संसार में प्रवेश कर चुकी है। ये चिन्ह आकस्मिक आश्चर्य नहीं, बल्कि राज्य के प्रकाशन हैं जो यीशु की पहचान को परमेश्वर के पुत्र के रूप में और उनके मिशन को पाप से टूटे हुए को

बहाल करने के रूप में इंगित करते हैं। सुसमाचार चमत्कारों को विश्वास के निमंत्रण, अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी, और आने वाले नवीनीकरण की झलक के रूप में प्रस्तुत करते हैं जब राज्य पूरी तरह प्रकट होगा।

यीशु के चमत्कार चेलाई को भी आकार देते हैं क्योंकि वे यह उजागर करते हैं कि जब भय बढ़ता है और संसाधन घटते हैं तो हृदय किस पर भरोसा करता है शिष्यों ने धीरे-धीरे सीखा, भीड़ों ने विभिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया दी, और धार्मिक अगुवों ने अक्सर स्पष्ट प्रमाण के बावजूद विरोध किया, यह दिखाते हुए कि चमत्कार स्वतः समर्पण उत्पन्न नहीं करते फिर भी यीशु वही करुणामय राजा बने रहते हैं जो पीड़ितों के निकट आते हैं, और वही पवित्र प्रभु बने रहते हैं जो निष्ठा की माँग करते हैं, क्योंकि राज्य केवल आराम नहीं, बल्कि परमेश्वर का शासन है। कलीसिया मसीह का सर्वोत्तम अनुसरण तब करती है जब वह चमत्कारों की व्याख्या सुसमाचार के माध्यम से करती है, तमाशे की खोज नहीं, बल्कि विश्वासयोग्यता का अभ्यास करती है, और उनके अधिकार के अधीन करुणा, साहस, और आशा को जीती है। यीशु वह प्रभु हैं जो जीवन देते हैं, और उनके लोगों को उनकी आने वाली विजय के प्रकाश में अभी जीने के लिए बुलाया गया है।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. आप किस वर्तमान “आँधी” में भय के द्वारा परिणाम को नियंत्रित करने के बजाय यीशु के अधिकार पर भरोसा करने की सबसे अधिक आवश्यकता महसूस करते हैं?

2. आपके जीवन में कौन सी पीड़ा, बीमारी, या लज्जा आपको यीशु के पास ईमानदार विश्वास और समर्पण के साथ आने में संकोच कराती है?
3. आपकी कलीसिया कैसे ऐसी पवित्र करुणा का अभ्यास कर सकती है जो टूटे हुआओं को बहाल करे और फिर भी लोगों को पश्चाताप और चेलाई में बुलाए?
4. किन तरीकों से आप आत्मिक युद्ध को या तो अनदेखा कर रहे हैं या उससे विचलित हो रहे हैं, बजाय इसके कि आप अपना आत्मविश्वास मसीह पर केंद्रित करें?
5. इस सप्ताह आज्ञाकारिता का कौन सा ठोस कार्य सबसे स्पष्ट रूप से यह दिखाएगा कि वर्तमान आराम नहीं, बल्कि पुनरुत्थान की आशा आपकी प्राथमिकताओं को आकार दे रही है?

# अध्याय 8: चेलाई और मिशन पर यीशु की शिक्षाएँ

## परिचय

यीशु ने लोगों को चेलाई के लिए एक ऐसे राजा के रूप में बुलाया जो पूरे जीवन का दावा करता है, न कि एक ऐसे शिक्षक के रूप में जो केवल आकस्मिक प्रशंसकों को इकट्ठा करता हो। सुसमाचारों में चेलाई कोई धार्मिक जोड़, सप्ताहांत की आदत, या निजी पसंद नहीं है, क्योंकि यीशु पुरुषों और स्त्रियों को सार्वजनिक रूप से उनका अनुसरण करने, उनके मार्गों को सीखने, और जीवन के हर क्षेत्र में उनके अधिकार के अधीन होने के लिए बुलाते हैं। उनका बुलावा अनुग्रहपूर्ण है क्योंकि वह पापियों को निकट आने का निमंत्रण देते हैं, और वह मांग करने वाला है क्योंकि वह विभाजित निष्ठा को स्वीकार नहीं करते। यह अध्याय अनुसरण, मूल्य, चरित्र-निर्माण, और मिशन पर यीशु की शिक्षा का अनुगमन करता है ताकि कलीसिया चेलाई को पिता के शासन के अधीन मसीह-केंद्रित जीवन के रूप में देख सके।

यीशु ने चेलाई और मिशन को एक साथ भी स्थापित किया क्योंकि राज्य एकांत में ग्रहण नहीं किया जाता, वह बदले हुए लोगों के द्वारा संसार में ले जाया जाता है। वह अपने वचन, अपनी उपस्थिति, और आज्ञाकारिता के अपने उदाहरण के द्वारा शिष्यों का निर्माण करते हैं, और फिर उन्हें ऐसे गवाहों के रूप में भेजते हैं जो राज्य की घोषणा करते हैं और उसकी दया को देहधारण करते हैं। सुसमाचार दिखाते हैं कि चेलाई परीक्षा, सुधार, और धैर्यपूर्ण गठन के द्वारा परिपक्व होती है, क्योंकि

यीशु ऐसे लोगों का निर्माण कर रहे हैं जो विरोध सह सकें और पवित्रता के साथ सेवा कर सकें। जब विश्वासी चेलाई को वैसे समझते हैं जैसे यीशु ने अभिप्रेत किया, तब मिशन धर्म के विपणन से कम और उस जीवित प्रभु की विश्वासयोग्य गवाही से अधिक हो जाता है जो उद्धार करता है और राज्य करता है।

## अनुभाग 1: यीशु का अनुसरण करने का बुलावा

यीशु का अनुसरण करने का बुलावा सदा व्यक्तिगत और अधिकारपूर्ण होता है क्योंकि चेलाई की शुरुआत उनसे संबंधित होने से होती है। उन्होंने लोगों को केवल विचार स्वीकार करने, नैतिक आदतें अपनाने, या किसी आंदोलन में शामिल होने का निमंत्रण नहीं दिया, बल्कि उन्हें अपने पास आने, उनसे सीखने, और अपने प्रभुत्व के अधीन जीवन जीने के लिए बुलाया। सुसमाचारों में निर्णायक प्रश्न यह नहीं है कि कोई व्यक्ति यीशु की शिक्षा की सराहना करता है या नहीं, बल्कि यह है कि वह व्यक्ति आत्म-शासन को छोड़कर मसीह के अधिकार के अधीन होगा या नहीं। यीशु का अनुसरण करने का अर्थ है उन्हें पुत्र के रूप में पहचान कर भरोसा करना और राजा के रूप में उनके वचनों का पालन करना, और यह बुलावा तुरंत प्राथमिकताओं को पुनः क्रमित करता है।

यीशु का बुलावा इस धारणा का भी सामना करता है कि लोग उनके प्रति तटस्थ रह सकते हैं। उन्होंने स्वयं को राज्य का केंद्र प्रस्तुत किया, जिसका अर्थ है कि प्रतिक्रियाएँ अंततः किसी अमूर्त आध्यात्मिकता के प्रति नहीं, बल्कि उनके प्रति होती हैं। कुछ जिज्ञासा के कारण चले, कुछ चमत्कारों के लिए

चले, और कुछ पश्चातापी विश्वास के साथ चले, और यीशु लगातार स्पष्ट करते रहे कि सच्चा अनुसरण धीरज, आज्ञाकारिता, और प्रेम को सम्मिलित करता है इसलिए अनुसरण का बुलावा निमंत्रण भी है और आदेश भी, क्योंकि राजा अनुग्रहपूर्ण भी हैं और प्रभु भी हैं। यह अनुभाग यह खोजता है कि यीशु कैसे बुलाते हैं, अनुसरण का क्या अर्थ है, और चेलाई मसीह की ओर निर्णायक मोड़ से कैसे आरंभ होती है।

## मेरा अनुसरण करो और जीवन का दावा करने वाला अधिकार

यीशु ने मछुआरों को “मेरा अनुसरण करो” कहकर बुलाया, और यह आज्ञा चेलाई को आत्म-निर्देशित आत्मिक खोज के बजाय राजा के अधिकार के अधीन होने के रूप में प्रकट करती है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने शमौन और अन्द्रियास को, और फिर याकूब और यूहन्ना को बुलाया, और उनकी प्रतिक्रिया तुरंत थी, यह दिखाते हुए कि बुलावे में ऐसा भार था जो भरोसे की माँग करता था (मरकुस 1:16-20, एनआईवी)। यीशु ने शर्तों पर आधारित कोई अनुबंध प्रस्तुत नहीं किया, क्योंकि उनका प्रभुत्व साझेदारी नहीं, बल्कि वैध शासन है।

यीशु का बुलावा आज भी उन आधुनिक मसीहियों का सामना करता है जो यीशु को सहायक तो चाहते हैं पर स्वामी नहीं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि अनुसरण तब आरंभ होता है जब कोई व्यक्ति यीशु के अधिकार को पहचानता है और हर विवरण को समझने से पहले ही आज्ञाकारिता में उत्तर देता है। यह आवेगशीलता की महिमा नहीं करता, बल्कि निष्ठा को उजागर करता है, क्योंकि प्रारंभिक शिष्यों ने

बुलाने वाले के अधिकार पर कार्य किया। उनका छोड़ना काम-विरोधी नहीं था, बल्कि पुनः क्रमित आराधना थी, क्योंकि मसीह नया केंद्र बन गए। चेलाई आज भी यीशु को करियर, आराम, और आत्म-परिभाषा से ऊपर रखने का निर्णय है, क्योंकि राजा का दावा पूर्ण है और उनका निमंत्रण जीवन है।

## यीशु से सीखना और शिष्य की मुद्रा

यीशु ने चेलाई को उनसे सीखने के रूप में परिभाषित किया, न कि केवल उनसे सहमत होने के रूप में, क्योंकि परिवर्तन उनकी शिक्षा और उपस्थिति के निरंतर संपर्क से आता है। मत्ती लिखता है कि यीशु थके हुए लोगों को अपने पास आने और उनसे सीखने का निमंत्रण देते हैं, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई में विश्राम और जूआ साथ-साथ चलते हैं। जूआ साझा दिशा और अधीन गति को दर्शाता है, और यीशु प्रतिज्ञा करते हैं कि उनका जूआ सहज है क्योंकि वह हृदय से नम्र और कोमल हैं (मत्ती 11:28-30, एनआईवी)।

यीशु का यह निमंत्रण कलीसिया को सिखाता है कि चेलाई लज्जा से संचालित नहीं होती, बल्कि ऐसे अनुग्रह से आकार पाती है जो आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि यीशु से सीखने में निरंतर पश्चाताप, बदली हुई आदतें, और उनके चरित्र के अनुरूप बढ़ती समानता सम्मिलित है। इसका अर्थ यह भी है कि चेलाई संबंधात्मक है, क्योंकि यह केवल शत्रु पढ़ना नहीं, बल्कि किसी व्यक्ति पर भरोसा करना है, और यीशु अपने साथ संगति के द्वारा शिष्यों को गढ़ते हैं। थके हुए लोग आज्ञाकारिता से मुक्त नहीं किए जाते, बल्कि आज्ञाकारिता के लिए सशक्त किए जाते हैं, क्योंकि मसीह

ऐसा विश्राम देते हैं जो आत्मा को नया करता है इसलिए यीशु का अनुसरण अनुशासित सीख को सम्मिलित करता है जो पिता के शासन के अधीन नम्रता, स्थिरता, और आनंदमय समर्पण उत्पन्न करता है।

## वचन के द्वारा बुलावा और सुनने की अनिवार्यता

यीशु ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे शिष्य वे हैं जो परमेश्वर के वचन को सुनते और उस पर चलते हैं, यह दिखाते हुए कि चेलाई धार्मिक गतिविधि के निकट होने से नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता से मापी जाती है। लूका लिखता है कि यीशु ने अपने परिवार के विषय में की गई एक टिप्पणी के उत्तर में कहा कि उनकी माता और भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और उसे मानते हैं। वह अपने सांसारिक परिवार का अपमान नहीं कर रहे, बल्कि आज्ञाकारी सुनने के द्वारा उनके प्रति निष्ठा से बने नए समुदाय को परिभाषित कर रहे हैं (लूका 8:21, एनआईवी)।

यीशु का यह कथन उस आत्मिक परिचितता का सामना करता है जो आज्ञाकारिता के स्थान पर धार्मिक संबद्धता को रख देती है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि कलीसिया में उपस्थिति, मसीही भाषा, और धर्मशास्त्रीय ज्ञान अवज्ञा के साथ सहअस्तित्व में रह सकते हैं जब तक सुनना समर्पण न बन जाए। यह उन विश्वासियों को भी उत्साहित करता है जो स्वयं को महत्वहीन महसूस करते हैं, क्योंकि संबंधित होने की पहचान स्थिति, वरदान, या मंच नहीं, बल्कि यीशु पर भरोसे से बहने वाला आज्ञाकारी सुनना है। कलीसिया तब अधिक स्वस्थ होती है जब वह वचन को राजा की आवाज़ के रूप में देखती है जो वास्तविक निर्णयों को आकार देता है, न कि पृष्ठभूमि प्रेरणा के रूप में। यीशु का अनुसरण सुनने से

आरंभ होता है, और सुनना अभ्यास के द्वारा स्वयं को सिद्ध करता है, क्योंकि चेलाई मसीह के प्रति जीवित समर्पण है।

## आत्म-शासन को छोड़ना और पश्चाताप का बुलावा

यीशु ने लोगों को पश्चाताप करने और सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए बुलाया क्योंकि उनका अनुसरण आत्म-शासन से निर्णायक विच्छेद की माँग करता है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने यह घोषणा की कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है और पश्चाताप और विश्वास का बुलावा दिया। पश्चाताप पाप से और स्वायत्त अधिकार से मुड़ना है, और विश्वास यीशु पर उस राजा के रूप में भरोसा करना है जो परमेश्वर का शासन लाते हैं (मरकुस 1:14-15, एनआईवी)। यीशु चेलाई की शुरुआत पश्चाताप से करते हैं क्योंकि नियंत्रण से चिपके हृदय राज्य को ग्रहण नहीं कर सकते।

यीशु का पश्चाताप का बुलावा आज भी अनिवार्य है क्योंकि आधुनिक संस्कृति अक्सर पश्चाताप को दया के बजाय नकारात्मकता के रूप में देखती है। प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि पश्चाताप आत्म-दोष नहीं, बल्कि ऐसा समर्पण है जो परमेश्वर के अधीन जीवन का द्वार खोलता है। पश्चाताप के बिना चेलाई आराधना के बिना नैतिक समायोजन बन जाती है, और वह पाखंड या निराशा में ढह जाती है। यीशु का अधिकार लोगों को छिपे हुए पाप और सार्वजनिक धार्मिक प्रदर्शन दोनों से दूर बुलाता है, क्योंकि वह पूरे हृदय की निष्ठा चाहते हैं। इसलिए यीशु का अनुसरण निरंतर पश्चाताप का जीवन है, क्योंकि राजा मूर्तियों को उजागर करते रहते हैं और गहरे समर्पण का निमंत्रण देते रहते हैं।

**सबसे ऊपर यीशु से प्रेम और निष्ठा की प्राथमिकता**

यीशु ने सिखाया कि उनका अनुसरण करने के लिए उन्हें सबसे वैध मानवीय संबंधों से भी अधिक प्रेम करना आवश्यक है, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई अंततः आराधना के विषय में है भती लिखता है कि यीशु ने कहा कि जो पिता या माता को उनसे अधिक प्रेम करता है वह उनके योग्य नहीं है, और यही बात पुत्र या पुत्री के विषय में भी कही यीशु प्रेमहीनता की आज्ञा नहीं दे रहे, बल्कि प्रेम की उचित व्यवस्था स्थापित कर रहे हैं, क्योंकि हर अन्य प्रेम को राजा के प्रति निष्ठा के अधीन होना चाहिए (मती 10:37, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा उन विश्वासियों को चुनौती देती है जो यीशु को अनेक प्राथमिकताओं में से एक के रूप में रखना चाहते हैं, न कि निर्णायक केंद्र के रूप में पास्टर्स को शिष्यों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि जब यीशु पहले स्थान पर नहीं होते, तब परिवार मूर्ति बन जाता है, सफलता मूर्ति बन जाती है, और यहाँ तक कि सेवकाई भी मूर्ति बन सकती है यीशु से पहले प्रेम करना वास्तव में अन्य संबंधों की रक्षा करता है क्योंकि यह प्रेम को अधिक सत्य, कम अधिकारवादी, और अधिक बलिदानी बनाता है यह शिक्षा शिष्यों को दबाव के लिए भी तैयार करती है, क्योंकि मसीह के प्रति निष्ठा कभी कभी तनाव उत्पन्न करेगी, और यीशु उस वास्तविकता को छिपाते नहीं यीशु का अनुसरण करने का अर्थ है कि वही हृदय पर पहला दावा रखते हैं, और वह दावा दिया है क्योंकि वही एकमात्र प्रभु हैं जो जीवन देते हैं।

## अनुभाग 2: चेलाई की कीमत

यीशु ने चेलाई की कीमत सिखाई क्योंकि वह भ्रम के द्वारा लोगों को इकट्ठा करने से इंकार करते हैं। उन्होंने भीड़ों का

स्वागत किया, फिर भी उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका अनुसरण करने के मार्ग में बलिदान, अस्वीकृति, और निरंतर समर्पण सम्मिलित है। राज्य एक वरदान है, फिर भी वह सस्ता नहीं है, क्योंकि वह आत्म-शासन को त्यागने और वास्तविक निर्णयों में मसीह के प्रभुत्व को अपनाने की माँग करता है। यहाँ यीशु का अधिकार करुणामय है क्योंकि ईमानदार चेतावनी उथले उत्साह से लोगों की रक्षा करती है जो दबाव में ढह जाता है, और ऐसे धर्म से भी जो आज्ञाकारिता के बिना आराम का वादा करता है।

यीशु ने कीमत को पहचान और निष्ठा का विषय भी बनाया क्योंकि चेलाई कभी-कभी किए गए बलिदानों का समूह नहीं, बल्कि पूरे जीवन की दिशा है। वह शिष्यों को क्रूस उठाने, जीवन खोकर उसे पाने, और आराम और सुरक्षा से ऊपर उन्हें चुनने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि उनका मिशन क्रूस-आकार का है। भ्रष्टाचार उद्धार कमाने का मार्ग नहीं, बल्कि इस बात का प्रमाण है कि कोई व्यक्ति मसीह और उनके राज्य को प्रतिस्पर्धी खजानों से अधिक मूल्य देता है। यह अनुभाग आत्म-इन्कार, क्रूस, कीमत गिनने, और संसार को पाकर आत्मा खोने के खतरे पर यीशु की माँगों की खोज करता है।

## **क्रूस उठाना और आत्म-शासन की मृत्यु**

यीशु ने शिष्यों को स्वयं का इन्कार करने, अपना क्रूस उठाने, और उनका अनुसरण करने की आज्ञा दी, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई में आत्म-केंद्रित नियंत्रण की मृत्यु सम्मिलित है। भरकुस लिखता है कि यीशु ने यह अपनी आने वाली पीड़ा की घोषणा के बाद कहा, यह दिखाते हुए कि शिष्य का मार्ग गुरु के मार्ग को प्रतिबिंबित करता है। इस संदर्भ में

क्रूस कोई रूपक असुविधा नहीं, बल्कि मसीह के प्रति निष्ठा छोड़ने के बजाय हानि और अस्वीकृति सहने की तत्परता है (मरकुस 8:34, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा मसीहियत के उन रूपों का सामना करती है जो समर्पण के बिना उन्नति का वादा करते हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि आत्म-इन्कार आत्म-घृणा नहीं, बल्कि स्वयं की आराधना से इनकार है, क्योंकि आराधना केवल परमेश्वर की है। क्रूस उठाने का अर्थ है आज्ञाकारिता को अपनाना, भले ही उसकी कीमत प्रतिष्ठा, आराम, या सुरक्षा क्यों न हो, क्योंकि राजा का अधिकार मानवीय स्वीकृति से बड़ा है। यह उन विश्वासियों को भी सांत्वना देता है जो विश्वासयोभ्यता के कारण पीड़ित होते हैं, क्योंकि यह पीड़ा को दैवी परित्याग के बजाय मसीह के मिशन में सहभागिता के रूप में प्रस्तुत करता है। शिष्य क्रूसित प्रभु का अनुसरण करता है, और क्रूस शिष्य की अपेक्षाओं, प्राथमिकताओं, और धीरज को आकार देता है।

## जीवन खोकर उसे पाना और राज्य का विरोधाभास

यीशु ने सिखाया कि जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है वह उसे खो देगा, पर जो कोई उनके और सुसमाचार के लिए अपना जीवन खो देगा वह उसे पाएगा, यह राज्य के विरोधाभास को प्रकट करता है। मरकुस इस शिक्षा को सीधे क्रूस के निहितार्थ के रूप में प्रस्तुत करता है, यह दिखाते हुए कि आत्म-संरक्षण को अंतिम लक्ष्य बनाना आत्मिक हानि की ओर ले जाता है, जबकि मसीह के प्रति समर्पण सच्चे जीवन की ओर ले जाता है। यीशु पीड़ा को रोमांटिक नहीं बनाते, वह जीवन को पुनः परिभाषित करते हैं, क्योंकि जीवन उनसे संबंधित होने में पाया जाता है (मरकुस 8:35, एनआईवी)।

यीशु का यह विरोधाभास उन विश्वासियों को चुनौती देता है जो जीवन को आराम और नियंत्रण से मापते हैं। पास्टर्स को शिष्यों की सहायता करनी चाहिए कि वे पहचानें कि भय-प्रेरित आत्म-सुरक्षा मसीह के कार्यात्मक इनकार में बदल सकती है, क्योंकि वह सुरक्षा को स्वामी बना देती है। जीवन खोने में परिणामों को नियंत्रित करने की आवश्यकता और प्रशंसा की लालसा को छोड़ना भी सम्मिलित है, क्योंकि ये इच्छाएँ अक्सर आज्ञाकारिता से अधिक चुनावों को आकार देती हैं। फिर भी प्रतिज्ञा वास्तविक है, क्योंकि यीशु शिष्यों को शून्यता की ओर नहीं, बल्कि ऐसे जीवन की ओर बुला रहे हैं जो परमेश्वर के शासन में स्थिर है। जब विश्वासी मसीह के लिए समर्पण करते हैं, तो वे ऐसी स्थिरता, आनंद, और उद्देश्य खोजते हैं जो आत्म-शासन से उत्पन्न नहीं हो सकते।

## कीमत गिनना और उथले उत्साह से इनकार

यीशु ने चेतावनी दी कि शिष्यों को कीमत गिननी चाहिए, मीनार बनाने और युद्ध करने के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, यह दिखाते हुए कि उनका अनुसरण भावनात्मक आवेग के बजाय गंभीर मूल्यांकन की माँग करता है। लूका लिखता है कि यीशु ने कहा कि जो कोई अपना क्रूस नहीं उठाता और उनका अनुसरण नहीं करता वह उनका शिष्य नहीं हो सकता, और फिर उन्होंने इस पर विचार करने का आग्रह किया कि कोई व्यक्ति आरंभ किए गए कार्य को पूरा करेगा या नहीं। यीशु चेलाई को हतोत्साहित नहीं कर रहे, बल्कि यथार्थवाद पर जोर दे रहे हैं क्योंकि वह अस्थायी प्रयोग के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे (लूका 14:27-30, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा पास्टोरल है क्योंकि यह कलीसिया को शीघ्र आरंभ और शीघ्र त्याग की संस्कृति से बचाती है। पास्टोरों को सिखाना चाहिए कि धीरज सच्चे विश्वास की पहचान है, इसलिए नहीं कि शिष्य धीरज के द्वारा उद्धार कमाते हैं, बल्कि इसलिए कि धीरज वास्तविक निष्ठा को प्रकट करता है। कीमत गिनना विश्वासियों को कठिनाई की व्याख्या करने में भी सहायता करता है, क्योंकि जब कठिनाई आती है, तब वे यह मानने की कम संभावना रखते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें असफल कर दिया है। यीशु गंभीर प्रतिबद्धता का बुलावा देते हैं क्योंकि राज्य अंतिम है, और अंतिम निष्ठा आकस्मिक नहीं हो सकती। तिलाई ईमानदार मूल्यांकन से आरंभ होती है, फिर भी वह मसीह पर निरंतर निर्भरता के साथ जारी रहती है, क्योंकि केवल राजा ही शिष्य की विश्वासयोग्यता को बनाए रख सकते हैं।

## संसार को पाकर आत्मा खोने का खतरा

यीशु ने पूछा कि यदि कोई पूरा संसार प्राप्त करे और अपनी आत्मा खो दे तो उसे क्या लाभ, यह प्रकट करते हुए कि बाहरी सफलता में भी आत्मिक हानि हो सकती है। यह चेतावनी उस झूठ को उजागर करती है कि उपलब्धि, धन, और स्वीकृति परमेश्वर से अलगाव की भरपाई कर सकते हैं। मरकुस लिखता है कि यीशु ने संसार के मूल्यों का सामना करने के लिए इस प्रश्न का उपयोग किया, क्योंकि संसार अस्थायी पुरस्कार देता है और चुपचाप आंतरिक जीवन को नष्ट करता है (मरकुस 8:36, एनआईवी)।

यीशु की यह चेतावनी अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि बहुत से वयस्क जीवन को करियर, छवि, और सुरक्षा के चारों ओर बनाते हैं, यह मानते हुए कि विश्वास एक छोटा खंड बना रह

सकता है प्रास्टरों को विश्वासियों को अनंतता के दृष्टिकोण से निर्णयों का मूल्यांकन करना सिखाना चाहिए, क्योंकि आत्मा आराम से सुरक्षित नहीं होती और स्थिति से छुड़ाई नहीं जा सकती इसका अर्थ यह भी है कि चेलाई को उपभोक्तावाद, यौन समझौते, और सामर्थ-लालसा सहित मूर्तियों को स्पष्ट रूप से नाम देना चाहिए, क्योंकि मूर्तियाँ जीवन का वादा करती हैं और खालीपन देती हैं। ईशु अपने लोगों को उस को चुनने के लिए बुलाते हैं जो स्थायी है, क्योंकि केवल वही आत्मा को बचा सकते हैं। चेलाई की कीमत वास्तविक है, फिर भी चेलाई से इनकार करने की कीमत कहीं अधिक है, क्योंकि मसीह को खोना जीवन को खोना है।

## अविभाजित निष्ठा और प्रतिस्पर्धी दावों का त्याग

यीशु ने सिखाया कि शिष्यों को उनका शिष्य बनने के लिए अपनी सब वस्तुओं का त्याग करना चाहिए, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई में केवल कुछ आदतों का नहीं, बल्कि स्वामित्व का समर्पण सम्मिलित है। लूका की भाषा इस बात पर जोर देती है कि संपत्ति, योजनाएँ, और दावे मसीह के प्रभुत्व के अधीन होने चाहिए। ईशु सार्वभौमिक गरीबी की शिक्षा नहीं दे रहे, बल्कि यह सिखा रहे हैं कि कुछ भी अछूता नहीं रह सकता, क्योंकि अछूते क्षेत्र छिपी हुई मूर्तियाँ बन जाते हैं (लूका 14:33, एनआईवी)।

यीशु की यह माँग उन विश्वासियों को चुनौती देती है जो निजी स्वायत्तता का एक कोना बनाए रखते हुए अनुसरण करना चाहते हैं। प्रास्टरों को शिष्यों की सहायता करनी चाहिए कि वे धन, समय, संबंधों, और महत्वाकांक्षाओं में ऐसी भण्डारीपन का अभ्यास करें जो घोषित करे कि यीशु प्रभु हैं।

त्याग का अर्थ सृजित वस्तुओं को अस्वीकार करना नहीं, बल्कि सृजित वस्तुओं की आराधना को अस्वीकार करना है, क्योंकि आराधना पिता की है यह शिक्षा विधासियों को स्वतंत्र भी करती है, क्योंकि जब यीशु प्रभु होते हैं, तब संपत्ति प्रेम के उपकरण बन जाती है, चिंता के बोझ नहीं। चेलाई अविभाजित निष्ठा है क्योंकि यीशु अपना सिंहासन साझा नहीं करते, और यह दया है क्योंकि प्रतिस्पर्धी स्वामी सदैव दास बनाते हैं।

### अनुभाग 3: राज्य के चरित्र का गठन

यीशु ने केवल कार्य नहीं सौंपे, उन्होंने चरित्र का निर्माण किया, क्योंकि राज्य उन लोगों के द्वारा आगे बढ़ता है जिनका आंतरिक जीवन पिता की पवित्रता और दया को प्रतिबिंबित करता है। इसलिए चेलाई केवल बाहरी सेवा नहीं, बल्कि ऐसा व्यक्ति बनना है जो मसीह के मिशन को भ्रष्ट किए बिना वहन कर सके। यीशु ने नम्रता, क्षमा, प्रार्थना, और आज्ञाकारिता सिखाई, और उन्होंने अपने जीवन के द्वारा इन्हें देहधारण किया, यह दिखाते हुए कि राज्य का चरित्र पिता के साथ संगति और पुत्र के प्रति समर्पण से आकार पाता है। सुसमाचार प्रकट करते हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों को बार बार सुधारा क्योंकि गठन धैर्यपूर्ण कार्य है, और राजा अपने लोगों को गढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यीशु ने राज्य के चरित्र का गठन उन आंतरिक उद्देश्यों का सामना करके भी किया जो प्रेम को बाधित करते हैं, जिनमें घमंड, ईर्ष्या, महत्वाकांक्षा, और भय सम्मिलित हैं। बहुत से शिष्य परिवर्तन के बिना मिशन चाहते हैं, फिर भी यीशु आग्रह करते हैं कि मिशन चरित्र से बहना चाहिए, क्योंकि भ्रष्ट हृदय सेवकाई को आत्म-प्रचार में विकृत कर देगा। राज्य का चरित्र नैतिकतावाद नहीं, बल्कि मसीह-सदृशता है, और मसीह-

सदृशता समर्पण, पश्चाताप, और यीशु से निरंतर सीखने के द्वारा उत्पन्न होती है। यह अनुभाग यह खोजता है कि यीशु कैसे नम्रता, क्षमा, विश्वासयोग्य निर्भरता, और सेवकाई को गढ़ते हैं ताकि शिष्य परमेश्वर के शासन के नागरिकों के रूप में जी सकें।

## नम्रता और राजा द्वारा पुनः परिभाषित महानता

यीशु ने महानता को पुनः परिभाषित किया यह सिखाते हुए कि सबसे महान वह है जो बालक के समान बनता है, यह प्रकट करते हुए कि नम्रता वैकल्पिक नहीं, बल्कि राज्य के नागरिकों की मुद्रा है। भती लिखता है कि यीशु ने एक बालक को शिष्यों के बीच खड़ा किया और कहा कि जब तक वे न बदलें और बालकों के समान न बनें, तब तक वे राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। आशय बालपन नहीं, बल्कि निर्भरता, सिखाए जाने की तत्परता, और स्थिति की आसक्ति से स्वतंत्रता है (मत्ती 18:3, एनआईवी)।

यीशु की यह पुनः परिभाषा उन कलीसियाई संस्कृतियों का सामना करती है जो दृश्यता, प्रभाव, और नियंत्रण को पुरस्कृत करती हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि नम्रता आत्मिक सुरक्षा है, क्योंकि घमंड लोगों को असुधार्य और इसलिए असुरक्षित बना देता है। नम्रता एकता को भी सुदृढ़ करती है, क्योंकि नम्र लोग पाप स्वीकार कर सकते हैं, परामर्श ग्रहण कर सकते हैं, और ईर्ष्या के बिना दूसरों का उत्सव मना सकते हैं। यीशु नम्रता को असुरक्षा की चापलूसी करके नहीं, बल्कि पिता पर भरोसा करने के लिए बुलाकर गढ़ते हैं। राज्य की महानता मसीह की समानता से मापी जाती है, और मसीह की महानता प्रभुत्व के माध्यम से नहीं, बल्कि आज्ञाकारी प्रेम के माध्यम से प्रकट होती है।

## क्षमा और समुदाय को बनाए रखने वाली दया

यीशु ने क्षमा सिखाई क्योंकि राज्य मेल-मिलाप का समुदाय है, और अनसुलझी कड़वाहट अंततः आराधना और मिशन दोनों को विषाक्त कर देगी। भती लिखता है कि यीशु ने पतरस से कहा कि वह सात बार नहीं, बल्कि सत्तर गुणा सात बार क्षमा करे, यह जोर देते हुए कि क्षमा दुर्लभ कार्य नहीं, बल्कि स्थायी मुद्रा है। यीशु न्याय को कम नहीं आँक रहे, बल्कि दया की आज्ञा दे रहे हैं क्योंकि उनके शिष्य वे लोग हैं जिन्होंने दया प्राप्त की है और इसलिए उन्हें दया देनी चाहिए (मती 18:21-22, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा उन विश्वासियों को चुनौती देती है जो बैर को उचित आत्म-सुरक्षा मानते हैं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि क्षमा हानि से इनकार नहीं, बल्कि प्रतिशोध को परमेश्वर के हाथ में सौंपना और दूसरे के अंतिम भले की खोज करना है। क्षमा में बुद्धि और कभी कभी सीमाएँ भी आवश्यक होती हैं, फिर भी हृदय की मुद्रा दयालु होनी चाहिए, न कि प्रतिशोधी। यह शिक्षा कलीसियाओं को विभाजन से बचाती है क्योंकि जहाँ आक्रोश को संजोया जाता है वहाँ मिशन फलता-फूलता नहीं। यीशु अपने लोगों को क्षमा करना गढ़ते हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने जीवन की कीमत पर क्षमा की, और उनका क्रूस राज्य की दया का स्रोत और नमूना दोनों बनता है।

## प्रार्थनापूर्ण निर्भरता और स्थायी भरोसे का जीवन

यीशु ने शिष्यों को लगातार प्रार्थना करना सिखाया क्योंकि निर्भरता के बिना मिशन घमंड बन जाता है और अंततः ढह जाता है। लूका लिखता है कि यीशु ने एक दृष्टांत सुनाया

ताकि लोग सदा प्रार्थना करें और हार न मानें, यह प्रकट करते हुए कि प्रार्थना में धीरज पिता की भलाई पर भरोसे को दर्शाता है। यीशु शिष्यों को त्वरित समाधानों पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर निर्भर रहना सिखाते हैं क्योंकि निर्भरता आराधना है और क्योंकि पिता बुद्धिमानी से उत्तर देना पसंद करते हैं (लूका 18:1, एनआईवी)।

यीशु का प्रार्थना का नमूना राज्य के चरित्र को भी आकार देता है क्योंकि यह हृदय को पिता की इच्छा के अधीन करना सिखाता है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि प्रार्थना परिणामों में हेरफेर नहीं, बल्कि परमेश्वर के शासन के साथ संरेखण और आज्ञाकारिता के लिए सामर्थ्य प्राप्त करना है। निरंतर प्रार्थना उद्देश्यों को भी शुद्ध करती है, क्योंकि समय के साथ यह प्रकट करती है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर को खोज रहा है या केवल राहत को ढूँढ रहा है। तब अधिक स्थिर होती है जब विश्वासी विलंब के बीच कड़वाहट के बिना प्रार्थना करना सीखते हैं, क्योंकि विलंब भरोसे को नष्ट करने के बजाय उसे गहरा कर सकता है। यीशु प्रार्थना करने वाले शिष्यों का निर्माण करते हैं क्योंकि प्रार्थना हृदय को राजा के अधीन कोमल, नम्र, और आज्ञाकारी रखती है।

## सेवकाई और बलिदानी देखभाल के रूप में नेतृत्व

यीशु ने सिखाया कि उनके राज्य में नेतृत्व सेवकाई है, और उन्होंने इस शिक्षा को दूसरों की सेवा करने और अपना जीवन देने के अपने ही मिशन में स्थापित किया। मरकुस लिखता है कि यीशु ने कहा कि जो कोई महान होना चाहता है वह सेवक बने, और जो प्रथम होना चाहता है वह सबका दास बने। फिर उन्होंने स्वयं को मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया जो सेवा पाने नहीं, बल्कि सेवा करने और अपना

जीवन बहूतों के लिए छुड़ौती के रूप में देने आया (मरकुस 10:43-45, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा उस नेतृत्व का सामना करती है जो मंच, तालियाँ, और नियंत्रण चाहता है। पास्टरों को अगुवों को यह देखने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए कि अधिकार दूसरों की देखभाल की जिम्मेदारी है, न कि सम्मान पाने का अधिकार। सेवकाई कलीसिया को दुरुपयोग से भी बचाती है क्योंकि यह नेतृत्व को मसीह के उदाहरण के अधीन बलिदान के रूप में प्रस्तुत करती है। यह शिक्षा नेतृत्व-विरोधी नहीं, बल्कि स्वार्थी नेतृत्व-विरोधी है, क्योंकि राजा पवित्र प्रेम और महँगी आज्ञाकारिता के द्वारा नेतृत्व करते हैं। जब शिष्य सेवकाई को अपनाते हैं, तब मिशन विश्वसनीय बन जाता है, क्योंकि कलीसिया उस मसीह के समान दिखने लगती है जिसकी वह घोषणा करती है।

## **प्रेम के रूप में आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता का स्वरूप**

यीशु ने सिखाया कि प्रेम आज्ञाकारिता के द्वारा व्यक्त होता है, और उन्होंने आज्ञाकारिता को अपने साथ बने रहने वाले संबंध से जोड़ा। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने कहा कि जो उनके आदेशों को मानते हैं वही उनसे प्रेम करते हैं, और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि पिता उनसे प्रेम करेंगे और वह स्वयं को उन पर प्रकट करेंगे। यह कार्यों के द्वारा उद्धार नहीं, बल्कि सच्ची चेलाई का फल है, जहाँ विश्वास आज्ञाकारिता उत्पन्न करता है क्योंकि हृदय मसीह को मूल्यवान मानता है (यूहन्ना 14:21, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा विश्वासियों को आध्यात्मिकता और नैतिकता को अलग करने से बचाती है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि जब आज्ञाकारिता प्रेम से बहती है तब वह वैधानिकता नहीं होती, और जब यीशु प्रभु हैं तब वह वैकल्पिक भी नहीं होती। आज्ञाकारिता आश्वासन को भी सुदृढ़ करती है क्योंकि वह दिखाती है कि विश्वास केवल मौखिक नहीं, बल्कि वास्तविक है। फिर भी आज्ञाकारिता को मसीह-केंद्रित रहना चाहिए, क्योंकि लक्ष्य नैतिक श्रेष्ठता नहीं, बल्कि यीशु की समानता और पिता में आनंद है। विलाई ऐसा प्रेम है जो आज्ञा मानता है, और वही आज्ञाकारिता दृश्य गवाही बन जाती है कि राजा का शासन जीवन को पकड़ चुका है।

## अनुभाग 4: शिष्यों का मिशन

यीशु ने शिष्यों का गठन उन्हें भेजने के लिए किया, क्योंकि राज्य कोई निजी शरणस्थली नहीं, बल्कि गवाहों के द्वारा ले जाया गया सार्वजनिक घोषणा है। उन्होंने उन्हें सुसमाचार की घोषणा करने, करुणा प्रदर्शित करने, और लोगों को पश्चाताप और विश्वास के लिए बुलाने के लिए नियुक्त किया। इसलिए मिशन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि मसीह के प्रति निष्ठा का परिणाम और उनके उद्धारकारी उद्देश्य में सहभागिता है। यीशु का अधिकार मिशन की नींव है क्योंकि वह शिष्यों को उनके अपने विचारों के साथ नहीं, बल्कि अपने संदेश और अपनी सामर्थ के साथ भेजते हैं, और प्रभावशीलता करिश्मे पर नहीं, बल्कि विश्वासयोग्य समर्पण पर निर्भर करती है।

यीशु ने यह भी सिखाया कि मिशन में विरोध, धीरज, और आत्मा पर निर्भरता सम्मिलित होगी, क्योंकि जो संसार राजा का विरोध करता है वह उनके गवाहों का भी विरोध करेगा।

फिर भी यीशु ने अपनी उपस्थिति और शांति की प्रतिज्ञा की, यह दिखाते हुए कि मिशन उनके साथ संगति से पोषित होता है। कलीसिया सांस्कृतिक तालियाँ जीतने के लिए नहीं, बल्कि वचन और जीवन के द्वारा मसीह की सच्ची गवाही देने के लिए भेजी गई है। यह अनुभाग यीशु के नियुक्त आदेश, निर्भरता और घोषणा के विषय में उनके निर्देश, और उनकी उपस्थिति की प्रतिज्ञा की खोज करता है जो अंत तक मिशन को बनाए रखती है।

## मसीह के अधिकार के अधीन घोषणा और चंगाई के लिए भेजे गए

यीशु ने बारहों को राज्य की घोषणा करने और चंगा करने के लिए भेजा, यह दिखाते हुए कि मिशन में वचन की घोषणा और करुणामय कार्य दोनों सम्मिलित हैं। लूका लिखता है कि यीशु ने उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने और रोगों को चंगा करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया, और उन्हें परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने और बीमारों को चंगा करने के लिए भेजा। यह दर्शाता है कि मिशन केवल बातों तक सीमित नहीं, बल्कि संदेश और दया दोनों के द्वारा प्रकट राज्य की गवाही है (लूका 9:1-2, एनआईवी)।

यीशु का यह भेजना कलीसिया को सिखाता है कि मिशन मसीह-केंद्रित रहना चाहिए, न कि व्यक्ति-केंद्रित। पास्टर्स को विश्वासियों को सुसमाचार के संदेश को प्राथमिकता देने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए और साथ ही ऐसी ठोस करुणा का अभ्यास करना चाहिए जो राजा के हृदय को प्रतिबिंबित करे। इसमें नम्रता भी आवश्यक है, क्योंकि सामर्थ्य मसीह की है, और गवाह सेवक हैं, न कि प्रसिद्ध व्यक्ति। यीशु का अधिकार मिशन को भय से सुरक्षित रखता है क्योंकि

शिष्य अकेले नहीं भेजे जाते, बल्कि राजा की आज्ञा के अधीन भेजे जाते हैं मिशन तब विश्वासयोग्य बनता है जब कलीसिया सत्य और प्रेम को अलग करने से इंकार करती है, क्योंकि यीशु ने पिता के शासन की एक संगत गवाही के रूप में घोषणा भी की और चंगा भी किया।

## निर्भरता, सरलता, और पिता पर भरोसा

यीशु ने अपने शिष्यों को हल्का यात्रा करने का निर्देश दिया, यह सिखाते हुए कि मिशन आत्म-सुरक्षित नियंत्रण के बजाय पिता पर निर्भरता से पोषित होता है। लूका लिखता है कि यीशु ने उन्हें अतिरिक्त प्रावधान न लेने को कहा, यह जोर देते हुए कि उनका ध्यान आज्ञाकारिता पर रहना चाहिए और परमेश्वर ग्रहणशील घरों के द्वारा प्रावधान करेगा। यह निर्देश प्रकट करता है कि चिंता-प्रेरित संचय मिशन को बाधित कर सकता है और कि विश्वास सरलता और भरोसे के द्वारा व्यक्त होता है (लूका 9:3, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा आधुनिक सेवकाई को चुनौती देती है जो प्रभावशीलता को निरंतर संचय, अंतहीन साधनों, या छवि प्रबंधन से जोड़ती है। पास्टरों को विश्वासियों को बुद्धिमानी से योजना बनाना सिखाना चाहिए, फिर भी तैयारी को अंतिम सुरक्षा के रूप में पूजने से इंकार करना चाहिए। सरलता प्राथमिकताओं को स्पष्ट करती है, क्योंकि मिशन लोगों पर ध्यान, प्रार्थनापूर्ण निर्भरता, और सुसमाचार बोलने का साहस माँगता है। यह मुद्रा शिष्यों को अस्वीकृति को घबराहट के बिना स्वीकार करना और प्रावधान को अधिकार-बोध के बिना ग्रहण करना सिखाती है। यीशु ऐसे मिशनरी गढ़ते हैं जो पिता पर भरोसा करते हैं, क्योंकि मिशन आत्म-वित्तपोषित

आत्म-विश्वास नहीं, बल्कि दैवी देखभाल के अधीन  
आज्ञाकारिता है।

## सब राष्ट्रों के लिए गवाही और राज्य का सार्वभौमिक विस्तार

यीशु ने अपने शिष्यों को सब राष्ट्रों के शिष्य बनाने का  
आदेश दिया, अपने अधिकार में मिशन को स्थापित करते हुए  
और अपनी उपस्थिति की प्रतिज्ञा करते हुए भती लिखता है  
कि यीशु ने कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उन्हें  
दिया गया है, इसलिए उन्हें जाकर शिष्य बनाने, बपतिस्मा  
देने, और उनके आदेशों की आज्ञाकारिता सिखाने को कहा  
गया मिशन मसीह के सार्वभौमिक अधिकार में निहित है, और  
उसका लक्ष्य आज्ञाकारी अनुयायियों का निर्माण है, न कि  
केवल धर्मान्तरितों का (मती 28:18-20, एनआईवी)।

यीशु का यह आदेश कलीसिया की पहचान को आकार देता  
है क्योंकि यह प्रकट करता है कि मिशन वैकल्पिक नहीं,  
बल्कि मसीह के प्रभुत्व का सीधा परिणाम है। पास्टर्स को  
सिखाना चाहिए कि शिष्य बनाना आज्ञाकारिता सिखाने को  
सम्मिलित करता है, जिसके लिए धैर्य, समुदाय, और गहरा  
गठन आवश्यक है, न कि उथला निर्णयवाद। यीशु की  
उपस्थिति की प्रतिज्ञा मिशन को बनाए रखती है क्योंकि  
कलीसिया अपनी सामर्थ पर नहीं, बल्कि राजा की निरंतर  
निकटता के अधीन जीती है। यह आदेश विश्वासियों को  
जनजातीय सीमाओं और स्थानीय आराम से परे बुलाता है  
क्योंकि यीशु सब लोगों के प्रभु हैं। मिशन वैश्विक है क्योंकि  
राज्य सार्वभौमिक है, और चेलाई वह माध्यम है जिसके द्वारा  
मसीह का शासन विश्वासयोग्य गवाही के माध्यम से  
विस्तारित होता है।

## आत्मा-सामर्थित गवाही और बोलने का साहस

यीशु ने पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ की प्रतिज्ञा की ताकि शिष्य उनके गवाह बन सकें, यह दिखाते हुए कि दैवी सामर्थ के बिना मिशन असंभव है प्रेरितों के काम में लिखा है कि यीशु ने शिष्यों से कहा कि जब पवित्र आत्मा उन पर आएगा तो वे सामर्थ प्राप्त करेंगे और यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया, और पृथ्वी की छोर तक उनके गवाह होंगे यह मिशन को केवल मानवीय समझाने के बजाय मसीह की आत्मा-सामर्थित गवाही के रूप में स्थापित करता है (प्रेरितों के काम 1:8, एनआईवी)।

यीशु की यह प्रतिज्ञा कलीसिया को रणनीति के बजाय परमेश्वर पर अंतिम निर्भरता सिखाती है पास्टरों को विश्वासियों को आत्मा के साहस, बुद्धि, और प्रेम की खोज करना सिखाना चाहिए, क्योंकि गवाही के लिए दबाव में सत्य और सहनशीलता दोनों आवश्यक हैं इसका अर्थ यह भी है कि मिशन में पीड़ा सम्मिलित है, क्योंकि गवाहों को अक्सर अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है, फिर भी आत्मा धीरज को सुदृढ़ करती है आत्मा की सामर्थ विश्वासियों को भय-प्रेरित मौन और कठोरता दोनों से बचाती है, क्योंकि आत्मा मसीह-सदृश चरित्र के साथ निर्भीकता उत्पन्न करती है यीशु अपने लोगों को गवाहों के रूप में भेजते हैं, और आत्मा उन्हें विश्वासयोग्य गवाही देने के लिए सुसज्जित करती है, क्योंकि राज्य आत्मा-गठित समुदाय के द्वारा वहन किए गए वचन के माध्यम से आगे बढ़ता है।

**प्रेम से आकार पाया हुआ मिशन और आज्ञाकारिता की विश्वसनीयता**

यीशु ने सिखाया कि शिष्यों के बीच प्रेम एक निर्णायक गवाही होगा, यह दिखाते हुए कि मिशन में समुदाय का दृश्य जीवन भी सम्मिलित है। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने कहा कि यदि शिष्य एक दूसरे से प्रेम करेंगे तो सब जानेंगे कि वे उनके शिष्य हैं। यह प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि बलिदानी प्रतिबद्धता है जो मसीह के अपने प्रेम को प्रतिबिंबित करती है और दिखाती है कि पिता के शासन ने एक नए प्रकार के लोगों को उत्पन्न किया है (यूहन्ना 13:35, एनआईवी)।

यीशु की यह शिक्षा उन कलीसियाओं का सामना करती है जो सुसमाचार की घोषणा करती हैं पर शत्रुता, विभाजन, और घमंड को सहन करती हैं। पास्टर्स को इस बात पर जोर देना चाहिए कि प्रेम सत्य का स्थानापन्न नहीं, बल्कि सत्य की जीती हुई अभिव्यक्ति है, और वही गवाही को विश्वसनीय बनाता है। जब शिष्य क्षमा करते हैं, सेवा करते हैं, और बोझ उठाते हैं, तब संसार ऐसे समुदाय को देखता है जो किसी भिन्न राजा के द्वारा आकार पाया हुआ है। प्रेम मिशन को आंतरिक रूप से भी बनाए रखता है क्योंकि वह एकता उत्पन्न करता है, और एकता कठिनाई में धीरज को सुदृढ़ करती है। यीशु शिष्यों को बोलने के लिए भेजते हैं, फिर भी वह उन्हें ऐसा जीवन जीने के लिए भी बुलाते हैं जो संदेश को विश्वसनीय बनाए, क्योंकि राज्य का मिशन राज्य के चरित्र के द्वारा वहन किया जाता है।

## तीन तरीके इस सामग्री को अपने विशेष संदर्भ में लागू करने के

ऐसे चेलाई मार्ग विकसित करें जो केवल उपस्थिति नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता की माँग करें

यीशु ने शिष्यों को उन लोगों के रूप में परिभाषित किया जो परमेश्वर के वचन को सुनते और उस पर चलते हैं, जिसका अर्थ है कि कलीसियाओं को ऐसे मार्ग बनाने चाहिए जो लोगों को अभ्यास की हुई आज्ञाकारिता में ले जाएँ बहुत सी मंडलियाँ परिपक्वता को उपस्थिति, सहभागिता, या ज्ञान से मापती हैं, फिर भी यीशु इसे पश्चात्ताप, क्षमा, और उनके आदेशों के अधीनता में व्यक्त निष्ठा से मापते हैं इसके लिए अगुवों को ऐसे ढाँचे बनाने होंगे जिनमें जवाबदेह संबंध, स्पष्ट शिक्षा, और वास्तविक अनुप्रयोग सम्मिलित हों, क्योंकि चेलाई गठन है, सूचना नहीं (लूका 8:21, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टरो को अपेक्षाएँ स्पष्ट और पास्टोरल रूप से निर्धारित करनी चाहिए, लोगों को दैनिक पवित्रशास्त्र-पाठ, निरंतर प्रार्थना, पाप की स्वीकारोक्ति, और ठोस दया के कार्यों के लिए बुलाते हुए ऐसे मार्गदर्शन ढाँचे विकसित करें जहाँ परिपक्व विश्वासी नए विश्वासियों के साथ चलें, नियंत्रक के रूप में नहीं, बल्कि मसीह के अधीन धैर्यपूर्ण मार्गदर्शक के रूप में सिखाएँ कि आज्ञाकारिता पूर्णतावाद नहीं, बल्कि ईमानदार समर्पण है जो पश्चात्ताप को वर्तमान रखता है। जब कलीसिया आज्ञाकारिता को सामान्य बनाती है, तब वह पाखंड के प्रति कम संवेदनशील और मिशन के लिए अधिक सक्षम बन जाती है, क्योंकि शिष्य भरोसेमंद गवाह बनते हैं। यीशु अनुसरण करने वाले शिष्य बनाते हैं, और कलीसिया तब सर्वोत्तम सेवा करती है जब वह दर्शकों से संतुष्ट होने से इंकार करती है।

**ऐसी महँगी चेलाई सिखाएँ जो साहस और आशा उत्पन्न करे**

यीशु ने चेलाई की कीमत सिखाई क्योंकि वह अपने लोगों से इतना प्रेम करते हैं कि उन्हें दबाव के लिए तैयार करते हैं बहुत से विश्वासी कठिनाई से चकित हो जाते हैं क्योंकि उन्हें सहजता का वादा किया गया था, फिर भी यीशु एक क्रूस-आकार के मार्ग का वादा करते हैं जो सच्चे जीवन की ओर ले जाता है इसलिए कलीसियाओं को कीमत को ईमानदारी और पास्टोरल संवेदनशीलता के साथ सिखाना चाहिए, विश्वासियों को पीड़ा को निष्ठा का भाग समझने में सहायता करते हुए, न कि परमेश्वर की अनुपस्थिति का प्रमाण। यीशु शिष्यों को स्वयं का इन्कार करने के लिए बुलाते हैं क्योंकि वह उन्हें ऐसी मूर्तियों से स्वतंत्रता की ओर ले जा रहे हैं जो उद्धार नहीं कर सकतीं (मरकुस 8:34, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को कीमत के साथ प्रतिज्ञा भी प्रचार करनी चाहिए, यह दिखाते हुए कि समर्पण खाली हानि की ओर नहीं, बल्कि गहरे आनंद की ओर ले जाता है विश्वासियों को संबंधों, नैतिकता, और मसीह की सार्वजनिक अंगीकार में आज्ञाकारिता की कीमत गिनना सिखाएँ, और फिर उन्हें प्रार्थना, समुदाय के समर्थन, और पवित्रशास्त्र में जड़ी आशा के द्वारा धीरज धरने के लिए प्रशिक्षित करें। इसमें परिवारों को सहकर्मी दबाव और सांस्कृतिक शत्रुता के विषय में स्पष्टता और साहस से बातचीत करने के लिए सुसज्जित करना भी सम्मिलित है। महँगी चेलाई भय उत्पन्न नहीं करनी चाहिए, बल्कि स्थिरता उत्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि शिष्य जानता है कि राजा क्या माँगते हैं और राजा की भलाई पर भरोसा करता है। जब कलीसियाएँ कीमत को विश्वासयोभ्यता से सिखाती हैं, तब विश्वासी दबाव के अधीन कम नाजुक और अधिक विश्वासयोभ्य बनते हैं।

## गवाहों का गठन करके मिशन को मसीह-केंद्रित बनाए रखें, कलाकारों का नहीं

यीशु शिष्यों को आत्मा-सामर्थित गवाहों के रूप में भेजते हैं, जिसका अर्थ है कि मिशन को धार्मिक प्रदर्शन के बजाय मसीह की गवाही में जड़ा रहना चाहिए। आधुनिक कलीसियाएँ कभी कभी मिशन को विपणन या सुसमाचार से अलग सक्रियता के साथ भ्रमित कर देती हैं, फिर भी यीशु का आदेश ऐसे शिष्य बनाने का है जो उनके आदेशों की आज्ञा मानें और उनके शासन की घोषणा करें। गवाही बोली हुई भी होती है और जी हुई भी, क्योंकि प्रेम, एकता, और सेवकाई संदेश को विश्वसनीय बनाते हैं। मिशन तब विकृत हो जाता है जब वह निष्ठा के बजाय छवि से संचालित होता है (प्रेरितों के काम 1:8, एनआईवी)।

यीशु-केंद्रित अनुप्रयोग का अर्थ है कि पास्टर्स को विश्वासियों को सुसमाचार को स्पष्ट रूप से साझा करना, अपनी कहानी ईमानदारी से बताना, और पड़ोसियों की ऐसी ठोस दया से सेवा करना सिखाना चाहिए जो मसीह को प्रतिबिंबित करे। कलीसिया को अस्वीकृति की अपेक्षा कड़वाहट के बिना करने और बचाव के बजाय नम्रता से उत्तर देने के लिए सुसज्जित करें। आत्मा पर प्रार्थनापूर्ण निर्भरता को प्रोत्साहित करें क्योंकि निर्भीकता एक व्यक्तित्व गुण नहीं, बल्कि वरदान है। ध्यान यीशु पर रखें, उनके अधिकार, उनके क्रूस, और उनके पुनरुत्थान पर, क्योंकि मिशन उनका नाम प्रसिद्ध करने के विषय में है, किसी ब्रांड को बनाने के विषय में नहीं। जब विश्वासी कलाकारों के बजाय गवाहों के रूप में जीते हैं, तब मिशन टिकाऊ बन जाता है, क्योंकि वह सार्वजनिक प्रतिक्रिया में नहीं, बल्कि राजा की उपस्थिति में स्थिर होता है।

## निष्कर्ष

यीशु चेलाई को पूरे हृदय की निष्ठा के रूप में सिखाते हैं उस राजा के प्रति जो अपने लोगों को पिता के शासन के अधीन बुलाता, गढ़ता, और भेजता है वह शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से उनका अनुसरण करने, निरंतर उनसे सीखने, और हर प्रतिस्पर्धी निष्ठा से ऊपर उनसे प्रेम करने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि राज्य आंशिक शर्तों पर ग्रहण नहीं किया जा सकता। वह कीमत को भी ईमानदारी से नाम देते हैं, अपने अनुयायियों को उस क्रूस-आकार के मार्ग पर बुलाते हुए जहाँ आत्म-शासन मरता है और सच्चा जीवन पाया जाता है। यह कीमत संबंधित होने का मूल्य नहीं, बल्कि संबंधित होने का प्रमाण है, क्योंकि जो मसीह को मूल्यवान मानते हैं वे उसके साथ प्रतिस्पर्धा करने वाली हर वस्तु को छोड़ देंगे इसलिए चेलाई पश्चाताप, आज्ञाकारिता, और भरोसे का जीवन है जो यीशु के अधिकार में जड़ा और उनके अनुग्रह से बनाए रखा गया है।

यीशु चेलाई को मिशन से भी जोड़ते हैं क्योंकि बदले हुए लोग ही वे माध्यम हैं जिनके द्वारा राज्य की गवाही संसार में फैलती है वह नम्रता, क्षमा, प्रार्थनापूर्ण निर्भरता, और सेवकाई के द्वारा राज्य का चरित्र गढ़ते हैं, और फिर शिष्यों को सुसमाचार की घोषणा करने, दया को देहधारण करने, और सब राष्ट्रों के शिष्य बनाने के लिए नियुक्त करते हैं। मिशन मानवीय आत्म-विश्वास से नहीं, बल्कि मसीह के अधिकार और आत्मा की सामर्थित उपस्थिति से संचालित होता है। कलीसिया तब विश्वासयोग्य बनती है जब वह दर्शक मसीहियत से इंकार करती है और ऐसी आज्ञाकारिता को अपनाती है जो दृश्य, धैर्यपूर्ण, और स्थायी हो। यीशु अपने लोगों को अनुसरण करने, समर्पण करने, और जाने के लिए

बुलाते हैं, क्योंकि जो राजा उद्धार करता है वही राजा भेजता भी है।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. आप किस क्षेत्र में यीशु का अनुसरण उनके अधिकार के प्रति निष्ठा के बजाय केवल एक पसंद के रूप में देखने के लिए सबसे अधिक प्रलोभित होते हैं?
2. आज्ञाकारिता का वह कौन सा ठोस “मूल्य” है जिसका सामना करने से आप बचते रहे हैं, जबकि मसीह का बुलावा आपसे साहसपूर्वक उसका सामना करने की माँग करता है?
3. राज्य के चरित्र का कौन सा क्षेत्र, नम्रता, क्षमा, प्रार्थना, या सेवकाई, इस समय आपके जीवन में जानबूझकर गठन की सबसे अधिक आवश्यकता रखता है?
4. आपकी कलीसिया के चेलाई मार्गों को कैसे बदलने की आवश्यकता हो सकती है ताकि परिपक्वता का सामान्य माप आज्ञाकारिता बन सके?
5. इस सप्ताह आप शब्दों की स्पष्टता और ठोस प्रेम दोनों के द्वारा मसीह-केंद्रित गवाही किस एक विशिष्ट तरीके से दे सकते हैं?

# अध्याय 9: अंतिम सप्ताह

## परिचय

यीशु ने अपने अंतिम सप्ताह में जानबूझकर प्रवेश किया, परिस्थितियों के शिकार के रूप में नहीं, बल्कि आज्ञाकारी पुत्र के रूप में जो पिता की इच्छा के अनुसार क्रूस की ओर स्थिरता से बढ़ा। सुसमाचार इस सप्ताह को उनकी सार्वजनिक सेवकाई के चरम के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ उनका अधिकार निर्विवाद हो जाता है और उनकी पहचान से बचना असंभव हो जाता है। यरुशलेम की ओर जाने वाले मार्ग से लेकर ऊपर के कमरे की मेज़ तक हर कदम दैवी उद्देश्य का भार वहन करता है। यीशु केवल शत्रुता पर प्रतिक्रिया नहीं कर रहे, वह पाप का सामना कर रहे हैं, झूठी आराधना को उजागर कर रहे हैं, और अपने शिष्यों को अपनी राजसी सत्ता के अधीन वाचा-केंद्रित विश्वासयोग्यता में इकट्ठा कर रहे हैं।

यह सप्ताह यह भी प्रकट करता है कि यीशु की करुणा और पवित्रता कभी अलग नहीं होतीं। वह सार्वजनिक प्रशंसा स्वीकार करते हैं, फिर भी कठोर हुए हृदयों पर रोते हैं। वह मंदिर में प्रवेश करते हैं, धार्मिक गतिविधि की प्रशंसा करने के लिए नहीं, बल्कि आराधना को शुद्ध करने और भ्रष्टाचार का सामना करने के लिए। वह स्पष्टता के साथ शिक्षा देते हैं, बिना समझौते के संघर्ष का सामना करते हैं, और अपने शिष्यों को अपनी मृत्यु के अर्थ के लिए तैयार करते हैं। यदि पहले अध्यायों में चेलाई सैद्धांतिक लगी हो, तो यहाँ वह तीव्र रूप से ठोस हो जाती है, क्योंकि यीशु उस बलिदान की ओर बढ़ते हैं जो उद्धार को सुरक्षित करता है। अंतिम सप्ताह केवल

घटनाओं की श्रृंखला नहीं है, यह राजा द्वारा अपने मिशन की पूर्ति है।

## अनुभाग 1: विजयी प्रवेश और मसीहाई घोषणा

यीशु ने यरूशलेम में इस प्रकार प्रवेश किया कि उनकी मसीहाई पहचान सार्वजनिक हो गई, फिर भी उन्होंने ऐसा नम्रता के साथ किया जिसने राजनीतिक अपेक्षाओं को चुनौती दी। वह शक्ति के लिए तालियाँ चाहने वाले विजेता की तरह नहीं आए, क्योंकि उनका राजत्व पिता की आज्ञाकारिता और पापियों के प्रति दया के द्वारा प्रकट होता है। विजयी प्रवेश एक साथ प्रकाशन भी है और परीक्षा भी, क्योंकि यह उजागर करता है कि लोग मसीहा से क्या अपेक्षा करते हैं और जब यीशु उनकी पसंदीदा कहानी में फिट होने से इनकार करते हैं तो वे क्या करेंगे। राजा प्रशंसा स्वीकार करता है, फिर भी वह गलतफहमी को भी उजागर करता है, क्योंकि भीड़ का उत्साह स्वतः वाचा की निष्ठा नहीं बन जाता।

यीशु का प्रवेश आगे आने वाले संघर्ष का स्वर भी निर्धारित करता है, क्योंकि यह वैध अधिकार का क्रियात्मक दावा है। वह उस नगर में आते हैं जहाँ भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार किया गया और जहाँ मंदिर इस्राएल की आराधना का केंद्र था, और उनकी उपस्थिति निर्णय की माँग करती है। क्या यरूशलेम राजा को वैसे स्वीकार करेगा जैसे वह हैं, या केवल वैसे जैसे वे उन्हें चाहते हैं। इसलिए विजयी प्रवेश एक साथ अनुग्रह और चेतावनी का क्षण है, क्योंकि यीशु स्वयं को खुले रूप में प्रस्तुत करते हैं, फिर भी वह किसी और के एजेंडे का प्रतीक बनने से इंकार करते हैं।

## जानबूझकर किया गया प्रवेश और वह राजा जिसने समय चुना

यीशु ने अपने प्रवेश की व्यवस्था उद्देश्यपूर्ण ढंग से की, यह दिखाते हुए कि उनका अंतिम सप्ताह आकस्मिक नहीं है। उन्होंने शिष्यों को गदहे के बच्चे को लाने भेजा, विवरणों का निर्देशन किया, और फिर इस प्रकार यरूशलेम में सवारी की कि सांसारिक प्रदर्शन के बिना राजसी पहचान प्रकट हो गई। मत्ती का विवरण दिखाता है कि भीड़ ने अपने वस्त्र और डालियाँ बिछाईं और यीशु के प्रवेश पर प्रशंसा की, यह प्रकट करते हुए कि सार्वजनिक रूप से कुछ महान घट रहा था (मत्ती 21:1-11, एनआईवी)। यीशु अब नहीं छिपते, क्योंकि पिता की योजना के अधीन खुले मसीहाई उद्घोष का समय आ गया है।

यह जानबूझकर किया गया प्रवेश शिष्यों को मानवीय समय-सारिणी के बजाय मसीह की बुद्धि पर भरोसा करना सिखाता है। पास्ट्रों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि यीशु न दबाव से जल्दबाज़ी करते हैं और न भय से विलंब करते हैं, क्योंकि उनकी आज्ञाकारिता स्थिर और उद्देश्यपूर्ण है। राजा अपने प्रकाशन का समय, तरीका, और अर्थ स्वयं चुनते हैं, और यह उन शिष्यों को सुधारना चाहिए जो तात्कालिकता को विश्वासयोग्यता समझते हैं। यीशु प्रभु के रूप में प्रवेश करते हैं, फिर भी नम्रता के साथ, यह प्रमाणित करते हुए कि दैवी अधिकार को वास्तविक होने के लिए तमाशे की आवश्यकता नहीं। प्रश्न यह नहीं है कि यीशु सार्वजनिक सम्मान के योग्य हैं या नहीं, वह हैं, बल्कि यह है कि क्या हम उन्हें उनकी शर्तों पर सम्मान देंगे या अपनी शर्तों पर।

## प्रशंसा, अपेक्षा, और उथली होशना का खतरा

यीशु ने भीड़ की पुकार को शांति से स्वीकार किया, फिर भी विजयी जयकार यह भी प्रकट करती है कि जब अपेक्षाएँ गलत होती हैं तो धार्मिक उत्साह कितनी जल्दी निराशा में बदल सकता है। 'होशना' शब्द उद्धार की विनती को वहन करता था, और भीड़ का आनंद दिखाता है कि वे छुटकारे की आशा कर रहे थे, फिर भी कई लोग आत्मिक उद्धार से अधिक राजनीतिक विजय की कल्पना कर रहे थे। लूका लिखता है कि शिष्य ऊँचे स्वर से परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे, और फरीसी यीशु से उन्हें डाँटने की माँग कर रहे थे, तब यीशु ने जोर देकर कहा कि उस घड़ी में प्रशंसा उचित है (लूका 19:37-40, एनआईवी)। राजा वैध सम्मान स्वीकार करता है, पर वह भीड़ की अस्थिर स्वीकृति को भी भली-भाँति जानता है।

यह क्षण कलीसिया को चेतावनी देता है कि वह ऊँची आवाज़ को निष्ठा और उत्साह को आज्ञाकारिता के साथ न गडगड करे। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि आराधना यीशु कौन हैं और वह क्या करने आए हैं इस सत्य से जुड़ी होनी चाहिए, क्योंकि उथली प्रशंसा तब ढह जाती है जब मसीह शत्रुओं के बजाय पाप का सामना करते हैं। भीड़ ने मसीहा की कल्पना का उत्सव मनाया, पर यीशु परिस्थितियों से अधिक हृदयों का सामना करने आए थे। सच्ची चेलाई यीशु के राजत्व को तब भी स्वीकार करती है जब वह प्रिय आशाओं को बाधित करता है, क्योंकि राजा का मिशन हमारी तात्कालिक राहत से कहीं गहरा है। यीशु होशना के योग्य हैं, पर होशना को समर्पण में परिवर्तित होना चाहिए।

**पूरी हुई भविष्यवाणी और मसीहाई राजा की नम्रता**

यीशु का मदहे पर सवार होना भविष्यवाणी की पूर्ति था और ऐसा राजत्व घोषित करता था जो भय और दबाव से नहीं, बल्कि नम्रता और शांति से चिह्नित है। मती स्पष्ट रूप से इस प्रवेश को भविष्यवाणी से जोड़ता है, यह जोर देते हुए कि यीशु राजा के रूप में आते हैं, कोमल और मदहे पर सवार, जिससे उनका अधिकार प्रभुत्वशाली के बजाय पवित्र और सुलभ रूप में प्रकट होता है (मती 21:4-5, एनआईवी)। यह कमजोरी नहीं है, यह आज्ञाकारी पुत्र की सामर्थ्य है जो पिता की इच्छा से अलग महिमा हथियाने से इंकार करता है।

यह पूर्ति शिष्यों को पवित्रशास्त्र को उस कहानी के रूप में पढ़ना सिखाती है जो यीशु की व्याख्या करती है, न कि असंबद्ध संदर्भों के संग्रह के रूप में। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि यीशु परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को ऐसे तरीकों से पूरा करते हैं जो मानवीय घमंड को चुनौती देते हैं, क्योंकि हम अक्सर ऐसी शक्ति चाहते हैं जो हमें प्रसन्न करे, न कि ऐसी जो हमें बचाए। बादहा विजयवाद के लिए ताड़ना है, क्योंकि यीशु की विजय दुःखभरे प्रेम के द्वारा आएगी। जब कलीसिया मसीह की नम्रता को अपनाती है, तो वह सांसारिक प्रभुत्व से कम प्रभावित और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के प्रति अधिक प्रतिबद्ध हो जाती है। यीशु प्रतिज्ञात राजा हैं, और उनकी कोमलता कोई नरम विकल्प नहीं, बल्कि उद्धार का पवित्र स्वरूप है।

## यरुशलेम पर आँसू और चेतावनी देने वाली करुणा

यीशु यरुशलेम पर रोए क्योंकि उनकी करुणा भावुकता नहीं, बल्कि परमेश्वर की शांति के प्रति कठोर प्रतिरोध पर सच्चा शोक है। लूका लिखता है कि यीशु नगर के निकट आए, उसे देखा, और रो पड़े, क्योंकि उन्होंने यह नहीं पहचाना कि

वया उन्हें शांति देगा, और उन्होंने आने वाले न्याय और विनाश की चेतावनी दी (लूका 19:41-44, एनआईवी) राजा न्याय की संभावना पर आनंदित नहीं होता, क्योंकि उसका हृदय अस्वीकार की त्रासदी से व्यथित होता है, फिर भी वह परिणामों के विषय में स्पष्ट बोलता है।

यह क्षण परिपक्व चेलाई का निर्माण करता है यह सिखाकर कि प्रेम में चेतावनी सम्मिलित होती है प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे उस झूठी करुणा को अस्वीकार करें जो खतरे का नाम लेने से इंकार करती है, क्योंकि यीशु के आँसुओं ने उनके सत्य को मौन नहीं किया। साथ ही, चेतावनी कभी भी शोक से अलग नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यीशु एक दूरस्थ आलोचक के रूप में नहीं, बल्कि पश्चाताप की लालसा रखने वाले प्रभु के रूप में चेतावनी देते हैं। कलीसिया को आत्मिक अंधेपन का उपहास नहीं, बल्कि उस पर शोक करना और कठोर हृदयों के लिए प्रार्थना करना सीखना चाहिए। यीशु के आँसू ऐसे राजा को दिखाते हैं जिसकी पवित्रता करुणा को रद्द नहीं करती और जिसकी करुणा पवित्रता को रद्द नहीं करती।

## **सार्वजनिक दावा और वह विभाजन जिसे यीशु ने जानबूझकर उत्पन्न किया**

यीशु के प्रवेश ने विभाजन उत्पन्न किया क्योंकि उनके प्रति सार्वजनिक निष्ठा मौजूदा सत्ता संरचनाओं का सामना करती है और छिपी हुई निष्ठाओं को उजागर करती है। यह लिखता है कि लाजर के चिन्ह के कारण भीड़ एकत्र हुई और गवाही दी, और धार्मिक अगुवों ने भय, गणना, और शत्रुता के साथ प्रतिक्रिया दी, यह प्रकट करते हुए कि यीशु का सार्वजनिक सम्मान उनके नियंत्रण के लिए खतरा था

(यूहन्ना 12:12-19, एनआईवी) इसलिए विजयी प्रवेश कोई तटस्थ उत्सव नहीं, बल्कि राजा के वैध अधिकार और आत्मशासन को पसंद करने वाली मानवीय प्रणालियों के बीच टकराव है।

यह विभाजन कलीसिया को यह मानने से रोकता है कि यीशु के विषय में स्पष्टता हमेशा सहमति उत्पन्न करेगी। पास्ट्रों को विश्वासियों को इस वास्तविकता के लिए तैयार करना चाहिए कि यीशु का अधिकार उन लोगों को अस्थिर करता है जो धर्म, प्रतिष्ठा, या परिणामों को नियंत्रित करने में निवेशित हैं प्रवेश दिखाता है कि सुसमाचार केवल सांतवना देने वाला नहीं, बल्कि विघटनकारी भी है, क्योंकि वह ऐसे प्रभु की घोषणा करता है जो सब कुछ दावा करता है फिर भी यह विघटन दया है, क्योंकि यह निर्णयों को प्रकाश में लाता है जहाँ पश्चाताप हो सकता है यीशु का सार्वजनिक दावा अहंकार नहीं, बल्कि सत्य है, और परिपक्व चेलाई तब आरंभ होती है जब लोग यीशु को सुरक्षित रूप से सीमित रखने का प्रयास छोड़ देते हैं।

## अनुभाग 2: मंदिर की शुद्धि

यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया क्योंकि वह आराधना के वैध प्रभु हैं, और वह परमेश्वर के घर को शोषण, राष्ट्रवाद, या धार्मिक प्रदर्शन का उपकरण बनने नहीं देंगे यह कोई क्षणिक क्रोध नहीं, बल्कि भविष्यवाणीपूर्ण न्याय है जिसे उस राजा ने क्रियान्वित किया जो पिता की महिमा से प्रेम करता है और उन लोगों से प्रेम करता है जिन्हें भ्रष्ट प्रणालियाँ हानि पहुँचा रही थीं मंदिर परमेश्वर की उपस्थिति और दया का चिन्ह होना था, फिर भी यीशु ने उसका बाज़ार और नियंत्रण के स्थल में बदल जाना उजागर किया यहाँ उनका अधिकार निर्विवाद है

क्योंकि वह आराधना को भीतर से सुधारने के अधिकार के साथ कार्य करते हैं।

यीशु की शुद्धि संघर्ष को भी तीव्र करती है क्योंकि यह उनके विरोध के नैतिक केंद्र को उजागर करती है। धार्मिक अगुवे बहस और हल्के व्यवधान को सह सकते थे, पर यीशु ने लाभ, स्थिति, और प्रभाव पर प्रहार किया, और इसने उन संरचनाओं को खतरे में डाल दिया जिन पर वे निर्भर थे। फिर भी यीशु का उत्साह केवल नकारात्मक नहीं है, क्योंकि शुद्धि का लक्ष्य पुनर्स्थापन है, प्रार्थना, विश्वास, और किनारे किए गए लोगों के स्वागत के लिए फिर से स्थान बनाना। कलीसिया को इस क्षण को चेतावनी और गठन दोनों के रूप में ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि मसीह आज भी ऐसी आराधना की परवाह करते हैं जो सत्य, पवित्र, और दयालु हो, न कि सुविधा और व्यापार से आकार पाई हुई।

## पिता के घर के लिए उत्साह और आराधना को शुद्ध करने का अधिकार

यीशु मंदिर के आँगनों में गए और खरीदने-बेचने वालों को बाहर निकाल दिया, यह दिखाते हुए कि उनके पास भ्रष्ट आराधना का न्याय करने का अधिकार है। मरकुस लिखता है कि यीशु ने मेज़ें उलट दीं और लोगों को आँगनों से सामान ले जाने से रोका, यह दिखाते हुए कि उन्होंने मंदिर को पवित्र स्थान माना, न कि सार्वजनिक रास्ता या वित्तीय मशीन (मरकुस 11:15-17, एनआईवी)। उनके कार्य ने घोषित किया कि आराधना पिता की है और उसे लाभ के उपकरण में बदलने पर दैवी सामना होता है।

यह उत्साह कलीसिया को सिखाता है कि आराधना केवल शैली की पसंद नहीं, बल्कि पवित्रता और सत्य का विषय है। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि यीशु हर उस बात का सामना करते हैं जो भक्ति को हेरफेर में बदल देती है, चाहे वह वित्तीय शोषण हो, आत्मिक दिखावा हो, या ज़रूरतमंदों का बहिष्कार। उत्साह मसीह-सदृश होना चाहिए, न कि प्रदर्शनकारी क्रोध, क्योंकि यीशु का उद्देश्य शुद्धि है, निजी भड़ास नहीं। शुद्धि यह भी स्मरण दिलाती है कि जब सेवकाई को भण्डारीपन के बजाय स्वामित्व समझा जाने लगता है, तब पवित्र स्थान और अभ्यास भ्रष्ट हो सकते हैं। यीशु आराधना को शुद्ध करते हैं क्योंकि वह प्रभु हैं, और प्रभु अपने घर को मूर्तिपूजा के साथ साझा नहीं करते।

## सब राष्ट्रों के लिए प्रार्थना और परमेश्वर के स्वागत का हृदय

यीशु ने पवित्रशास्त्र उद्धृत किया यह प्रकट करने के लिए कि मंदिर क्या होना था, प्रार्थना का घर, जिसका अर्थ है परमेश्वर के साथ संगति, न कि लेन-देन वाला धर्म। मरकुस में यीशु यह घोषित करते हैं कि यह घर सब राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर होना चाहिए, यह उजागर करते हुए कि भ्रष्टाचार ने केवल आराधकों को आर्थिक रूप से हानि पहुँचाई, बल्कि मंदिर के उस मिशन को भी कमजोर किया जहाँ राष्ट्र इस्राएल के परमेश्वर से मिल सकें (मरकुस 11:17, एनआईवी)। इसलिए यीशु का कार्य उन लोगों की आत्मिक पहुँच की रक्षा करता है जिन्हें अक्सर किनारे कर दिया जाता था।

यह केंद्रबिंदु चेलाई को सिखाता है कि परमेश्वर की पवित्रता कभी भी उसके स्वागत के विरोध में नहीं होती, क्योंकि पवित्र आराधना में पश्चातापी खोजियों के लिए स्थान बनाना सम्मिलित है। पास्टरों को कलीसियाओं की सहायता करनी चाहिए कि वे जाँचें कि कहीं व्यवहार, दृष्टिकोण, या प्राथमिकताएँ चुपचाप उन लोगों को बाहर तो नहीं कर रही जिन्हें दया की आवश्यकता है, चाहे वह पक्षपात, वर्गवाद, या अंदरूनी संस्कृति के द्वारा हो। मंदिर के आँगन ऐसे स्थान होने थे जहाँ बाहरी लोग प्रार्थना में निकट आ सकें, और यीशु की शुद्धि दिखाती है कि कलीसिया कितनी आसानी से मिशन के बजाय आराम की रक्षा कर सकती है। यीशु प्रार्थना की रक्षा करते हैं क्योंकि प्रार्थना निर्भरता है, और निर्भरता उस लोगों की मुद्रा है जो जानते हैं कि परमेश्वर राजा है। जब प्रार्थना व्यापार से बदल दी जाती है, तब मिशन आत्म-संरक्षण में डूब जाता है, और यीशु इसका सीधे सामना करते हैं।

## **धार्मिक शोषण और लाभ के लिए परमेश्वर का उपयोग करने का पाप**

यीशु ने भ्रष्ट गतिविधि को “डाकुओं की माँद” कहा, यह प्रकट करते हुए कि समस्या केवल धार्मिक स्थान में व्यापार नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता की आड़ में किया गया शोषण था। मत्ती लिखता है कि यीशु ने बेचने और खरीदने वालों को बाहर निकाला और घर को प्रार्थना का स्थान कहा, न कि डाकुओं की माँद, यह उजागर करते हुए कि धार्मिक भाषा लालच और नियंत्रण को छिपाने के लिए उपयोग की जा सकती है (मत्ती 21:12-13, एनआईवी)। यीशु इसका सामना करते हैं क्योंकि यह आत्माओं को हानि पहुँचाता है, परमेश्वर के चरित्र को विकृत करता है, और लोगों को आराधना को लेन-देन समझने के लिए प्रशिक्षित करता है।

यह चेतावनी आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि धार्मिक शोषण आधुनिक रूप ले सकता है, जिनमें भय, प्रतिष्ठा, और आर्थिक दबाव के द्वारा हेरफेर सम्मिलित है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि उदारता आराधना है, पर दबाव डालना दुरुपयोग है, और यीशु उन प्रणालियों को सहन नहीं करते जो कमजोरों पर बोझ डालकर लाभ कमाती हैं। श्रुद्धि अगुवों को उद्देश्यों की जाँच करने के लिए भी बुलाती है, क्योंकि सेवकाई के लाभों से प्रेम करना सेवकाई की विश्वासयोग्यता से अधिक आसान हो सकता है। यीशु का अधिकार लालच का सामना करता है क्योंकि वह उससे पीड़ित लोगों से प्रेम करते हैं और क्योंकि आराधना के खरीदे और बेचे जाने पर पिता की महिमा अपमानित होती है। कलीसिया को पारदर्शी भण्डारीपन और नम्र ईमानदारी का अभ्यास करना सीखना चाहिए, क्योंकि राजा अपने पिता के घर की रक्षा करते हैं।

## मंदिर में चंगाई और श्रुद्धि के बाद पुनः स्थापित दया

यीशु ने मंदिर को शुद्ध इसलिए नहीं किया कि वह खाली हो जाए, बल्कि इसलिए कि उसका सही उद्देश्य पुनः स्थापित हो, और मत्ती लिखता है कि श्रुद्धि के बाद अंधे और लँगड़े मंदिर में उनके पास आए और उन्होंने उन्हें चंगा किया (मत्ती 21:14, एनआईवी)। यह क्रम महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि श्रुद्धि का लक्ष्य निस्संक्रमण नियंत्रण नहीं, बल्कि नवीकृत दया है। यीशु का अधिकार भ्रष्ट करने वाली बातों को हटाता है ताकि जहाँ लोग घायल हैं वहाँ अनुग्रह स्वतंत्र रूप से प्रवाहित हो सके।

यह प्रतिरूप कलीसिया को सिखाता है कि सुधार केवल गलत बातों को हटाने के विषय में नहीं, बल्कि ज़रूरतमंदों के बीच मसीह की सेवकाई को पुनः स्थापित करने के विषय में

है पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि पवित्रता और करुणा साथ-साथ चलती हैं, क्योंकि जब आराधना शुद्ध होती है, तब दया अधिक दृश्यमान और अधिक विश्वसनीय हो जाती है बहुत सी कलीसियाएँ आलोचना और सुधार में कुशल हो जाती हैं, पर घायल लोगों को चंगा करने में धीमी पड़ जाती हैं, फिर भी यीशु ने शुद्ध किया और फिर चंगा किया, यह परमेश्वर का हृदय दिखाता है। यह उन अगुवों को भी चुनौती देता है जो अव्यवस्थित दया के बजाय प्रभावशाली धार्मिक गतिविधि को पसंद करते हैं, क्योंकि अंधे और लँगड़े मंच-संचालित आराधक नहीं, बल्कि ज़रूरतमंद लोग होते हैं। यीशु आराधना को पुनः स्थापित करते हैं ताकि पुनः स्थापन हो सके, और उनका राज्य हमेशा टूटे हुआओं की ओर बढ़ता है।

## अधिकार पर प्रश्न और अंतिम विरोध की शुरुआत

यीशु की शुद्धि ने विरोध को तीव्र किया क्योंकि इसने अगुवों को उनके अधिकार का खुलकर सामना करने के लिए बाध्य किया लूका लिखता है कि धार्मिक अगुवों ने पूछा कि यीशु किस अधिकार से ये काम कर रहे हैं, और यीशु ने इस प्रकार उत्तर दिया कि उनकी सत्य के अधीन होने की अनिच्छा उजागर हो गई, क्योंकि वे परमेश्वर से अधिक लोगों से डरते थे (लूका 20:1-8, एनआईवी)। भ्रष्टा कभी केवल प्रक्रिया का नहीं था, बल्कि प्रभुत्व का था, क्योंकि यदि यीशु का अधिकार परमेश्वर से था, तो उनका विरोध विद्रोह था।

यह सामना चेलाई को सिखाता है कि मसीह की आज्ञाकारिता उन प्रणालियों से विरोध उत्पन्न करेगी जो नियंत्रण में निवेशित हैं। पास्टरों को विश्वासियों को उन प्रश्नों और आरोपों के लिए तैयार करना चाहिए जो यीशु के

अधिकार से असहजता को छिपाते हैं। अगुवे स्पष्टता इसलिए नहीं खोज रहे थे कि वे आज्ञा मानें, बल्कि इसलिए कि वे चुप करा सकें, और यीशु ने उन्हें हेरफेर की अनुमति देने वाला उत्तर देने से इंकार किया। यह क्षण कलीसिया को भय-प्रेरित नेतृत्व के विरुद्ध भी चेतावनी देता है, क्योंकि प्रभाव खोने का डर लोगों को परमेश्वर के कार्य का विरोध करने तक ले जा सकता है। यीशु का अधिकार राजनीति के द्वारा तय नहीं होता, वह पश्चात्ताप के द्वारा ग्रहण किया जाता है, और अंतिम सप्ताह यह उजागर करता है कि कौन पश्चात्ताप करेगा और कौन कठोर होगा।

## अनुभाग 3: शिक्षा, संघर्ष, और अंतिम भोज

यीशु ने अंतिम सप्ताह में सार्वजनिक और निजी दोनों रूपों में तीव्र स्पष्टता के साथ शिक्षा दी, क्योंकि परोक्ष सामना करने का समय बीत चुका था। उन्होंने मंदिर के आँगनों में शिक्षा दी, चुनौतियों का उत्तर दिया, पाखंड को उजागर किया, और आने वाले न्याय की घोषणा की, साथ ही अपने शिष्यों को यह समझाने के लिए तैयार किया कि उनकी मृत्यु का क्या अर्थ होगा। यह यीशु का कठोर होना नहीं, बल्कि उनका स्पष्ट होना है, क्योंकि प्रेम तब सत्य बोलता है जब मौन रखना आसान होता है। इसलिए बढ़ता हुआ संघर्ष कोई दुःखद गलतफहमी नहीं, बल्कि परमेश्वर के शासन और मानवीय प्रतिरोध के बीच टकराव है, राजा के अधिकार और अगुवों के आत्म-शासन के आग्रह के बीच।

यीशु अंतिम भोज की ओर भी बढ़े, जो वह अंतरंग स्थान था जहाँ उनके शिष्य तब स्थिर किए जाते जब अराजकता

फैलती उन्होंने केवल जानकारी नहीं दी, बल्कि जो होने वाला था उसके लिए व्याख्यात्मक अर्थ दिया, क्योंकि चेलाई के लिए क्रूस को राजनीतिक निष्पादन के बजाय परमेश्वर की उद्धारकारी योजना के रूप में समझना आवश्यक है। अंतिम भोज शिक्षा और संघर्ष के बीच स्थित है क्योंकि यह दिखाता है कि यीशु की पवित्रता सार्वजनिक पाखंड का सामना करती है जबकि उनकी दया निजी दुर्बलता की चरवाही करती है इस अनुभाग में राजा शिक्षा देते हैं, संघर्ष करते हैं, और फिर अपने लोगों को वाचा की विश्वासयोग्यता के लिए तैयार करने हेतु इकट्ठा करते हैं।

## शिक्षा में अधिकार और पाखंडी धर्म का पर्दाफाश

यीशु ने अधिकार के साथ शिक्षा दी और पाखंड का सामना किया क्योंकि झूठा धर्म परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हुए लोगों को नष्ट करता है मती लिखता है कि यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों पर हाथ कहा, उनके दिखावे के मोह, न्याय, दया, और विश्वासयोग्यता की उपेक्षा, और दूसरों पर बोझ डालकर स्वयं को छूट देने की प्रवृत्ति को उजागर किया (मती 23:23-28, एनआईवी) यह व्यक्तिगत अपमान नहीं, बल्कि भविष्यवाणीपूर्ण न्याय है, क्योंकि यीशु पिता की महिमा से और भ्रमित किए जा रहे लोगों से प्रेम करते हैं।

यह शिक्षा चेलाई का गठन करती है यह चेतावनी देकर कि धार्मिक शद्भावली एक विरोधी हृदय को छिपा सकती है। पास्ट्रों को कलीसियाओं की सहायता करनी चाहिए कि वे जाँचें कि उनके व्यवहार नम्रता और दया उत्पन्न करते हैं या घमंड और कठोरता यीशु का सामना अगुवों को शीघ्र पश्चात्ताप करना भी सिखाता है, क्योंकि नेतृत्व का पाखंड विष

की तरह फैलता है और पूरे समुदायों को प्रदर्शनकारी विश्वास में डाल देता है फिर भी यहाँ यीशु का अधिकार सच्चे शिष्यों को सांत्वना भी देता है, क्योंकि यह प्रमाणित करता है कि राजा छिपी बातों को देखते हैं और हेरफेर को अंतिम शत्रु नहीं देंगे क्लीसिया तब अधिक स्वस्थ होती है जब वह यीशु की चेतावनियों को दया के रूप में ग्रहण करती है, क्योंकि चेतावनी राजा द्वारा अपने लोगों की रक्षा करने का एक तरीका है।

## महानतम आज्ञा और विश्वासयोग्यता का केंद्र प्रेम

यीशु ने प्रेम को परमेश्वर और पड़ोसी के प्रति केंद्रित करके विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता का सार प्रस्तुत किया, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि प्रेम के द्वारा व्यक्त वाचा की निष्ठा है भरकुस लिखता है कि यीशु ने महानतम आज्ञा के रूप में पूरे हृदय, प्राण, मन, और सामर्थ्य से प्रभु से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना बताया, और कहा कि इससे बड़ी कोई आज्ञा नहीं (मरकुस 12:29-31, एनआईवी) यीशु चेलाई को प्रेम पर केंद्रित करते हैं क्योंकि प्रेम यह प्रकट करता है कि हृदय किसकी आराधना करता है।

यह शिक्षा शिष्यों को वैधानिकता और अराजकता दोनों से बचाती है पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि परमेश्वर के प्रति प्रेम अस्पष्ट भावना नहीं, बल्कि पूरे व्यक्ति की निष्ठा है जो प्राथमिकताओं, इच्छाओं, और आज्ञाकारिता को रूपांतरित करती है पड़ोसी के प्रति प्रेम चयनात्मक दया नहीं, बल्कि परमेश्वर-केंद्रित आराधना का ठोस दया, सत्य, और न्याय में बहाव है यीशु का यह सारांश मिशन-रहित धर्म का भी सामना करता है, क्योंकि लोग आंतरिक बहसों में उलझ

सकते हैं और वास्तविक प्रेम की उपेक्षा कर सकते हैं। अंतिम सप्ताह में यीशु स्पष्ट करते हैं कि राज्य धार्मिक प्रतिस्पर्धा के विषय में नहीं, बल्कि परमेश्वर के शासन के द्वारा उत्पन्न प्रेम से चिह्नित लोगों के विषय में है। जब प्रेम केंद्र में होता है, तब आराधना सच्ची और मिशन विश्वसनीय बनता है।

## जैतून पहाड़ी का उपदेश और लौटने वाले राजा के अधीन चौकसी

यीशु ने आने वाले न्याय और चौकसी की आवश्यकता के विषय में शिक्षा दी, शिष्यों को ऐसे समय में विश्वासयोग्य रहने के लिए तैयार करते हुए जब परिस्थितियाँ अस्थिर लगे और विरोध तीव्र हो। मत्ती लिखता है कि यीशु ने चेतावनी दी कि कोई दिन या घड़ी नहीं जानता, और उन्होंने शिष्यों को जागते रहने के लिए बुलाया, अनिश्चितता के बीच तैयारी, धीरज, और विश्वासयोग्य सेवा पर जोर देते हुए (मत्ती 24:42-44, एनआईवी)। यीशु घबराहट नहीं, बल्कि ऐसी गंभीर निष्ठा उत्पन्न कर रहे हैं जो भविष्य को नियंत्रित न कर पाने पर भी स्थिर रहती है।

यह शिक्षा हर पीढ़ी के लिए चेलाई को आकार देती है क्योंकि विश्वासी हमेशा आराम में बह जाने और विश्वासयोग्यता को बाद के लिए टालने के प्रलोभन में रहते हैं। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि चौकसी अनुमान लगाने का जुनून नहीं, बल्कि अनंतता को दृष्टि में रखकर जी गई दैनिक आज्ञाकारिता है। यीशु की चेतावनी उस आत्मिक आलस्य से भी रक्षा करती है जो यह मान लेता है कि पश्चाताप और गंभीरता के लिए हमेशा समय रहेगा। अंतिम सप्ताह दिखाता है कि विरोध तेजी से बढ़ सकता है, और शिष्यों को परिस्थितियों के बजाय मसीह में जड़ित होना चाहिए। राजा अपने लोगों को

तैयार रहने के लिए बुलाते हैं, इसलिए नहीं कि वे समय-रेखा की भविष्यवाणी कर सकें, बल्कि इसलिए कि वे उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा करके आज उसके आदेशों का पालन कर सकें।

## विश्वासघात की तैयारी और टूटी हुई मेज़ का शोक

यीशु अंतिम भोज में यह जानते हुए प्रविष्ट हुए कि मेज़ पर विश्वासघात उपस्थित है, और उन्होंने उसे पवित्र स्पष्टता और संयमित शोक के साथ संबोधित किया। लूका लिखता है कि यीशु ने कहा कि जो उन्हें पकड़वाएगा उसका हाथ उनके साथ मेज़ पर है, और उन्होंने स्वीकार किया कि उनका मार्ग ठहराया गया है, फिर भी उन्होंने विश्वासघाती पर हाथ कहा, यह दिखाते हुए कि दैवी प्रभुसत्ता मानवीय उत्तरदायित्व को मिटाती नहीं (लूका 22:21-22, एनआईवी)। ख्रीशु मानवीय विश्वासघात से घिरे होने पर भी आज्ञाकारी पुत्र बने रहते हैं।

यह क्षण चेलाई का गठन करता है यह सिखाकर कि संबंध टूटने पर भी विश्वासयोग्यता संभव है। प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि विश्वासघात का अर्थ यह नहीं कि यीशु ने नियंत्रण खो दिया है, फिर भी विश्वासघात हृदय को दुखी करता है क्योंकि पाप वास्तविक है और संबंधों का टूटना पीड़ादायक है। ख्रीशु का उदाहरण यह भी सिखाता है कि पाप का सामना करने के लिए क्रूरता आवश्यक नहीं, क्योंकि उन्होंने बिना नाटकीयता के सत्य कहा और व्यक्तिगत अपमान से विचलित हुए बिना भोज के वाचा-उद्देश्य को जारी रखा। कलीसिया को पाप के विषय में गंभीर स्पष्टता और मसीह के मिशन में आगे बढ़ने का करुणामय संकल्प एक साथ रखना सीखना चाहिए। ख्रीशु की मेज़ में दुर्बलता और विफलता सम्मिलित है, फिर भी

उनका उद्देश्य उद्धार ही रहता है, और यह गंभीर भी है और आशावान भी।

## भोजन के द्वारा तैयारी और दुर्बल शिष्यों की चरवाही

यीशु ने मेज़ का उपयोग उन शिष्यों को सुदृढ़ करने के लिए किया जो शीघ्र ही बिखरने वाले थे, यह दिखाते हुए कि चेलाई मानवीय संकल्प से नहीं, बल्कि मसीह की चरवाही से बनी रहती है। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने उस संध्या शिष्यों के पाँव धोए, नम्र सेवा और शुद्धि का क्रियात्मक पाठ देते हुए, और पतरस से कहा कि यदि वह उसे न धोए तो पतरस का उसमें कोई भाग नहीं (यूहन्ना 13:8, एनआईवी)। यीशु उन्हें क्रूस के लिए तैयार कर रहे हैं यह सिखाकर कि संबंधित होने का अर्थ क्या है, उनकी शुद्ध करने वाली अनुग्रह पर नम्र निर्भरता।

यह चरवाही कलीसिया को सिखाती है कि चेलाई में सुधार और सांत्वना दोनों सम्मिलित हैं। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि यीशु अपने अनुयायियों की दुर्बलता जानते हैं, फिर भी उन्हें छोड़ते नहीं, बल्कि उन्हें सिखाते हैं, शुद्ध करते हैं, और अपनी नम्रता का अनुकरण करने के लिए बुलाते हैं। पाँव धोना उस घमंड का भी सामना करता है जो अनुग्रह प्राप्त करने का विरोध करता है, क्योंकि पतरस ने प्रारंभ में इनकार किया, यह दिखाते हुए कि घमंड श्रद्धा का रूप धर सकता है। यीशु जोर देते हैं कि उनकी शुद्धि आवश्यक है, क्योंकि राज्य मसीह की दया से आरंभ होता है, उससे पहले कि वह मसीह-सदृश सेवा बने। अंतिम सप्ताह दिखाता है कि यीशु शिष्यों को सबसे गहरे स्तर पर गढ़ते हैं, क्योंकि मिशन तभी टिकेगा जब हृदय नम्रता से आकार पाए और अनुग्रह से बने रहें।

## अनुभाग 4: अंतिम भोज और नई वाचा

यीशु ने मेज़ पर अपनी मृत्यु का अर्थ स्थापित किया, यह प्रकट करते हुए कि क्रूस केवल राजनीतिक शत्रुता का परिणाम नहीं, बल्कि आज्ञाकारी पुत्र के द्वारा पूरी की गई पिता की उद्धारकारी योजना है। अंतिम भोज वाचात्मक है, अर्थात् वह यीशु के आने वाले बलिदान की व्याख्या परमेश्वर की उद्धारकारी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति और परमेश्वर के शासन के अधीन नवीकृत लोगों की रचना के रूप में करता है। यीशु अपने शिष्यों को अपनी मृत्यु को पराजय के रूप में समझने नहीं देते, क्योंकि वह उन्हें ऐसे शब्द देते हैं जो उनकी समझ को पवित्रशास्त्र और वाचा की वास्तविकता में जड़ित करते हैं। राजा अपने लोगों को उद्धार को परमेश्वर की पहल के रूप में देखने और विश्वास में उसे ग्रहण करने के लिए तैयार करते हैं।

यीशु नई वाचा को व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों रूपों में रूपायित करते हैं। यह व्यक्तिगत है क्योंकि यह मसीह के बलिदान में विश्वास की माँग करती है, और सामुदायिक है क्योंकि यह एक ऐसी प्रजा बनाती है जो एक मेज़ और एक प्रभु साझा करती है। नई वाचा का अर्थ क्षमा, परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापित संबंध, और यीशु के प्रेम और आज्ञाकारिता से आकार पाया हुआ परिवर्तित समुदाय है। अंतिम सप्ताह में यीशु केवल राज्य के विषय में शिक्षा नहीं देते, वह उस वाचात्मक आधार की स्थापना करते हैं जिसके द्वारा राज्य की प्रजा अस्तित्व में है। मेज़ स्मरण, घोषणा, नम्रता, और आज्ञा का स्थान बन जाती है, क्योंकि वह क्रूस की ओर संकेत करती है और राज्य की परिपूर्णता की प्रतीक्षा करती है।

**रोटी दी गई और मसीहा की आत्म-बलिदानी पहचान**

यीशु ने रोटी ली, धन्यवाद दिया, तोड़ी, और शिष्यों को दी, यह संकेत देते हुए कि उनका जीवन उनके लिए दिया जाएगा लूका लिखता है कि यीशु ने कहा, “यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है; मेरी स्मृति में यह किया करो,” जिससे यह भोजन वाचा की स्मृति और बलिदानी अर्थ में स्थिर होता है (लूका 22:19, एनआईवी)। यीशु अपनी मृत्यु की व्याख्या जानबूझकर आत्म-दान के रूप में करते हैं, न कि दुःखद व्यवधान के रूप में, क्योंकि वह वह मसीहा हैं जो पिता की आज्ञाकारिता में अपना जीवन रखते हैं।

यह कार्य चेलाई का गठन करता है यह सिखाकर कि मसीह के साथ संगति हमारी आत्मिक उपलब्धि पर नहीं, बल्कि उनके बलिदान पर आधारित है। पास्टर्स को कलीसिया को प्रभु भोज को श्रद्धापूर्ण कृतज्ञता के साथ ग्रहण करना सिखाना चाहिए, क्योंकि यह घोषणा करता है कि उद्धार मसीह की आज्ञाकारिता द्वारा खरीदा गया उपहार है। टूटी हुई रोटी आत्म-केंद्रित धर्म का भी सामना करती है, क्योंकि यह समुदाय को आत्म-बलिदानी राजा पर केंद्रित करती है और शिष्यों को संबंधों में उसी मुद्रा का अनुकरण करने के लिए बुलाती है। स्मरण केवल भावुकता नहीं, बल्कि वाचा की विश्वासयोग्यता है, क्योंकि यह क्रूस को आराधना और मिशन के केंद्र में रखता है। यीशु स्वयं को वाचा के भोजन की रोटी के रूप में देते हैं, और उनकी प्रजा उनके किए हुए कार्य से जीवित रहती है, न कि अपने प्रमाण से।

## कटोरा और नई वाचा की घोषणा

यीशु ने कटोरा लिया और उसे अपने लहू में नई वाचा घोषित किया, यह प्रकट करते हुए कि उनकी मृत्यु परमेश्वर की प्रतिज्ञात वाचा-नवीनीकरण की शुरुआत करेगी। लूका

लिखता है कि यीशु ने कहा कि यह कटोरा उनके लहू में नई वाचा है, जो शिष्यों के लिए बहाया जाता है, जिससे उद्धार को बलिदान और क्षमा को लहू बहाए जाने से जोड़ा जाता है (लूका 22:20, एनआईवी)। यीशु घोषित करते हैं कि उनका क्रूस वह कार्य पूरा करेगा जिसकी पूर्व वाचात्मक चिन्हों ने प्रतीक्षा की थी, प्रायश्चित्त बलिदान पर आधारित परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापित संबंध।

यह घोषणा कलीसिया के धर्मशास्त्र और आराधना को आकार देती है क्योंकि यह उद्धार को मसीह के लहू पर केंद्रित करती है, अर्थात् मृत्यु में उंडेला गया उनका जीवन जो पापियों को परमेश्वर से मेल कराता है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि वाचा कोई अस्पष्ट आध्यात्मिक अनुभूति नहीं, बल्कि मसीह की आज्ञाकारिता द्वारा पूरी की गई परमेश्वर की बाध्यकारी प्रतिज्ञा है, जो अपनी प्रजा को अपने लिए बनाती है। कटोरा आकस्मिक मसीहियत का भी सामना करता है, क्योंकि यदि वाचा की कीमत मसीह का लहू थी, तो चेलाई को आराम-प्रथम धर्म में नहीं बदला जा सकता फिर भी कटोरा पश्चातापी पापियों को सांत्वना देता है, क्योंकि यह यीशु द्वारा सुरक्षित की गई वास्तविक क्षमा की घोषणा करता है, अस्थायी स्वीकृति की नहीं। नई वाचा मसीह-केंद्रित और लहू से खरीदी हुई है, और कलीसिया को उसी गंभीरता और उसी आनंद के साथ जीना चाहिए।

## एकता का भोजन और वाचात्मक प्रजा का गठन

यीशु ने अनेक शिष्यों को एक रोटी और एक कटोरा दिया, ऐसी वाचात्मक प्रजा बनाते हुए जो स्थिति, पृष्ठभूमि, या निजी पसंद के बजाय उनके चारों ओर एकत्र होती है। पौलुस बाद में इस वास्तविकता पर मनन करते हुए सिखाता है कि

रोटी एक है और विश्वासी एक देह हैं क्योंकि वे एक ही रोटी में सहभागी हैं, यह दिखाते हुए कि मेज़ मसीह में जड़ी एकता को व्यक्त करती है (1 कुरिन्थियों 10:17, एनआईवी) यह एकता भावुक नहीं, बल्कि वाचात्मक है, क्योंकि यह मसीह के उद्धारकारी कार्य में साझा सहभागिता से उत्पन्न होती है।

यह एकता चेलाई का गठन करती है यह बुलाकर कि कलीसिया गुटबाज़ी, घमंड, और अलगाव को अस्वीकार करे। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि सहभागिता केवल निजी भक्ति नहीं, बल्कि सामुदायिक कार्य है जो संबंधित होने, पारस्परिक उत्तरदायित्व, और एक प्रभु के अधीन साझा पहचान की घोषणा करता है एकता भिन्नताओं को मिटाती नहीं, बल्कि उन्हें मसीह की वाचात्मक प्रजा की महान पहचान के अधीन रखती है मेज़ उन विश्वासियों का भी सामना करती है जो आराधना को संबंधों से अलग करते हैं, क्योंकि वाचा में सहभागिता नम्रता, क्षमा, और मेल-मिलाप भरे जीवन की माँग करती है। यीशु मेज़ पर ऐसी प्रजा बनाते हैं जो आने वाले तूफ़ान को सह सके, क्योंकि क्रूस में जड़ी एकीकृत समुदाय उस दबाव को सह सकती है जिसे अलग-थलग व्यक्ति नहीं सह सकते वाचात्मक भोजन शिष्यों को एक राजा के अधीन एक देह के रूप में जीना सिखाता है।

## **विश्वासघाती का नामकरण और वाचात्मक सहभागिता की गंभीरता**

यीशु की मेज़ में सांत्वना के साथ चेतावनी भी सम्मिलित थी, क्योंकि वाचात्मक अनुग्रह पाखंड की अनुमति नहीं देता। मती लिखता है कि यीशु ने कहा कि उनमें से एक उन्हें पकड़वाएगा, और पूछताछ के दौरान यीशु ने इस विश्वासघात को जानबूझकर किया गया कार्य बताया, यह उजागर करते

हुए कि बाहरी अभ्यास में यीशु के निकट होना आंतरिक निष्ठा की गारंटी नहीं है (मत्ती 26:21-25, एनआईवी)। इसलिए मेज़ ऐसा स्थान बन जाती है जहाँ हृदय प्रकट होते हैं, क्योंकि वाचात्मक निकटता बिना वाचात्मक विश्वासयोभ्यता के आत्मिक रूप से खतरनाक है।

यह चेतावनी चेलाई का गठन करती है यह बुलाकर कि विश्वासी ईमानदार आत्म-परीक्षण और सच्चे पश्चाताप में चलें। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि पवित्र अभ्यासों में सहभागिता कभी भी समर्पण का स्थानापन्न नहीं बननी चाहिए, क्योंकि धार्मिक गतिविधि अविश्वास को छिपा सकती है जब हृदय आत्म-शासन से चिपका रहता है। यीशु विश्वासघात का नाम बिना विचलित हुए लेते हैं, यह दिखाते हुए कि दैवी अधिकार तब भी स्थिर रहता है जब मानवीय निष्ठा ढह जाती है। कलीसिया को मेज़ को श्रद्धा के साथ रखना सीखना चाहिए, पश्चातापी पापियों का स्वागत करते हुए और अनुग्रह को आकस्मिक मानने से इंकार करते हुए वाचात्मक सहभागिता एक उपहार है, पर खिलौना नहीं, क्योंकि यह क्रूसित राजा के साथ एकता की घोषणा करती है। यीशु मेज़ पर चेतावनी देते हैं ताकि शिष्य पवित्रता को गंभीरता से लें और दया को सच्चाई से थामे रहें।

## मेज़ से परे आशा और राज्य की भविष्य की पूर्ति

यीशु ने भोजन को भविष्य की आशा से रूपायित किया, यह दिखाते हुए कि दुःख में स्थापित वाचा राज्य की परिपूर्णता में पूरी होगी। मत्ती लिखता है कि यीशु ने कहा कि वह उस समय से दाख का फल फिर न पीएँगे जब तक वह अपने शिष्यों के साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीएँ, जिससे मेज़ वर्तमान बलिदान के साथ-साथ भविष्य की प्रतिज्ञा में भी

जड़ित हो जाती है (मती 26:29, एनआईवी) यीशु क्रूस को आने वाले आनंद से जोड़ते हैं, यह प्रमाणित करते हुए कि दुःख राजा या उनकी प्रजा के लिए अंतिम अध्याय नहीं है।

यह आशा चेलाई का गठन करती है यह सिखाकर कि विश्वासी धीरज के साथ जीएँ, क्योंकि मेज़ पीछे क्रूस की ओर और आगे राज्य की ओर संकेत करती है पास्टरो को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे विश्वासयोग्यता महंगी होने पर निराशा का प्रतिरोध करें, क्योंकि स्वयं यीशु ने अपने दुःख को प्रतिज्ञात भविष्य की संगति से जोड़ा। कलीसिया की आराधना तब अधिक सुदृढ़ होती है जब वह स्मरण रखती है कि सहभागिता केवल स्मृति नहीं, बल्कि आशा की घोषणा और राजा की वापसी की प्रतीक्षा है। यह भविष्य की प्रतिज्ञा मिशन को भी पवित्र करती है, क्योंकि शिष्य केवल शत्रुतापूर्ण संसार में जीवित रहने का प्रयास नहीं कर रहे, बल्कि उस राज्य की ओर जी रहे हैं जहाँ मसीह खुले रूप में राज्य करेंगे। यीशु भोजन को वाचात्मक लंगर के रूप में देते हैं, और आशा को वाचात्मक सामर्थ के रूप में।

## तीन तरीके इस सामग्री को अपने विशेष संदर्भ में लागू करने के

**यीशु के राजत्व को यह परिभाषित करने दें कि आप सार्वजनिक प्रशंसा और दबाव को कैसे संभालते हैं**

यीशु ने विजयी प्रवेश पर प्रशंसा स्वीकार की बिना उसके आदी हुए, और उन्होंने शत्रुता का सामना बिना उसके द्वारा नियंत्रित हुए किया, क्योंकि उनकी पहचान पिता की इच्छा में जड़ी थी। लूका दिखाता है कि भीड़ ने प्रशंसा की और यीशु ने

उस घड़ी में सत्य को मौन नहीं किया, फिर भी उन्होंने तालियों को अपने मिशन की दिशा तय नहीं करने दी (लूका 19:39-40, एनआईवी) राजा स्थिरता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि उनका उद्देश्य आज्ञाकारिता है, प्रतिष्ठा प्रबंधन नहीं।

आपके संदर्भ में इसका अर्थ है कि चेलाई लोगों की बदलती स्वीकृति के बजाय मसीह के अधिकार में जड़ित होनी चाहिए। पास्टरो को अगुवों और मंडलियों को ऐसी विश्वासयोग्यता का अभ्यास सिखाना चाहिए जो उत्सव पर निर्भर न हो, क्योंकि भीड़ की आवाज़ जल्दी बदल सकती है इसका अर्थ यह भी है कि सांस्कृतिक दबाव बढ़ने पर भय-प्रेरित समझौते का प्रतिरोध किया जाए, क्योंकि यीशु ने संघर्ष से बचने के लिए सत्य को नरम नहीं किया जब कलीसिया मसीह-सदृश स्थिरता सीखती है, तब वह एक साथ अधिक साहसी और अधिक करुणामय बन जाती है, क्योंकि वह अपनी छवि की रक्षा नहीं कर रही होती यीशु का राजत्व शिष्यों को नम्रता से सेवा करने, स्पष्टता से बोलने, और आशा के साथ धीरज धरने के लिए स्वतंत्र करता है।

**आराधना को केवल धार्मिक गतिविधि से नहीं, बल्कि प्रार्थना, ईमानदारी, और दया से मापें**

यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया क्योंकि धार्मिक गतिविधि प्रभावशाली हो सकती है जबकि आराधना खोखली हो, और उन्होंने जोर देकर कहा कि परमेश्वर का घर शोषण के बजाय प्रार्थना के लिए है भरकुस लिखता है कि यीशु ने मंदिर को प्रार्थना का घर घोषित किया और भ्रष्ट प्रथाओं का सामना किया, यह उजागर करते हुए कि परमेश्वर आराधना की नैतिक सच्चाई की परवाह करता है, केवल उसकी व्यस्तता

की नहीं (मरकुस 11:17, एनआईवी) यीशु का अधिकार आज भी उन कलीसियाओं का सामना करता है जो गति को विश्वासयोभ्यता समझ लेती हैं।

आपके संदर्भ में, पास्टर्स को जाँचना चाहिए कि क्या सेवकाई की संरचनाएँ प्रार्थनापूर्ण निर्भरता, पारदर्शी भण्डारीपन, और कमजोरों के लिए करुणामय स्वागत को विकसित करती हैं। इसमें वितीय प्रथाओं, नेतृत्व उद्देश्यों, और मंडलीय दृष्टिकोणों की जाँच सम्मिलित है जो चुपचाप आराम या स्थिति को प्राथमिकता दे सकते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि ऐसे वास्तविक प्रार्थना के लिए स्थान बनाया जाए जो निर्णयों को आकार दे, न कि पहले से तय योजनाओं की सजावट बने। जब आराधना शुद्ध होती है, तब दया अधिक दिखाई देती है और मिशन अधिक विश्वसनीय बनता है, क्योंकि कलीसिया आत्म-हित की रक्षा के लिए परमेश्वर की भाषा का उपयोग नहीं कर रही होती। यीशु आराधना को शुद्ध करते हैं ताकि लोग पिता से सच्चाई में मिल सकें, और प्रार्थनाशील कलीसिया एक दृढ़ कलीसिया बन जाती है।

**प्रभु भोज को नियमितता नहीं, बल्कि वाचात्मक गठन के रूप में ग्रहण करें**

यीशु ने रोटी और कटोरा अपनी मृत्यु की व्याख्या करने और ऐसी वाचात्मक प्रजा बनाने के लिए दिया जो भय और बिखराव आने पर स्थिर रहे। पौलुस सिखाता है कि कटोरा मसीह के लहू में सहभागिता है, यह कलीसिया को स्मरण दिलाता है कि सहभागिता यीशु के उद्धारकारी कार्य के साथ वाचा-केंद्रित एकता है, कोई आकस्मिक रस्म नहीं। (1 कुरिन्थियों 10:16, एनआईवी) भोज पहचान, नम्रता, और मसीह के प्रभुत्व के अधीन आशा को आकार देने के लिए है।

आपके संदर्भ में, पास्टरो को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे मेज़ के पास श्रद्धापूर्ण कृतज्ञता, ईमानदार पश्चाताप, और एकता की प्रतिबद्धता के साथ आएँ इसमें यह सिखाना सम्मिलित है कि भोज कलीसिया को संबंधों में मेल-मिलाप करने, पाखंड को अस्वीकार करने, और यह स्मरण रखने के लिए बुलाता है कि उद्धार बड़ी कीमत पर खरीदा गया इसका अर्थ यह भी है कि सहभागिता को सुसमाचार की घोषणा के रूप में रूपायित किया जाए, क्योंकि मेज़ क्रूस को केंद्र में रखती है जब ध्यान भटकाने वाली बातें प्रतिस्पर्धा करती हैं। जब कलीसिया सहभागिता को वाचात्मक गठन के रूप में ग्रहण करती है, तब चेलाई गहरी होती है, क्योंकि लोग प्रदर्शन के बजाय अनुग्रह से जीना सीखते हैं और दया खोए बिना पवित्रता का पीछा करते हैं। यीशु अपनी प्रजा की चरवाही मेज़ के द्वारा करते हैं, और विश्वासयोग्य कलीसियाएँ उस चरवाही को अपने समुदाय को आकार देने देती हैं।

## निष्कर्ष

यीशु का अंतिम सप्ताह यह प्रकट करता है कि राजा का अधिकार कोई अमूर्त सिद्धांत नहीं, बल्कि क्रियान्वित प्रभुत्व है जो हृदयों का सामना करता है, आराधना को शुद्ध करता है, और आज्ञाकारी बलिदान के द्वारा वाचात्मक उद्धार की स्थापना करता है। विजयी प्रवेश उनके मसीहाई दावे को सार्वजनिक करता है, मंदिर की शुद्धि भ्रष्ट धर्म को उजागर करती है, और तीव्र शिक्षा यह प्रकट करती है कि यीशु का विरोध अंततः परमेश्वर के शासन का विरोध है। फिर भी पूरे संघर्ष के दौरान यीशु वह करुणामय पुत्र बने रहते हैं जो कठोरों पर रोते हैं और वह पवित्र प्रभु जो पाखंड की चापलूसी नहीं करते। अंतिम सप्ताह शिष्यों को यह देखने के लिए बाध्य करता है कि मसीह आरामदायक धर्म को संरक्षित करने नहीं,

बल्कि पापियों को छुड़ाने और अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा आराधना को पुनः स्थापित करने आए।

अंतिम भोज तब सब कुछ वाचात्मक अर्थ में समेट देता है, क्योंकि यीशु अपनी आने वाली मृत्यु की व्याख्या नई वाचा की नींव के रूप में करते हैं, ऐसी प्रजा बनाते हुए जो उनके लहू के द्वारा उनसे संबंधित होती है भेज सांत्वना और चेतावनी दोनों बन जाती है, क्योंकि अनुग्रह पश्चातापी का स्वागत करता है और पाखंडी को उजागर करता है, और वह पीछे क्रूस की ओर और आगे राज्य की परिपूर्णता की ओर संकेत करती है। यीशु केवल उद्धार के विषय में शिक्षा नहीं दे रहे, वह उद्धार को पूरा कर रहे हैं, और वह अपने शिष्यों को तब भी विश्वासयोग्य रहने के लिए तैयार कर रहे हैं जब उनका साहस टूट जाए। अंतिम सप्ताह राजा द्वारा अपने मिशन की पूर्ति है, और कलीसिया को शुद्ध आराधना और वाचा-केंद्रित आशा के साथ श्रद्धापूर्ण समर्पण में उनका अनुसरण करने के लिए बुलाया गया है।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. किस क्षेत्र में आप यीशु की ज़ोरदार प्रशंसा करने के लिए प्रलोभित हैं, जबकि आज्ञाकारिता के किसी विशेष क्षेत्र में उनके अधिकार का विरोध कर रहे हैं?
2. आपकी आराधना के जीवन में कौन सा “मंदिर भ्रष्टाचार” यीशु का सामना कर सकता है, अर्थात् ऐसा कौन सा ढर्रा जहाँ आराम या लाभ प्रार्थना और ईमानदारी से प्रतिस्पर्धा करता है?
3. पाखंड के विषय में यीशु की चेतावनियाँ आपको अपने और अपनी कलीसिया में आत्मिक परिपक्वता का मूल्यांकन कैसे करने की चुनौती देती हैं?

4. प्रभु भोज को नियमितता के बजाय वाचात्मक गठन के रूप में ग्रहण करना आपके लिए कैसा दिखाई देगा, जो एकता, पश्चाताप, और मिशन को आकार देता हो?
5. इस सप्ताह आप किस व्यावहारिक तरीके से मसीह के राजत्व के प्रति चौकस निष्ठा के साथ जी सकते हैं, दबाव बढ़ने पर भी उनके उद्देश्य पर भरोसा करते हुए?

# अध्याय 10: यीशु का दुःख, मृत्यु, और पुनरुत्थान

## अध्याय 10: यीशु का दुःख, मृत्यु, और पुनरुत्थान

यीशु अपने दुःख में जानबूझकर आज्ञाकारिता के साथ आगे बढ़े, विश्वासघात से चौंक गए व्यक्ति की तरह नहीं, बल्कि उस पुत्र की तरह जिसने पिता की उद्धारकारी इच्छा को पूरा करने के लिए अपना मुख स्थिर कर लिया था। सुसमाचार उनके जीवन के इस अध्याय को मसीही विश्वास का पवित्र केंद्र प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि यहाँ यीशु की पहचान और यीशु का मिशन अपने सबसे दृश्यमान रूप में प्रकट होता है। राजा पीड़ा से बचकर शासन नहीं करता, बल्कि उसमें विश्वासयोग्यता से प्रवेश करके, पाप के परिणामों का बोझ उठाकर, और हर उस शॉर्टकट को ठुकराकर शासन करता है जो आज्ञाकारिता से समझौता कर दे।

यह अध्याय परिपक्व शिष्यों को यह भी दिखाता है कि मसीह का अधिकार कभी भी उसकी नम्रता से अलग नहीं होता। वह प्रार्थना करता है, समर्पित होता है, अन्याय सहता है, सार्वजनिक रूप से दुःख उठाता है, सचमुच मरता है, और देह सहित जी उठता है, और हर गति वाचा के अर्थ से भरी हुई है। कलीसिया इस विवरण को परिचित धार्मिक कहानी की तरह नहीं देख सकती, क्योंकि यही वह मोड़ है जहाँ परमेश्वर की दया और परमेश्वर का न्याय आज्ञाकारी पुत्र में मिलते हैं। यदि

हम क्रूस और पुनरुत्थान को गलत समझेंगे, तो हम चेलाई, मिशन, आराधना, और आशा को गलत समझेंगे, क्योंकि सब कुछ यहाँ यीशु ने जो पूरा किया उससे बहता है।

## अनुभाग 1: गतसमनी में पीड़ा

यीशु गतसमनी में एक विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में प्रविष्ट हुए, जिसने आने वाले क्रूस का सामना स्पष्ट चेतना के साथ किया, और उस चेतना ने पीछे हटना नहीं, बल्कि प्रार्थनापूर्ण समर्पण उत्पन्न किया। वह बिना तैयारी के दुःख में बह नहीं गए, क्योंकि उन्होंने उद्देश्यपूर्ण तीव्रता के साथ पिता को खोजा, यह दिखाते हुए कि उनकी आज्ञाकारिता निष्क्रिय त्यागपत्र नहीं थी। गतसमनी प्रकट करता है कि यीशु मिशन के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध हैं, फिर भी वह उस बोझ के बारे में पूर्णतः ईमानदार हैं जिसे वह उठाएंगे, और वह ईमानदारी कमजोरी नहीं। यह उस उद्धारकर्ता की पवित्रता है जो यह ढोंग नहीं करेगा कि क्रूस आसान है।

यीशु ने गतसमनी का उपयोग अपने शिष्यों के गठन के लिए भी किया, क्योंकि आज्ञाकारिता को मानवीय दृढ़ता से नहीं, बल्कि पिता के साथ संगति से टिकना चाहिए। शिष्यों की कमजोरी उजागर होती है, फिर भी यीशु की स्थिरता भी दिखाई देती है, और यह विरोधाभास जानबूझकर है। इस बगीचे में, राजा दिखाता है कि दुःख का सामना प्रार्थना, चौकसी, और समर्पण के द्वारा सबसे अच्छा होता है, घबराहट या नियंत्रण के द्वारा नहीं। गतसमनी कलीसिया को सिखाता है कि उद्धार का मार्ग भावुक नहीं, बल्कि महंगा है, और यीशु ने उस कीमत को पूर्ण आज्ञाकारिता में अपनाया।

**उद्देश्य के साथ बगीचे में प्रवेश**

यीशु ने प्रार्थना और तैयारी के स्थान के रूप में बगीचे को चुना, यह दिखाते हुए कि उन्होंने दुःख की घड़ी का सामना इनकार के बजाय स्पष्टता के साथ किया। मत्ती लिखता है कि यीशु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी गए, उनसे कहा कि जब तक वह प्रार्थना करें वे बैठें, और फिर पतरस, याकूब, और यूहन्ना को अपने साथ लिया ताकि वे उनके शोक और व्याकुलता के गवाह हों (मत्ती 26:36-38, एनआईवी)। यह वह राजा है जो अपनी मानवता को नहीं छिपाता, फिर भी वह अपने मिशन को नहीं छोड़ता, क्योंकि वह आज्ञाकारी पुत्र के रूप में क्रूस की ओर चल रहा है।

यीशु का यह जानबूझकर बगीचे की ओर बढ़ना चेलाई का गठन करता है यह सिखाकर कि आज्ञाकारिता अक्सर उस स्थान को चुनने की माँग करती है जहाँ आज्ञाकारिता की परीक्षा होगी। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि आत्मिक परिपक्वता कठिनाई से बचने में नहीं, बल्कि ईमानदार प्रार्थना और विश्वासयोग्य समर्पण के साथ उसका सामना करने में सिद्ध होती है। यीशु ने स्वयं को अलग नहीं किया मानो कमजोरी शर्म की बात हो, क्योंकि उन्होंने भरोसेमंद शिष्यों को निकट बुलाया, यद्यपि वे उन्हें निराश करेंगे। यहाँ कलीसिया सीखती है कि पवित्र नेतृत्व में पिता पर ईमानदार निर्भरता और परमेश्वर की प्रजा के सामने नम्र पारदर्शिता शामिल है।

## पाप के बिना शोक और घड़ी का पवित्र भार

गतसमनी में यीशु का शोक उस वास्तविक भार को प्रकट करता है जिसे वह सहने वाले थे, क्योंकि वह केवल शारीरिक पीड़ा का सामना नहीं कर रहे थे, बल्कि पाप को उठाने के आत्मिक बोझ का भी भरकुस लिखता है कि यीशु ने कहा कि

उनका मन मृत्यु तक बहुत उदास है, और उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि वे ठहरें और जागते रहें (मरकुस 14:33-34, एनआईवी)। यह पापपूर्ण निराशा नहीं, बल्कि पवित्र व्यथा है, क्योंकि पुत्र कीमत को स्पष्ट देखता है और उसे हल्का मानने से इंकार करता है।

यीशु की यह व्यथा कलीसिया को उस उथली आध्यात्मिकता को अस्वीकार करना सिखाती है जो यह दिखावा करती है कि मजबूत विश्वास कभी भारी महसूस नहीं करता। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि भावनात्मक तीव्रता स्वतः अविश्वास नहीं, क्योंकि यीशु ने गहरा शोक अनुभव किया और फिर भी पूर्णतः आज्ञाकारी रहे। अंतर यह है कि यीशु शोक को विद्रोह में नहीं, प्रार्थना में ले गए, और उनका शोक आत्म-सुरक्षा के बजाय समर्पण का मैदान बन गया। यह चेलाई को आकार देता है, विश्वासियों को परमेश्वर के सामने ईमानदार होने की अनुमति देकर और उन्हें भय उठने पर प्रार्थना चुनने के लिए बुलाकर। यीशु दिखाता है कि पवित्रता काँप सकती है, फिर भी पवित्रता आज्ञा मानती है।

## कटोरा और समर्पण की प्रार्थना

यीशु ने कटोरे के विषय में प्रार्थना की क्योंकि वह क्रूस को दैवी न्याय और उद्धारकारी पीड़ा के ठहराए गए बोझ के रूप में समझते थे जिसे केवल वही उठा सकते थे। भती लिखता है कि यीशु मुँह के बल गिरकर प्रार्थना करने लगे कि यदि संभव हो तो यह कटोरा उनसे टल जाए, फिर भी उन्होंने पूर्णतः समर्पण करते हुए कहा कि पिता की इच्छा पूरी हो (मती 26:39, एनआईवी)। यह प्रार्थना आज्ञाकारी पुत्र का हृदय प्रकट करती है, क्योंकि वह आराम की माँग नहीं करता, बल्कि विश्वासयोग्यता चुनता है।

यीशु की प्रार्थना शिष्यों को सिखाती है कि समर्पण इच्छा का अभाव नहीं, बल्कि इच्छा को पिता की इच्छा के अधीन कर देना है पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि सच्ची प्रार्थना ईमानदार विनितियाँ और गहरी भावनाएँ शामिल कर सकती है, फिर भी अंत में आज्ञाकारिता पर समाप्त होती है। यीशु बराबरी के रूप में बातचीत नहीं कर रहे कि जिम्मेदारी से बचें, क्योंकि वह मिशन के प्रति समर्पित पुत्र हैं, फिर भी वह एक वास्तविक मनुष्य हैं जो कीमत को महसूस करता है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि पिता की इच्छा हमेशा सबसे आसान मार्ग नहीं, पर वह हमेशा पवित्र मार्ग है, और यीशु ने पिता पर पूरी तरह भरोसा किया।

## चौकसी और शिष्यों की कमजोरी

यीशु ने शिष्यों को जागते रहने और प्रार्थना करने की चेतावनी दी क्योंकि वह जानते थे कि आत्मिक दबाव अंदरूनी कमजोरी को उजागर करता है, और सतर्क निर्भरता आवश्यक है। मती लिखता है कि यीशु लौटे और उन्हें सोते पाया, और उन्होंने कहा कि आत्मा तो तत्पर है पर देह दुर्बल है, उन्हें आत्म-विश्वास के बजाय प्रार्थनापूर्ण जागरूकता की ओर धकेलते हुए (मती 26:40-41, एनआईवी)। इनकी नींद केवल थकान नहीं, बल्कि यह चित्र है कि जब घड़ी भारी हो जाती है तो शिष्य कितनी आसानी से ढुलक जाते हैं।

यीशु की यह चेतावनी कलीसिया का गठन करती है यह सिखाकर कि परीक्षा केवल अच्छे इरादों से नहीं जीती जाती। पास्टरों को विश्वासियों को प्रार्थना, पवित्रशास्त्र-आकारित सोच, और ईमानदार जवाबदेही के द्वारा चौकसी का अभ्यास करना सिखाना चाहिए, क्योंकि आत्मिक खतरा तब बढ़ता है जब लोग मान लेते हैं कि वे सुरक्षित हैं शिष्य निष्ठावान होना

चाहते थे, फिर भी उनके शरीर और इच्छाशक्ति उस क्षण के भार के नीचे ढह गए, और यीशु ने उस वास्तविकता का नाम लिया बिना उसे बहाना बनाए क्लीसिया को प्रार्थना को तैयारी के रूप में देखना सीखना चाहिए, अंतिम उपाय के रूप में नहीं, क्योंकि संकट में आज्ञाकारिता पहले से संगति द्वारा सुदृढ़ होती है।

## विश्वासघाती का आगमन और यीशु की स्थिरता

यीशु ने विश्वासघात का सामना शांत अधिकार के साथ किया, यह दिखाते हुए कि वह यहूदा की योजना में फँसे नहीं, बल्कि पिता की आज्ञाकारिता में आगे बढ़ रहे हैं। मरकुस लिखता है कि यहूदा भीड़ के साथ आया, विश्वासघात का संकेत दिया, और यीशु ने सीधे उसका सामना किया, न भागते हुए और न घबराहट में प्रतिशोध लेते हुए (मरकुस 14:43-46, एनआईवी)। बगीचा वह स्थान बन जाता है जहाँ राजा को सौंपा जाता है, फिर भी उसकी स्थिरता दिखाती है कि वह नियंत्रण नहीं खो रहा, क्योंकि वह आज्ञाकारिता चुन रहा है।

यीशु की प्रतिक्रिया शिष्यों को सिखाती है कि विश्वासयोग्यता केवल शत्रुओं से नहीं, बल्कि दबाव में संयम से भी मापी जाती है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि विश्वासघात अक्सर लोगों को कड़वाहट, प्रतिक्रियाशीलता, या प्रतिशोध की ओर लुभाता है, फिर भी यीशु पवित्र और उद्देश्यपूर्ण बने रहते हैं। वह बुराई को छोटा नहीं करते, पर बुराई को अपने उत्तर का परिभाषक भी नहीं बनने देते, क्योंकि उनका मिशन दुःख के द्वारा उद्धार करना है। यहाँ क्लीसिया सीखती है कि मसीह का मार्ग गलत सहने में भी धर्मी बने रहने का मार्ग है, और यह भरोसा करने का

मार्ग है कि पिता की योजना तब भी खुल रही है जब क्षण अन्यायी लगता है।

## अनुभाग 2: यीशु की गिरफ्तारी और मुकदमे

यीशु ने गिरफ्तारी और मुकदमों के अधीनता स्वीकार की, निर्दोष पुत्र के रूप में जिसने अन्याय को आगे बढ़ने दिया, फिर भी अपनी पहचान का त्याग नहीं किया। यह क्रम मानवीय पाप की गहराई प्रकट करता है, क्योंकि धार्मिक अगुवों और राजनीतिक अधिकारियों ने व्यवस्था, दबाव, और आरोप का उपयोग उस व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए किया जो सत्य का साकार रूप था। फिर भी यह मसीह की आज्ञाकारिता की गहराई भी प्रकट करता है, क्योंकि उन्होंने स्वयं को बचाने के लिए न जिम्मेदारी से भागे और न परिणामों में हेरफेर किया। राजा का अधिकार यहाँ एक विरोधाभास में दिखाई देता है, क्योंकि उसके पास शक्ति है, फिर भी वह संयम चुनता है, यह दिखाते हुए कि उद्धार स्वेच्छा से समर्पण के द्वारा पूरा होता है।

यीशु ने इन मुकदमों को झूठे धर्म और राजनीतिक कायरता को उजागर करने के लिए भी सहा, क्योंकि दोनों व्यवस्थाएँ सत्य के बजाय आत्म-संरक्षण को पसंद करती थीं। धार्मिक अगुवों को प्रभाव खोने का डर था, और शासन करने वालों को शांति खोने का डर था, और दोनों ने यीशु को आज्ञा मानने योभ्य प्रभु के बजाय हटाने योभ्य समस्या माना। इस अंधकार में, यीशु विश्वासयोभ्य गवाह बने रहते हैं, जहाँ आवश्यक हो सत्य बोलते हैं, जहाँ बोलना हेरफेर की सेवा करेगा वहाँ मौन रहते हैं, और अपने मिशन से समझौता करने

से इंकार करते हैं कलीसिया को इन मुकदमों को ऐसे दर्पण की तरह पढ़ना चाहिए जो हमारे अपने प्रलोभनों को उजागर करता है, जहाँ हम मसीह का सम्मान करने के बजाय आराम की रक्षा करना चाहते हैं।

## गिरफ्तारी और पुत्र की स्वेच्छा

यीशु को आज्ञाकारी पुत्र के रूप में गिरफ्तार किया गया, जिसने हिंसक पलायन से इंकार किया और पिता की योजना के लिए समर्पण चुना। यूहन्ना लिखता है कि एक दल और अधिकारी लालटेन और हथियारों के साथ आए, और यीशु आगे बढ़े, अपनी पहचान बताई, और अपने शिष्यों की रक्षा करते हुए कहा कि यदि वे उन्हें ढूँढ रहे हैं, तो दूसरों को जाने दिया जाए (यूहन्ना 18:3-8, एनआईवी)। उनका अधिकार दिखाई देता है क्योंकि वह घिरे नहीं, स्वयं को अर्पित कर रहे हैं, और उनकी दया दिखाई देती है क्योंकि पकड़े जाते समय भी वह अपने अनुयायियों को ढाँपते हैं।

यीशु की यह स्वेच्छा शिष्यों को सिखाती है कि साहस आक्रामकता से नहीं, बल्कि विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता से मापा जाता है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि यीशु को शत्रुओं को दबाकर शक्ति साबित करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि सच्ची शक्ति वह आज्ञाकारिता है जो मिशन पूरा करती है। यह गिरफ्तारी यह भी उजागर करती है कि भीड़ कितनी जल्दी भय का उपकरण बन सकती है, और भय किस तरह धर्मी होने का भेष धारण कर सकता है। फिर भी यीशु स्थिर बने रहते हैं, क्योंकि वह पिता पर भरोसा करते हैं और प्रतिशोध से इंकार करते हैं। यहाँ कलीसिया सीखती है कि आज्ञाकारिता में

नियंत्रण छोड़ना शामिल हो सकता है, और मसीह तब भी प्रभु हैं जब वह बाँधे जाते हैं।

## पतरस का इनकार और मानवीय दृढ़ता का ढहना

यीशु के मुकदमे के क्रम में उनके सबसे निकट शिष्य की विफलता भी शामिल है, यह प्रकट करते हुए कि चेलाई केवल आत्म-विश्वास से टिक नहीं सकती। लूका लिखता है कि पतरस दूर से पीछे चला, फिर तीन बार यीशु का इनकार किया, और मुर्गे के बोलने के बाद पतरस कड़वे आँसू रोया, यह दिखाते हुए कि उसे अपनी अविश्वासयोग्यता की पीड़ादायक पहचान हुई (लूका 22:54-62, एनआईवी)। यह विरोधाभास जानबूझकर है, क्योंकि यीशु स्थिर खड़े रहते हैं जबकि पतरस ढह जाता है, और यह विरोधाभास अनुग्रह की आवश्यकता को उजागर करता है।

पतरस का इनकार कलीसिया को सिखाता है कि भय साहस को बहुत जल्दी तोड़ सकता है, विशेषकर जब प्रतिष्ठा और सुरक्षा को खतरा हो। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे आत्मिक ढलान को गंभीरता से लें, क्योंकि यीशु से दूरी अक्सर समझौते से पहले आती है, और समझौता अक्सर छोटे टालमटोल से शुरू होता है जो क्षण में आवश्यक लगता है फिर भी पतरस के आँसू यह भी दिखाते हैं कि जब पश्चाताप वास्तविक हो तो विफलता अंत नहीं, क्योंकि यीशु बाद में उसे बहाल करेंगे। यह क्षण उस घमंड के विरुद्ध चेतावनी देता है जो मान लेता है कि निष्ठा स्वतः होगी, और यह उस नम्रता को आमंत्रित करता है जो मसीह से चिपकी रहती है। कलीसिया सीखती है कि शिष्य इच्छाशक्ति से नहीं, बल्कि उस उद्धारकर्ता की दया से सुरक्षित रखे जाते हैं जिसका वे अनुसरण करते हैं।

## महासभा और वह सत्य जिसे यीशु ने नकारने से इंकार किया

यीशु धार्मिक परिषद के सामने विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में खड़े हुए, जिसने अपनी पहचान से इंकार नहीं किया, यद्यपि सत्य का उपयोग उन्हें दोषी ठहराने के लिए किया जाएगा। मरकुस लिखता है कि महायाजक ने पूछा कि क्या यीशु मसीह, धन्य परमेश्वर के पुत्र हैं, और यीशु ने स्पष्ट उत्तर देकर अपनी पहचान स्वीकार की और अपनी आने वाली पुष्टि की ओर संकेत किया, जिसे उन्होंने निंदा समझा (मरकुस 14:61-62, एनआईवी)। यीशु के शत्रु केवल उकसावे के लिए उकसावा नहीं, बल्कि वह सत्य है जो उनके प्राण की कीमत पर बोला गया।

यीशु की यह स्पष्टता शिष्यों को सिखाती है कि स्वीकारोक्ति मायने रखती है, क्योंकि कुछ घड़ियाँ ऐसी होती हैं जब मौन सुरक्षित होगा, पर इनकार विश्वासघात होगा। पास्टरों को सिखाना चाहिए कि मसीही साहस जोर से बोलना नहीं, बल्कि विश्वासयोग्यता है, और विश्वासयोग्यता में दबाव के समय मसीह को सच्चाई से नाम देना शामिल है जब लोग उसे संपादित करवाना चाहते हैं। परिषद की प्रतिक्रिया उजागर करती है कि धार्मिक प्रणालियाँ परमेश्वर की रक्षा करने का दावा करते हुए भी परमेश्वर को ठुकरा सकती हैं, क्योंकि घमंड सत्य को खतरा बना देता है। यीशु का मुकदमा दिखाता है कि असली मुद्दा प्रमाण नहीं, प्रभुत्व है, क्योंकि अगुवों के पास जानकारी की कमी नहीं थी, समर्पण की कमी थी। यहाँ कलीसिया सीखती है कि सत्य महंगा हो सकता है, और यीशु ने वह कीमत बिना डगमगाए चुकाई।

## पिलातुस और वह राज्य जो राजनीतिक शक्ति से नहीं बनता

यीशु पिलातुस के सामने ऐसे राजा के रूप में खड़े हुए जिसका अधिकार साम्राज्य की मशीनरी पर निर्भर नहीं। यूहन्ना लिखता है कि पिलातुस ने यीशु से राजत्व के विषय में प्रश्न किए, और यीशु ने स्पष्ट किया कि उसका राज्य इस संसार का नहीं, न उसके स्रोत में, न उसके तरीके में, यह प्रकट करते हुए कि उसका शासन बल से नहीं, बल्कि सत्य और आज्ञाकारिता से स्थापित होता है (यूहन्ना 18:33-36, एनआईवी)। यीशु राजत्व का इनकार नहीं करते, फिर भी वह उसे उन श्रेणियों में परिभाषित करने से इंकार करते हैं जिन्हें पिलातुस समझता है, क्योंकि उनका मिशन सत्ता-हथियाने का नहीं, उद्धार का है।

यह संवाद कलीसिया को उस प्रलोभन को अस्वीकार करना सिखाता है कि वह परमेश्वर के राज्य को राजनीतिक प्रभुत्व के साथ गड्ढमड्ढ करे। प्रास्टों को विश्वासियों को नागरिक जिम्मेदारी में विश्वासयोग्य रहने के लिए सिखाना चाहिए, फिर भी मानवीय सत्ता संरचनाओं में मसीहाई आशा रखने से इंकार करने के लिए यीशु का राज्य पाप का सामना हृदय के स्तर पर करता है और सत्य तथा प्रेम से चिह्नित एक प्रजा बनाता है, और वह बल से उत्पन्न नहीं हो सकता। पिलातुस की उलझन यह भी उजागर करती है कि व्यावहारिकता सत्य की उपेक्षा कैसे कर सकती है, क्योंकि वह धर्मी निर्णय के बजाय आसान समाधान चाहता था। यहाँ कलीसिया सीखती है कि राजनीतिक प्रणालियाँ अस्थिर हों तब भी मसीह के अधिकार पर भरोसा करे, क्योंकि यीशु पिता के आदेश से राज्य करता है, मानवीय अनुमति से नहीं।

## दोषसिद्धि चुनी गई और निर्दोष का विनिमय

यीशु को निर्दोष होते हुए भी दोषी ठहराया गया, जबकि एक दोषी मनुष्य छोड़ दिया गया, यह प्रतिस्थापन को तीव्र और दृश्यमान रूप में प्रकट करता है मती लिखता है कि भीड़ ने बरअब्बा को चुना और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की माँग की, और पिलातुस ने हाथ धोकर भी दबाव के आगे झुकाव दिखाया, जो सार्वजनिक हेरफेर और नेतृत्व की कायरता दोनों प्रकट करता है (मती 27:20-26, एनआईवी)। यह क्षण केवल दुःखद नहीं, बल्कि पाप का अंधेरा तर्क है, क्योंकि मानवता पवित्र राजा के बजाय परिचित विद्रोही को पसंद करती है।

यह विनिमय शिष्यों को सिखाता है कि पाप केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि परमेश्वर के शासन के प्रति सामूहिक प्रतिरोध है। पास्टर्स को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि भीड़ का चुनाव इस बात की चेतावनी है कि लोग भरोसेमंद अगुवों और अनकहे भय के द्वारा कितनी आसानी से बहकाए जा सकते हैं। फिर भी यह सुसमाचार के प्रतिरूप का प्रकाशन भी है, क्योंकि निर्दोष दुःख उठाता है और दोषी छूट जाता है, और यही तर्क क्रूस पर अपने पूर्ण अर्थ तक पहुँचेगा। यीशु हेरफेर के द्वारा अपना बचाव नहीं करते, क्योंकि वह स्वयं को उद्धारकर्ता के रूप में अर्पित कर रहे हैं। यहाँ कलीसिया मानवीय अन्याय पर शोक करती है और साथ ही उस परमेश्वर की आराधना करती है जो अपने पुत्र की आज्ञाकारिता के द्वारा अन्याय को उद्धार में बदल देता है।

## अनुभाग 3: यीशु का क्रूसारोपण और मृत्यु

यीशु को सच्चे राजा के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया, जिसका सिंहासन क्रूस था और जिसकी विजय बलिदानी आज्ञाकारिता के द्वारा प्राप्त हुई। सुसमाचार क्रूरता, लज्जा, या अन्याय को नरम नहीं करते, क्योंकि वे चाहते हैं कि पाठक कीमत को स्पष्ट देखें फिर भी वे क्रूसारोपण को उद्देश्यपूर्ण भी समझाते हैं, आकस्मिक नहीं, क्योंकि यीशु पापियों को बचाने के लिए पिता की योजना को पूरा कर रहे हैं। क्रूस पर यीशु का अधिकार विरोधाभासी है, क्योंकि वह शक्तिहीन दिखाई देता है, फिर भी वह आज्ञाकारिता की सबसे गहरी शक्ति का प्रयोग कर रहा है, वह शक्ति जो पाप के दावे को तोड़ती है और दैवी न्याय को संतुष्ट करती है।

यीशु की मृत्यु मानवता के हृदय को भी उजागर करती है, क्योंकि लोगों ने उसका उपहास किया, अनदेखा किया, उपयोग किया, और गलत समझा, और वे प्रतिक्रियाएँ आज भी अलग रूपों में जारी हैं। कुछ ने उसे तमाशा माना, कुछ ने खतरा माना, और कुछ ने निराशा माना, पर क्रूस प्रकट करता है कि पुत्र उन लोगों को भी छुड़ाने आया जिन्होंने उसे ठुकराया। कलीसिया को यहाँ ठहरना चाहिए क्योंकि चेलाई क्रूस-आकारित है, और मिशन क्रूसित उद्धारकर्ता से जन्म लेता है। यदि हम क्रूसारोपण से जल्दी निकल जाएँ, तो हम उथला सुसमाचार प्रचार करेंगे और उथली कलीसिया बनाएँगे।

## क्रूस की ओर मार्ग और दुःख का बोझ

यीशु ने दुःख का भार सार्वजनिक रूप से उठाया, और सुसमाचार दिखाते हैं कि उनकी शारीरिक कमजोरी ने उनके करुणामय अधिकार को बाधित नहीं किया। लूका लिखता है कि शिमोन कुरेनी को बाध्य किया गया कि वह यीशु के पीछे

क्रूस उठाए, और यीशु ने रोने वाली स्त्रियों से बात की, आने वाले न्याय के विषय में गंभीर चेतावनी देते हुए, यह दिखाते हुए कि मृत्यु की ओर जाते समय भी वह भविष्यवाणी करने वाला चरवाहा बने रहे (लूका 23:26-31, एनआईवी) राजा दुःख उठा रहा है, फिर भी राजा अभी भी शिक्षा दे रहा है, अभी भी प्रेम कर रहा है, और अभी भी सत्य बोल रहा है।

यह क्षण शिष्यों को सिखाता है कि दुःख बुलाहट को मिटाता नहीं, और कठिनाई आज्ञाकारिता को रद्द नहीं करती प्रास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि कमजोरी और विश्वासयोग्यता साथ-साथ रह सकते हैं, क्योंकि यीशु ने सत्य बोलने और दिशा देने के लिए आराम की प्रतीक्षा नहीं की शिमोन की उपस्थिति यह भी दिखाती है कि कभी-कभी अन्य लोग मसीह के दुःख में ऐसे ढंग से खींचे जाते हैं जिसे उन्होंने नहीं चुना, और वह सहभागिता चलाई का रूप बन सकती है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि यीशु का अनुसरण बोल उठाने में शामिल है, केवल अपने नहीं, दूसरों के भी, क्योंकि क्रूस-आकारित प्रेम राज्य के जीवन का भाग है।

## अपराधियों के बीच क्रूसित और वह लज्जा जिसे उसने सहा

यीशु को लज्जा के स्थान पर क्रूसित किया गया, अपराधी की तरह व्यवहार किया गया, और सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया गया, यह दिखाते हुए कि उसने उद्धार के लिए अपमान की महलाई स्वीकार की मरकुस लिखता है कि सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, उसके कपड़े बाँटे, और उसे विद्रोहियों के बीच रखा, यह दिखाते हुए कि धर्मी जन संसार की दृष्टि में दोषियों के साथ गिना गया (मरकुस

15:24–27, एनआईवी) क्रूस केवल पीड़ा नहीं, सार्वजनिक अपमान भी है, और यीशु ने बिना पीछे हटे उसे सहा।

यह अपमान कलीसिया को सिखाता है कि उद्धार किसी सम्मानित उद्धारकर्ता के द्वारा नहीं जो गंदगी से ऊपर रहा, बल्कि पवित्र उद्धारकर्ता के द्वारा जो स्वेच्छा से सबसे नीचे उतरा मास्टर्स को विश्वासियों को ऐसी आस्था को अस्वीकार करना सिखाना चाहिए जो केवल सांस्कृतिक सम्मान चाहती है, क्योंकि यीशु ने अपनी सबसे बड़ी आज्ञाकारिता के क्षण में तिरस्कार और अस्वीकार सहा। उसके पास के अपराधी यह भी दिखाते हैं कि क्रूस वह स्थान है जहाँ मानवीय हृदय उजागर होते हैं, क्योंकि कुछ उपहास करते हैं और कुछ मुड़ते हैं, और अंतर राजा के प्रति समर्पण का है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि यीशु ने हमारी लज्जा को गंभीरता से लिया और उसे उठाया, ताकि शिष्य भीड़ की स्वीकृति की आवश्यकता से मुक्त होकर जी सकें।

## क्रूस से दया और उद्धारकर्ता का हृदय

यीशु ने क्रूस से दया बोली, यह दिखाते हुए कि उसका दुःख उसकी करुणा को रद्द नहीं करता और उसका मिशन क्षमा पर केंद्रित रहता है। लूका लिखता है कि यीशु ने प्रार्थना की, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं,” यह प्रकट करते हुए कि वह उद्धारकर्ता अपने शत्रुओं के लिए भी मध्यस्थता कर रहा था, जबकि वह उनकी हिंसा के अधीन मर रहा था (लूका 23:34, एनआईवी)। यह दोष का इनकार नहीं, बल्कि पिता की उद्धारकारी योजना में जड़ी दया का प्रस्ताव है।

यह दया चेलाई को आकार देती है, कलीसिया को उस प्रकार की क्षमा के लिए बुलाकर जिसे केवल मानवीय प्रयास से उत्पन्न नहीं किया जा सकता पास्टरों को विश्वासियों को सिखाना चाहिए कि मसीही क्षमा मसीह की क्षमा में जड़ी है, क्योंकि केवल वे जो दया जानते हैं, अन्याय होने पर दया बढ़ा सकते हैं। यीशु की यह प्रार्थना प्रतिशोध-प्रेरित प्रवृत्तियों का भी सामना करती है जो तीव्र पीड़ा में धर्मी लगती हैं। क्रूस सिखाता है कि दया कमजोरी नहीं, पवित्र सामर्थ्य है, क्योंकि वह घृणा को हृदय का परिभाषक बनने से रोकती है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि हमारा मिशन क्षमा की घोषणा करना है क्योंकि हमारे राजा ने क्षमा की प्रार्थना की, और उसने यह सबसे ऊँची कीमत पर किया।

## अंधकार और वह पुकार जो पाप का भार प्रकट करती है

यीशु का दुःख चरम पर पहुँचा जब अंधकार छा गया, और उसकी पुकार ने उस भार की गहराई प्रकट की जिसे उसने उठाया। मरकुस लिखता है कि देश पर अंधकार छा गया और यीशु ने पुकारा, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया,” यह दिखाते हुए कि क्रूस में केवल शारीरिक पीड़ा नहीं, बल्कि गहरी आत्मिक व्यथा भी शामिल थी (मरकुस 15:33-34, एनआईवी)। सुसमाचार इसे नाटकीय निराशा नहीं मानते, बल्कि न्याय के अधीन पाप उठाने का भयावह भार मानते हैं।

यह क्षण चेलाई को आकार देता है यह सिखाकर कि पाप कोई छोटा दोष नहीं, बल्कि विनाशकारी विद्रोह है जिसे संबोधित करने के लिए पुत्र का दुःख आवश्यक था। पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे क्रूस की

गंभीरता को महसूस करें बिना निराशा में बह गए, क्योंकि यीशु की पुकार कहानी का अंत नहीं, पर उद्धार की कीमत की खिड़की है। अंधकार न्याय और शोक का संकेत है, फिर भी यह भी संकेत है कि परमेश्वर निर्णायक रूप से कार्य कर रहा है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि सुसमाचार भावुक नहीं, क्योंकि क्षमा महँगी है, और यीशु ने उस कीमत को आज्ञाकारी प्रेम में अपने भीतर समा लिया। जब विश्वासी इसे समझते हैं, आराधना गहरी होती है, पश्चाताप अधिक ईमानदार होता है, और अनुग्रह अधिक मूल्यवान होता है।

## यह पूरा हुआ और उसकी मृत्यु की वास्तविकता

यीशु सचमुच मरा, और उसके अंतिम शब्दों ने पूर्णता घोषित की, यह दिखाते हुए कि मिशन पूरा हुआ, बाधित नहीं। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने कहा, “यह पूरा हुआ,” और फिर सिर झुकाकर आत्मा दे दी, इस पर बल देते हुए कि उसकी मृत्यु वास्तविक थी और उसका अर्पण जानबूझकर था (यूहन्ना 19:30, एनआईवी)। राजा किसी असहाय दुर्घटना की तरह मृत्यु में नहीं बह जाता, क्योंकि वह वह काम पूरा करता है जो पिता ने उसे दिया और आज्ञाकारी समर्पण में अपना जीवन सौंपता है।

यह पूर्णता कलीसिया को सिखाती है कि उद्धार मसीह के पूर्ण किए गए कार्य पर टिका है, मानवीय जोड़ पर नहीं। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि आश्वासन इस बात में जड़ा है जिसे यीशु ने पूरा किया, क्योंकि दोष प्रयास से नहीं, बल्कि उद्धारकर्ता के पूर्ण बलिदान से चंगा होता है। यीशु की मृत्यु क्रूस को केवल उदाहरण मानने के प्रयासों का भी सामना करती है, क्योंकि वह केवल नैतिक प्रेरणा नहीं, उद्धारकारी उपलब्धि है। यहाँ कलीसिया सीखती है कि सुसमाचार का एक केंद्र है,

और वह केंद्र क्रूसित मसीह है जिसने आज्ञाकारी प्रेम के द्वारा प्रायश्चित्त का कार्य पूरा किया क्योंकि यह पूरा हुआ है, शिष्य वह कमाना छोड़ सकते हैं जिसे मसीह पहले ही सुरक्षित कर चुका है।

## अनुभाग 4: यीशु का दफन और पुनरुत्थान

यीशु का दफन और पुनरुत्थान उसकी मृत्यु की वास्तविकता और उसकी विजय की सच्चाई दोनों की पुष्टि करते हैं। दफन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि वह सचमुच मरा और सचमुच कब्र में रखा गया, और यह पुनरुत्थान को धार्मिक कल्पना के बजाय इतिहास में जड़ित करता है। पुनरुत्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि वह पिता द्वारा पुत्र की पुष्टि, मृत्यु की पराजय, और मसीही आशा और मिशन की नींव है। दफन के बिना पुनरुत्थान के दावे हवा में तैरते हैं, और पुनरुत्थान के बिना क्रूस विजय के बजाय त्रासदी बन जाता है।

यीशु का पुनरुत्थान चेलाई को भी बदल देता है क्योंकि यह उन लोगों के लिए संभावनाओं को नया परिभाषित करता है जो उससे संबंधित हैं। जी उठा मसीह केवल स्मरण नहीं किया जाता, वह उपस्थित है, राज्य कर रहा है, और अपने लोगों को भेज रहा है। पुनरुत्थान चेलाई की कीमत हटाता नहीं, पर यह प्रतिज्ञा सुरक्षित करता है कि दुःख अंतिम नहीं और आज्ञाकारिता व्यर्थ नहीं। कलीसिया एक जीवित प्रभु का प्रचार करती है, और यह अनुभाग उस घोषणा को सुसमाचार के उन विवरणों में जड़ित करता है जो खाली कब्र, भयभीत फिर भी विश्वासयोग्य गवाहों, और जी उठे मसीह द्वारा अपने

अनुयायियों को शांति और उद्देश्य के साथ मिलने को दिखाते हैं।

## सावधानी से दफनाया गया और उसकी मृत्यु की पुष्टि

यीशु को इस प्रकार दफनाया गया कि उसकी मृत्यु की वास्तविकता की पुष्टि हुई और उसके शरीर का सम्मान हुआ, यह दिखाते हुए कि क्रूस कोई भ्रम नहीं और कब्र कोई रूपक नहीं भ्रमती लिखता है कि अरिमथिया के यूसुफ ने यीशु का शरीर लिया, उसे साफ कफ़न में लपेटा, उसे अपनी नई कब्र में रखा, और प्रवेश पर पत्थर लुढ़का दिया (मत्ती 27:57-60, एनआईवी) विवरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कहानी को गवाह, स्थान, और शारीरिक वास्तविकता में स्थिर करता है।

यह दफन शिष्यों को सिखाता है कि मसीही विश्वास वास्तविक घटनाओं में जड़ा है जो समय और स्थान में घटित हुई घास्टों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे समझें कि सुसमाचार केवल उत्साहवर्धक विचारों का समूह नहीं, बल्कि वह घोषणा है कि परमेश्वर ने इतिहास में यीशु के द्वारा क्या किया दफन साहसी भक्ति भी दिखाता है, क्योंकि यूसुफ ने यीशु से स्वयं को जोड़ लिया जब ऐसा करना उसे प्रतिष्ठा और सुरक्षा की कीमत दिला सकता था। यहाँ कलीसिया सीखती है कि मसीह के प्रति प्रेम अक्सर तब महँगी विश्वासयोग्यता जैसा दिखता है जब आशा दफन लगती है, क्योंकि कभी-कभी शिष्यों को अंधकार में यीशु का सम्मान करना पड़ता है इससे पहले कि वे समझें कि परमेश्वर आगे क्या करेगा।

**विश्वासयोग्य गवाह और स्त्रियों की शांत सामर्थ**

यीशु के दफन को विश्वासयोग्य स्त्रियों ने देखा, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर अक्सर महत्वपूर्ण गवाही उन लोगों को सौंपता है जिन्हें संसार नज़रअंदाज़ करता है लूका लिखता है कि स्त्रियाँ पीछे-पीछे गईं, कब्र और शरीर रखे जाने का ढंग देखा, फिर सुगंधित द्रव्य तैयार किए और सब्त के दिन विश्राम किया, यह सावधान ध्यान, व्यावहारिक भक्ति, और शोक में भी आज्ञाकारिता को उजागर करता है (लूका 23:55-56, एनआईवी) उनकी विश्वासयोग्यता ऊँची नहीं, पर स्थिर है, और पुनरुत्थान की सुबह में वह अत्यंत आवश्यक बनती है।

यह गवाही चेलाई को आकार देती है यह सिखाकर कि भक्ति अक्सर नाटकीय कदमों के बजाय साधारण आज्ञाकारिता के द्वारा प्रकट होती है पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे शांत विश्वासयोग्यता का मूल्य समझें, विशेषकर जब शोक उत्साह को असंभव बना दे स्त्रियों के कार्य यह भी दिखाते हैं कि यीशु के प्रति प्रेम परिणाम अनिश्चित होने पर भी बना रहता है, क्योंकि उन्होंने उसे सम्मान देने की तैयारी की यद्यपि वे अभी पुनरुत्थान नहीं समझती थीं। यहाँ कलीसिया सीखती है कि परमेश्वर उन शिष्यों को देखता और उपयोग करता है जो दर्दनाक मौसमों में उपस्थित और आज्ञाकारी बने रहते हैं, और ऐसी स्थिरता अक्सर वह मिट्टी बनती है जहाँ भविष्य की गवाही उगती है। पुनरुत्थान की कहानी आंशिक रूप से उन शिष्यों से शुरू होती है जिन्होंने मृत्यु में भी यीशु को छोड़ने से इंकार किया।

## खाली कब्र और विजय की घोषणा

यीशु का पुनरुत्थान ऐतिहासिक वास्तविकता के रूप में घोषित किया गया, निजी अनुभूति के रूप में नहीं, और

खाली कब्र मृत्यु पर विजय का पहला सार्वजनिक चिन्ह बनी। मत्ती लिखता है कि स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा कि वे न डरें, और घोषित किया कि यीशु वहाँ नहीं है क्योंकि वह जी उठा है, यह मसीही आशा को पिता के निर्णायक कार्य में जड़ित करता है (मत्ती 28:5-6, एनआईवी)। संदेश अस्पष्ट प्रोत्साहन नहीं, बल्कि घोषणा है कि मृत्यु पराजित हो गई है।

यह घोषणा कलीसिया को सिखाती है कि पुनरुत्थान का विश्वास केवल इच्छा-पूर्ति नहीं, बल्कि परमेश्वर ने जो किया उस पर भरोसा है। पास्टर्स को सिखाना चाहिए कि पुनरुत्थान भय को नया आकार देता है क्योंकि वह प्रमाणित करता है कि सबसे बड़ा शत्रु टूट गया है और राजा जीवित है। स्वर्गदूत का निर्देश गवाहों को संदेशवाहक भी बनाता है, यह दिखाते हुए कि सुसमाचार का सत्य उठाकर ले जाया जाने के लिए है, केवल निहारने के लिए नहीं। यहाँ कलीसिया सीखती है कि मिशन खाली कब्र से शुरू होता है, क्योंकि जी उठा मसीह ऐसे गवाह बनाता है जो वास्तविकता में जड़ी निडरता के साथ बोलते हैं। पुनरुत्थान आशावाद का प्रतीक नहीं, आराधना, आज्ञाकारिता, और साहस की नींव है।

## जी उठा यीशु और भयभीत शिष्यों के लिए शांति

यीशु ने अपने शिष्यों के सामने प्रकट होकर अपने पुनरुत्थान की पुष्टि की और उनके साहस को बहाल किया, यह दिखाते हुए कि उसकी विजय व्यापक है, केवल सिद्धांत नहीं। यूहन्ना लिखता है कि यीशु बंद दरवाज़ों के पीछे शिष्यों के पास आया, उन्हें शांति कही, अपने हाथ और पसली दिखाई, और शिष्यों ने प्रभु को देखकर आनन्द किया (यूहन्ना 20:19-20, एनआईवी)। जी उठा राजा दूर नहीं, क्योंकि वह

भयभीतों के निकट आता है और घबराहट को शांति से बदल देता है।

यह प्रकट होना चेलाई को आकार देता है यह सिखाकर कि यीशु विफल हुए लोगों को त्यागता नहीं, बल्कि उन्हें बहाल करता है पास्टरों को विश्वासियों की सहायता करनी चाहिए कि वे देखें कि पुनरुत्थान केवल सामर्थ सिद्ध नहीं करता, दया भी संप्रेषित करता है, क्योंकि जो शिष्य भागे थे उन्हें तिरस्कार नहीं, शांति मिलती है। यीशु की उपस्थिति सुरक्षा की परिभाषा भी बदल देती है, क्योंकि बंद दरवाज़े उनके भय से रक्षा नहीं कर सके, पर जी उठा प्रभु कर सका। यहाँ कलीसिया सीखती है कि पुनरुत्थान की आशा हृदय को स्थिर करने और आज्ञाकारिता को नया करने के लिए है, क्योंकि जीवित मसीह अपनी प्रजा के साथ अभी भी उपस्थित है। जब विश्वासी समझते हैं कि यीशु जीवित है, आराधना कम चिंतित, पश्चात्ताप अधिक भरोसेमंद, और मिशन अधिक स्थिर हो जाता है।

## जीवित राजा द्वारा नियुक्त और अधिकार के साथ भेजे गए

यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद शिष्यों को नियुक्त किया, मिशन को अपने सार्वभौमिक अधिकार में जड़ित करते हुए और जाते समय अपनी उपस्थिति का वचन देते हुए। भती लिखता है कि यीशु ने घोषित किया कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया है, फिर उन्हें सब जातियों को चेला बनाने, बपतिस्मा देने, और आज्ञा मानना सिखाने की आज्ञा दी, इस प्रतिज्ञा के साथ कि वह सदा उनके साथ रहेगा (मत्ती 28:18-20, एनआईवी)। यह नियुक्ति सीधे पुनरुत्थान

की वास्तविकता से बहती है, क्योंकि जी उठा मसीह अपने शासन के अधीन गवाहों को भेजता है।

यह नियुक्ति कलीसिया को सिखाती है कि मिशन मानवीय आत्म-विश्वास से नहीं, बल्कि मसीह के अधिकार और उपस्थिति से चलता है। पास्टर्स को विश्वासियों को धैर्यपूर्ण शिक्षा और देहधारी आज्ञाकारिता के द्वारा शिष्य बनाने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, उथली भर्ती के द्वारा नहीं। आज्ञाकारिता सिखाने की आज्ञा कलीसिया को उस प्रवृत्ति से बचाती है कि वह मिशन को गठन के बिना केवल परिवर्तन-क्षणों तक सीमित कर दे। यीशु अपनी प्रजा को क्रूस और पुनरुत्थान से आकार पाए समुदाय के रूप में भेजता है, सुसमाचार को स्पष्टता और प्रेम के साथ जातियों में ले जाते हुए। यहाँ कलीसिया सीखती है कि जी उठा राजा अभी भी राज्य कर रहा है और अभी भी भेज रहा है, इसलिए मिशन वैकल्पिक नहीं और चेलाई निजी नहीं। क्योंकि यीशु जीवित है, उसकी प्रजा जाती है।

## तीन तरीके इस सामग्री को अपने विशेष संदर्भ में लागू करने के

**यीशु की तरह प्रार्थना करें, भय के बारे में ईमानदार, आज्ञाकारिता के प्रति प्रतिबद्ध**

बगीचे में यीशु की प्रार्थना विश्वासियों को सिखाती है कि ईमानदार संघर्ष विश्वास का शत्रु नहीं, क्योंकि विश्वास संघर्ष को छिपाने के बजाय पिता के पास ले जाता है। हब्रानियों का लेखक कहता है कि यीशु ने बड़े चीत्कार और आँसुओं के साथ प्रार्थनाएँ और विनतियाँ चढ़ाईं, और उसकी श्रद्धापूर्ण

समर्पण के कारण उसकी सुनी गई, यह पुष्टि करते हुए कि पुत्र के दुःख में वास्तविक भावनात्मक भार और वास्तविक आज्ञाकारिता शामिल थी (इब्रानियों 5:7, एनआईवी)। यीशु ऐसी प्रार्थना का आदर्श प्रस्तुत करता है जो भय का इनकार नहीं करती, पर भय को शासन भी नहीं करने देती।

आपके संदर्भ में इसका अर्थ है कि चेलाई में ऐसी प्रार्थना शामिल होनी चाहिए जो सत्य, श्रद्धापूर्ण, और समर्पित हो, विशेषकर जब आज्ञाकारिता महंगी लगे पास्टरों को विश्वासियों को यह सिखाना चाहिए कि वे अपने भय, अपनी इच्छाएँ, और जिस आज्ञाकारिता की माँग है उसका नाम लें, फिर नम्रता से उसे पिता की इच्छा के अधीन रखें। लोगों को संकट आने से पहले चौकसी की आदतें बनाने के लिए प्रोत्साहित करें, क्योंकि आत्मिक सामर्थ अक्सर क्षण में तात्कालिक रूप से नहीं बनती। जब कलीसियाएँ यीशु की तरह प्रार्थना करना सीखती हैं, वे कम प्रदर्शनकारी और अधिक दृढ़ बनती हैं, क्योंकि वे दुःख में पिता पर भरोसा करती हैं और यह ढोंग किए बिना आज्ञाकारिता चुनती हैं कि यह आसान है।

**अन्याय का सामना कड़वाहट में बदले बिना करें, उस राजा पर भरोसा करते हुए जिसने उसे सहा**

यीशु ने अन्याय सहा बिना सत्य का त्याग किए, और उसका संयम कमजोरी नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता थी जिसने बुराई का जवाब बुराई से देने से इंकार किया। पतरस बाद में सिखाता है कि मसीह ने दुःख उठाया, उदाहरण छोड़ते हुए, और जब उसका अपमान किया गया तो उसने प्रतिशोध नहीं लिया, बल्कि अपने आप को उस पर छोड़ दिया जो न्याय से न्याय करता है (1 पतरस 2:23, एनआईवी)। यह मुद्रा प्रकट

करती है कि अन्याय के प्रति कड़वाहट ही एकमात्र प्रतिक्रिया नहीं, क्योंकि क्रूस भरोसे और पवित्रता में जड़ी एक वैकल्पिक राह दिखाता है।

आपके संदर्भ में इसका अर्थ है कि विश्वासियों को गलत सहना सीखना होगा बिना शत्रु के तरीकों को अपनाए प्रास्टरों को सिखाना चाहिए कि सत्य को दृढ़ता से कहा जा सकता है बिना तिरस्कार के, और दुःख को सहा जा सकता है बिना आशा छोड़े इसमें ऐसी क्षमा का अभ्यास भी शामिल है जो भोली न हो, क्योंकि सीमाएँ और बुद्धि महत्वपूर्ण हैं, फिर भी प्रतिशोध परमेश्वर को सौंपना होगा जब कलीसियाएँ यहाँ यीशु का अनुसरण करती हैं, वे विश्वसनीय गवाह बनती हैं, क्योंकि वे आक्रोश को प्रभु बनने नहीं देतीं। इसीह ने पापियों को बचाने के लिए अन्यायी मुकदमे सहा, और उसकी प्रजा पिता के न्याय में जड़े हृदय के साथ कठिनाई सह सकती है।

### **पुनरुत्थान के भरोसे के साथ जीएँ और सेवा करें, भय-आधारित जीवित रहने से नहीं**

यीशु का पुनरुत्थान मतलब मृत्यु पराजित हो गई है और आज्ञाकारिता व्यर्थ नहीं, इसलिए शिष्य भय-प्रेरित आत्म-सुरक्षा के बजाय स्थिर साहस के साथ जी सकते हैं। पौलुस घोषित करता है कि पुनरुत्थान के कारण विश्वासी स्थिर रह सकते हैं और प्रभु के काम में अपने आप को पूरी तरह लगा सकते हैं, यह जानते हुए कि उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं (1 कुरिन्थियों 15:58, एनआईवी) पुनरुत्थान का भरोसा शोक को मिटाता नहीं, पर प्राथमिकताओं को पुनः क्रमित करता है, क्योंकि भविष्य जीवित राजा के द्वारा सुरक्षित है।

आपके संदर्भ में इसका अर्थ है कि मसीहियों को निर्णयों का मूल्यांकन तात्कालिक आराम के बजाय अनंतता के द्वारा करना चाहिए। प्रास्टरों को विश्वासियों को विश्वासयोग्य सेवा करने, शीघ्र मेल-मिलाप करने, और स्पष्ट गवाही देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि जी उठा मसीह उपस्थित है और राज्य कर रहा है। इसका अर्थ यह भी है कि जब संस्कृति शत्रुतापूर्ण लगे तब मिशन को वैकल्पिक मानने के प्रलोभन का प्रतिरोध किया जाए, क्योंकि जीवित यीशु अधिकार के साथ अपनी प्रजा को भेजता है और अपनी उपस्थिति का वचन देता है। जब कलीसिया पुनरुत्थान के भरोसे के साथ जीती है, वह कम चिंतित, अधिक उदार, और अधिक धैर्यवान बनती है, क्योंकि आशा इस बात में जड़ी है जो परमेश्वर ने किया है, न कि उन बातों में जो परिस्थितियाँ धमकाती हैं। यीशु जीवित है, इसलिए उसकी प्रजा साहस के साथ आज्ञा मान सकती है।

## निष्कर्ष

यीशु का दुःख, मृत्यु, और पुनरुत्थान परमेश्वर के उद्धार का पवित्र केंद्र प्रकट करता है, क्योंकि राजा उस बोझ को उठाकर बचाता है जिसे पापी उठा नहीं सकते थे, और उस शत्रु को हराकर जिसे पापी हरा नहीं सकते थे। भ्रातृसमनी आज्ञाकारी समर्पण दिखाता है, मुकदमे मानवीय अन्याय और आत्मिक अंधेपन को उजागर करते हैं, और क्रूस महंगी दया दिखाता है जो पिता की योजना पूरी करता है। यीशु ने केवल राज्य के विषय में शिक्षा नहीं दी, उसने आज्ञाकारी बलिदान के द्वारा राज्य के लिए एक प्रजा खरीद ली। इसलिए सुसमाचार नैतिक सुधार का आह्वान नहीं, बल्कि यह घोषणा है कि पुत्र ने निर्णायक रूप से कार्य किया है ताकि पापियों को मेल कराया

जाए और परमेश्वर के शासन के अधीन आराधना को पुनः स्थापित किया जाए।

पुनरुत्थान फिर घोषित करता है कि क्रूसित राजा जीवित प्रभु है, पिता द्वारा सिद्ध ठहराया गया, और ऐसे अधिकार के साथ राज्य करता है जिसे मृत्यु चुनौती नहीं दे सकती क्योंकि यीशु जीवित है, चेलाई संभव बनती है, मिशन तात्कालिक बनता है, और आशा टिकाऊ बनती है, क्योंकि भविष्य मानवीय सामर्थ्य से सुरक्षित नहीं क्लीसिया को यीशु का अनुसरण प्रार्थनापूर्ण समर्पण, क्रूस-आकारित विश्वासयोग्यता, और पुनरुत्थान के भरोसे के साथ करने के लिए बुलाया गया है, किसी धार्मिक कहानी के दर्शक के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित राज्य के नागरिकों के रूप में दुःख उठाने वाला उद्धारकर्ता और जी उठा प्रभु वही यीशु है, और उसका पूर्ण किया हुआ कार्य आराधना, पश्चाताप, और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता की मांग करता है।

## विचार करने के लिए प्रश्न

1. आपको प्रार्थना में यीशु जैसी समर्पणशीलता कहाँ अभ्यास करने की आवश्यकता है, पिता के पास ईमानदार भय लाते हुए और आज्ञाकारिता चुनते हुए?
2. आपके जीवन में कौन सा दबाव या अन्याय आपको कड़वाहट की ओर लुभाता है, और यीशु का संयम आपकी प्रतिक्रिया को कैसे नया रूप देता है?
3. किस व्यावहारिक तरीके से क्रूस आत्म-शासन के उस छिपे क्षेत्र का सामना करता है जिसे आपने मसीह के अधिकार से बचाकर रखा है?

4. पुनरुत्थान का भरोसा आपके वर्तमान में लिए जा रहे किसी एक निर्णय को भय-आधारित जीवित रहने से विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता की ओर कैसे बदल देगा?
5. गवाही या सेवा का कौन सा एक कदम मसीह आपको उठाने के लिए बुला रहा है क्योंकि वह जी उठा राजा है जो अपने शिष्यों को भेजता है?

# उपसंहार

यीशु मसीह उन पन्नो पर नहीं ठहरते जिन्हें आपने अभी पढ़ा है, क्योंकि वह जीवित प्रभु हैं जो अब भी बोलते हैं, अब भी चरवाही करते हैं, और अब भी राज्य करते हैं। सुसमाचार उन्हें आज्ञाकारी पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो पिता को प्रकट करता है, पाप का सामना बिना समझौते के करता है, और पवित्रता को पतला किए बिना पापियों का स्वागत करता है। यदि इस पुस्तक ने अपना काम किया है, तो उसने केवल आपके मन को सूचना नहीं दी, बल्कि आपको फिर से यीशु के अधिकार के अधीन रख दिया है, जहाँ आराधना श्रद्धापूर्ण बनती है, पश्चाताप ईमानदार बनता है, और चेलाई टिकाऊ बनती है। क्लीसिया यीशु के प्रति धुंधली प्रशंसा से कभी बलवती नहीं होगी, बल्कि यीशु के प्रति स्पष्ट समर्पण से, जैसा वह वास्तव में हैं।

यीशु का जीवन एक ऐसे प्रलोभन को भी उजागर करता है जो परिपक्व विश्वासियों को कभी नहीं छोड़ता, मसीह को पालतू बना देने का प्रलोभन हम एक ऐसे यीशु को पसंद करते हैं जो हमारी प्रवृत्तियों की पुष्टि करे, हमारी योजनाओं को आशीष दे, और हमारे पसंदीदा वर्गों के भीतर सुरक्षित रहे। फिर भी सुसमाचारों का यीशु नियंत्रित होने से इंकार करता है, क्योंकि वह धार्मिक सहायक वस्तु नहीं, वह राजा है। वह नगरों में प्रवेश करता है, मंदिरों को शुद्ध करता है, पाखंड का सामना करता है, और शिष्यों को क्रूस उठाने के लिए बुलाता है क्योंकि वह उन्हें इतना प्रेम करता है कि उन्हें आत्म-शासन के अधीन छोड़ नहीं सकता। इसकी दया ढील देने वाली नहीं, और उसकी पवित्रता ठंडी नहीं है।

जब आप साधारण दिनचर्याओं में लौटें, तो याद रखें कि यीशु की सेवकाई लगातार साधारण स्थानों में जड़ी हुई थी, रास्तों में, भोजन में, नौकाओं में, आराधनालयों में, और बातचीतों में, जहाँ हृदय प्रकट होते थे वह लोगों से भय, लज्जा, बीमारी, भूख, और घमंड के दबाव-बिंदुओं पर मिला, और वह अब भी मिलता है परिपक्व चेलाई कभी-कभार मिलने वाली प्रेरणा से नहीं टिकती, बल्कि दैनिक निष्ठा से टिकती है जो प्रार्थना में, पवित्रशास्त्र-आकारित सोच में, संबंधों में नम्रता में, और तब भी आज्ञाकारिता में प्रकट होती है जब कोई तालियाँ नहीं बजाता जिसने मछुआरों को बुलाया था, वही यीशु अब भी उन वयस्कों को बुलाता है जिनके पास जिम्मेदारियाँ, निराशाएँ, और जटिल बोझ हैं, और उसका बुलावा अब भी सरल और सम्पूर्ण है, मेरे पीछे चलो।

क्रूस को केंद्र में रहना चाहिए, धार्मिक प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि उस निर्णायक कार्य के रूप में जिसके द्वारा यीशु ने क्षमा सुरक्षित की और नई वाचा स्थापित की जब कलीसिया क्रूस को उपलब्धि के रूप में स्वीकार किए बिना केवल उदाहरण के रूप में देखती है, तब वह अपनी स्पष्टता खो देती है यीशु ने केवल हमें यह नहीं दिखाया कि कैसे दुःख सहा जाए, उसने पाप को उठाया, न्याय को संतुष्ट किया, और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का मार्ग खोल दिया जब विश्वासी नैतिकतावाद में भटक जाते हैं, तब आत्मा थक जाती है, क्योंकि आत्म-प्रयास दोष के भार को नहीं उठा सकता जब विश्वासी क्रूस की ओर लौटते हैं, तब आराधना कृतज्ञ बनती है, पश्चाताप आशापूर्ण बनता है, और आज्ञाकारिता दया का उत्तर बनती है, स्वीकृति के लिए भुगतान नहीं।

पुनरुत्थान को भी केंद्र में रहना चाहिए, क्योंकि मसीही विश्वास किसी मृत नायक पर नहीं, बल्कि एक जी उठे राजा पर बना है जो राज्य करता है और भेजता है। जी उठा यीशु केवल सांत्वना नहीं देता, वह नियुक्त करता है, और वह उस नियुक्ति को अपने अधिकार और अपनी उपस्थिति में जड़ित करता है। उसने प्रतिज्ञा की, “और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ,” जिसका अर्थ है कि कलीसिया का मिशन कभी अकेले या मानवीय सामर्थ्य के द्वारा नहीं उठाया जाता (मत्ती 28:20, एनआईवी)। पुनरुत्थान का भरोसा कठिनाई को हटाता नहीं, पर निराशा को हटाता है, क्योंकि जब राजा जीवित है तब आज्ञाकारिता कभी व्यर्थ नहीं होती।

इसका अर्थ है कि आपकी चेलाई मुख्य रूप से आत्म-सुधार के बारे में नहीं, बल्कि मसीह के साथ संगति के बारे में है जो आज्ञाकारिता, चरित्र, और गवाही उत्पन्न करती है। यीशु अपने लोगों को अपने वचन, अपनी आत्मा, और अपनी कलीसिया के द्वारा बनाता है, वहाँ नम्रता गढ़ते हुए जहाँ कभी घमंड शासन करता था, वहाँ क्षमा गढ़ते हुए जहाँ कभी कड़वाहट रहती थी, और वहाँ साहस गढ़ते हुए जहाँ कभी भय निर्णयों को नियंत्रित करता था। बहुत से विश्वासी समर्पण के बिना परिवर्तन चाहते हैं, पर सुसमाचार सिखाते हैं कि यीशु उन्हें बदलता है जो उसके पीछे निकटता से चलते हैं। कलीसिया का स्वास्थ्य हमेशा इस बात से जुड़ा है कि वह चेलाई को यीशु के प्रभुत्व के अधीन वास्तविक जीवन मानती है या उसे ऐसी धार्मिक गतिविधि मानती है जो अधिक महत्वपूर्ण निष्ठाओं के आसपास फिट हो जाती है।

अगुवों, शिक्षकों, और पास्टरों के लिए, यीशु का जीवन सांत्वना भी है और सुधार भी। यह सांत्वना देता है क्योंकि यीशु का अधिकार कलीसिया की आवश्यकताओं के लिए

पर्याप्त है, और यह सुधार करता है क्योंकि मसीह-समान नेतृत्व कभी भी हेरफेर, छवि, या नियंत्रण पर नहीं बनता। उसने सत्य और कोमलता के साथ चरवाही की, बिना भय के पाखंड का सामना किया, और पद की खोज किए बिना सेवा की। यदि आप नेतृत्व करते हैं, तो आप एक ऐसे व्यक्ति के रूप में नेतृत्व करने के लिए बुलाए गए हैं जो अधिकार के अधीन है, न कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो स्वयं अधिकार बनना चाहता है। क्लीसिया आपकी नहीं कि आप उसे चलाएँ, वह मसीह की है कि वह उसे शुद्ध करे और बनाए रखे, और विश्वासयोग्य नेतृत्व लोगों को आपके चारों ओर इकट्ठा करने के बजाय उसकी ओर संकेत करता है।

जब आप इस पुस्तक को बंद करें, तो इसे अंत की तरह नहीं, बल्कि सुसमाचारों के माध्यम से श्रद्धा और सावधानी के साथ यीशु के साथ चलते रहने के लिए नए सिरे से निमंत्रण की तरह समझें। उद्देश्य कभी भी मसीह के बारे में जानकारी पर अधिकार करना नहीं था, बल्कि प्रेम और आज्ञाकारिता में मसीह के द्वारा अधिकार में आ जाना था। यीशु ने कहा, “यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे,” और यह एक वाक्य आराधना, चेलाई, और मिशन को एक ही मसीह-केंद्रित मार्ग में जोड़ देता है (यूहन्ना 14:15, एनआईवी)। जिस राजा पर आपने यहाँ विचार किया है वह आपके पूरे जीवन के योग्य है, और वह इतना कोमल है कि आपको ग्रहण करे, इतना सामर्थी है कि आपको थामे रखे, और इतना पवित्र है कि आपको बदल दे।

# शब्दावली

## अधिकार

यीशु की वह वैध और उचित शक्ति जिसके द्वारा वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में बोलता है, कार्य करता है, क्षमा करता है, न्याय करता है, और राज्य करता है।

## अवतार

यह सत्य कि परमेश्वर के अनन्त पुत्र ने यीशु मसीह में पूर्ण मानवता धारण की।

## आज्ञाकारिता

परमेश्वर की इच्छा के प्रति विश्वासयोग्य समर्पण, जिसे यीशु ने पूर्ण रूप से प्रदर्शित किया और जिसकी अपेक्षा उसके अनुयायियों से की जाती है।

## उद्धार

पाप, मृत्यु, और परमेश्वर से अलगाव से छुटकारा, जो यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है।

## उपस्थिति

परमेश्वर का अपने लोगों के साथ सक्रिय और निकट संबंध, जो यीशु के जीवन और कार्य में प्रकट हुआ।

## क्रूस

वह माध्यम जिसके द्वारा यीशु ने दुःख सहा और मृत्यु को स्वीकार किया, और आज्ञाकारी बलिदान के द्वारा उद्धार को पूरा किया।

## **चेलाई**

यीशु का अनुसरण करने, उससे सीखने, और जीवन के हर क्षेत्र को उसके प्रभुत्व के अधीन रखने का जीवन।

## **गवाही**

शत्रुओं और कार्यों के द्वारा दिया गया वह साक्ष्य जो यह घोषित करता है कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है।

## **नया नियम**

परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह के द्वारा स्थापित नई वाचा, जो क्षमा और मेल-मिलाप पर आधारित है।

## **पवित्रता**

परमेश्वर की नैतिक शुद्धता और पूर्णता, जो यीशु के जीवन में प्रकट हुई और उसके लोगों से अपेक्षित है।

## **पश्चात्ताप**

पाप और आत्म-शासन से मुड़कर नम्रता और विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर लौटना।

## **प्रायश्चित**

यीशु मसीह का वह कार्य जिसके द्वारा पाप का समाधान हुआ, दोष हटाया गया, और उसके बलिदान द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप संभव हुआ।

## **प्रभुत्व**

यीशु का सर्वोच्च अधिकार और संपूर्ण सृष्टि तथा प्रत्येक मानव जीवन पर शासन करने का अधिकार।

## **बलिदान**

पाप से निपटने और मानवता को परमेश्वर से पुनः जोड़ने के लिए यीशु के जीवन का अर्पण।

## **मसीह**

परमेश्वर द्वारा भेजा गया प्रतिज्ञात और अभिषिक्त राजा, जो अपने लोगों का उद्धार करने के लिए आया और यीशु में पूरा हुआ।

## **मेल-मिलाप**

परमेश्वर और मनुष्य के बीच टूटे हुए संबंध का पुनः स्थापित होना, जो यीशु के कार्य के द्वारा संभव हुआ।

## **राज्य**

परमेश्वर का सक्रिय शासन और प्रभुत्व, जो यीशु के जीवन, सेवकाई, मृत्यु, और पुनरुत्थान के द्वारा प्रकट और आरंभ हुआ।

## **पुनरुत्थान**

यीशु का मृतकों में से शारीरिक रूप से जी उठना, जो मृत्यु पर विजय और उसके अधिकार की पुष्टि करता है।

## **प्रतिस्थापन**

यह सत्य कि यीशु ने पापियों के स्थान पर वह सहा जो उनके लिए निर्धारित था, ताकि वे अनुग्रह प्राप्त कर सकें।

## **पवित्रीकरण**

परमेश्वर का निरंतर कार्य जिसके द्वारा वह विश्वासियों को पवित्रता और मसीह-समान चरित्र में ढालता है।

## **पाप**

परमेश्वर के विरुद्ध मानवीय विद्रोह जो मनुष्य को उससे अलग करता है और दोष तथा मृत्यु लाता है।

## **परमेश्वर का पुत्र**

यीशु की अद्वितीय पहचान, जिसमें वह पूर्ण रूप से ईश्वरीय है और पिता के स्वभाव और अधिकार को साझा करता है।

## **मंदिर**

यहूदी आराधना का केंद्र जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता था, और जिसे यीशु ने चुनौती दी और अपने कार्य में पूरा किया।

## **मुकदमा**

वे अन्यायपूर्ण कानूनी कार्यवाहियाँ जिन्हें यीशु ने सहा और जो उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने तक ले गईं।

## **क्षमा**

यीशु के बलिदान के द्वारा दोष का हटना और परमेश्वर के साथ संबंध का पुनः स्थापित होना।

## **आराधना**

परमेश्वर के प्रति श्रद्धा, आज्ञाकारिता, कृतज्ञता, और भक्ति की उचित प्रतिक्रिया, जो यीशु मसीह पर केंद्रित होती है।